मासिक

शिविरा

पत्रिका

वर्ष : 59 | अंक : 03 | सितम्बर, 2018 | पृष्ठ : 132 | मूल्य : ₹15

शिक्षक दिवस विशेषांक

सत्यमेव जयते

वासुदेव देवनानी
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षा
एवं भाषा विभाग
राजस्थान सरकार, जयपुर

शिक्षा : संस्कार व लोकोपकार का साधन

शिक्षा जगत के लिए नव उमंग, उत्साह, स्फूर्ति, नूतन संदेश और अभिनव अभिप्रेरणा देने वाला उत्सवों-पर्वों का अनूठा और महत्त्वपूर्ण महीना है सितम्बर। 'शिक्षक दिवस' (5 सितम्बर) पावन अवसर पर 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' का उद्घोष कर संपूर्ण संसार को कर्म का संदेश देने वाले सच्चे कर्मयोगी लीलावतार भगवान श्रीकृष्ण के दिव्य संदेश 'योगः कर्मसु कौशलम्' का शिक्षार्थियों को अवगाहन करवा कर ज्ञानवान, कर्मशील, सभ्य, संस्कारित और राष्ट्रभक्त भावी पीढ़ी तैयार करने वाले कर्मठ व हुनरमंद सम्मानित होने वाले शिक्षकों को हार्दिक बधाई देते हुए शिक्षक दिवस के अवसर पर प्रकाशित विविध विधाओं का समुच्चय शिविरा-'शिक्षक दिवस विशेषांक' के लिए सभी रचनाधर्मियों एवं शिक्षक बंधु-भगिनी को भी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

प्रातः स्मरणीय कपिल, कणाद, जैमिनी, वाल्मीकि, वशिष्ठ, विश्वामित्र, संदीपन, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, समर्थ रामदास, रामकृष्ण परमहंस, डॉ. राधाकृष्णन और मिसाइलमैन डॉ. एपीजे. अब्दुल कलाम की गुरु परम्परा को प्रणाम करते हुए मैं प्रदेश के कोने-कोने में ज्ञानदीप प्रज्वलन हेतु समर्पित शिक्षक भाई बहनों से अपील करता हूँ कि वे ऋषि-संस्कृति के संवाहकों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से प्रेरणा लेकर शिक्षित एवं संस्कारित समाज के निर्माण की दिशा में अपनी महनीय भूमिका का निर्वहन करें।

विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत में लोकतांत्रिक जीवन पद्धति विकसित हो। शाँति, सद्भाव और सहिष्णुता की हमारी संस्कृति हमारे लोकतंत्र का आधार है। इसे शिक्षा के माध्यम से दिल की गहराइयों तक युवा वर्ग में समावेशित करें, ऐसा हमारा प्रयास होना चाहिए। यही हमारे लोकतंत्र की सार्थकता है।

शिक्षा ही संस्कारों का निर्माण कर हमें लोकोपकार के पवित्र उद्देश्य को पूरा करने में सहायता प्रदान करती है। माता-पिता द्वारा प्रदत्त हाड़मांस के शरीर में दिव्य शक्तियों को प्रवाहित कर इसे संसार की सर्वोत्कृष्ट कृति बनाने के श्लाघनीय दायित्व का निर्वहन ही गुरु को गोविन्द से श्रेष्ठ बना देता है। सद्गुरु की अनुकम्पा एवं स्नेहाशीष से ही ज्ञान, ध्यान, विनय, विवेक, सदाचार एवं सद्व्यवहार का मार्ग प्रशस्त होता है। यह गुरु महिमा ही उसे विधाता के समकक्ष ला देती है।

संपूर्ण साक्षरता एवं शिक्षा के सार्वजनीकरण के लोकोपकारी संकल्पों को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध होने पर ही हमारा 'विश्व साक्षरता दिवस' (8 सितम्बर) मनाना सार्थक एवं समीचीन होगा। 10 सितम्बर पं. गोविन्दबल्लभ पंत जयंती, 11 सितम्बर को भूदान आंदोलन के प्रणेता आचार्य बिनोवा भावे की जयंती, 13 सितम्बर को विघ्नविनाशक, बुद्धि प्रदाता, प्रथम पूज्य गणेशजी को समर्पित आध्यात्मिकभावलोक का पावन पर्व 'गणेश चतुर्थी', हमारी रगों में रची-बसी देश की धड़कन को समर्पित 'हिन्दी दिवस' 14 सितम्बर, 15 सितम्बर को सुखी समृद्ध जनजीवन और कला कौशल युक्त जीवन का पर्याय 'अभियंता दिवस', 17 सितम्बर को परोपकार के महनीय प्रतिमान महर्षि दधीचि की जयंती, 19 सितम्बर को लोकोपकार हेतु सर्वस्व न्यौछावर कर देने वाले लोक देवता तेजाजी की जयंती एवं समरसता के प्रतीक आराध्य लोकदेवता रामदेव जी की जयंती, मन वचन और कर्म से अपनी बात पर अटल रहने वाले महाराज बलि से तीनों लोक मांगने वाले भगवान वामन की जयंती (20 सितम्बर) और सिख पंथ के संस्थापक पूज्य गुरु नानक देव की पुण्य तिथि (22 सितम्बर) और विश्व विरासत के दिग्दर्शन को समेटे 'विश्वपर्यटन दिवस' संपूर्ण शिद्दत से मनाते हुए उनमें अंतर्निहित संदेशों से शिक्षार्थियों को रूबरू करवाकर उनको कुशल, कर्मठ, ज्ञानवान, गुणी, सभ्य और संस्कारवान बनाने के गुरुत्तर दायित्व का निर्वहन करना है ताकि वे ज्ञानयज्ञ की आहुति बनकर सभ्य, सुखी, स्वस्थ, स्वच्छ एवं समृद्ध समाज और आदर्श, उन्नत राष्ट्र के निर्माण में अपनी महती भूमिका का निर्वहन कर सकें।

पुनः 'शिक्षक दिवस' की शुभकामनाओं एवं सभी के मंगल की कामना के साथ...।

(वासुदेव देवनानी)

"शिक्षा ही संस्कारों का निर्माण कर हमें लोकोपकार के पवित्र उद्देश्य को पूरा करने में सहायता प्रदान करती है। माता-पिता द्वारा प्रदत्त हाड़मांस के शरीर में दिव्य शक्तियों को प्रवाहित कर इसे संसार की सर्वोत्कृष्ट कृति बनाने के श्लाघनीय दायित्व का निर्वहन ही गुरु को गोविन्द से श्रेष्ठ बना देता है। सद्गुरु की अनुकम्पा एवं स्नेहाशीष से ही ज्ञान, ध्यान, विनय, विवेक, सदाचार एवं सद्व्यवहार का मार्ग प्रशस्त होता है। यह गुरु महिमा ही उसे विधाता के समकक्ष ला देती है।"

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते –श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।

In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 59 | अंक : 3 | भाद्रपद-आश्विन २०७५ | सितम्बर, 2018

प्रधान सम्पादक
नथमल डिडेल

वरिष्ठ सम्पादक
डॉ. राजकुमार शर्मा

सम्पादक
गोमाराम जीनगर
मुकेश व्यास

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ **15**

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 75
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 150
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 200
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
फैक्स : 0151-2201861
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in
shivirasecedubkn@gmail.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **–वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- शिक्षक : सम्मान और कर्त्तव्य 5

आलेख

- भारत रत्न, कवि-हृदय : अटल जी 7
  गोमाराम जीनगर
- राष्ट्र-भाषा जीवन्त बने 9
  शशिकान्त द्विवेदी 'आमेटा'
- हर एक दिन-हिन्दी दिवस 11
  सुषमा पचार
- पावन बलिदान का प्रतीक-खेजड़ली गाँव 12
  डॉ. ओमप्रकाश बिश्नोई

शैक्षिक चिन्तन

- व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का निर्माण-शिक्षण 13
  विपिन चन्द्र
- शिक्षक दिवस : परिकल्पना 15
  सुषमा भाकर
- मूल्यपरक शिक्षा के निहितार्थ 16
  ओम प्रकाश सारस्वत
- शिक्षा के क्षेत्र में दान की गंगा 18
  दिलीप परिहार
- सद्गुरु : **डॉ. भगवान सहाय मीना** 19
- प्रथम महिला शिक्षिका : सावित्री बाई फुले 20
  मोहन मेघवाल
- बालक की प्रथम पाठशाला है-परिवार 21
  शंकर लाल माहेश्वरी
- विचारों का दर्पण है-दृष्टिकोण 22
  हनुमान प्रसाद जांगिड़
- भाग्य सदैव साहसी का साथ देता है 23
  सुभाष चन्द्र कस्वाँ
- सच्चा शिक्षक : अमृत कलश : **प्रकाश वया** 25
- बेटी पढ़ाओ : **जगदीश चन्द्र मेहता** 26
- स्मृति-संवर्द्धन हेतु सूत्र : **टेकचन्द्र शर्मा** 27
- समय अनमोल : **डॉ. कुंजलता सारस्वत** 28
- शब्द स्वरूप, महिमा अनूप 29
  डॉ. दाऊ दयाल गुप्ता
- विद्यार्थी के शैक्षिक विकास में साहित्य का अवदान : **डॉ. दयाराम** 30
- दुलार ही बच्चों का विकास है 31
  दीपचन्द सुधार
- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का आधार 32
  बजरंग प्रसाद मजेजी
- सांस्कृतिक हाइकु : **जगदीश प्रसाद त्रिवेदी** 33
- मेले में भटके होते तो... 34
  भवानी शंकर 'तोसिक'
- एक भी छात्र फेल होता है तो... 35
  सत्यनारायण शर्मा
- साहित्य का सामर्थ्य : **लालाराम प्रजापत** 37
- बदलाव की पहल : 'क्लिक्स' कार्यक्रम 38
  डॉ. जय बाहुदर सिंह कछावा
- शाला प्रवेश से प्रस्थान : **रामरख बिश्नोई** 40
- स्थानस्य महिमा : **देवेन्द्रनाथ पण्ड्या** 41
- समय नहीं, कर्म हमें जीवंत बनाता है 42
  पूनम
- मूक-बधिर बालकों में लेखन कौशल का विकास : **डॉ. योगेन्द्र सिंह नरुका** 43
- शिक्षा का महत्त्व : **हनुमान प्रसाद व्यास** 44
- अनीति-अन्याय को रोकें : **बंशीलाल जोशी** 44

हिन्दी विविधा

- समर्पण : **मंगलेश सोलंकी** 12
- साधना से सब सधे : **साँवलाराम नामा** 14
- शिक्षा के हम सेनानी : **भरत शर्मा 'भारत'** 20
- संकल्प : **छाजूलाल जाँगिड़** 45
- अंगदान : **रामगोपाल राही** 47
- क्या हरिया पढ़ पाएगा? : **चैनराम शर्मा** 49
- वो सरकारी स्कूल नहीं, एक घर-परिवार था 50
  डॉ. रवीन्द्र कुमार उपाध्याय
- संघर्ष की मुस्कान : **सुधा पण्ड्या** 52
- अकेला रह गया मकान है 53
  महेश चन्द्र जैन 'सावन'
- अनुभूति : **शिवनारायण शर्मा** 53
- उपकार वही ही है : **शिवचरण मंत्री** 53
- चार साथी और उन की बात 54
  रामलाल जाट
- पूँजी : **रोहिताश कुमार 'रोहित'** 54
- जुर्म : **अरनी रॉबर्ट्स** 55
- लीना का गणित : **डॉ. चेतना उपाध्याय** 57
- माँ : **रामचन्द सतवानी** 58
- बेटी का बाप : **शकुन्तला सोनी** 59

- परीक्षा : **उत्सव जैन** 60
- वंश का दंश : **मुरारी लाल कटारिया** 60
- मेजबान : **भंवरलाल इन्दोरिया** 72
- ईर्ष्या का अन्त : **होतीलाल** 73
- बेटियाँ : **सुरेश कुमार** 73
- राष्ट्र-ध्वज-वंदना : **जगदीश चन्द्र त्रिपाठी** 73
- और मैं गणित पढ़ाने लगा... 74
  विजय प्रकाश जैन
- कविता और कवि : **मोहित जांगिड़** 76
- मानव शृंखला : शहादत को सलाम 76
  विकासचन्द्र 'भारू'
- नीरजा और पौधा : **मनीषा शर्मा** 77
- माँ : **डॉ. धाकड़ हरीश** 77
- मैं सीढ़ी का पत्थर हूँ : **हिम्मत राज शर्मा** 78
- शिक्षकत्व अनुभाव : **डॉ. मनीष चौरसिया** 78
- प्रार्थना : **प्रतिभा भोजक** 79
- मेरा चित्तौड़... : **मुकेश कुमार स्वर्णकार** 79
- कविता : **मोहम्मद अकरम** 79
- आदर्श : **हनुमान सिंह गुर्जर** 80
- वन्य जीव की पीड़ा : **सुरेन्द्र माहेश्वरी** 80
- श्रम का कुदाल : **चन्द्रभान सम्मौरिया** 80
- बसंत : **सरोज जैन** 81
- लोकतन्त्र में... : **राजेन्द्र कुमार टेलर** 81
- आरावल की गूँज : **कान्ता चाडा** 82
- शृंगार से अंगार तक रिश्ते 82
  पूरणमल तेली 'विदुष'
- फिर चलने की सोच रहा हूँ 83
  सन्त कुमार दीक्षित
- श्रम में आस्था बढ़े : **जगदीश चन्द्र नागर** 83
- आज का कवि : **अमर सिंह गोदारा** 83
- उन सपनों के गाँव में 83
  डॉ. विद्या रजनीकांत पालीवाल
- संस्कार 84
  लक्ष्मीकान्त शर्मा 'कृष्णकली'
- पर्व अनोखा 84
  श्यामसुन्दर तिवाड़ी 'मधुप
- जीने का मकसद : **रेणुका गाँधी** 84
- स्वच्छता : **नवल सिंह नरूका** 84
- माँ भारती : **सीताराम व्यास 'राहगीर'** 85
- संध्या : **हरिनारायण वर्मा** 85
- बेटी को पढ़ने दो : **रामेश्वर लाल** 85
- ग़ज़ल : **डॉ. भँवर कसाना** 85
- दादी माँ : **रामनारायण सैनी** 85
- अलगाई : **डॉ. मूलचन्द बोहरा** 86
- दोहे : **लियाकत अली खाँ 'भावुक'** 86
- हिन्दी शान बढ़ाती है 86
  डॉ. कृष्णानन्द सोनी
- एक शिक्षक पिता 87
  डॉ. अवन्तिका प्रजापति
- माँ : **विश्वम्भर पाण्डेय 'व्यग्र'** 87
- वृद्धाश्रम : **दिनेश विजयवर्गीय** 87
- आज लेखनी लिख डालो 88
  मनमोहन शर्मा
- उम्मीद : **भीम सिंह मीणा 'अमन'** 88
- ओ रमजाना : **लक्ष्मी चौबीसा** 88
- पुकार : **रामनिवास जांगिड़** 88
- पर्यावरण की पुकार : **शिव नाम सिंह** 89
- अब हम अपनी बात कहेंगे : **मुन्नी शर्मा** 89
- ढूँढ़ें खुशियाँ : **उषा रानी स्वामी** 89
- अंधेरे में : **सूर्य प्रकाश जीनगर** 89
- अभिलाषा : **बाबू खान शेख** 90
- बेटी मृदुल महक तू 90
  भगवती प्रसाद गौतम
- जगमग-जगमग दीप जले : **उर्मिला नागर** 90
- मूक साधक : पेड़ : **उम्मेद सिंह भाटी** 90

राजस्थानी विविधा

- सम्पत रो भारौ : **नरसिंह सोढा** 91
- मेवाड़ी-पाग : **राम जीवण सारस्वत 'जीवण'** 92
- अड़वौ : **भीखालाल व्यास** 93
- अेक भगतसिंघ भळै : **डॉ. मदनगोपाल लढ़ा** 96
- बाळक : **ओम प्रकाश सैनी** 97
- होनहार बेटी : **रामजीलाल घोड़ेला** 98
- समधा : **रूपाराम नामा** 99
- विजयदान देथा 'बिज्जी' 100
  शंभुदान बारहठ
- आज सुणाऊँ थानै बातां : **ओमदत्त जोशी** 101
- शेरां री धर शेरगढ़ : **मनोहर सिंह सोढ़ा** 102
- टमरकटूँ : **भावना** 103
- कह रै चकवा बात : **हेमा** 104
- दादी री जीत : **सुशीला शर्मा** 105
- बंगू री बकरी 106
  डॉ. गोविन्द नारायण कुमावत
- जिनावरां रो जमगट : **महेन्द्र सिंह सैनी** 107
- दस डुक : **दीनदयाल शर्मा** 108
- हूँस रौ अन्त : **कल्पना गिरि** 109
- वेदना : **महेन्द्र कुमार शर्मा** 109
- पाणी रै पाणी : **भोगीलाल पाटीदार** 110
- हिम्मत री कीमत : **मईनुदीन कोहरी** 111
- ममता रौ होम : **आशुतोष** 112
- हरावल री आण : **जेठनाथ गोस्वामी** 114
- सबसूँ प्यारो राजस्थान 116
  डॉ. बद्री प्रसाद शर्मा
- मारवाड़ी री सीख : **नाथू सिंह राजपुरोहित** 116
- रे मोट्यार : **रहीम खाँ हसनिया** 117
- रूँखड़ा लगा सूं : **बालकृष्ण शर्मा** 117
- रणबंको राजस्थान : **बिन्दु** 118
- बेटी : **कृष्णा आचार्य** 118
- हिन्द देश रौ सबसूं ऊँचो 119
  मोहम्मद अमीन छीपा
- तकतां पीळ जोत परयांण 119
  हनुमान सिंह भाटी
- नान्यो : **गोपाल लाल वर्मा** 120
- अे धोळी कबूतरियां : **सुरेन्द्र 'अंचल'** 120

बाल साहित्य

- पुस्तक की गवाही : **गोविन्द भारद्वाज** 121
- सच्चा मित्र : **विमला नागला** 122
- मुझे माफ कर दो 123
  महेश कुमार चतुर्वेदी
- चार ठग और रामू 124
  झांवटा राम बामणिया
- गर्मी आई, गर्मी आई : **ज्ञान प्रकाश 'पीयूष'** 125
- बुद्धि का पहाड़
  विजयगिरी गोस्वामी 'काव्यदीप' 125
- मधुवन में खेलकूद : **ओम प्रकाश तंवर** 126
- बचपन : **स्नेहलता चड्डा** 126
- ग़ज़ल : **सैयद अहमद शाह अली** 126
- मुसीबत टल गई 127
  डॉ. ऋषि मोहन श्रीवास्तव
- बताओ कौन? : **मगनलाल दायमा** 128
- शाला का शृंगार : **सत्य नारायण नागौरी** 128
- जय जय राजस्थान : **रूपनारायण काबरा** 129
- पेड़ लगाएँ हरे-भरे 129
  शिवचरण सेन 'शिवा'
- श्रेष्ठ बनाओ : **गणपतसिंह 'मुग्धेश'** 129
- हंस वाहिनी शारदे 130
  कैलाश गिरि गोस्वामी
- रोती प्रकृति आँसू भर के... 130
  मनमोहन गुप्ता
- उसे कुछ भी नहीं आता 130
  प्रमोद दीक्षित 'मलय'
- बचपन तुम मत छीनो 130
  सुश्री अरुण जैन

मासिक गीत

- यातनाओं से किसी की... 10
  साभार : 'राष्ट्रवंदना' पुस्तक से

स्तम्भ

- पाठकों की बात 6
- शिविरा पञ्चाङ्ग : सितम्बर 2018 71
- आदेश-परिपत्र 61-71
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 71
- व्यंग्य चित्र : **रामबाबू माथुर** 24,33, 36, 42

मुख्य आवरण : नारायणदास जीनगर, बीकानेर, मो. 9414142641

सत्यमेव जयते

नथमल डिडेल
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

शिक्षक : सम्मान और कर्त्तव्य

महान शिक्षाविद और पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन का जन्मदिवस हम सभी 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाते हैं। इस वर्ष भी 05 सितम्बर को 'शिक्षक दिवस' पर शिक्षा विभागीय राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह आयोजित हो रहा है। इसमें राज्य के चयनित श्रेष्ठ शिक्षकों का सम्मान, शिक्षा के क्षेत्र में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान का सम्मान है। सम्मान की यह परम्परा राज्य, मण्डल, जिला और ब्लॉक स्तर पर विभिन्न रूपों में अपनाई जा रही है। जो शिक्षक अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन कुशलतापूर्वक करता है, वह आदर्श शिक्षक के रूप में समाज में हर स्तर पर सम्मानित होता है। यह सम्मान उस प्रतिभा के सम्मान के साथ-साथ अन्य साथियों को प्रेरणा देने के लिए भी किया जाता है।

राज्य का शिक्षा विभाग अपने विद्यालयों में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए दृढ़संकल्पित है। राज्य के शिक्षकों ने इस दिशा में गत बोर्ड परीक्षा में विद्यार्थियों के अच्छे परिणाम में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की है। राजकीय विद्यालयों में उत्साहजनक नामांकन वृद्धि के बाद, श्रेष्ठ शिक्षकों के मार्गदर्शन में प्रतिभावान विद्यार्थी न केवल शिक्षा अपितु खेलकूद प्रतिस्पर्धाओं में भी अपना सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं। अब हम सबका ध्येय यह होना चाहिए कि प्रत्येक वर्ष नामांकन में वृद्धि हो एवं हम सब मिलकर ये प्रयास करें। सुदूर ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय हों या शहरी विद्यालय, हमारे विद्यालयों के संस्थाप्रधान और शिक्षक अपना आचरण व्यवहार ऐसा बनाएँ जिससे अन्य को भी सतत प्रेरणा मिलती रहे। विद्यालयों में सभी विद्यार्थियों को सीखने के पर्याप्त अवसर मिलें, उनकी प्रतिभाओं का नैसर्गिक संवर्द्धन हो।

हमारे शिक्षकों और शिक्षा विभाग के मंत्रालयिक कर्मचारियों में रचनात्मकता और सृजनात्मकता की अभिवृद्धि प्रदर्शित भी हो, इस दृष्टि से 'शिविरा' सितम्बर, 2018 का अंक 'शिक्षक दिवस विशेषांक' के रूप में चौथा विशेषांक है। इसमें लेखक शिक्षकों, कर्मचारियों ने अपनी श्रेष्ठ रचनाएँ देकर अपनी विशिष्ट सृजनशीलता का परिचय दिया है। हम सब मिलकर राज्य सरकार की मंशा अनुरूप एकजुट होकर शिक्षा के क्षेत्र में अपना योगदान पूर्ण उत्साह एवं ऊर्जा से दें ताकि हमारा राज्य शिक्षा के क्षेत्र में हमेशा ऊँचे पायदान पर रहे,

आप सभी सकारात्मक सोच के साथ रचनात्मक कार्यों में संलग्न रहें,

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ.....

(नथमल डिडेल)

> "सुदूर ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय हों या शहरी विद्यालय, हमारे विद्यालयों के संस्थाप्रधान और शिक्षक अपना आचरण व्यवहार ऐसा बनाएँ जिससे अन्य को भी सतत प्रेरणा मिलती रहे। विद्यालयों में सभी विद्यार्थियों को सीखने के पर्याप्त अवसर मिलें, उनकी प्रतिभाओं का नैसर्गिक संवर्द्धन हो।"

▼ *चिन्तन*

आपात्काले तु सम्प्राप्ते
यन्मित्रं मित्रमेव तत्।
वृद्धिकाले तु सम्प्राप्ते
दुर्जनोऽपि सुहृदभवेत्।।

अर्थात्–संकट के समय में जो मित्रता निभाता है, वही वास्तव में सच्चा मित्र है। उन्नति (अच्छे समय) के समय में तो बुरे और स्वार्थी व्यक्ति भी मित्र बन जाया करते हैं।

(पंचतंत्र-मित्रभेद/21)

पाठकों की बात

- अगस्त 2018 की 'शिविरा' में 'अपनों से अपनी बात' में शिक्षा मंत्री श्री वासुदेव देवनानी द्वारा उद्धृत 'सच्ची आजादी हमें तभी प्राप्त होगी जब शिक्षा का सर्वत्र प्रचार-प्रसार एवं सर्वव्यापीकरण होगा' एवं 'दिशाकल्प' में निदेशक महोदय द्वारा यह कहना कि 'विद्यार्थियों को आनंददायी वातावरण में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण प्राप्त हो।' दोनों ही कथन महत्त्वपूर्ण है। दानवीर भामाशाह का संक्षिप्त सारयुक्त प्रभावी चरित्र चित्रण हर किसी पाठक को अवश्य ही प्रभावित करेगा, यही मेरा विश्वास है। 'स्कूल बना एजूकेशन एक्सप्रेस' नवाचार सुन्दर प्रस्तुति है। हॉकी में ख्यात खिलाड़ी के जन्म दिन 29 अगस्त को 'खेल दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय प्रशंसनीय है। राजस्थानी कविता 'आदर्श विद्यालय' अच्छा प्रयास है। भामाशाहों व प्रेरकों को सम्मानित करने की परम्परा निर्वहन अवसर के चित्र बहुत अच्छे लगे। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर संविधान सभा के सभापति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का अंग्रेजी व अनुदित हिन्दी भाषण प्रासंगिक व सामयिक श्रेष्ठ प्रस्तुति है। हिन्दी में उनके भाषण का अनुवाद करके श्री सूर्यप्रताप सिंह राजावत बधाई के पात्र है। भाषानुवाद-भावानुवाद बहुत अच्छा किया है। पत्रिका का अंतिम कलेवर एवं साजसज्जा चित्रावली सुन्दर बन पड़ी है। संपादक मण्डल बधाई का पात्र है।

टेकचन्द्र शर्मा, झुंझुनूं

- माह अगस्त 2018 का अंक इस बार समय पर मिला। मेरी हार्दिक इच्छा है कि मैं इस पुस्तक का आजीवन ग्राहक बन सकूँ। दो वर्ष की सदस्यता शीघ्र ही समाप्त हो जाती है। अतः आजीवन या कम से कम 10 वर्षीय सदस्यता पाठकों को मिलनी चाहिए। सुझाव पश्चात गतांक में श्री मनीष कस्वाँ द्वारा छात्रवृत्ति एवं प्रोत्साहन योजनाएँ बहुत उपयोगी लगी। इसके अतिरिक्त आदेश परिपत्र, मासिक गीत, विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम, श्री महावीर प्रसाद गर्ग द्वारा 24वाँ भामाशाह सम्मान समारोह का लेखा-जोखा पढ़कर ज्ञात हुआ कि हमारे देश में दानवीरों की कोई कमी नहीं है। श्री लालाराम प्रजापत की कविता भी अच्छी लगी। कुल मिलाकर शिविरा को पढ़ने का मन बार-बार करता है।

नटवरराज, नागौर

- माह अगस्त 2018 का अंक पढ़कर अपार प्रसन्नता हुई। 'स्वतंत्रता दिवस' को समर्पित आवरण सुन्दर व प्रासंगिक है तथा मंत्री महोदय ने भी शिक्षा को सच्ची आजादी का आधार बताया है। निदेशक महोदय ने 'दिशाकल्प' में 'हमारा दृढ़ निश्चयः गुणवत्तापूर्ण शिक्षा' पर जोर देकर शिक्षा को जीवन की प्राथमिकता में रखा है, जो प्रशंसनीय व अनुकरणीय है। श्री मनीष कस्वाँ का लेख 'छात्रवृत्ति एवं प्रोत्साहन योजनाएँ' श्री अविनाश चौधरी का 'व्यावसायिक शिक्षा अध्ययन' के माध्यम से पाठकों को नवीन जानकारी उपलब्ध कराने हेतु आभार। 'राष्ट्रीय खेल दिवस' में श्री भंवर सिंह से बहुपयोगी जानकारी मिली। मासिक गीत 'हम करें राष्ट्र आराधन' शाब्दिक रूप से प्रेरक लगा। यदि इसके साथ किसी संगीत अध्यापक द्वारा स्वरलिपि का भी प्रकाशन हो तो यह गीत उसी लय व ताल में गाया तथा गवाया जा सकता है। स्वरलिपि के अभाव में हर संगीत अध्यापक अपनी अलग-अलग राग प्रस्तुत कर गाएगा। संपूर्ण कलेवर के कुशल संपादन के लिए साधुवाद।

जगदीश डाबी, श्रीगंगानगर

- 'शिविरा' पत्रिका का उत्तरोत्तर उत्कर्ष को छूता स्तर प्रशंसनीय है। 'शाला प्रांगण' में समाचारों के साथ दिए जाने वाले चित्रों को पूरे कॉलम में बराबर कर दें तो अच्छा रहेगा। समूह चित्रण में वे स्पष्टता खो देते है। बच्चे इसमें अपने फोटो देख उत्साहित होते है। प्राथमिक कक्षाओं के लिए भी उपयोगी सामग्री को 'शिविरा' में स्थान दें तो प्राथमिक शिक्षक भी इसे पढ़ने में रुचि लेंगे तथा उनके अनुभवों को बाँटने के लिए 'कक्षा-शिक्षण अनुभव' के नाम से नया स्तंभ शुरु कर सकते है। सामग्री का चयन एवं संकलित कर उसमें से सर्वोपयोगी सामग्री को सुन्दर ढंग से प्रस्तुत करने पर सम्पूर्ण सम्पादक मण्डल का धन्यवाद।

रतनलाल पंवार, बीकानेर

पुण्य स्मरण

भारत-रत्न, कवि-हृदय : अटल जी

❒ गोमाराम जीनगर

बहुमुखी प्रतिभा के धनी अटल बिहारी वाजपेयी भारत के पूर्व प्रधानमंत्री रहे हैं। उनके व्यक्तित्व का केनवास काफी विशाल व विस्तृत रहा है जो केवल भारत में ही नहीं अपितु भारत के बाहर विश्व में भी महत्त्व रखता है। उन्होंने न केवल देश पर शासन किया बल्कि अपने कार्यव्यवहार व वाक्पटुता के बल पर भारत की जनता के दिलों पर भी राज किया। भारतीय जनता उनके भाषणों को सुनने को बेताब रहती थी। बुद्धिजीवी वर्ग एवं विपक्षी सांसद भी उनको सुनने के लिए उत्सुक रहते। वे सरल हृदयी, निष्कपट, ईमानदार व दूर की सोच रखने वाले व्यक्तित्व थे। हमेशा व्यक्तिगत टिप्पणी की बजाय सार्वभौमिक विषयों को प्राथमिकता देते हुए लोकहितैषी, जनकल्याणक, देश के स्वाभिमान को प्राथमिकता देने वाले व अनेकानेक खूबियों से सुसज्जित व्यक्तित्व के धनी थे अटल बिहारी वाजपेयी।

आरम्भिक जीवन :

उत्तर प्रदेश में आगरा जनपद के प्राचीन स्थान बटेश्वर के मूल निवासी पण्डित कृष्ण बिहारी वाजपेयी मध्यप्रदेश की ग्वालियर रियासत में अध्यापक थे। वहीं शिन्दे की छावनी में 25 दिसम्बर सन् 1924 को ब्रह्म मुहूर्त में उनकी सहधर्मिणी कृष्णा वाजपेयी की कोख से अटल जी का जन्म हुआ था। पिता कृष्ण बिहारी वाजपेयी ग्वालियर में अध्यापन कार्य तो करते ही थे इसके अतिरिक्त वे हिन्दी व ब्रज भाषा के सिद्धहस्त कवि भी थे। उनमें काव्य के गुण वंशानुगत परिपाटी से प्राप्त हुए। महात्मा रामचन्द्र वीर द्वारा रचित अमर कृति 'विजय पताका' पढ़कर अटल जी के जीवन की दिशा ही बदल गई। अटल जी की बी.ए. की शिक्षा ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज (वर्तमान में लक्ष्मीबाई कॉलेज) में हुई। छात्र जीवन से वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक बने और तभी से राष्ट्रीय स्तर की वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में भाग लेते हुए ज्ञानवृद्धि कर कानपुर के डी.ए.वी.

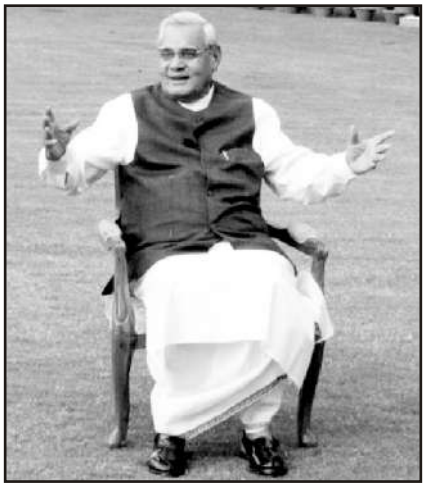

कॉलेज से राजनीति शास्त्र में एम.ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की। अपने पिताजी के साथ-साथ कानपुर में ही एल.एल.बी. की पढ़ाई भी प्रारम्भ की लेकिन उसे बीच में ही विराम देकर पूरी निष्ठा से संघ के कार्य में जुट गए। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी और पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के निर्देशन में राजनीति का पाठ तो पढ़ा ही, साथ-साथ पाञ्चजन्य, राष्ट्रधर्म, दैनिक स्वदेश और वीर अर्जुन आदि राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत अनेक पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन भी कुशलतापूर्वक करते रहे।

कवि आज सुना वह गान रे,
जिससे खुल जाएँ अलस पलक।
नस-नस में जीवन झंकृत हो,
हो अंग-अंग में जोश झलक।

ये-बंधन चिरबंधन
टूटें-फूटें प्रासाद गगनचुम्बी
हम मिलकर हर्ष मना डालें,
हूकें उर की मिट जाएँ सभी।

रे कवि! तू भी स्वरलहरी से,
आज आग में आहुति दे।
और वेग से भभक उठें हम,
हृद्-तंत्री झंकृत कर दे।

कवि के रूप में अटल :

अटल बिहारी वाजपेयी राजनीतिज्ञ होने के साथ-साथ एक कवि भी थे। 'मेरी इक्यावन कविताएँ' अटल जी का प्रसिद्ध काव्यसंग्रह है। बाल्यावस्था से ही पारिवारिक वातावरण साहित्यिक एवं काव्यमय होने के कारण उनकी रगों में काव्य रक्त-रस अनवरत घूमता रहा है। राजनीति के साथ-साथ समष्टि एवं राष्ट्र के प्रति उनकी वैयक्तिक संवेदनशीलता आद्योपान्त प्रकट होती ही रही है। उनके संघर्षमय जीवन, परिवर्तनशील परिस्थितियाँ, राष्ट्रव्यापी आन्दोलन, जेल-जीवन आदि अनेक आयामों के प्रभाव एवं अनुभूति ने काव्य में सदैव ही अभिव्यक्ति पायी। विख्यात गज़ल गायक जगजीत सिंह ने अटल जी की चुनिंदा कविताओं को संगीतबद्ध करके एक एलबम भी निकाला था। अटल जी की प्रमुख प्रकाशित रचनाएँ इस प्रकार हैं:- मृत्यु या हत्या, अमर बलिदान (लोक सभा में अटल जी के वक्तव्यों का संग्रह), कैदी कविराय की कुण्डलियाँ, संसद में तीन दशक, अमर आग है, कुछ लेख: कुछ भाषण, सेक्युलर वाद, राजनीति की रपटीली राहें, बिन्दु-बिन्दु विचार, मेरी इक्यावन कविताएँ (काव्य संग्रह) इत्यादि।

राजनीतिक सफ़र :

वर्ष 1942 में स्वाधीनता के आंदोलन के दौरान वे कुछ समय के लिए जेल में रहने के साथ ही सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में काफ़ी सक्रिय रहे हैं 1951 में जनसंघ के संस्थापक सदस्य बने। जब पहली बार वर्ष 1957 में सांसद बने तो अपने राजनीतिक सफ़र में उन्होंने कई बार माना कि ''वे पंडित नेहरु से काफ़ी प्रभावित हुए।'' पंडित नेहरु ने उनके बारे में कहा था कि ''वे एक प्रतिभाशाली सांसद हैं जिनके राजनीतिक सफ़र पर नज़र रखनी चाहिए।'' संसद सदस्य के रूप में लगभग चार दशक के सफ़र में वे पाँचवीं से लेकर तेरहवीं लोकसभा के सदस्य रहे हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक (पूर्णकालिक कार्यकर्त्ता) के रूप में आजीवन

अविवाहित रहने का संकल्प लेकर नव जीवन प्रारम्भ करने वाले वाजपेयी राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग.) सरकार के पहले प्रधानमंत्री थे, जिन्होंने 24 दलों के गठबंधन के बावजूद गैर काँग्रेसी प्रधानमंत्री पद के 5 साल बिना किसी समस्या के पूरे किए; जो उनकी विराटता व 'सामूहिकता का सम्मान' की मिसाल है।

प्रभावशाली वक्ता, विदेश मंत्री :

आपातकाल (1975-77 ई.) के बाद वे जनता पार्टी के संस्थापक-सदस्यों में से एक बने और मोरारजी देसाई सरकार में लगभग दो साल से अधिक समय के लिए देश के विदेश मंत्री बने। जब भारतीय जनता पार्टी ने वर्ष 1996 में पहली बार सरकार बनाई तो वाजपेयी ने सरकार का नेतृत्व किया और प्रधानमंत्री बने। लेकिन संसद में बहुमत हासिल न कर पाने के कारण सरकार केवल 13 दिन ही चल पाई।

प्रधानमंत्री के रूप में :

प्रधानमंत्री के रूप में वाजपेयी जी पहले 16 मई से 1 जून 1996 तक तथा फिर 19 मार्च 1998 से 22 मई 2004 तक भारत के प्रधानमंत्री रहे। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए.) का नेतृत्व करते हुए मार्च 1998 ई. से 2004 तक, छह साल 64 दिन भारत के प्रधानमंत्री रहे अटल जी को सांसद के रूप में लगभग चार दशक का अनुभव प्राप्त था।

विश्व-मानव के रूप में :

जब वर्ष 1998 में दूसरी बार भारत के प्रधामंत्री बने। इस दौरान पोखरण में मई-1998 में भारत ने दूसरी बार परमाणु बम धमाके किए। इसकी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काफ़ी आलोचना हुई और भारत पर कुछ प्रतिबंध भी लगे लेकिन वाजपेयी ने इन्हें भारत की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए जरूरी बताया। तत्पश्चात् पड़ौसी देश पाकिस्तान से रिश्ते बेहतर बनाने के लिए फरवरी 1999 में एक महत्त्वपूर्ण पहल की और बस यात्रा करते हुए अमृतसर से लाहौर पहुँचे। फलस्वरूप अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर उनकी खासी प्रशंसा हुई। वे विश्व-मानव बन गए। तत्पश्चात जब करगिल में पाकिस्तान की ओर से घुसपैठ हुई तब कड़ा रुख अपनाते हुए उन्होंने सैन्य कार्रवाई का आदेश दिया और कई दिन तक चली कार्रवाई में भारतीय सेना ने घुसपैठियों को खदेड़ दिया। वर्ष 2001 से 2003 तक में वाजपेयी ने फ़िर कश्मीर मुद्दे पर पाकिस्तान के साथ बातचीत की पेशकश रखी और उसके बाद से भारत-पाकिस्तान रिश्ते काफ़ी बेहतर हुए। उन्होंने प्रधानमंत्री रहते हुए चीन से भी संबंध बेहतर बनाने की कोशिश की।

स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना :

भारत के चारों कोनों को सड़क मार्ग से जोड़ने के लिए स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना (अंग्रेजी में- गोल्डन क्वाड्रिलेट्रल प्रोजेक्ट या संक्षेप में जी. क्यू. प्रोजेक्ट) की शुरुआत की गई। इसके अंतर्गत दिल्ली, कलकत्ता, चेन्नई व मुम्बई को राजमार्ग से जोड़ा गया। ऐसा माना जाता है कि अटल जी के शासनकाल में भारत में जितनी सड़कों का निर्माण हुआ इतना केवल शेरशाह सूरी के समय में ही हुआ था। वर्तमान में भारत सरकार ने भी अटल बिहारी वाजपेयी जी के नाम से अनेक योजनाओं का संचालन प्रारम्भ किया है जैसे- ग्राम पंचायत व शहरी क्षेत्र में 'अटल सेवा केन्द्र', 'अटल पेंशन योजना' आदि।

हिन्दी विश्वविद्यालय :

भोपाल में स्थित अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय की 6 जून 2013 को भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने आधारशिला रखी। यह विश्वविद्यालय तकनीकी, चिकित्सा, कला और वाणिज्य से जुड़े विषयों की शिक्षा प्रदान करेगा। इस विश्वविद्यालय का नाम भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी पर रखा गया है। क्योंकि हिंदी भाषा को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। **उल्लेखनीय है कि श्री वाजपेयी संयुक्त राष्ट्र में पहली बार हिंदी में भाषण देकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को नई ऊँचाईयों पर स्थापित करने के लिए जाने जाते हैं। वे राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रबल पक्षधर रहे हैं।**

भारत रत्न :

सामाजिक सरोकार व देश सेवा में संवेदनापूर्वक अहर्निश जीवन खपाने वाले अटल जी को 1992: पद्म विभूषण, 1993: डी-लिट (कानपुर विश्वविद्यालय), 1994: लोकमान्य तिलक पुरस्कार, 1994: श्रेष्ठ सासंद पुरस्कार, 1994: भारत रत्न पंडित गोविंद वल्लभ पंत पुरस्कार, 2015 : डी-लिट् (मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय), 2015 : 'फ्रेंड्स ऑफ बांग्लादेश लिबरेशन वार अवॉर्ड', (बांग्लादेश सरकार द्वारा प्रदत्त), सर्वतोमुखी विकास के लिए किए गए योगदान तथा असाधारण कार्यों के लिए 27 मार्च, 2015 को 'भारत-रत्न' (भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान) से सम्मानित किया गया। 2005 से वे राजनीति से संन्यास ले चुके थे और नई दिल्ली में 6-ए कृष्णामेनन मार्ग स्थित सरकारी आवास में रहते थे।

निधन :

16 अगस्त, 2018 को एक लम्बी बीमारी के बाद अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, दिल्ली में सायं 5:05 बजे अटल जी के निधन का दुःखद समाचार सुनकर गहरा आघात लगा। वे जीवन भर भारतीय राजनीति में सक्रिय रहे। उनके निधन की खबर तेजी से भारत समेत दुनिया भर में फैल गई। पूरे विश्व में शोक की लहर दौड़ पड़ी। केंद्र सरकार ने सात दिन का राष्ट्रीय शोक घोषित कर दिया। वर्तमान राष्ट्रपति, राजनयिक, प्रधानमंत्री से लेकर सांसद, पार्टियों के नेता-कार्यकर्त्ता व आम जनता उनकी अंतिम यात्रा में लाखों की संख्या में सरीक हुए। उनकी दत्तक पुत्री नमिता भट्टाचार्य ने उनको दिनांक 17 अगस्त 2018 को मुखाग्नि दी। उनके निधन पर अमेरिका, चीन, बांग्लादेश, ब्रिटेन, नेपाल और जापान ने दुख जताया। देश भर की अनेकानेक संस्थाओं ने अपने-अपने स्तर पर इस महामानव को अपने-अपने शहरों में श्रद्धांजलि सभाओं का आयोजन कर श्रद्धांजलि दी।

श्रद्धांजलि : यद्यपि आज अटल जी पार्थिव रूप से हमारे बीच में नहीं रहे तथापि उनका सम्पूर्ण जीवन ही युवाओं को प्रेरणा देता रहेगा। जीवन के संघर्षों से बिना घबराए लक्ष्य की ओर बढ़ते जाने की प्रेरणा देने वाले, भारत व भारतीयता को प्रधानता एवं प्रमुखता से निर्भीकतापूर्वक रखने वाले, शालीन व प्रभावशाली ढंग से अपनी बात दूसरों को समझा सकने की सामर्थ्य रखने वाले इस महामानव का स्मरण कर, शिक्षा जगत की ओर से हार्दिक शाब्दिक श्रद्धाजंलि अर्पित करते हुए उनके आदर्शों को जीवन में धारण कर, उनके सपनों का भारत बनाने का संकल्प लेते हैं।

वे भारत के ऐतिहासिक मानस पटल पर हमेशा सूर्य की तरह देदीप्यमान होकर मार्गदर्शन करते रहेंगे। इति...

सम्पादक 'शिविरा'
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो. 9413658894

राष्ट्र-भाषा जीवन्त बने

❒ शशिकान्त द्विवेदी 'आमेटा'

भाषा भाव, विचार एवं अनुभवों को अभिव्यक्त करने का सांकेतिक माध्यम है। सृष्टि के सभी पशु-पक्षी एवं कीट पतंग मनुष्य से प्राचीन हैं- लेकिन प्रगति पथ पर मनुष्य ही अग्रसर हुआ है। आखिर, वह कौनसी शक्ति है जिसके द्वारा मानव जाति ने इतनी प्रगति की है? वह शक्ति भाषा की शक्ति है। विचार तथा भाषा का अटूट का सम्बन्ध है, विचार भाषा को जन्म देते हैं और भाषा विचारों को। भाषा के कारण ही मनुष्य पहचाना जाता है। वरना मनुष्य और पशु में क्या अन्तर होता? भाषा संस्कृति की संजीवनी होती है। भाषा और साहित्य संस्कृति के गौरव हैं। मानव समाज को विधाता की ओर से जो सबसे बड़ा वरदान मिला है, वह भाषा का ही है। भाषा के बिना मानव-समाज की दशा बहुत सोचनीय होती है। भाषा एक प्रकार का स्मृतिकोश है जिससे मनुष्य अपनी विरासत में मिले संकेतों के साथ नवीन संकेतों को शामिल करता है। भाषा के बिना किसी भी संस्कृति, परम्परा या सभ्यता को जीवित नहीं रखा जा सकता। कवि कन्हैयालाल सेठिया के अनुसार-**''भाषा ही वह डोर है जो हमें जोड़ सकती है, अपनी जड़ों से।''**

प्राचीनकाल में भारत की राष्ट्र-भाषा संस्कृत थी। संस्कृत भाषा को सभी भाषाओं की जननी कहा जाता है। इस भाषा में वेद, पुराण, उपनिषद् आदि ग्रन्थ लिखे गए हैं जो हमारी संस्कृति की विरासत है। विरासत की रक्षा के लिए संस्कृत का अध्ययन जरूरी है। संस्कृत विश्व की महान भाषाओं में से एक है। संस्कृत ज्ञान के बिना कालिदास, भवभूति, बाणभट्ट और दण्डी की मूल रचनाओं को नहीं समझा जा सकता। हिन्दी संस्कृत भाषा की वंशजा है। देश, काल और सम्पर्क के अनुसार भाषा में परिवर्तन होता रहता है। उदाहरण के लिए भारत की आदि भाषा वैदिक संस्कृत कालान्तर में संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश आदि रूपों को पार करती हुई आज की हिन्दी बनी है।

हिन्दी का ज्ञान एक महत्त्वपूर्ण धरोहर है, अपनी संस्कृति की पहचान है। यह हमारी प्रथम भाषा भी है तो मातृभाषा भी। जिस भाषा को कोई बच्चा अपनी माता से अनुकरण करके स्वाभाविक रूप से सीखता है, सामान्यतः उस भाषा को ही बच्चे की मातृभाषा कहा जाता है किन्तु यह मातृभाषा का संकुचित अर्थ है। भाषा में अधिक महत्त्व मातृभाषा का होता है। पूरे व्यक्तित्व का विकास इसी मातृभाषा पर आधारित होता है। माता और मातृभूमि के समान मातृ-भाषा भी वन्दनीय है।

हम अपनी मातृभाषा की ताकत को पहचानें। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा था, **उस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए, जो देश के सबसे बड़े हिस्से में बोली जाती है** अर्थात् हिन्दी के सम्बन्ध में सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि हिन्दी हमारी मातृ-भाषा है। हिन्दी भाषा देश की आत्मा है, जो राष्ट्र व समाज अपनी राष्ट्र-भाषा, संस्कृति व साहित्य को संजोकर नहीं रखता, वह कभी भी शक्तिशाली नहीं बन सकता। साहित्य मानव मन की व्याकुलता की अभिव्यक्ति है। भारत के विकास को दृष्टिगत रखते हुए पण्डित जवाहर लाल नेहरु ने हिन्दी के पक्ष का जोरदार समर्थन किया। हिन्दी भाषा की शक्ति पर उन्हें पूर्ण विश्वास था। वे कहा करते थे-**''हिन्दी में जान है, वह जीवित भाषा है। हिन्दी भारत का प्राण तत्व है।''** पण्डित नेहरु हिन्दी भाषा के प्रबल समर्थक और उतने ही अच्छे लेखक थे। उनका कहना था कि वर्तमान परिस्थितियों में केवल हिन्दी ही अखिल भारतीय भाषा के पद की अधिकारिणी हो सकती है-यह निर्विवाद है।

चौदह सितम्बर, हिन्दी दिवस, राजभाषा और राष्ट्रभाषा की उद्घोषणा का दिवस, राष्ट्रीय अस्मिता एवं सम्मान की स्थापना का दिवस। स्वतंत्र भारत के संविधान में भाग 17 के अनुच्छेद 343 (1) में कहा गया है कि संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। हिन्दी को भारत की राजभाषा का संवैधानिक दर्जा प्राप्त है। यह कश्मीर से कन्याकुमारी तक सम्पर्क भाषा के रूप में सर्वमान्य है। इसे संपूर्ण राष्ट्र में बोलते व समझते है। ऐसी भाग्यशालिनी हिन्दी, जिसे हमारे देश की राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया जाना सुखद है-क्यों न दिया जाए, हिन्दी विश्व स्तर की भाषा जो है-ज्ञान-विज्ञान की भाषा है, जन-गण-मन की भाषा है।

विश्व में सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा चीनी है तथा दूसरा स्थान हिन्दी का है।। सुभाषचन्द्र बोस ने कहा था-**''हिन्दी के ज्ञान के अभाव में राष्ट्र गूँगा है। हिन्दी एक प्रभावशाली भाषा है, अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है।''**

अंग्रेजी और चीनी के बाद तीसरी सबसे बड़ी भाषा हिन्दी है। हिन्दी हमारी संघीय भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा, मातृभाषा और सहज सम्पर्क भाषा है। आज के सन्दर्भ में भी डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचार कितने सार्थक प्रतीत होते हैं- **''किसी भी देश की संस्कृति भाषा से ही सुरक्षित रहती है। यदि भारत को एकता के सूत्र में बाँधे रखना है और यहाँ की मिली-जुली संस्कृति का निर्माण करना है तो सभी को हिन्दी भाषा स्वीकार करनी होगी।''** हिन्दी राष्ट्र के भविष्य की नींव है। अतः राष्ट्र की नींव को सुदृढ़ करना हमारा कर्तव्य है।

आजादी से पहले भी हिन्दी 'राष्ट्रभाषा' थी, आज 'राजभाषा' भी है और इनसे भी आगे यह हमारी जनभाषा है। हिन्दी एक जानदार भाषा है... वह जितनी बढ़ेगी, देश का उतना ही नाम होगा। राष्ट्र की अखण्डता और एकता के लिए राष्ट्रभाषा की परम आवश्यकता है। इस सच्चाई को कोई नकार नहीं सकता। कोई भी राष्ट्र अपनी राष्ट्रभाषा के अभाव में क्या पूर्ण स्वाधीन कहलाया जा सकता है? हिन्दी आज विश्व की प्रमुख भाषाओं की पंक्ति में जा पहुँची है। हिन्दी दुनिया की सर्वाधिक प्रचलित भाषाओं में एकमात्र ऐसी भाषा है जिसमें जैसा बोला जाता है, वही लिखा जाता है। अर्थात् हिन्दी में बोलने और लिखने का तरीका का एक ही है। यह हिन्दी की अनूठी विशेषता है। जिस भाषा में गोस्वामी तुलसीदास, रैदास, सूरदास, कबीर, मीरा आदि जैसे कवियों ने कविता की हो, वह अवश्य ही पवित्र है और उसके सामने कोई भाषा नहीं ठहर सकती।

हिन्दी के साहित्य में हमारी प्राचीन संस्कृति निहित है। आजादी के बाद राष्ट्रभाषा का प्रश्न सामने आया। इस पद पर हिन्दी को आसीन होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हिन्दी आज भी विद्यमान है, किन्तु साम्राज्ञी होकर भिखारिन बनी हुई है। यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है, जिस पर गम्भीरता से विचार किया जाना चाहिए। भाषाई आधार पर राज्यों का निर्माण करना भी इसकी दुर्दशा का एक कारण है। हर राज्य भाषा के आधार पर अपने आपको अलग मानने लगा और इसी तरह क्षेत्रीयवाद को बढ़ावा मिला। यही कारण है कि आज भी हम हिन्दी को

राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाने में असमर्थ रहे। पूर्व में जब-जब राष्ट्रभाषा का अभाव था तो देश कई टुकड़ों में बँटा था, क्योंकि उनके मध्य संयोजन की भाषा की स्वीकार्यता का अभाव था, फलतः दूसरी भाषा बोलने वाले लोगों को अपना नहीं समझते थे।

राष्ट्रीय स्तर पर जिस भाषा का प्रयोग होता है, वह राष्ट्रभाषा कही जाती है। एकता की दृष्टि से राष्ट्रभाषा का विकास बहुत आवश्यक है। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का मानना था कि **''हिन्दी का भला तभी सम्भव है जब उसके शब्द भण्डार में दूसरी भाषा के शब्दों को भी बेहिचक शामिल किया जाएगा और अन्य भारतीय भाषाओं के साथ उसके सम्पर्क को बढ़ाया जाए।''** यह बात हिन्दी भाषा की एक संगोष्ठी के दौरान कही गई। उनका कहना था कि हिन्दी के शब्द भण्डार में विदेशी भाषाओं के शब्दों को शामिल करने से कोई हानि नहीं हुई है बल्कि लाभ ही हुआ है। हिन्दी में अन्य भाषाओं (अरबी, फारसी, उर्दू, संस्कृत, अंग्रेजी आदि) के कई शब्द ज्यों के त्यों समाहित हो गए हैं। यह सहज जीवन व्यवहार व व्यापार की सम्पर्क भाषा है। हमें इसके वर्चस्व को बनाए रखना है। शब्द रूप ज्योति यदि मानव के पास न होती तो सब क्षेत्रों में अन्धकार व्याप्त होता। इसकी कल्पना काव्यादर्श में इस प्रकार की गई है।

इदमन्धतमः कृत्सनं जायते भुवनत्रयम्।
यदि शब्दांह्वयं ज्योतिरा संसार न दीप्यते।।

हमारे देश के बहुत बड़े भाग में हिन्दी बोली और समझी जा सकती है, किन्तु इस पर भी उसकी दशा आज दयनीय है। 09 सितम्बर 1949 को राजभाषा का दर्जा देने के विषय में संविधान सभा में हस्ताक्षर किए थे और तब से प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को 'हिन्दी दिवस' मनाने की परम्परा शुरू हुई। बड़ा खेद है कि हम राष्ट्रभाषा के प्रति जागरूक नहीं है। अंग्रेजी भाषा की उपयोगिता को हम समझते हैं, बड़ी अच्छी बात है। देश को स्वतंत्र हुए 7 दशक हो चुके हैं, लेकिन आज भी लोग अंग्रेजी के गीत गाते हैं। देश को स्वतंत्रता तो मिल गई लेकिन स्वभाषा नहीं मिली। जिसके बिना स्वतंत्रता अधूरी है। सन्त विनोबा भावे का कहना था कि- **''मैं दुनिया की सब भाषाओं की इज्ज़त करता हूँ परन्तु मेरे देश में हिन्दी की इज्ज़त न हो यह मैं नहीं सह सकता।''**

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि राष्ट्रभाषा हिन्दी न तो अक्षम है, न असमृद्ध। जरूरत है आज के मनीषी, प्रबुद्धजनों, साहित्यकारों, बुद्धिजीवियों, देशभक्तों की दृढ़ इच्छा शक्ति और अपनी राष्ट्रभाषा के प्रति सम्पूर्ण समर्थन के भाव की। आइए! हम तन, मन और धन से इस पुनीत कार्य में लग जाएँ कि हिन्दी को बिना किसी विरोध के आपसी सद्भाव के आधार पर राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन करना है। यही है हिन्दी, जिसमें सारा हिन्दुस्तान समाया है।

किसी का ज्ञान है हिन्दी, किसी का ध्यान है हिन्दी।
मगर मेरे लिए तो, सारा हिन्दुस्तान है हिन्दी।।

मैं इस बात से असहमत हूँ कि हिन्दी का विकास नहीं हुआ है। हिन्दी लोकप्रिय हो रही है। भारत में भाषाओं की विविधता है जिस पर संकट छाया हुआ है। आज हम हिन्दी को 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भाषा कह सकते हैं। राष्ट्र भाषा हिन्दी ही क्यों? उत्तर यह है कि हिन्दी किसी प्रदेश विशेष की भाषा न होकर समस्त भारत की जनता के सम्पर्क की भाषा है। हिन्दी आरोपण से नहीं, सहज स्वीकार्य रूप से ग्राह्य होनी चाहिए। यही हिन्दी की जीत का मार्ग है। लेकिन हमें भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के इस मत से भी सहमत होना चाहिए।

''निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय के सूल।।
विविध कला, शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार।
सब देशन से लै करहु, भाषा माही प्रचार।।''

प्राध्यापक (सेवानिवृत्त)
फोरेस्ट चौकी के पास, लोहारिया, जिला-बाँसवाड़ा (राज.)-327605
मो: 9460116012

मासिक गीत

यातनाओं से किसी की...

यातनाओं से किसी की भावनाएँ कब मिटी हैं।
कठिन दुर्गम शृंग से क्या प्रबल सरिताएँ रुकी हैं?

क्या सका है रोक कोई शलभ को लौ में जलन से?
च्युत किया क्या यातना ने वीर को कर्त्तव्य पथ से?
लौह दुर्बल द्वार से क्या शक्तियाँ भी रुक सकी हैं?

यातना प्रहलाद ने भी थी सही निज ध्येय पथ पर,
दृढ़ रहा था वीर राणा, ध्येय पर कटिबद्ध होकर,
यातना से भावना तो स्वर्ण-सम उज्ज्वल हुई हैं।।

यातना उस वीर बंदा ने सही हँसते वदन से,
सुत-कलेवर भी खिलाया, न हटा वह वीर प्रण से,
यातना पर यातनाएँ वीर का कुछ कर सकीं हैं?

गुरु-सुतों का क्या किया था याद हैं वे यातनाएँ?
क्या हकीकत का किया था याद वे जलती व्यथाएँ?
दृढ़ हृदय के सामने तो यातनाएँ ही थकी हैं।।

यातनाएँ वह्नि-सम हैं, भावनाएँ स्वर्ण-सम हैं,
यातना यदि शस्त्र है तो भावना भी आत्मसम है,
यातनाओं से सदा ये भावनाएँ दृढ़ हुई हैं।।

यातनाएँ ही मिली थीं कंस से उस देवकी को,
भावनाओं ने दिया था जन्म उन श्रीकृष्ण जी को,
यातना से भावना में शक्तियाँ प्रकटित हुई हैं।।

साभार : **'राष्ट्रवंदना'** पुस्तक से

हर एक दिन - हिन्दी दिवस

❒ सुषमा पचार

भारत की सबसे पुरानी भाषा संस्कृत है, जिसे देववाणी भी कहा जाता है। विद्वानों और मनीषियों ने इसे साहित्यिक भाषा के रूप में व्यवहार में अपनाया। उसी समय लोक भाषाएँ अपना सिर उठाने लगी। भाषा नदी की धारा के समान चंचल होती हैं जो रुकना नहीं चाहती। भाषा समाज को शक्ति प्रदान करती है। अपभ्रंश के विभिन्न रूपों से हिन्दी की उत्पत्ति हुई और हिन्दी संस्कृत की उत्तराधिकारी बनी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा ने हिन्दी को भारत की राजभाषा स्वीकार कर लिया। वर्तमान में हिन्दी अपनी क्षेत्रीय सीमाएँ तोड़ चुकी है, इसका एक प्रभाव है, अपनी प्रकृति है जिसे रोकना उचित नहीं है। हिन्दी राजभाषा बनकर राष्ट्र का गौरव बन गई है। हिन्दी साहित्य के शिरोमणि मुंशी प्रेमचंद जी ने कहा हैः-

''राष्ट्र की बुनियाद राष्ट्र की भाषा है। नदी, पहाड़ और सागर राष्ट्र नहीं बनाते। भाषा ही वो बंधन है जो राष्ट्र को चिरकाल तक एक सूत्र में बाँधे रहती है तथा बिखरने से एवं विभाजित होने से रोकती है।''

आइए जरा जाने कि भारतवर्ष के भाषायी परिदृश्य में विद्वज्जन क्या कहते है... आचार्य क्षितिज मोहन सेन के अनुसार **''हिन्दी विश्व की सरलतम भाषाओं में है।''** सुमित्रानंदन पंत के अनुसार **''हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का स्रोत है।''** डॉ. कामिल बुल्के के अनुसार **''हिन्दी एक अत्यंत शक्तिशाली भाषा है।''** महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार **''हिन्दी के द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।''** लेकिन एक अन्य कवि ने यह भी कहा हैः-

''क्या किया नहीं इस हिन्दी ने
जो आज तिरस्कृत है हिन्दी
अपने घर में होकर भी
आज बहिष्कृत है हिन्दी।''

संवैधानिक तौर पर हिन्दी देश की राजभाषा स्वीकृत हुई किन्तु इसे राष्ट्र भाषा होने का गौरवपूर्ण पद अभी तक प्राप्त न होने के कारण ही 'हिन्दी दिवस' पर सवालिया निशान लगते रहते है। वर्तमान में हिन्दी को न तो राजकाज के कार्यों में स्थान मिल पा रहा है और न ही देश के जनसामान्य में हिन्दी अपने गौरवपूर्ण राष्ट्र भाषा के पद को सुनिश्चित कर पा रही है। उल्टा राष्ट्र भाषा के नाम पर तो बड़ा मुद्दा यह खड़ा हो गया है कि राजभाषा को तो संवैधानिक मान्यता प्राप्त है, राष्ट्र भाषा की तो केवल सिफारिश की गई थी।

देश का अभिजात्य वर्ग 'हिन्दी दिवस' को एक रवायत के रूप में मना कर इतिश्री कर लेता है। ज्यादा से ज्यादा एक पखवाड़ा फिर अंतिम दिन समाप्ति आयोजन को धूमधाम से मनाकर फिर से अपने पुराने ढर्रे पर अंग्रेजी के मोह पाश में बंध जाते हैं। सरकार भी इस दिन एक मोटी रकम खर्च करके यह साबित कर देती है कि उसे भी हिन्दी के अस्तित्व को बनाए रखने की चिंता है। हम में से कुछ लोग यह भी कह सकते हैं कि 'हिन्दी दिवस' हिन्दी भाषा को सशक्त बनाने के लिए मनाया जाता है।

पूरे वर्ष जिस भाषा की उपेक्षा की जाती हो, एक ही दिन में वह सशक्त कैसे हो जाएगी? अगर हिन्दी भाषा इतनी ही सशक्त होती तो उसे याद करने के लिए हमें किसी एक दिन की आवश्यकता नहीं होती। काश हम पूरे वर्ष भर ही हर दिन को 'हिन्दी दिवस' के रूप में मनाते। हो सकता है कि बुद्धिजीवी वर्ग मेरी बात से सहमत न हो। वास्तविकता यह कि हम लोगों के अन्दर एक मत विद्यमान है कि हिन्दी का कोई भविष्य नहीं है। हम हिन्दी में ज्यादा से ज्यादा कार्य करने की तो कोशिश करते हैं लेकिन इस कार्य में नयापन कैसे लाएँ, इस ओर ध्यान नहीं देते। हिन्दी में शोध के लिए तो हम तत्पर रहते है लेकिन वो शोध सार्थक हो, इस ओर हमारा ध्यान कभी नहीं जाता। हिन्दी को कैसे अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाएँ, इस विषय पर सोचने की बजाय 'हिन्दी दिवस' पर कितने अधिक से अधिक कार्यक्रम आयोजित हो, यह सोचा जाता है।

आज हिन्दी जिस मुकाम पर है वहाँ हिन्दी के महत्त्व को बताना आवश्यक ही नहीं निहायत जरूरी है। हिन्दी के प्रति लोगों के मन में सम्मान पैदा करना, उसे जानने की, समझने की ललक पैदा करना तभी संभव हो सकता है जब हिन्दी के साथ कुछ ऐसे प्रयोग किए जाएँ जिससे हिन्दी में लोगों की रुचि बढ़े। हमें अन्य भाषाओं की रचनाओं के हिन्दी अनुवाद पर ध्यान देने की आवश्यकता है। हिन्दी अनुवादित रचनाओं या पाठ्यक्रमों की भाषा बहुत अधिक क्लिष्ट नहीं हो। अनुवाद करते समय केवल उसके शब्दों पर ही नहीं बल्कि भावों पर भी ध्यान देना चाहिए। इसके लिए हमें भले ही दूसरी भाषा के शब्दों को सम्मिलित करना पड़े, दूसरी भाषाओं या बोली के शब्दों को अपनाने से परहेज करना हिन्दी के भविष्य के लिए हानिकारक है। वैसे इस दिशा में पत्रकारिता के द्वारा मीडिया ने काफी हद तक हिन्दी का वर्चस्व बढ़ाया है।

कई विश्वविद्यालय ऐसे हैं जो हिन्दी फिल्मों की भाषा, पटकथा इत्यादि पर शोध करवा रहे हैं। हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए हमें हिन्दी को एक दायरे में बाँध कर नहीं रखना होगा। उसके सारे पट खोल देने होंगे, जिससे समूचे देश के लोग कम से कम हिन्दी समझ और बोल तो सकें। अच्छा हो हम यह तय कर लें कि हिन्दी के लिए कोई एक विशेष दिन नहीं बल्कि हर दिन ही विशेष है। केवल एक दिन भाषण देने से हिन्दी की प्रगति नहीं हो सकती। उसके लिए जरूरी है, हिन्दी के लिए कुछ विशेष करना। हिन्दी की प्रगति का मूल्यांकन आँकड़ों के आधार पर नहीं किया जाकर इस बात पर किया जा सकता है कि हिन्दी के लिए कितने लोगों के मन में सम्मान है। भविष्य किसी भी भाषा का नहीं होता, उसका भविष्य हम बनाते हैं। यह हमारे हाथ में है कि भविष्य में हम केवल एक दिन ही 'हिन्दी दिवस' के रूप में मनाएँ या वर्ष के 365 दिन हिन्दी के लिए ऐसा कार्य करें कि प्रत्येक दिन 'हिन्दी दिवस' लगे।

हिन्दी में सोचें सभी, हिन्दी में संकल्प
अंग्रेजी का भी यहाँ हिन्दी बने विकल्प।
हिन्दी बने विकल्प सभी हिन्दी में लिखें,
अल्प ज्ञान जिनका वे सभी हिन्दी सीखें।
हिन्दी में लिखना-पढ़ना सचमुच है आसान,
करें हिन्दी पर नाज, देश की यही है शान।

आइए, हम यह संकल्प लें कि हम स्वाभिमान के साथ हिन्दी में काम करेंगे और हर दिवस को 'हिन्दी दिवस' के रूप में मनाएँगे।

व्याख्याता, राजकीय उच्च मा. वि.
बख्तावरपुरा-झुंझुनूं **मोः 9413181455**

पावन बलिदान का प्रतीक - खेजड़ली गाँव

❒ डॉ. ओमप्रकाश बिश्नोई

भारत का इतिहास शहीदों के बलिदान से भरा हुआ है। लेकिन 'खेजड़ली बलिदान' पूरे विश्व में अद्वितीय, अभूतपूर्व व अनोखा बलिदान है। सोलहवीं शताब्दी से प्रारम्भ होकर आज वैज्ञानिक युग की इक्कीसवीं शताब्दी तक हरे वृक्षों और जीवों की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति चढ़ा देने के लिए विश्वविख्यात बिश्नोई पंथ के अनुयायियों का इतिहास वन एवं वन्य प्राणियों की रक्षार्थ व्यक्तिगत एवं सामूहिक आत्मबलिदान से भरा हुआ है।

बिश्नोई पंथ की स्थापना श्री गुरु जाम्भोजी ने सन् 1485 (सवंत् 1542) में राजस्थान के बीकानेर जिले की नोखा तहसील में समराथल नामक स्थान पर 'पाह' (अभिमंत्रित जल) पिलाकर 29 नियमों की आचार संहिता प्रदान कर की। 29 नियमों का पालन करने वाले व विष्णु का जाप करने वाले बिश्नोई कहलाए। इन उनतीस नियमों में एक नियम है:-

'जीव दया पालणी, रूंख लीलो नहीं घावे'

अर्थात् हरे वृक्षों की रक्षा व जीवों पर दया करना। यह नियम बिश्नोइयों ने अपने दैनिक जीवन में कुछ इस तरह अंगीकार कर लिया है कि वृक्ष तथा जीव रक्षा में आत्म बलिदान तक कर देना बिश्नोइयों की आन-बान-शान और पहचान बन गया है।

राजस्थान राज्य के जोधपुर से लगभग 30 किमी. दूर खेजड़ली गाँव में खेजड़ी नामक पेड़ की रक्षार्थ सन् 1730 (विक्रम संवत् 1787) में 69 महिलाएँ एवं 294 पुरुष कुल 363 बिश्नोई स्त्री-पुरुष ने अपना बलिदान दिया। विक्रम संवत् 1787 भादवा सुदी दशमी को तत्कालीन जोधपुर के महाराजा अभय सिंह राठौड़ को अपने किले के निर्माण हेतु चूना पकाने के लिए लकड़ियों की आवश्यकता पड़ी। महाराजा अभयसिंह राठौड़ के मंत्री गिरधरदास भंडारी सैनिकों व कर्मचारियों को लेकर खेजड़ली गाँव पहुँचा, क्योंकि इस गाँव में प्रत्येक खेत में बहुतायत में खेजड़ी के वृक्ष थे। गाँव में अमृता देवी बिश्नोई को जब इसका पता लगा तो वह दौड़कर खेत में पहुँची और खेजड़ी काटने से मना किया। अमृता देवी के मना करने के बावजूद सैनिक पेड़ काटने लगे तो श्री गुरु जाम्भोजी की

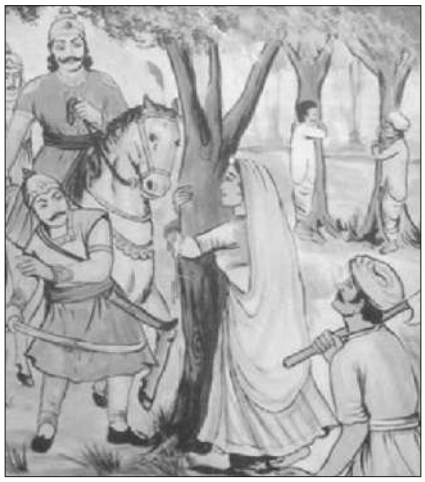

परमभक्त, धर्मपरायण एवं साहसी नारी अमृता देवी बिश्नोई **'सिर साटे रूंख रहे, तो भी सस्तो जाण'** का मूल मंत्र बोलते हुए पेड़ों से लिपट गई। सत्ता मद में चूर सैनिकों ने अमृता देवी की गर्दन व हाथ काट डाले, इसके बाद अमृता देवी की तीनों पुत्रियाँ आसी, रतनी, भागी और उनके पति रामोजी स्वयं खेजड़ी के पेड़ के चिपक गए और सैनिकों द्वारा इनको भी काट दिया गया।

इस घटना की खबर जोधपुर जिले के आसपास 84 गाँवों में भिजवाई और देखते ही देखते अपार जनसमुदाय उमड़ गया। महिलाएँ व पुरुष खेजड़ी के हरे वृक्षों के चिपकते गए और राजा के कारिन्दों ने इन्सानों पर कुल्हाड़ियाँ चलाना शुरू कर दिया। एक-एक करके 363 बिश्नोई स्त्री-पुरुष शहीद हो गए, परन्तु हरे वृक्ष नहीं काटने दिए। अहिंसक बिश्नोइयों के आत्मबलिदान के आगे मारवाड़ की राज सत्ता को झुकना पड़ा। स्वयं राजा अभयसिंह ने खेजड़ली गाँव जाकर क्षमा याचना की और राजाज्ञा जारी करवायी कि बिश्नोई ग्रामों में कोई भी व्यक्ति हरे वृक्ष नहीं काटेगा। आज भी बिश्नोई बाहुल्य क्षेत्र वनों और वन्य प्राणियों से आच्छादित है तथा बिश्नोइयों के गाँव में हरे वृक्ष आज भी नहीं काटे जाते है।

'शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर वर्ष मेले'

'खेजड़ली शहीदी दिवस मेला' उन वीर-वीरांगनाओं की पावन स्मृति में हर वर्ष भादो सुदी दशमी को खेजड़ली गाँव में भरता है। राष्ट्रीय स्तर पर 'शहीद अमृतादेवी बिश्नोई पर्यावरण पुरस्कार' की स्थापना कर इसे विश्व स्तर की एक धरोहर एवं प्रेरक पहचान प्रदान की गई है। बलिदान देने वाले गुरु जाम्भोजी के अनुयायियों की स्मृति में हजारों लोग मेले में शहीदों को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं तथा प्रकृति व पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लेते हैं।

इस प्रकार खेजड़ली गाँव एक तीर्थ स्थल है, जहाँ 363 स्त्री-पुरुषों ने मिल-जुल कर वृक्षों की रक्षार्थ अपना रक्त बहाया उन सभी शहीदों को कोटि-कोटि नमन।

प्रधानाचार्य
128, कांता खतूरिया कॉलोनी, बीकानेर-334003
मो: 9829987479

समर्पण

❒ मंगलेश सोलंकी

नन्ही सी कली
अध खिली खिली
हो समर्पित मधुकर के
आलिंगन से
मधुर मधुर अपने
मधुरस को
सस्नेह सपर्पित कर देती
प्यासी धरा का
अतृप्त मन जब
किसी समर्पण को तरसता है
अब अम्बर का सीना चीर
शीतल मेह बरसता है
तिमिर से लड़ लड़कर
बाती सारी रैन जलती है
पर दीप को समर्पित बाती
यश दीपक को दे जाती है।
समर्पण ही त्याग है
तो समर्पण ही आस
समर्पण ही प्रेम और
समर्पण ही उपवास
समर्पण ही साधना और
समर्पण ही विश्वास।

अध्यापिका
गली नं. 2 रामपुरा बस्ती
लालगढ़-बीकानेर-334001
मो: 9460269575

शैक्षिक चिन्तन

व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का निर्माता - शिक्षक

❒ विपिन चन्द्र

भारतवर्ष अपनी उदात्त संस्कृति, सुसंस्कार तथा गौरवशाली इतिहास के लिए सारे विश्व में प्रसिद्ध है। अपने उदात्त जीवन मूल्यों तथा जीवन व्यवहार एवं आचरण के कारण ही भारत विश्व गुरु कहलाया तथा भारत को लोगों ने देवी देवताओं का देश कहा। भारतवर्ष के प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में तो जैसे सद्गुणों का समुच्चय ही था इसीलिए विश्व के अनेक यात्री तथा विद्वान जो भारतवर्ष आए उन्होंने भारतीय जनता का व्यवहार देखकर कहा कि अगर दुनिया में कहीं स्वर्ग है तो वह यहीं पर है और अगर देवताओं का साक्षात स्वरूप होता होगा तो वह भारतीय की तरह ही होता होगा। जिससे प्रभावित होकर उनके सहज उद्गार निकले कि भारत तो वास्तव में ही ईश्वर का देश है। यथा–

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वयं स्वयं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।

भारतवर्ष का जन–जन इस प्रकार का आचरण सहज ही करता था जो विश्व के लिए आश्चर्यजनक था यथा–

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।

हर भारतीय को समाज, राष्ट्र तथा विश्व को देखने की एक विशिष्ट दृष्टि हमारे ऋषि, मुनि, संतों एवं गुरुओं से प्राप्त हुई है। यथा–

मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्।
आत्मवत्सर्वभूतेषु यः पश्यति सः पंडितः।

भारतीय समाज को इतनी व्यापक दृष्टि, जो समग्र विश्व का चिंतन यहाँ तक कि चराचर जगत का चिंतन करती है, यह शिक्षा, यह संस्कार, यह प्रेरणा उसे कहाँ से प्राप्त हुई, यह दृष्टि उसे किसने दी। हम इसका गहराई से समग्र चिंतन–मनन एवं अध्ययन करते हैं तो इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि इसका मूल कारण भारत की गुरु एवं गुरुकुल परंपरा है जो व्यक्ति का सर्वांगीण विकास कर उसे एक परिपूर्ण मानव बनाती है। यह गुरुओं के शिक्षा संस्कार का ही परिणाम था जो नर से नारायण बनाने का मार्ग प्रशस्त करता है। आप कल्पना कीजिए, एक गुरु अपने शिष्य को कितना पढ़ाता होगा कि उसकी शिक्षा पूर्ण करने के बाद गुरु उससे कहता है–

''जाओ वत्स तुम्हारी शिक्षा पूर्ण हुई।'' शिष्य पूछता है, ''गुरुदेव आपकी गुरुदक्षिणा बताइए।'' गुरु कुछ भी लेने से मना कर देते हैं परंतु शिष्य के आग्रह पर गुरुदेव कहते हैं, ''वत्स अगर मैंने तुम्हें पूर्ण शिक्षा दी है तथा तुमने मन से ग्रहण की है तो इसका प्रमाण मेरी गुरु दक्षिणा होगी।''

वह उनसे पूछता है ''आदेश गुरुदेव! पर मैं इसे कैसे प्रमाणित करूँ?'' गुरुदेव बोलते हैं, ''वत्स जाओ, कोई ऐसा अक्षर ढूँढ़ कर लाओ जिसका कोई मंत्र न बनता हो, कोई ऐसी वनस्पति लाओ जिसका कोई औषधीय गुण न हो, ऐसा कोई व्यक्ति लाओ जिसका कोई उपयोग न हो।''

एक गुरु को अपनी शिक्षा पर कितना विश्वास है तथा कैसा होगा वह शोधार्थी शिष्य जिसने अपना संपूर्ण समय इस शोधकार्य में लगाकर अंततः इस निष्कर्ष के साथ गुरु के पास पहुँचता है कि–

अमंत्रमक्षरं नास्ति नास्ति मूलमनौषधम्।
अयोग्यः पुरुषो नास्ति योजकस्तत्र दुर्लभः।

है न गजब की बात। कैसा तो वह गुरु होगा तथा कैसा वह शिष्य। दोनों ही अद्वितीय, अलौकिक तथा अद्भुत। यह है एक भारतीय गुरु अथवा शिक्षक का व्यक्ति निर्माण।

भारतीय गुरुओं की इसी महान दृष्टि तथा शिक्षा, संस्कार एवं साधना के कारण भारतवर्ष एक अद्वितीय गौरवशाली राष्ट्र की छवि के रूप में दुनिया में स्थापित हो पाया एवं भारतीय समाज ने भी ऐसे गुरुओं के प्रति श्रद्धावनत होते हुए सहज ही कहा–

ध्यान मूलं गुरुमूर्ति पूजा मूलं गुरु पदम्।
मंत्र मूलं गुरुः वाक्यं मोक्ष मूलं गुरु कृपा।

गुरु अद्वितीय है, अलौकिक है। उसका समाज, राष्ट्र तथा व्यक्ति के निर्माण में अद्भुत, अद्वितीय तथा अपरिमित योगदान है।

फिर समाज अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने से वंचित क्यों रहे..? फिर वह सहज ही कह उठता है–

सकल भूमि कागज करूं, लेखनी सब बनराय।
सात समुद्र की मसि करूं, गुरु गुण लिखा न जाए।

कबीर दास जी महाराज तो यहाँ तक कहते हैं कि-

कबिरा हरि के रूठते, गुरु के सरने जाय।
कह कबीर गुरु रूठते, हरि नहीं होत सहाय।

काल, समय, परिस्थिति के साथ लौकिक स्वरूप में बदलाव आना स्वाभाविक है परंतु मूल भाव, दृष्टि एवं चेतना में परिवर्तन नहीं होता।

इसी कारण प्राचीन गुरु का स्थान, स्वरूप, भूमिका तथा उत्तरदायित्व आज के शिक्षक के ऊपर सहज ही आ पड़ा है। यह आज के शिक्षक को स्वीकार करना होगा,आज भी शिक्षक समाज का भारतवर्ष में सबसे अधिक सम्मान है। बड़े से बड़े अधिकारी वर्ग के, लोग पैर नहीं छूते परंतु एक शिक्षक के सामने समाज सहज ही नतमस्तक हो जाता है। आज की युवा पीढ़ी कल के भारत का भविष्य है, अतः आज के विद्यार्थियों में अगर ठीक-ठीक संस्कारों का बीजारोपण शिक्षा के साथ हुआ तो हमें एक ऐसी अद्भुत पीढ़ी मिलेगी जो शिक्षित तो होगी ही साथ ही संस्कारों से भी अभिसिक्त होगी जिसकी इस समय राष्ट्र को सबसे अधिक आवश्यकता है। योग्य संस्कारित नागरिकों द्वारा समाज एवं राष्ट्र की समग्र समस्याओं का समूल उच्चाटन संभव होगा तथा एक स्वस्थ, समर्थ, नेक शिक्षित संस्कारित राष्ट्र के रूप में भारत पुनः स्थापित होगा। मैं मानता हूँ यह सबसे बड़ा रचनात्मक कार्य होगा वर्तमान युग एवं राष्ट्र के लिए।

व्यक्ति निर्माण से समाज निर्माण तथा समाज निर्माण से राष्ट्र निर्माण इससे बड़ा रचनात्मक योगदान दूसरा कोई हो ही नहीं सकता और यह उत्तरदायित्व आज के शिक्षक वर्ग पर है। चाणक्य ने कहा है कि-

''शिक्षक कभी साधारण नहीं होता राजन्! प्रलय और निर्माण उसकी गोद में खेलते हैं।''

एक बार एक भारतीय शैक्षिक प्रतिनिधिमंडल अमेरिका गया था उसमें डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन भी थे उन्होंने अमेरिकी राष्ट्रपति जॉन कैनेडी से पूछा कि आपके नागरिक इतने राष्ट्रभक्त तथा अनुशासित कैसे होते हैं तो अमेरिकी राष्ट्रपति का सहज जवाब था, हमारा शिक्षक जब क्लास रूम में पढ़ा रहा होता है तो वह अपने हर एक छात्र में अमेरिका के भविष्य का तथा अपने सपनों का राष्ट्रपति देखता है। यही कारण है कि वह एक विशिष्ट नागरिक बनाने में सक्षम हो पाता है।

अगर भारतीय शिक्षक समाज यह निश्चय कर लें कि आज भी वह ग्रामीण-शहरी समाज तथा छात्रों का आदर्श है। उसकी बात सभी ध्यान से सुनते तथा मानते हैं। उन्होंने अगर सामाजिक सहभाग से समाज परिवर्तन करने का निश्चय कर लिया, उसी अनुरूप इस राष्ट्र के छात्रों को शिक्षित तथा संस्कारित करने में संकल्पपूर्वक अपना उत्तरदायित्व निभाया और प्रत्येक स्कूल, ग्राम एवं मोहल्ले को ही एक आदर्श भारत का स्वरूप मानकर उसी के जैसा देश खड़ा करने में अपनी सक्रिय मनोयोगपूर्वक भूमिका निभाई तो मुझे लगता है कि अतिशीघ्र ही वह संपूर्ण समाज को परिवर्तन करने में सहज ही समर्थ होगा। जिससे एक बहुत बड़ा चमत्कार हो सकता है और इसका परिणाम यह होगा कि निश्चित तौर पर भारत पुनः अपने उसी गौरव संपन्न वैभवशाली स्वरूप के साथ विश्व गुरु की भूमिका में पुनः खड़ा हो जाएगा तथा पूरी क्षमता के साथ भारत माता पुनः विश्व का मार्गदर्शन करने में सक्षम हो पाएँगी।

जिसका आधार होगा इस राष्ट्र का शिक्षक-समाज और यह कार्य तथा उत्तरदायित्व शिक्षक-समाज पर है क्योंकि किसी भी राष्ट्र के गुणवत्ता तथा महानता का मूल आधार वहाँ का नागरिक होता है और इस शिक्षित-संस्कारित नागरिक तथा उसके कारण एक आदर्शसमाज एवं एक समुन्नत राष्ट्र का निर्माण तो हो ही जाएगा।

परन्तु उस नागरिक के निर्माण की भूमिका शिक्षक-समाज पर है। जिसके बारे में यह राष्ट्र कहता है-

गुरु गोविंद दोऊ खडे काके लागूं पाय,
बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो मिलाय।

तो कहीं समाज सहज ही उद्घाटित कर उठता है-

यह तन विष की बेलरी गुरु अमृत की खान,
शीश दिए जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान।

और उस गुरु का वर्तमान मूर्तिमान प्रतिबिंब है आज का शिक्षक। इसीलिए मैं कहता हूँ शिक्षक ही है समाज एवं राष्ट्र का निर्माता।

'मधुकर भवन', बी-19,
न्यू कॉलोनी, जयपुर
मो: 94132 57750

साधना से सब सधे

❒ साँवलाराम नामा

पाब्लो पिकासो बीसवीं सदी के सबसे चर्चित, विवादास्पद और साथ ही विख्यात, समृद्ध चित्रकार थे। उनकी एक पेंटिंग 'वुमन ऑफ अल्जीयर्स' 2015 में 18 करोड़ डॉलर में बिकी थी, जो अब तक का एक रिकॉर्ड है। पिकासो 91 वर्ष, यानी 33,403 दिनों तक जीवित रहे।

अपने जीवनकाल में उन्होंने 26,075 कलाकृतियाँ रची। यानी देखा जाए, तो बीस वर्ष का होने के पश्चात् मृत्युपर्यन्त हर रोज एक कलाकृति वे 71 वर्ष तक लगातार स्तरीय कलाकृतियाँ रचते रहे।

एक बार एक महिला ने पिकासो से ऑटोग्राफ माँगा, तो उन्होंने कागज पर फटाफट एक चित्र बनाकर दे दिया।

महिला चित्र देख कर दंग रह गई बोली 'वाह आप तो पाँच मिनिट में इतना बढ़िया चित्र कैसे बना लेते हैं?'

उन्होंने जवाब दिया, 'पाँच मिनिट में कैसे बनाना है, यह सीखने में मुझे पचास साल लग गए।'

संदेश यह है कि.....

प्रतिभा का विकल्प तो हो सकता है, परन्तु कड़ी मेहनत और निरन्तरता का कोई विकल्प नहीं है। पिकासो जैसे जन्मजात प्रतिभाशाली भी मशहूर और अमीर तभी होते हैं, जब वे ऐसा करते हैं। कामयाबी के लिए ये दोनों अनिवार्य है। कवि का भी कहना है-

दीन-दुखियों का हम आधार बनें,
हर जीवन का सुन्दर मील बनें।
सरिता-सी कलकल धार बनें,
मंजिल की राह कर्मठता से आसान बनें।।

व्याख्याता (से.नि.)
सदर बाजार रोड, बड़ा चौराहा
भीनमाल-343029 (जालोर)
मो: 9587848485

शिक्षक दिवस : परिकल्पना

❒ सुषमा भाकर

प्राचीन समय में आचार्यों द्वारा शिष्यों को आश्रमों में शिक्षा दी जाती थी। शिष्य आचार्य का अनुसरण करते हुए अपने जीवन का एक भाग (25 वर्ष) शिक्षा ग्रहण करने में व्यतीत करता था। शिष्य आचार्य को गुरु के रूप में धारण करके उनके बताए हुए मार्ग पर चलता था। शिष्य गुरु के प्रति वचनबद्ध होता था। प्राकृतिक वातावरण में घर से दूर गुरु के सान्निध्य में ही शिक्षा ग्रहण करता था। उच्च आदर्शों और अच्छे संस्कारों की नींव यहाँ से पड़ती थी। मध्यकाल तक आते-आते विदेशी आक्रांताओं के आक्रमण होने लगे। महिलाएँ घर की चार दीवारी में पर्दा प्रथा में सिमट गई।

अंग्रेज लोग अपनी शिक्षा नीति लेकर आए। अंग्रेजी सभ्यता की छाया भारतीय जनता पर पड़ने लगी। स्थान, समय और पाठ्यक्रम निर्धारित हुए, स्वार्थपूर्ण शिक्षा दी जाने लगी। भारतीय लोग अकर्मठ होने लगे। भारतीय जनता का दम घुटने लगा तो देश की आजादी के लिए क्राँति की गूँज उठने लगी। अनेक बलिदानों और लम्बे संघर्ष के बाद देश आजाद हुआ। एक सुदृढ़ शासन व्यवस्था के लिए शिक्षा पर मंथन होने लगा। शिक्षा देने के लिए अच्छे शिक्षकों की आवश्यकता महसूस हुई। ऐसे में एक आदर्श शिक्षक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्ण भारतीय संस्कृति के संवाहक, प्रख्यात शिक्षाविद्, दार्शनिक और आस्थावान हिन्दु विचारक, जिनका जन्म 5 सितम्बर 1888 को तमिलनाडू के तिरूमनी गाँव में हुआ था, वे प्रसिद्ध शिक्षक थे। यही वजह है कि 5 सितम्बर को हर वर्ष उनके जन्मदिन को 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाते हैं। बीसवीं सदी के विद्वानों में उनका नाम सबसे ऊपर है। वे पश्चिमी और भारतीय सभ्यताओं में हिन्दु धर्म को फैलाना चाहते थे।

शिक्षक को गुरु का दर्जा दिया गया। गुरु शब्द का विशाल अर्थ है। गुरु मतलब महान्। अब सवाल उठता है कि महान् कैसे?

कबीरदास जी ने वर्षों पहले गुरु की महानता का बखान करते हुए कहा था कि-

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काकै लागूं पांय।
बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताय।।

वेदों में भी कहा गया है कि-

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

तो इससे पता चलता है कि गुरु का समाज में क्या स्थान है। किसी भी शिक्षक को इतनी बड़ी उपाधि यूँ ही तो नहीं मिल जाती। कितनी सारी जिम्मेदारी और कितने सारे गुणों की आवश्यकता होती है, महान् कहलाने के लिए। समाज ने शिक्षक को इतना ऊँचा पद दिया है तो वह उससे कुछ अपेक्षाएँ भी तो रखता होगा। गुरु का सान्निध्य ही एक ऐसा स्थान है जहाँ पर समाज अपने लाडलों को अकेला छोड़कर निश्चित हो जाता है। आज के इस घोर कलयुग में अपनी लाडली को शिक्षक के विश्वास भरोसे ही विद्यालय भेजा जाता है।

अंग्रेजी के टीचर (Teacher) शब्द के प्रत्येक वर्ण का अपना एक अर्थ है-

T - Tactful
E - Explorer
A - Active
C - Co-ordinative
H - Helpful
E - Effective
R - Responsible

शिक्षक को गुरु की महिमा से मंडित किया गया है। तो उसमें निम्नांकित गुण वांछनीय है-

1. विषय का ज्ञान 2. संयम
3. बौद्धिक जिज्ञासा 4. आत्मविश्वास
5. सहानुभूति 6. सजगता
7. योजनाकार 8. जागरूकता
9. परामर्शदाता 10. परिपक्वता
11. सामुदायिक भागीदारी
12. संगठन 13. दूरदर्शिता
14. सन्दर्भ 15. लक्ष्य प्राप्ति
16. उत्सुकता

दो तरह के होते हैं शिक्षक, एक वह जो शिष्य को इतना भयभीत कर देता है कि वह हिल न सके और दूसरा वो जो शिष्य को पीछे से थोड़ा-सा थपथपा देता है और वह आसमान छू लेता है।

पिछले कुछ समय से पत्र-पत्रिकाओं में पढ़कर, रेडियो-दूरदर्शन पर देख-सुनकर ऐसा लगा कि गुरु की उपमा पर कुछ कीचड़-सा उछल रहा है। गुरु की गरिमा धूमिल हो रही है। ऐसी क्या बात रही होगी कि जो समाज गुरु को आदर की दृष्टि से देखता था वह इतना विपरीत सोचने लग गया?

आइये! हम आज डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिन को 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाते हुए एक शिक्षक होने के नाते शिक्षक की गरिमा को धूमिल होने से बचाने का प्रयास करते हुए वचनबद्ध होते हैं कि एक बार फिर समाज की अपेक्षाओं पर खरा उतरें। समाज द्वारा दिए गए कच्चे माल (शिष्य) को एक कुशल इंजीनियर की भाँति अपने दिमाग, संस्कार और भावरूपी हथौड़े की सहज चोट से गुणवत्तापूर्ण माल के रूप में तैयार करके; समाज रूपी बाजार में उतारकर; परखने के लिए उसकी कीमत लगाने की हैसियत देखते हैं कि शिक्षक (गुरु) द्वारा निर्मित सुड़ौल माल समाज की आवश्यकताओं की कितनी पूर्ति करता है? वह सुदृढ़, सुडौल, शालीन और संस्कारी समाज की नाव को कितनी कुशलता से पार लगाता है? दूर बहुत दूर तक दृष्टि दौड़ाते हैं।

एक बार फिर से गुरु की महिमा को बरकरार रखते हुए अपने गुणों की शालीन छाप छोड़ते हुए समाज का विश्वास जीतने का सफल प्रयास करते हैं।

''सभी कठिन कार्यों में, एक जो सबसे कठिन है, वो है एक अच्छा शिक्षक बनना।''

'ज्ञानी के मुख से झरे, सदा ज्ञान की बात।
हर एक पंखुड़ी फूल, खुशबू की सौगात।।'

वरिष्ठ अध्यापिका
राजकीय आ.उ.मा.वि. भगतपुरा,
तहसील-संगरिया (हनुमानगढ़)
मो: 9461079671

मूल्यपरक शिक्षा के निहितार्थ

❒ ओम प्रकाश सारस्वत

शिक्षा क्या कार्य करती है अथवा शिक्षा का क्या महत्त्व है? इन प्रश्नों को लेकर अनादिकाल से बहस चलती रही है। चूंकि शिक्षा एक अदृश्य निवेश है, अतः अन्य भौतिक उपलब्धियों की तरह ''शिक्षा से यह प्राप्त हुआ'' कहकर कुछ दिखाया नहीं जा सकता। शिक्षा दरअसल एक प्रभाव है जिसे अहसास एवं अनुभव तो किया जा सकता है मगर देखा व दिखाया नहीं जा सकता। खैर इस बहस के निष्कर्ष स्वरूप प्रायः संक्षेप में कहा जाता है कि शिक्षा का कार्य व्यक्ति का निर्माण करना है। शिक्षा व्यक्ति में जीवन कौशल का विकास करती है, इसलिए वह महत्त्वपूर्ण है।

व्यक्ति निर्माण से यहाँ आशय व्यक्ति के चारित्रिक एवं व्यावसायिक दोनों पक्षों को सुदृढ़ बनाना है। इसमें व्यावसायिक पक्ष को देखा जा सकता है जबकि चारित्रिक पक्ष को अहसासा जा सकता है। व्यावसायिक पक्ष जहाँ उसे धन अर्जन की काबिलियत एवं क्षमता प्रदान करता है जिससे समाज में उसे सुखी जीवन जीने का अवसर मिलता है, वहीं चारित्रिक एवं नैतिक पक्ष उसे यश-प्रतिष्ठा तथा मान-सम्मान प्रदान करता है। हमारे यहाँ भौतिकवादी संस्कृति में विश्वास न करके चरित्रवादी संस्कृति को मान्यता दी गई है। धन सम्पदा को यहाँ नगण्य (Nothing) एवं चरित्र को सब कुछ (Every thing) माना गया है। कहा गया है कि

If money is lost, nothing is lost. If Health is lost, something is lost, and If CHARACTER is lost, everything is lost.

(अर्थात् यदि आपका धन नष्ट हो गया है तो समझो कुछ नहीं गया, यदि आपका स्वास्थ्य खराब हो गया है तो समझो कुछ नुकसान हो गया है और यदि आपका चरित्र नष्ट हो गया है तो समझ लो कि आपका सब कुछ नष्ट हो गया है और आप कंगाल हो गए हैं।)

इस प्रकार शिक्षा का प्राथमिक कार्य (Prime Function) बच्चों में उत्तम संस्कार गढ़ना है; उसके चारित्रिक पक्ष को मजबूती प्रदान करना है ताकि वह बड़ा होकर एक श्रेष्ठ नागरिक बन सके जिसके हृदय में देशभक्ति,

विश्व बंधुत्व, परोपकार जैसे उत्तम गुण सहज़ ही में दिखाई दें। वस्तुतः पाटी-पोथी के माध्यम से प्रदान की जाने वाली शिक्षा व्यक्तित्व निर्माण करने वाली शिक्षा का एक तरह से आकलित (Calculated) स्वरूप है जिसमें उत्तीर्ण-अनुत्तीर्ण होना प्लस-माइनस है और जिसके सबूत उपाधियाँ एवं प्रमाण-पत्र कहे जा सकते हैं। ये प्रमाण-पत्र एवं उपाधियाँ महज जीवन के रणक्षेत्र में प्रवेश दिलाने वाली परीक्षा के एडमिशन कार्ड हैं। ये परीक्षा में पास होने की गारंटी नहीं देते।

पढ़ाई पूरी कर वास्तविक जीवन क्षेत्र में उतरने पर इन प्रमाण-पत्र एवं उपाधियों का काम पूरा हो जाता है। कुल मिलाकर इन मालीपन्नों की गरज रोजगार मिलने तक ही रहती है। रोजगार मिल जाने के पश्चात् बिरले ही होंगे जो इन्हें सम्भालते-सहलाते हों। जिनकी 10-15 वर्ष की नौकरी हो गई है और जिन्हें अब नौकरी बदलकर नई नौकरी की हूँस नहीं है, जरा उनसे संवाद करके देखिए। कोई बिरला ही मिलेगा जो यह कहे कि वह निश्चित अंतराल से अपने प्रमाण-पत्र एवं डिग्रियों की फाइल देखता है। इतना तो रहा दूर, दीपावली के अवसर पर जब घर के तमाम सामान की साफ सफाई की जाती है, उन्हें सम्भाला जाता है, तब भी कदाचित हम में से शायद ही कोई इन उपाधियों एवं प्रमाण-पत्रों को याद करता होगा। एक बार शिक्षा विभाग में कार्मिकों से सम्बन्धी दस्तावेजों की आवश्यकता पड़ी थी, तब हमारे वरिष्ठ कार्मिकों (जिनमें अधिकारीगण भी थे) के दसवीं, बारहवीं, बी.ए. आदि के दस्तावेज सहज ही में मिल नहीं पाए थे।

कहने का आशय पुनः यही है कि वास्तविक जीवन क्षेत्र में स्वयं को स्थापित करने के लिए ये दस्तावेज महज गेट पास की मानिन्द होते हैं। बस इस कार्य के साथ इनकी भूमिका समाप्त हो जाती है। वास्तविक रणक्षेत्र में आपकी कुशलता, निष्ठा, प्रामाणिकता एवं समर्पण भाव आपको यश, कीर्ति एवं पहचान दिलाते हैं। महात्मा गाँधी ने कहा था, ''जो कुछ विद्यालयों में मैंने पुस्तकों से पढ़ा, उसे भूल जाने के बाद जो मेरे में बचा रहा वही शिक्षा है। महात्मा जी के इस कथन को एक थ्री व्हीलर ऑटो रिक्शा को स्टार्ट करने की प्रक्रिया से इसकी साम्यता बिठाकर समझने का प्रयास करते हैं। सामान्यः थ्री व्हीलर ऑटो रिक्शा का ड्राइवर एक डोरी रखता है जिसे ऑटो के इंजन के साथ की घिरनी पर लपेट कर वह उसे जोर से खींचता है। इस प्रक्रिया में ऑटो गाड़ी का इंजन स्टार्ट हो जाता है। स्टार्ट हो जाने के पश्चात् ड्राइवर उस डोरी को ऑटो में किसी पाइप पर अपनी सुविधानुसार बाँध देता है। अब गाड़ी चलाते समय उस डोरी को वह नहीं देखता और न ही देखने की जरूरत ही होती है। यह डोरी हमारी डिग्रियाँ एवं सर्टिफिकेट हैं। बस रोजगार प्राप्त करने तक इनकी पूछ रहती है। जब रोजगार प्राप्त हो गया अर्थात् ऑटो गाड़ी स्टार्ट हो गई, उसके पश्चात् डोरी की भाँति डिग्रियों एवं प्रमाण-पत्रों को घर में किसी आलमारी अथवा संदूक में रख दिया जाता है। उन्हें फिर देखने की जरूरत नहीं पड़ती बशर्ते किसी अन्य रोज़गार की तलाश न हो।

'विद्या ददाति विनयम्' तथा 'सा विद्या या विमुक्तये' शिक्षा प्राप्ति के प्रमुख उद्देश्य भारत की अमृतमयी संस्कृति में माने गए हैं। हमारी संस्कृति के महान पहलू नैतिकता एवं संस्कार परायणता व्यक्ति को जीवन मूल्य सिखाते तथा उन पर चलते रहने की प्रेरणा देते हैं। जीवन

मूल्यों का निर्माण किसी व्यक्ति के बनाए नहीं होता प्रत्युत यह कार्य तो समग्र समाज करता है। लम्बे समय तक प्रामाणिकता की कसौटी पर कसकर जीवन मूल्यों का समाजीकरण किया जाता है और समाज उन्हें अंगीकृत करता है, अपना लेता है।

जीवन मूल्यों पर सम्यक प्रकाश डालते हुए विख्यात मनीषी विचारक दादा धर्माधिकारी लिखते हैं (सर्वोदय दर्शन/282) ''मनुष्य को जिन बातों की बुनियाद पर समाज में इज्जत मिलती है, उन बुनियादों का नाम मूल्य (Values) है। प्राचीन परिभाषा में इन्हें 'सामाजिक सत्ता' अथवा 'सामाजिक प्रतिष्ठा' कहते थे। इस बुनियाद को एक सिरे से दूसरे सिरे तक पूरी तरह बदल देने का नाम क्रान्ति है। मूल्यों के प्रमुख लक्षण हैं- सच्चाई, ईमानदारी एवं प्रामाणिकता।''

शिक्षा पर जितने भी आयोग बने हैं, उन सबकी संस्तुतियों में मूल्य परक शिक्षा (Value Oriented Education) की बात जोर देकर कही गई है। उच्च स्तर की 'हाईफाई' एज्यूकेशन प्राप्त करके यदि व्यक्ति सदाचारी, संस्कारी, परोपकारी, परिश्रमी एवं नैतिक व नीतिवान नहीं रहता है तो वह शिक्षा किस काम की। कई बार ऐसी शिक्षा बड़ा घिनौना रूप दिखाती है। ऐसे लोमहर्षक उदाहरण यदा-कदा मीडिया में अथवा अपने इर्द गिर्द पढ़ते-देखते रहते हैं। एक उदाहरण शारीरिक श्रम का लेते हैं, शारीरिक श्रम भी जीवन में परम आवश्यक है। यह उत्तम स्वास्थ्य का बीमा है। जो लोग नियमित रूप से शारीरिक श्रम करते हैं, व्याधियाँ उनके पास नहीं फटकती। अतः शिक्षा व्यवस्था में सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक के समान्तर शारीरिक श्रम अवश्य होना चाहिए। कुल मिलाकर शिक्षा एवं परिश्रम दोनों होने चाहिए। यदि दोनों में से एक का चुनाव करना हो तो श्रम (Labour) का करें क्योंकि श्रम से जीवन की आवश्यकताओं को पूर्ण किया जा सकता है, निरी शिक्षा से नहीं, कदापि नहीं। श्रम विहीन शिक्षा (Education without Labour) से तो शिक्षा विहीन श्रम (Labour without Education) बेहतर है। श्रमविहीन शिक्षा से तो जीवन बोझ बन जाता है।

नैतिकता, संस्कार, जीवन मूल्य, शिक्षा, श्रम जैसे महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर उपर्युक्त दार्शनिक विवेचन के उपरान्त प्रश्न यह है कि शिक्षक एवं शिक्षण संस्थाएँ इन हेतु क्या करें? इन उत्तम गुणों को पढ़ाने का कोई युक्तियुक्त पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकें नहीं हो सकतीं।

स्वयं शिक्षक का व्यक्तित्व, चालचलन, व्यवहार, बोलचाल, वसन, खानपान एवं आदतें विद्यार्थी की सीख के लिए खुला एवं व्यापक पाठ्यक्रम होता है। जो शिक्षक परिश्रमी, सादगीप्रिय, सरल एवं सन्तोषी होते हैं, उनके शिष्य भी वैसे ही होते हैं। उच्च तकनीकी कौशल की शिक्षा प्राप्त करके अधिक से अधिक धन तो कमाया जा सकता है; लेकिन सन्तोष नहीं। यह उत्तम गुण गुरुजन के चरित्र से ही सीखा एवं ग्रहण किया जा सकता है। आजकल परीक्षाओं में अधिक से अधिक 'पर्सेंटाइल' प्राप्त करने की होड़ मची हुई है। पढ़ाई पूर्ण करने के पश्चात् 'पर्सेंटाइल' की यह दौड़ अधिक से अधिक राशि एवं सुविधाओं का पैकेज प्राप्त करने की तरफ बदल जाती है। सन्तोष की जगह तृष्णा ले लेती है और इस ऊहापोह की स्थिति में व्यक्ति जगह-जगह धक्के खाता रहता है। करोड़ों रुपयों के पैकेज प्राप्त करके विशाल बंगलों में रहने वाले महानुभावों से बात करके देखिए। वे सुखी नहीं है। बड़ों के बड़े दुःख है। सुखी होने का रहस्य संतोष में है। कहा है-

गौधन, गजधन, बाजिधन
और रतनधन खान।
जब आवै सन्तोष धन,
सब धन धूरि समान।।

उपर्युक्त विचार प्रवाह को आगे बढ़ाते हैं। विद्या और कौशल सीखकर व्यक्ति धन कमाने लगता है। धन से जीवन की आवश्यकताओं को पूर्ण किया जा सकता है मगर सन्तोष की आत्मसंतुष्टि को नहीं। आवश्यकताएँ सीमित होने पर उनकी सम्पूर्ति से सन्तोष मिलता है। यदि असीमित एवं अपरिमित आवश्यकताएँ हों तो वे कभी पूर्ण नहीं हो सकती। सन्तोष और तृष्णा में प्रतियोगिता होती है। इससे सन्तोष की जगह तृष्णा अधिकार जमा लेती है जिसका नतीजा दुःख और तनाव होता है। एक बहुत सुन्दर हितोपदेश है-

यत्र विद्यागमो नास्ति यत्र नास्ति धनागमः।
यत्र चात्मसुखं नास्ति न तत्र दिवसं वसेत्।।

इस श्लोक का बड़ा गहरा अर्थ है अर्थात् जिस जगह विद्या एवं धन तो है लेकिन आत्म-सन्तोष नहीं है, तो वहाँ का जीवन (भौतिक सुख सुविधाएँ होते हुए) दुःख में बदल जाता है। अतः मनुष्य को सदैव आत्मसंतोष के लिए प्रयास करना चाहिए- जब आवै संतोष धन, सब धन धूरि समान। सन्तोष धन आने के बाद अन्य सभी प्रकार के धन नगण्य लगते हैं। तृष्णा और सन्तोष दोनों एक साथ नहीं रह सकते। जिनके तृष्णा है वे सन्तोषी हो नहीं सकते और जो सन्तोषी है, समझ लो उनके तृष्णा की बीमारी नहीं है। तृष्णा की बीमारी मिटने पर ही सुख का आगमन होता है। परम श्रद्धेय स्वामी रामसुख दास जी महाराज अक्सर अपने प्रवचन में कहा करते थे-

ना सुख काज़ी पंडितां, ना सुख भूप भया।
सुख सहजां ही आवसी, तृष्णा रोग गया।।

अर्थ बहुत स्पष्ट है- यदि कोई न्यायाधीश, पंडित या राजा भी बन जाए पर जरूरी नहीं है कि वह सुखी हो गया है। इनसे तो नाम कमाने एवं साम्राज्य विस्तार की तृष्णा और बढ़ेगी। तृष्णा एक रोग है। वस्तुतः तृष्णा रोग से स्वयं की मुक्ति होने पर ही सुख की प्राप्ति हो सकती है। तृष्णा मुक्ति एवं परमसत्ता से साक्षात्कार करने की होनी चाहिए और सांसारिक सुखों के मामले में सन्तोष भाव होना चाहिए।

रूखी सूखी खाय के ठण्डा पानी पीव।
देख पराई चौपड़ी मत ललचावै जीव।।

सन्तोष और परोपकार की शिक्षा हमारे विद्यालयों के परिवेश एवं गुरुजन के चरित्र से ही मिल सकती है जिसके लिए समुचित प्रयास दोनों ही संस्थाओं (परिवार एवं विद्यालय) के स्तर से किए जाने चाहिए। 'विद्या ददाति विनयम्' संदेश से विनय का पाठ पढ़कर 'सा विद्या या विमुक्तये' घोष के अनुरूप सन्तोष मार्ग का अनुसरण करते हुए एक सुखी जीवन का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है। इसी में व्यक्ति, समाज, राष्ट्र एवं संपूर्ण वसुधा का कल्याण निहित है। ऐसे अनेक उदाहरण देखे जा सकते हैं। इति अल्पम्।

संयुक्त शिक्षा निदेशक (से.नि.)
ए-विनायक लोक, बाबा रामदेव रोड
गंगाशहर-334401 (बीकानेर)
मो: 9414060038

ज्ञान संकल्प पोर्टल

शिक्षा के क्षेत्र में दान की गंगा

❒ दिलीप परिहार

राज्य सरकार द्वारा राज्य के राजकीय विद्यालयों के विकास हेतु CSR के अन्तर्गत विभिन्न औद्योगिक संस्थानों एवं दानदाताओं/ जनसमुदाय से सहयोग राशि प्राप्त करने के लिए राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद् के अधीन राजस्थान एज्यूकेशन फंडिंग पोर्टल एवं एज्यूकेशन फण्ड (शिक्षा कोष) स्थापित किया गया है। जिसके अन्तर्गत मुख्यमंत्री ज्ञान संकल्प पोर्टल का उद्घाटन माननीय मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे द्वारा 05 अगस्त, 2017 को जयपुर में किया गया।

ज्ञान संकल्प पोर्टल आज एक ऐसा पोर्टल बन गया है जिस पर हर कोई दान करना चाहता है। इस पुण्य कार्य में न केवल राजस्थान बल्कि अन्य राज्यों के ट्रस्ट, कम्पनियों और संगठनों का पूरा सहयोग मिल रहा है जिससे पोर्टल पर निरन्तर पंजीकरण और दान बढ़ रहा है।

ज्ञान संकल्प पोर्टल पर आज रजिस्ट्रेशन की संख्या पाँच हजार से पार हो चुकी है जिसमें व्यक्तिगत दानदाता, कम्पनियाँ और संगठन सभी शामिल हैं। ज्ञान संकल्प पोर्टल धीरे-धीरे दानदाताओं/भामाशाहों और कम्पनियों की दान के लिए पहली पसन्द बनता जा रहा है राज्य के समस्त शिक्षा विभाग के अधिकारियों, कर्मचारियों, संस्थाप्रधानों की पोर्टल के प्रति जागरूकता बढ़ी है। पोर्टल पर दान करना अत्यन्त सरल होने के साथ-साथ विश्वसनीय एवं पारदर्शी भी है साथ ही साथ दानदाता/भामाशाह कुछ ही पल में बिना कहीं आवागमन के तुरन्त अपनी स्वेच्छानुसार किसी भी राजकीय विद्यालय में सहयोग कर सकते हैं।

वर्तमान में पोर्टल पर उपलब्ध विकल्प Donate To A School के अन्तर्गत विभिन्न जिलों की स्कूलों को प्राप्त सहयोग राशि 50 लाख से अधिक हो चुकी है जो कि विद्यालयों के SDMC/SMC खातों में स्थानान्तरित की जा चुकी है। दानदाता द्वारा जो राशि इस विकल्प द्वारा दान की जाती है उस राशि पर दानदाता को आयकर की धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर में छूट का प्रावधान है जिसके कारण दानदाता पोर्टल के माध्यम से दान देने में अधिक रुचि लेने लगे हैं। इसके अलावा पोर्टल पर Create your Own Project के अन्तर्गत भी विभिन्न कम्पनियों द्वारा CSR के अन्तर्गत करोड़ों रुपये का सहयोग प्रदान करते हुए राजकीय विद्यालयों में संसाधनों की आपूर्ति की जा रही है। जिससे राज्य के आदर्श एवं उत्कृष्ट विद्यालयों के विकास में सहयोग प्राप्त हो रहा है।

ज्ञान संकल्प पोर्टल पर देखा जा रहा है कि कुछ जिलों का रुझान अत्यन्त प्रसंशनीय है चूरू, झुंझुनूं, बून्दी, सीकर एवं सिरोही से निरन्तर Donate To A School के अन्तर्गत राशि प्राप्त हो रही है। झुंझुनूं जिले से भामाशाह श्री मुकेश चतुर्वेदी द्वारा शहीद भगवान सिंह रा.आ.उ.मा.वि. धुमोली खुर्द में 65000 रु., श्री राय सिंह महला द्वारा 51000 रु. अपने गाँव के विद्यालय रा.उ.प्रा.वि. मायावाली झुंझुनूं, श्री विकास कुमार पोटलिया द्वारा 500000 रु. (पाँच लाख रुपये) रा.मा.वि. साधासर चूरू में, श्री प्रताप सैनी द्वारा 80000 रु. रा.आ.उ.मा.वि. खुरी चूरू में, श्री रामलाल जाखर द्वारा रा.आ.उ.मा.वि. कल्याणपुरा पुरोहितान चूरू में 51000 रु., बूंदी से श्री राजेश कुमार शर्मा द्वारा स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल भैरूदान तालेरा में 25000 रु. की राशि दान की गई है जो की प्रंशसनीय है। इसी प्रकार बहुत सारे भामाशाहों/संस्थाओं और कम्पनियों द्वारा विभिन्न जिलों में दान की गंगा बहाई जा रही है।

ज्ञान संकल्प पोर्टल का सभी संस्था-प्रधानों और विद्यालय स्टाफ द्वारा प्रचार प्रसार किया जा रहा है तथा भामाशाहों से पोर्टल के माध्यम से सहयोग लिया जा रहा है। इसी कड़ी में एक संस्थाप्रधान श्री जयसिंह चाहर राउमावि. जोलर (प्रतापगढ़) है जो न केवल खुद दान का यह पुण्य कार्य कर रहे है बल्कि अन्य भामाशाहों द्वारा अपने विद्यालय और अपने PEEO क्षेत्र में आने वाले विभिन्न विद्यालयों में दानप्राप्ति में सहयोग भी दे रहे हैं। राबाउमावि. बुहाना (झुंझुनूं) प्रधानाचार्य एवं समस्त स्टाफ ने 1 लाख रुपये से अधिक का दान ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से किया। इसी प्रकार का एक उदाहरण श्री दीपक मूण्ड प्रधानाचार्य राआउमावि. नरहेरा, कोटपुतली (जयपुर) द्वारा विद्यालय में हो रही राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताओं के लिए ज्ञान संकल्प पोर्टल द्वारा सहयोग प्राप्त किया जा रहा है जो कि अपने आप में एक अभिनव उदाहरण है।

इस प्रकार ज्ञान संकल्प पोर्टल न केवल भामाशाहों/दानदाताओं, विभिन्न कम्पनियों और संगठनों के लिए ऑनलाइन दान देने का एक प्लेटफार्म बन गया है बल्कि दानदाताओं की पहली पसंद बनता जा रहा है और आने वाले समय में हम आशा करते हैं कि पोर्टल पर भामाशाहों/दानदाताओं, कम्पनियों का इसी प्रकार अनवरत सहयोग बना रहेगा तथा राजस्थान के राजकीय विद्यालयों का एवं उनमें पढ़ने वाले विद्यार्थियों का चहुँमुखी विकास करने में सहयोगी होगा। आइए! शिक्षा के क्षेत्र में विद्यादान का पुनीत कार्य करने वाले सभी साथी भी ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से दान कर इस दान रूपी गंगा में डुबकी लगाएँ। राजस्थान की शिक्षा को गुणात्मक और संसाधनों की पूर्ति में सहयोगी की भूमिका निभाएँ।

सहायक निदेशक
सी.एस.आर. प्रकोष्ठ
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो. 9001739911

सद्गुरु

❒ डॉ. भगवान सहाय मीना

गुरु शब्द दो अक्षरों से मिलकर बना है। 'गु' और 'रु', 'गु' के मायने है अंधकार (अज्ञान) और 'रु' का मतलब है भगाने वाला। जो आपके अज्ञान को मिटाने का काम करता है। वही आपका गुरु है, क्योंकि गुरु ही शिष्य को ईश्वर का बोध करा सकता है, दर्शन करा सकता है। भारतीय संस्कृति में सबसे ऊँचा लक्ष्य मुक्ति ही रहा है और गुरु ही मुक्ति का मार्ग दिखा सकता है। जगत में पथभ्रष्ट मनुष्यों को तारने के लिए गुरु के सम बंधन नाशक तीर्थ अन्य कोई नहीं है। गुरु ज्ञान गरिमा की साक्षात् प्रतिमूर्ति है। गुरु के अभाव में न तो ज्ञान मिलता है और न ही संसार सागर से मुक्ति। मनुष्य के जीवन में गुरु का दर्जा सर्वोपरि है। इसीलिए उसे 'आचार्य देवो भवः' की संज्ञा दी गई है। गुरु ही अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाने वाला माध्यम है। गुरु ही मृत्यु से अमरत्व का बोध कराता है, तो गुरु ही जीवन के गूढ़ रहस्यों का पता लगाकर उनका अनुकरण करता है। सत्य ही कहा गया है- ''The teacher is a man who trains a man to become man '' अर्थात् शिक्षक वह इंसान है जो इंसान को, इन्सानियत के गुणों को सुषुप्तावस्था से प्रकट कर 'इन्सान' बनाने में सहायक होता है। गुरु की गरिमा और महिमा का बखान 'गीता' में इस प्रकार किया गया है-

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुःसाक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

आदिकाल से वर्तमान तक गुरु पद की महिमा उसकी गरिमा और महत्त्व के बखान से हमारे ग्रन्थ-शास्त्र भरे पड़े हैं। इस संदर्भ में भक्तिकाल में ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रवर्तक महात्मा कबीर ने जीवन के प्रत्येक पक्ष को करीब से देखकर गुरु को 'गोविन्द' से भी ऊँचा स्थान दिया है और गुरु महिमा के संदर्भ में स्पष्ट किया है कि गुरु की महिमा अवर्णनीय है।

मनुष्य के जीवन में गुरु के समान कोई दाता नहीं है। सद्गुरु ही मनुष्य को तम से प्रकाश की ओर ले जाता है। इस संदर्भ में महात्मा कबीर का यह पद अनुकरणीय है। वे कहते हैं-

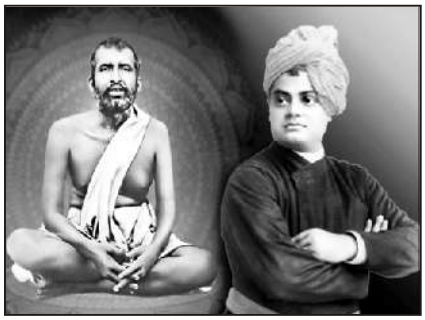

गुरु समान दाता नहीं, जाचक सिष समान।
तीन लोक की सम्पदा, तो गुरु दीन्हा दान।।

गुरु 'शून्य' में रचना नहीं करता। वह चिंगारी को पहिचान कर, राख को झाड़कर उसके असली रूप से परिचय करा देता है। उसे आग बना देता है। संत कबीर ने कहा है-

गुरु कुम्हार सिष कुम्भ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट।
अंतर हाथ सहारि दे, बाहिर बाहै चोट।।

संत हरिराम दास ने गुरु को पारस पत्थर के समान बताया है। उन्होंने कहा है कि गुरु से विमुख होकर ईश्वर भक्ति करने से प्राप्ति संभव नहीं है लेकिन गुरु तो शिष्य को अपने जैसा बना ही देता है-

लौह पलटि कंचन भया, पारस का परताप।
जन हरिया सतगुरु करै, आप सरीखा आप।।

बीकानेर रियासत के राजा राव लूणकरण ने अपनी कृति में गुरु के सद्गुणों का बखान इस प्रकार किया है-

गुरु सो दाता नाहिं, परमगति गुरु तै पाई।
भवसागर बहै जात, मुक्त की न्वाह लगाई।।

गुरु के बिना मैदान में पड़ा लाल पहिचान में नहीं आता। अतः गुरु की भूमिका अहम है जिसे नकारा नहीं जा सकता। जैसे कि-

लाल पड़ा मैदान में जगत ओसगिया जाई।
नुगरा मानस छोड़ चला, सुगुरा ने लीनौ उठाई।।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने गुरु शक्ति के सान्निध्य में जीने की सलाह देते हुए कहा है-

सद्गुरु को समझो सदा खोया रत्न विशाल।
पाओ तुम उसको यहाँ अपनाओ तत्काल।।

कवि ब्रह्मानंद ने अपनी कृति 'नारायणी गीता' में गुरु महिमा का बखान इस प्रकार किया है-

सद्गुरु रूप अनूप रवि, पूरन अधिक प्रकाश।
प्रवाह ताहि कीना प्रकट, जन उर तिमिर विनाश।।

भक्त कवि मेघराज हम्मीर बीहू ने 'गुरु महिमा' कृति में सच्चे गुरु की विशेषताओं का चित्रण इस प्रकार किया है-

रवि हरत ज्यों रजनी को, त्यों गुरु हरत अज्ञान।
तन मन से सेविये, तज के गरब गुमान।।

गुरु कृपा से मानव देवत्व को प्राप्त करता है। गुरु की असीम कृपा से मनुष्य जीवन पथ पर अग्रसर होता है। सद्गुरु की गरिमा के सन्दर्भ में बखान किया गया है-

बलिहारी गुरु आपने, घड़ी-घड़ी सौ बार।
मानुष से देवत कियां, करत न लागी बार।।

वर्तमान युग में भी गुरु के श्रीचरणों की वंदना सनातन युग के समान ही की जाती है। गुरु महिमा के परिप्रेक्ष्य में कहा गया है-

तू वशिष्ठ का वंशज है, तू ब्रह्म तेज का अधिकारी।
तेरे चरणों में नतमस्तक है, रघुकुल राम धनुर्धारी।।

जगत में गुरु के समान कोई सगा नहीं होता। वह संकट में संघर्ष करने की कला सिखाता है। गुरु विशेषता के पक्ष में ब्रह्मदास जी का कथन है-

गुरु सम सग न जगत में स्थान रतन दे सार।
दिष्टि पोख दे ब्रह्मदास, जग सूं कर ही पार।।

शिक्षक इन्सान की प्रकृति को विकृति से बचाकर संस्कृति की ओर अभिमुख कराते हुए इस प्रकार संस्कारित कर देता है कि शिष्य कह उठता है-

ये दिव्य दिखाया है जिसने,
वह है गुरुदेव की पूर्ण कृपा।
तुकड्या कहे कोई न और दिखा,
बस मैं और तू सब एक ही है।।

गुरु ही विद्या मंदिर के प्रांगण में श्री सरस्वती की असीम कृपा से बालकों में सम्यक ज्ञान का बीजारोपण कर अपनी कर्त्तव्यपरायणता का भावात्मक सम्बन्ध जोड़ता है। उन्हें संस्कारवान बनाने के लिए प्रयत्नशील रहता है।

इस कड़ी में निम्नांकित पंक्तियाँ बहुत ही मार्मिक है–

सौ–सौ सूरज ऊगवै, चंदा चढ़े हजार।
उतना चानण होत भी, गुरु बिन घोर अंधार।।

गुरु एक दर्शन है। अध्यात्म का जितना सामर्थ्य है, श्रद्धा व विश्वास जिस व्यक्ति के मार्गदर्शन पर टिका है वह गुरु है। गुरु शक्ति का वर्णन एक राजस्थानी कवि ने इस प्रकार किया है–

जंगल में मंगल करै, पतझड़ करै बहार।
दुःख नै सुख में बदल दे, गुरु की शक्ति अपार।।

आज राष्ट्र को ज्ञानवान, प्रकाशवान तथा शक्तिवान बनाने के लिए चिर प्राचीन गुरु–शिष्य परम्परा की पुनरावृत्ति की नितान्त आवश्यकता है। सत्यनिष्ठ गुरु के बिना लोक मंगल की परिकल्पनाएँ साकार नहीं की जा सकती हैं, 'शिक्षक दिवस' के पुनीत अवसर पर अपने शिक्षक बन्धुओं से आशा रखता हूँ कि वे एक आदर्श शिक्षक के रूप में उचित सेवा का लाभ देते हुए देश की भावी पीढ़ी को पराग की भाँति सुगंधित करते रहें। क्योंकि 'हनुमान चालीसा' में भी रचनाकार ने महावीर से यही विनती की है कि 'कृपा करो गुरुदेव की नाही।' अर्थात् गुरु की कृपा ईश्वर की कृपा से भी बड़ी मानी गई है। अन्त में महाकवि तुलसीदास के शब्दों में गुरुदेव की कीर्ति को बताना चाहूँगा–

बन्दऊ गुरु पदकंज, कृपा सिन्धु नर रूप हरि।
महा मोह तम पुंज, जासु बचन रवि कर निकर।।

वरिष्ठ अध्यापक
राज. आ.उ.मा.वि. खेड़ारानीवास,
तह. कोटखावदा (जयपुर)
मो: 9928791368

प्रथम महिला शिक्षिका : सावित्री बाई फुले

❒ मोहन मेघवाल

सावित्रीबाई फुले भारत की प्रथम महिला शिक्षिका, समाज सुधारिका एवं कवयित्री थी। सावित्रीबाई ने अपने पति ज्योतिबाराव फुले के साथ मिलकर स्त्रियों को शिक्षित करने में बहुत बड़ा योगदान दिया। सावित्रीबाई ने अपने जीवन को एक मिशन की तरह जीया जिसका उद्देश्य था विधवा विवाह करवाना, छुआछूत मिटाना, बाल–विवाह न करना, दलित महिलाओं को शिक्षित बनाना इत्यादि। ज्योतिबा फुले एक आदर्श पति के साथ–साथ सावित्रीबाई के मार्गदर्शक, संरक्षक और गुरु थे, हमेशा सावित्री बाई का हौंसला बढ़ाते रहे।

सावित्रीबाई के पति ज्योतिबा मानते थे कि दलितों और महिलाओं को आत्मनिर्भरता, शोषण से मुक्ति और विकास के लिए सबसे जरूरी है शिक्षा और ज्योतिबा ने इसकी शुरूआत सावित्रीबाई फुले को शिक्षित करने से की। ज्योतिबा को खाना देने जब सावित्रीबाई खेत में आती थी, उस दौरान वे सावित्रीबाई फुले को पढ़ाते थे। अध्ययन पूरा करने के बाद सावित्रीबाई ने सोचा कि प्राप्त शिक्षा का उपयोग अन्य महिलाओं को शिक्षित करने में किया जाना चाहिए। पर उस समय बहुत बड़ी चुनौती थी। क्योंकि उस समय समाज लड़कियों की पढ़ाई के खिलाफ था। फिर भी सावित्रीबाई ने पुणे में बालिका विद्यालय की स्थापना की, उसमें सावित्रीबाई प्रधानाध्यापिका बनीं। उनके

विद्यालय का सफ़र बहुत कष्ट भरा था। फिर भी सावित्रीबाई और ज्योतिबा फुले ने बिना किसी आर्थिक मदद के 18 विद्यालय खोले। जो उस दौर में सामाजिक क्रांतिकारी कदम था।

सावित्रीबाई अपने विद्यार्थियों से कहा करती थीं कि ''कड़ी मेहनत करो, अच्छे से पढ़ाई करो और अच्छा काम करो''। सावित्रीबाई फुले ने केवल शिक्षा के क्षेत्र में ही नहीं बल्कि स्त्री की दशा सुधारने के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। सावित्रीबाई प्रतिभाशाली कवयित्री भी थी। उनकी प्रमुख रचना 'काव्य फुले', 'बावनकशी सुबोध' और 'मातोश्री के भाषण' इत्यादि हैं। सावित्रीबाई फुले ने अपना पूरा जीवन समाज में महिलाओं और दलितों के अधिकारों के लिए संघर्ष में बिता दिया। सावित्रीबाई और ज्योतिबा दोनों सही मायनों में एक दूसरे के पूरक थे।

गाँव बावली, पोस्ट नवारा, वाया–कालंद्री, सिरोही
मो: 8890198527

शिक्षा के हम सैनानी

❒ भरत शर्मा 'भारत'

शिक्षा के हम सैनानी हैं, घर–घर अलख जगाएँगे।
भारत माँ को विश्व गुरु के, पद पर फिर पहुँचाएँगे।।
शून्य दिया दुनिया को हमने, संस्कार सद्ज्ञान दिया।
विश्व बंधुता के प्रसार हित, सब धर्मों को मान दिया।
वेद और विज्ञान हमारे, उत्कर्षों की थाती है।
कुरुक्षेत्र में कर्मभूमि पर, दुर्लभ गीता ज्ञान दिया।
आज उसी निष्काम कर्म का, परचम फिर लहराएँगे।।
अमर शहीदों की कुर्बानी, हमको याद दिलाती है।
सत्ता के लोलुप लोगों की, भूलें भी बतलाती है।
देशधर्म संरक्षित रखना, नैतिक जिम्मेदारी है।
विगतकाल की भूल सभी को, बारम्बार जगाती है।
जन–गण–मन मर्यादा रक्षण, नई चेतना लाएँगे।।
राष्ट्र–हितों की करे सुरक्षा, वो शिक्षा स्वीकार हमें।
शिक्षा हित निज ध्येय बनावें, वो शिक्षक स्वीकार हमें।
तब समाज में शिक्षक हित की, पुनः भावना आएगी।
त्याग–तपस्या से सम्पूरित, जन–मानस स्वीकार हमें।
लेना है संकल्प सभी को, बदल तभी तो आएँगे।।

18, शिवपुरी बैंक ऑफ़ इंडिया के पीछे,
कालवाड़ रोड झोटवाड़ा, जयपुर–302012
मो: 09829711011

बालक की प्रथम पाठशाला है-परिवार

❒ शंकर लाल माहेश्वरी

परिवार ही बालक की प्रथम पाठशाला है। जहाँ वह अपने परिजनों की छाया तले बैठकर अपनी क्षमता व प्रतिभा को उजागर करता है। अतः माता-पिता को तथा परिजनों को अपने कार्य व्यवहार से बालक का उचित पोषण करना चाहिए ताकि वह उत्तम जीवनयापन की शिक्षा ग्रहण कर सके। सामाजिक प्राणी होने के कारण बालक में उन दक्षताओं का आविर्भाव होना चाहिए जो एक समाज के लिए अनिवार्य होती है। परिवार में रहकर जहाँ बालक कर्त्तव्य पालन का पाठ सीखता है वहीं उसके नैतिक गुणों का भी विकास होता है। बाल्यावस्था ही से बालक की गतिविधियों, वृत्तियों और आदतों का आकलन करते हुए उसे सही दिशा में अग्रसर करना माता-पिता का उत्तरदायित्व है। वही समाज विकसित माना जाता है जिसके सभी सदस्य मानवीय गुणों को जीवन का आधार बनाकर जीवन जीने का सद्प्रयास करते हैं।

आज का बालक कल का नागरिक है। अतः एक उत्तम कोटि का नागरिक बनने के लिए सहयोग की वृत्ति, सहिष्णुता, नैतिकता, उदारता, सदाशयता, अनुशासन, श्रमनिष्ठा तथा सम्मानभावना और अन्य मानवीय मूल्यों को जीवन का आधार बनाना होता है। इन सारे संस्कारों का आविर्भाव माता-पिता के दिशा निर्देश तथा कार्यव्यवहार पर निर्भर है, जहाँ बालक देखकर व सुनकर सीखता है। भारतीय परिवार प्रणाली में पुरातन काल से ही बालक अपने दादा-दादी की गोद में बैठकर नीति कथाओं का श्रवण करते हुए ज्ञान अर्जित करता आया है। आज भी घर-परिवारों में यह परम्परा विद्यमान है। बालक परिवार में रहकर बड़ों की सेवा, परिजनों की आज्ञापालन, गृहकार्य में सहयोग, माता पिता का सम्मान, कार्यव्यवहार में शालीनता, श्रम कार्य में भागीदारी तथा सेवा के अवसर प्राप्त कर जीवनोपयोगी आदर्शों का अनुगमन करता है। यही उसको उत्तम नागरिकता की दिशा में प्रवृत्त करती है। बालक की जिद्दी प्रवृत्ति, अनुशासनहीनता, अशिष्टता तथा असभ्यता की दिशा में अग्रसर होने की स्थिति में माता-पिता का ही नियन्त्रण औषध स्वरूप बन जाता है। बालक की निजी समस्याओं के समाधान हेतु माता-पिता संवेदनशील रहें तथा बालक को निकट से समझने के लिए उसके पास बैठने का समय भी निकाल सकें। अभिभावक का दिशा बोध बालक की विकास यात्रा में पूर्णतः सहयोगी होता है।

बालक पर अनावश्यक दबाव, शोषण तथा धिक्कारना, पीटना और भयभीत करना उसके साहस व उत्साह को कुण्ठित करता है तथा उसकी प्रगति में बाधक हो जाता है। उसे पारिवारिक परिस्थितियों से अवगत कराते हुए मार्गदर्शन देना चाहिए। आचरण सुधार के लिए बालकों को समय-समय पर नीति कथाएँ बोध कथाएँ, लघु कथाएँ तथा कहानियों से उसमें वैचारिक समरसता पैदा की जा सकती है। प्राचीन काल में बिगड़ैल राजकुमारों के आचरण सुधार हेतु विष्णु शर्मा जैसे गुरु पंचतंत्र, हितापदेश व मित्र लाभ की बोध कथाएँ व प्रेरक-प्रसंग सुनाकर उनका मार्ग प्रशस्त करते थे। परिवार में रहकर बालक को रोगी सेवा, समाजोपयोगी कार्य तथा श्रम कार्य के लिए प्रेरित करना चाहिए। बालकों की नेतृत्व क्षमता का भी विकास हो, इसके लिए परिवार में पर्याप्त अवसर प्रदान किए जाएँ।

परिवार में रहकर बालक अपनी निजी क्षमताओं का विकास करता है तथा सामाजिक जीवन जीने की तैयारी भी करता है। आवश्यकता इस बात की है कि माता-पिता अपनी सन्तान को उसकी कार्यक्षमता, दक्षता तथा कुशलताओं को उजागर करने के लिए पर्याप्त अवसर व मार्गदर्शन प्रदान करें। बालक को आत्मनिर्भर बनाने के लिए उसे श्रम कार्य हेतु प्रवृत्त करना जरूरी है। पारिवारिक जीवन में रहकर उसे व्यावसायिक बोध भी देना आवश्यक है। यदि माता-पिता का उत्तम आचरण है, श्रेष्ठ जीवन शैली है, बच्चों के प्रति अगाध स्नेह और सम्मान भावना है तो बालक निश्चित रूप से प्रगतिशील बनेगा। जिस परिवार में अनैतिक आचरण, कुण्ठित व्यवहार, झगड़ालू दृश्य, बेईमानी, क्रूरता और अनैतिकता का वातावरण होगा, उस परिवार के बच्चे बिगड़ैल होंगे और आगे जाकर उनकी गणना असामाजिक तत्त्वों में होने लगेगी। अतः माता-पिता को अपने व्यवहार, आचरण तथा दिनचर्या में अपना आदर्श स्वरूप प्रस्तुत करना आवश्यक है, जिसका सीधा प्रभाव बालकों के कोमल मन पर पड़ता है और वे प्रभावित होते हैं।

बालक को कठिनाइयों का मुकाबला करना भी सिखाएँ, उसे निडर बनाने का प्रयत्न करें। बेइमानी से दूर रखते हुए सफल जीवन जीने की दीक्षा दें ताकि आगे जाकर वह उत्तम मार्ग का अनुसरण कर सके। अधिकाशतः देखा गया है कि जो सन्तान आगे जाकर चोरी, डकैती, गुण्डागर्दी और असामाजिक कार्यों मे लिप्त होती है उनका पारिवारिक परिवेश अत्यधिक दूषित होता है। ऐसे वातावरण में रहकर ही बालक दूषित प्रवृत्तियों को अपनाते हुए आगे जाकर असामाजिक बन जाता है। परिवार में रहकर बालक अपने माता-पिता के श्री चरणों में बैठकर उत्तम कोटि के संस्कार अर्जित करता है। बालक को माता-पिता की सेवा, ईश वन्दना, घर की साफ-सफाई, रोगी सेवा, गरीबों के प्रति संवेदनशीलता, ईमानदारी, पारिवारिक कार्यों में भागीदारी, परिजनों की आज्ञापालन, बड़ों के प्रति सम्मान भाव तथा राष्ट्रीय महत्त्व के कार्यों में संलग्न होने की सीख मिलती रहे तो कल का यह नागरिक श्रेष्ठ समाज सुधारक के रूप में प्रस्तुत होगा। परिवार में रहते हुए बालक को जनसंख्या नियन्त्रण, जल संग्रहण, पौधारोपण, भ्रूण हत्या, अशिक्षा, महिला उत्पीड़न और सरकारी योजनाओं की जानकारी मिल सके, उसकी समझदारी बढ़ सके, इसके लिए प्रसंगानुसार प्रयास करना चाहिए। यदि परिवार में ही बालक को उचित दिशा बोध मिलता रहेगा तो आगे जाकर विद्यालयी शिक्षा में भी वह अग्रगण्य रहेगा। विद्यालय की गतिविधियों द्वारा अर्जित संस्कारों को प्रगाढ़ता मिलेगी और वह एक श्रेष्ठ विद्यार्थी के रूप में शिक्षा ग्रहण करने में सफलता अर्जित करते हुए कीर्तिमान स्थापित कर पाएगा।

आज का युग वैज्ञानिक युग है। सूचना और तकनीकी के क्षेत्र में काफी प्रगति हुई है। आज नन्हें बालक भी स्मार्ट फोन पर अपनी अंगुलियाँ थिरकाते नहीं थमते। कम्प्यूटर का प्रारम्भिक ज्ञान भी अधिकांशतः घरों में मिल जाता है। जो परिवार साधन सम्पन्न है उन्हें बच्चों को नवीनतम तकनीकी ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रेरित

करना चाहिए। वर्तमान शासन व्यवस्था में काफी फेरबदल हो रहा है। कैश लैस लेन-देन पर बल दिया जा रहा है। राष्ट्र की लोक कल्याणकारी योजनाओं से भी परिचय मिल सके, ऐसा प्रयत्न किया जाए तो बच्चों के भावी जीवन में उपयोगी सिद्ध होगी। जो बालक सामान्य से हटकर विशेष ऊर्जावान होते हैं। कभी-कभी उनकी अपराध प्रवृत्ति से अभिभावक पीड़ित हो जाते हैं। इसके लिए उनकी असामान्य वृत्ति का मार्गान्तीकरण करना चाहिए। जिस प्रकार बाढ़ का अपार जल प्रवाह खेतों को नष्ट कर सकता है। यदि उस बाढ़ की राह को मोड़ कर नहरों के रूप में परिवर्तित कर दिया जाए तो वही बाढ़ का पानी उत्पादक बन सकता है। यही दशा अपराधी बालकों की है। उनकी अतिरिक्त ऊर्जा का सदुपयोग करने की आवश्यकता है। ऐसे बालक अधिक प्रभावशाली होते हैं। जिस परिवार में पूजा, अर्चना, सत्संग और आध्यात्म से परिपूर्ण वातावरण होगा उस परिवार परिवेश में ये बोध सुगम होता है। पौधशाला का संचालन, स्वच्छता के प्रति जागरूकता और अनुशासित जीवनयापन करने का अवसर बालकों को मिलना आवश्यक है। अतः परिवार का वातावरण व पर्यावरण अनुकरणीय होना चाहिए।

बालकों को खेलकूद में प्रवृत्त करने के लिए अवसर प्रदान करना चाहिए, इससे बालक अनुशासित बनने के साथ ही उसमें आत्मविश्वास, निर्णय क्षमता, कार्य के प्रति समर्पण के भाव मजबूत होते हैं। बालकों की विशेष उपलब्धियों पर उन्हें प्रशंसित भी करना चाहिए। पर्व और त्योहारों के आयोजन में बालकों को भागीदार बनाया जाए ताकि बालकों में सुसंस्कारों का संचार हो और वे हमारी सांस्कृतिक विरासत के प्रति आस्थावान बन सकें। आपके बच्चों के पास अच्छी बुद्धि है। बस इस बात से संतोष मत कर लेना उसे बुद्धि के साथ अच्छे संस्कारों से सिंचित कीजिए। बच्चों को सिखाओ नहीं, करके दिखाओ। इससे वे जल्दी सीख जाते हैं। बच्चे वो नहीं करते जो आप कहते है। चाहकर भी आप अपने पैर बच्चों से नहीं छुआ सकते इसके लिए पहले आप को स्वयं अपने माता-पिता के पैर प्रतिदिन छूने होंगे। जो बात जीभ से कही जाती है उसका प्रभाव कम पड़ता है जो सीख जीवन में करके दी जाती है उसका प्रभाव ज्यादा होता है। अच्छी बातें केवल चर्चा का विषय नहीं वो आचरण का विषय ज़रूर बनें। आप चिल्लाओगे तो बच्चे भी चिल्लाना सीख जाएँगे। अपने बच्चों को केवल जीविका निर्वहन की शिक्षा मत देना, अच्छा जीवन जीने की शिक्षा भी देना।

महान् चिंतक, विचारक व योद्धा संन्यासी स्वामी विवेकानन्द ने कहा है-**''बालक स्वाध्याय के प्रति रुचिशील हो। मधुर बोलना, मन में उचित विचार करना, सबसे सद्व्यवहार, परिश्रम में उत्साह, स्वच्छता, सादगी, व्यसनों से मुक्ति, शिष्टाचार आदि गुणों का बीजारोपण माता-पिता के उचित संरक्षण में सम्भव है। पारिवारिक परिवेश में ही बालक के चरित्र का निर्माण संभव है। शरीर और मन बलवान बनते हैं। बुद्धि बढ़ती है और बालक आत्म निर्भर बनता है।''**

जिला शिक्षा अधिकारी (से.नि.)
पोस्ट-आगूँचा (भीलवाड़ा)-311022
मो: 9413781610

विचारों का दर्पण है-दृष्टिकोण

❒ हनुमान प्रसाद जांगिड़

किसी भी दृश्य की सुन्दरता दृष्टि की पवित्रता पर निर्भर करती है। यदि ऐसा नहीं होता तो क्यों कोई व्यक्ति किसी दृश्य को घृणा की दृष्टि से देखता है, जबकि उसी दृश्य को दूसरा व्यक्ति मनोहारी दृष्टि से देखते हुए आनन्द की अनुभूति करता है। सुन्दरता और कुरूपता हमारी दृष्टि में ही विद्यमान रहती है। जैसी हमारी दृष्टि होगी वैसी ही सृष्टि दिखाई देगी। एक नारी के सौन्दर्य को लेकर पति और पिता की दृष्टि एवं दृष्टिकोण में अंतर होता है।

एक अन्धा व्यक्ति मंदिर में जाकर मौन प्रार्थना कर रहा था। पड़ौस में खड़े व्यक्ति ने अपने साथी से कहा-अन्धे व्यक्तियों को जब कुछ भी दिखाई नहीं देता है तब यहाँ आने का क्या प्रयोजन है? अन्धे ने कहा-मैं अन्धा हूँ तो क्या हुआ, ऊपर वाले को तो सब कुछ दिखाई दे रहा है। यहाँ आने वाले को दृष्टि की नहीं सही दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

एक गिलास में थोड़ा पानी भरा हुआ है। कुछ लोग कहेंगे- गिलास पानी से आधा भरा हुआ है और कुछ लोग कहेंगे- गिलास आधा खाली है। प्रत्येक व्यक्ति के सोचने का अपना-अपना तरीका होता है। सभी व्यक्तियों का दृष्टिकोण एक-सा हो ही नहीं सकता। गिलास आधा भरा हुआ है ऐसे में आशावादी सकारात्मक सोच को उत्तम कहा जा सकता है क्योंकि ऐसे दृष्टिकोण में अनुक्रिया होती है जो सदैव प्रगति के पथ का अनुगमन करती है। इसी वजह से व्यक्ति ख्याति के शिखर को जल्दी छू लेता है। जबकि आधा गिलास खाली का दृष्टिकोण रखने वाले की सोच नकारात्मक होती है जो प्रतिक्रिया का प्रतिनिधित्व करती है। उसकी सफलता संदिग्ध होती है, क्योंकि नकारात्मक विचारों से निर्बलता पैदा होती है।

इसीडोर आइजैक राबी का स्पष्ट मत है कि मेरी माँ ने मुझे अनजाने में ही वैज्ञानिक बना दिया। ब्रुकलिन में हर यहूदी माँ अपने बच्चे से पूछती- 'आज तुमने स्कूल में क्या नया सीखा?' पर आइजैक राबी कहता है-'मेरी माँ द्वारा पूछा गया सवाल इससे भिन्न दृष्टिकोण रखता है। वह पूछती-बेटा! क्या तुमने अपने शिक्षक से आज कोई अच्छा प्रश्न पूछा? मेरी माँ के द्वारा प्रश्न पूछने के इसी दृष्टिकोण ने अनायास ही मुझे वैज्ञानिक बना दिया।' प्रश्न पूछने के ऐसे अन्तर की वजह से ही महान घटनाएँ घटित हो जाती है। जिसकी हम कभी कल्पना भी नहीं करते।

क्रिया स्वाभाविक है। जब भी क्रिया होगी तो इसके उपरान्त दो बातें होगी, या तो अनुक्रिया होगी अथवा प्रतिक्रिया। अनुक्रिया का होना अच्छा है। क्योंकि इसमें सकारात्मक भाव छिपा रहता है। यह भाव ही जीवन को जीना सिखाता है। हमें सदा इसी अनुक्रिया का ही अनुकरण और अनुसरण करना चाहिए। इससे जीवन में अनायास ही खुशियाँ छाने लगती हैं। व्यक्ति अपने जीवन को ऐसे जीने लगता है जैसे उसके जीवन में हमेशा के लिए मधुमास छा गया हो। ऐसे लोग प्रत्येक पल को उत्सव के रूप में देखते हुए उसका भरपूर आनन्द उठाते हैं। जिन्दगी का पूरा-पूरा आनन्द उठाना है तो जीवन के उज्ज्वल पक्ष को ही देखें। अपनी दृष्टि को स्वच्छ और पवित्र बनाए रखें एवं अपने दृष्टिकोण को नकारात्मकता की ओर जाने से रोकें, क्योंकि नकारात्मक विचारों से मानसिक वैभवता नष्ट हो जाती है।

प्राध्यापक (से. नि.)
आदर्श कॉलोनी, गोविन्दगढ़ चौराहा,
पीसांगन, (अजमेर)-305204

भाग्य सदैव साहसी का साथ देता है

❒ सुभाष चन्द्र कस्वाँ

प्रायः यह सुनने में आता है, 'मनुष्य का भाग्य सात तालों, सात पर्दों के अन्दर क़ैद रहता है।' उसे क़ैद से मुक्त करवाने में साहस, दृढ़ संकल्प व प्रयत्न सर्वाधिक योगदान देते हैं। यदि साहस बरकरार रहा, हौंसला बुलन्द रहा तो चाहत की बहुमंजिली इमारत का दरवाजा व्यक्ति का स्वागत करते हुए एक दिन अवश्य खुल जाएगा। आदमी वहाँ पहुँच सकता है जहाँ वह पहुँचना चाहता है। इसमें भाग्य की इतनी बड़ी भूमिका नहीं होती जिसके इंतज़ार में बहुत समय वह खर्च कर देता है। संसार में दो तरह के व्यक्ति है। पहले वे, जो जीवन में आने वाली परेशानियों के कारण अपने नसीब को कोसने में छोटी-छोटी खुशियों से महरूम हो जाते हैं और दूसरे वे, जो जिंदगी की मुश्किल राहों को चुनौती मानकर साहस से इनका मुकाबला करने में खुशी महसूस करते हैं और सफलता की ओर बढ़ते जाते हैं। यह व्यक्ति पर ही निर्भर करता है कि वह अपने आपको कहाँ देखना चाहता है। यदि 'मैं असफल हो जाऊँगा' के डर से तीन कदम आगे बढ़ा, पाँच कदम पीछे हटा लेने वाला भाग्य को हमेशा सात तालों व सात पर्दों में बंद रहने वाली उक्ति को ही मजबूत करता रहता है। 'यदि' शब्द गणितीय क्षेत्र में तो ठीक प्रतीत होता है। जीवन के क्षेत्र में यह व्यक्ति को कहीं का नहीं छोड़ता। भाग्य उन्हीं को ही कोसता है जो सोचते हैं पर करते कुछ नहीं। जो व्यक्ति सम्यक् सोच के साथ साहस से आगे बढ़ता है आखिर भाग्य को मुट्ठी में बंद कर ही लेता है।

इतिहास बनाने में वे ही लोग कामयाब हुए हैं जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों में साहस बनाए रखा तथा संकल्प को डिगने नहीं दिया। वर्तमान युग की चाहे सुधाचन्द्रन हो या सुश्री इरा सिंघल व देवेन्द्र झाझड़िया तथा क्रिकेट खिलाड़ी युवराज सिंह। सुधाचन्द्रन के साथ भाग्य ने ऐसा खेल खेला कि एक दुर्घटना में सुधाचन्द्रन को अपना एक पैर गंवाना पड़ा। फिर भी नृत्यांगना बनने की चाहत व साहस को बनाए रखा। जयपुर कृत्रिम पाँव लगाकर अपने स्वप्न को 'नाचे

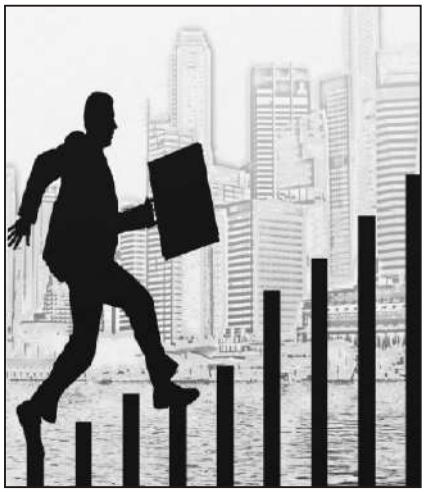

मयूरी' फिल्म में पूरा कर 'नेशनल फिल्म फेयर अवॉर्ड' प्राप्त कर लिया। सुश्री इरा सिंघल (62 प्रतिशत शारीरिक अक्षमता) ने वर्ष 2015 की भारतीय प्रशासनिक सेवा सम्पूर्ण वर्ग में अपने साहस के बल पर प्रथम स्थान प्राप्त कर यह साबित कर दिया कि अक्षम वे हैं जो सक्षम होते हुए भी जीवन में कुछ नहीं कर पाते। देवेन्द्र झाझड़िया ने एक हाथ से अक्षम होते हुए भी सक्षमता 'जेवलिंग थ्रो' रियो पैरालम्पिक खेल में स्वर्ण पदक प्राप्त कर दिखाया जिनके साहस के सामने बलिष्ठ भुजा वाले भी अपनी आँखों को शून्य में घुमाने लगते हैं। सन् 2017 में इन्हें दिया गया 2016 का 'राजीव गाँधी खेल रत्न पुरस्कार' स्वयं पुरस्कृत हो गया। युवराज सिंह जिन्हें कैंसर जैसी डरावनी व मृत्यु के नजदीक ले जाने वाली बीमारी ने अपने आगोश में ले लिया। जहाँ जीवन के अगले पल का विश्वास नहीं, जैसी बातें मस्तिष्क को चकरा रही थीं, को अपने साहस से इस भंयकर बीमारी को मात दे क्रिकेट के मैदान में जो करामात वापसी के वक्त दिखाई वह वास्तव में बेमिसाल थी। इन सबकी खासियत यह रही है कि ये अपनी बेबसी पर आँसू बहाने नहीं बैठे और न ही किसी की मेहरबानी पर जीने की ललक पाली। दुर्भाग्य पर साहस से ऐसा शिकंजा कसा कि वह तिलमिलाने लगा व मौका पाते ही वहाँ से भाग छूटा। इन लोगों के मन में सदैव सिर्फ यही ज्वाला सुलगती रही-

जो देखना चाहते हो मेरी उड़ान को,
थोड़ा सा ऊँचा और करो आसमान को।

'भाग्य में जीवन लिखा है या मौत' की परवाह न करने वाले सन् 2014 के 'नोबेल शांति पुरस्कार' विजेता मलाला युसूफजई व कैलाश सत्यार्थी के उदाहरण को ही लें। तालिबानी आंतकियों ने बंदूक की धमकी से बालिकाओं को विद्यालय जाने से रोका। मलाला ने उनकी धमकी की परवाह न कर अपने साहस से उन्हें ललकारती रही। परिणामस्वरूप एक गोली उनके कान को चोट पहुँचा ही गई। मलाला के साहस व कार्य को देख ऑस्लो को उसे आखिर 'नोबेल शांति पुरस्कार' से नवाजना ही पड़ा। 'बचपन बचाओ आन्दोलन' के प्रणेता कैलाश सत्यार्थी का काम भी खतरे व जोखिम से भरा हुआ था। उनके तीन साथियों को जान तक गंवानी पड़ी। स्वयं को भी जान से मारने की धमकी बराबर मिलती रही। अपने कार्य पर साहस को साथी मान आगे बढ़ते गए। देश व विदेश में करोड़ों बच्चों को बाल श्रम के अभिशाप से मुक्त करा विद्यालय तक पहुँचाया। उनके साहस की हौसला अफज़ाई के लिए 'नोबेल शांति पुरस्कार' को उनके लिए उपयुक्त समझा गया।

भ्रष्टाचार का नासूर निकालने व कालेधन को बाहर करने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने एक साहसिक व ऐतिहासिक फैसला 'नोटबंदी' के जरिए 2016 में लिया। फैसला बड़ा जोखिम भरा था। सरकार के भाग्य को तय करने वाली अग्निपरीक्षा थी। यह बात भी सही है कि सोच-समझकर व साहस के बल पर लिया गया फैसला कामयाबी में कभी असफल नहीं होता। देश की जनता ने भरपूर साथ दिया और कामयाबी भी मिली। 'सूचना का अधिकार' के तहत भ्रष्ट राजनीतिज्ञों, बेईमान नौकरशाही व दबंगई से पैसा ऐंठने वालों के विरुद्ध एक मुहिम सामाजिक कार्यकर्त्ताओं ने

चलाई। उन्हें पता था यह काम बड़ा जोखिम भरा है। साहस को हथियार बना भाग्य की परवाह न कर अपने काम में जुटे रहे। भले ही कुछेक को भाग्य ने लम्बी उम्र न दी पर उनके कारनामों को साहस के बल पर उजागर कर उन्हें जता दिया कि तुम्हारे दिन अब लद गए। आस्था के नाम पर मानव जीवन से खिलवाड़ करने वाला चाहे कोई रहा हो। साहसी पत्रकार व बुराई से लड़ने वाले बहादुर व्यक्तियों ने उनकी काली करतूतों का भंडा-फोड़ कर कैद की सलाखों तक पहुँचा दिया। भाग्य में उनके क्या लिखा है, को नजरअंदाज कर उनके कदम साहस के बलबूते आगे बढ़ते ही गए। माननीय न्यायाधीशों की भूमिका भी साहस भरी रही जिसमें भारी दबाब के चलते सही फैसला लेने से नहीं चूके। इन साहसी व्यक्तियों ने एक मानवीय संदेश भी छोड़ दिया कि भाग्य महज एक विचार है व साहस सिर्फ आगे बढ़ने की शक्ति नहीं है बल्कि शक्ति न होने पर भी आगे बढ़ते जाना साहस है।

दशरथ मांझी ने अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद भाग्य को ललकार जब बिहार के गहलौर और वजीरगंज के बीच फैले पहाड़ को हाथ में कुदाल व कुस्सा लेकर अपने साहस के बल पर अकेले ढहाने का काम शुरू किया तब लोगों को एक बार तो यह पागलपन लगा। कार्य के प्रति उपजे साहस को देखकर गाँव व आस-पास के लोग भी छैनी व हथौड़ा लेकर के दशरथ मांझी का साथ देने लग गए। दरअसल दशरथ मांझी की पत्नी जब गर्भवती थी तब काफी दूर में फैले इस पहाड़ से अस्पताल पहुँचने में देरी की वजह से मृत्यु हो गयी। मांझी ने उसी वक्त कसम खाई कि अब किसी के नसीब पर बुरा प्रभाव इस पर्वत की उपस्थिति से नहीं पड़ेगा। गहलौर और वजीरगंज के फासले को चालीस मील से चार मील पहाड़ को ढहाकर कर डाला। दशरथ मांझी ने साबित कर डाला कि हमें भाग्य व भगवान के भरोसे नहीं बैठना चाहिए, क्या पता भाग्य व भगवान हमारे भरोसे बैठे हों। फिल्म निर्देशक केतन मेहता ने सितम्बर 2015 में मांझी- 'द माऊंटेन मैन' फिल्म बना जब पर्दे पर उतारा तब भाग्य से लड़ते मांझी के साहस को देख लोग आश्चर्य चकित रह गए।

अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति अब्राहिम लिंकन चुनावों में बार-बार ही हार से विचलित नहीं हुए। न ही उन्होंने अपने भाग्य को कोसा, न ही साहस व स्वप्न को मरने दिया। आखिर 51 वर्ष की आयु में अमेरिका के राष्ट्रपति बन ही गए। महाराणा प्रताप के पास मुगलों की तुलना में मुट्ठीभर सेना ही थी। भाग्य रेखा मुगलों से हल्की होने का संकेत दे रही थी। फिर भी अपने साहस से मुगलों की सेना के छक्के छुड़ाते रहे। ताउम्र महाराणा प्रताप स्वतंत्र शासक के रूप में अपने साहस के बल पर जीए। चाणक्य को अपने भाग्य पर गुस्सा तब आया जब उन्हें नंदवंश के शासक ने अपमानित कर सभा से बाहर करवा दिया। चाणक्य ने उसी समय कसम खा ली कि एक दिन मैं नंदवंश का समूल विनाश करके ही रहूँगा। हाथ खाली थे। साहस की छड़ी ही उनके पास थी, योग्य सेनापति के रूप में चन्द्रगुप्त मिल गया। बड़ी सेना तैयार की व नंद वंश का नाश आखिर कर ही डाला। आज़ादी की जंग में यदि महात्मा गाँधी, जवाहर लाल नेहरु, सुभाष चन्द्र बोस, सरदार वल्लभ भाई पटेल, झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई, भगत सिंह व चन्द्रशेखर अंग्रेजों के शासन को भाग्य की देन समझते तो क्या अंग्रेजों को भारत से खदेड़ा जा सकता था? इनके साहस ने उन्हें दिखा दिया कि यहाँ टिकना अब आसान काम नहीं है। 15 अगस्त, 1947 को हमें पूर्ण आज़ादी दे यहाँ से चले गए। सामाजिक उत्थान के जितने भी कार्य हुए हैं, वे सब साहस के बल

पर ही हुए हैं। सफाईकर्मी का बेटा एक सफाईकर्मी ही बनेगा। इस बात को भाग्य की देन समझ चुपचाप बैठे रहना भाग्य की जकड़न को और अधिक ताकतवर बनाना ही तो है। लेकिन लोगों ने भाग्य की इस परम्परागत पकड़ को साहस के बल तोड़ राजनीतिक, साहित्यिक, सामाजिक, आर्थिक व प्रशासनिक सेवाओं में वह स्थान बनाया, जिसका स्वप्न उनके पूर्वजों को कभी आया ही नहीं था।

भाग्य को वर्तमान से क्रय किया जा सकता है। वर्तमान साहस व कर्मशीलता से भरा हुआ है तो भाग्य की काली परछाई उसका पीछा नहीं कर सकती। ओपरा विनफ्री ने भी भाग्य का सही पोस्टमार्टम किया है, 'भाग्य अवसर से संयोग की तैयारी भर है।' यदि व्यक्ति भाग्य-दुर्भाग्य को नहीं मानता है तो फिर क्यों दुर्भाग्य को अपने सर पर ओढ़ अपने आपको मार डालता है? दुनिया में जितने भी बड़े कारनामें हुए हैं वे सब भाग्य की बजाय साहस, संकल्प व आत्मविश्वास को अपनाने से ही पूरे हुए हैं। भाग्य की बाट जोहने से नहीं। रस्किन ने ठीक ही कहा है, 'जब साहस टूट गया तब सब कुछ लुट गया।' यदि दुर्भाग्य रूपी दैत्य व्यक्ति के सम्मुख आ खड़ा हो तो व्यक्ति को निर्भीक अभिमन्यु की तरह साहस के साथ उसके भेदन के लिए अपने आपको सदैव तैयार रखना चाहिए। यदि विघ्नों का विंध्याचल व्यक्ति के मार्ग में अवरोध उत्पन्न करे तो अगस्त्य जैसा साहस दिखा अपने पाँवों से रौंद डालना चाहिए। विष्णु शर्मा ने भाग्य की भूमिका को नकारते हुए कहा है, 'Fortune is surely, whose constantly strives, it is cowards who say. Oh! may fate; strike fate with a blow. Show your courage and manlines whatever strength you have, what matter you fail.' अर्थात् भाग्य निश्चित रूप से उसी का है जो लगातार संघर्ष करता है। यह कायरों का कहना ही है, ''ओह! मेरे भाग्य! साहस व पौरुष से मिली जितनी ताकत आपके पास है, उससे भाग्य पर प्रहार करें, फिर क्या बात कि आप असफल हों।'

प्राध्यापक (से.नि.)
ग्राम पोस्ट-हेतमसर, वाया-नूँआ,
जिला-झुंझुनूं-333401
मो: 9460841575

सच्चा शिक्षक : अमृत कलश

❒ प्रकाश वया

व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र की अपेक्षा से बचपन और जवानी अतिशय महत्त्वपूर्ण है, उसका सम्यक निर्माण कर उसके जीवन को सही दिशा देना समाज का अहम् दायित्व और धर्म है। आज जिस तरह का पारिवारिक, सामाजिक और राजनीतिक परिवेश बन रहा है उसके सापेक्ष हमारा सावचेत और सजग होना नितान्त आवश्यक है।

बालक एक अनगढ़ पत्थर की तरह माना गया है, उसे एक मूर्तिकार की तरह सूझ-बूझ की हथौड़ी और छैनी से सामर्थ्यवान, क्षमतावान और ऊर्जावान नर-रत्न के रूप में तराशने का कार्य माता-पिता, शिक्षक और अन्यान्य प्रबुद्ध जन को करना होता है, इस निमित्त पारिवारिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश की शुचिता को बनाए रखना हमारी जिम्मेदारी है, क्योंकि विद्यमान परिवेश पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति से प्रभावित लग रहा है और इसके झण्डा बरदार अपने-आपको प्रगतिगामी साबित करने की अन्धी दौड़ और होड़ में भारतीयता और हमारी गौरवशाली पहिचान पर प्रश्न चिह्न लगा रहे हैं।

बालक की अन्तर्निहित प्रतिभा और ऊर्जा को उद्घाटित कर सही मायने में 'इन्सान' बन कर ज़िन्दगी जीने का अभ्यासी बनाने के साथ ही उसमें हमारी गौरवशाली परम्पराओं और सांस्कृतिक जीवन मूल्यों का आरोपण करना भी युगधर्म है। सत्य, अहिंसा, दया, करुणा, सेवा, सहयोग और परदुख कातरता जैसे शाश्वत जीवन मूल्य ही हमारे राष्ट्र के कर्णधार को चरित्रवान और संस्कारवान बनाने में समर्थ हैं तथा ऐसे सद्गुणों के धारक ही 'स्व' और 'पर' के लिए शुभंकर साबित हो सकते हैं। हमारा बालक धीर, वीर और गंभीर बने तथा ज़िन्दगी में आने वाली अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों से रूबरू होकर उनमें विवेक और हिम्मत के साथ जीने का अभ्यासी बन जाए और जरूरत पड़ने पर जुल्म, अत्याचार, अनाचार, भ्रष्टाचार और दुराचरण से दो-दो हाथ कर सके, प्रतिकार कर सके।

जंगल का राजा शेर अपने भरोसे की ज़िन्दगी जीता है, कठिनाई और मुसीबत आने पर भागता नहीं है, कहा भी है कि 'भीड़ दहुँ ए भाजे नहीं, आप भरोसे सिंह।' ठीक उसी तरह से हमारा बालक भी आत्मबल और विश्वास से लबरेज होना चाहिए, उच्चाकांक्षी बालक ही अपनी ज़िन्दगी में अपने वाँछित प्राप्य को हासिल कर सकता है। विद्यार्थी जीवन यानि बचपन और किशोरावस्था व्यक्ति के जीवन का स्वर्णिम अवसर है, जिसका शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक उत्कर्ष के निमित्त लाभ उठाना तथा उसे सम्यक् दिशा प्रदान करना ही श्रेयस्कर है।

व्यक्ति निर्माण में एक शिक्षक की भूमिका अतिशय महत्त्वपूर्ण हुआ करती है, बालक की अन्तर्निहित प्रतिभा व क्षमता को पहिचान कर उसे उद्घाटित करने का कार्य उसे करना होता है। हकीकत यह है कि मनोविज्ञान का अच्छा जानकार शिक्षक बालक के अन्तर्मन को ठीक से पढ़ते हुए उसे लक्ष्योन्मुख बनाकर गति और मति दे सकता है। आज के शैक्षिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश के मद्देनज़र यह कार्य अत्यधिक चुनौतीपूर्ण बनता जा रहा है, परन्तु आत्मनिष्ठ और कर्मनिष्ठ शिक्षक इस ईश्वरीय कार्य को करने में सक्षम और समर्थ हुआ करते हैं।

शिक्षक और विद्यार्थी का रिश्ता अतिशय पवित्र और विलक्षण होता है, इस तरह के अन्तर्सम्बन्ध एक दूसरे को निश्चित रूप से प्रभावित करते हैं। शिक्षक विद्यार्थी के लिए आदर्श होकर अनुकरणीय होता है, इसलिए एक शिक्षक का जीवन व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र की अपेक्षा से मूल्याधारित होना चाहिए तभी वह सही मायने में एक इन्सान का निर्माण कर सकने की स्थिति में होता है, उसे अपने अन्तस में एक ईमानदार, कर्त्तव्यनिष्ठ शिक्षकत्व को सतत् जगाए रखना होगा अन्यथा वह एक छद्म, ढोंगी और व्यावसायिक शिक्षक बनकर रह जाएगा और नामधारी शिक्षक समाज और राष्ट्र का भला नहीं कर सकते।

गुरु कुम्हार शिष कुंभ है, गढ़ि गढ़ि काढे खोट।
अंतर हाथ सहारि दै, बाहर बाहै चोट।।

एक कुंभकार गीली मिट्टी के लौंदे को सुन्दर और सुघड़ घड़े का आकार देने के लिए अपने दोनों हाथों का उपयोग अतिशय कुशलता से करता है, तभी बाहर से चोट मारना और अन्दर हाथ का सहारा देकर उसे टूटने से बचाना भी उसके लिए आवश्यक है, अन्यथा शीतल जल प्रदाता घड़े की सारी संभावनाएँ समाप्त हो जाती है।

सच्चाई तो यह है कि शिक्षक बनना आसान है, लेकिन शिक्षक बनकर जीना बड़ा मुश्किल है। व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र की अपेक्षा से चिंतन करें तो लगता है कि शिक्षक इन संस्थाओं का नियंता है, नियामक है।

'सुदामा चरित' में नरोत्तमदास ने कृष्ण के बाल सखा सुदामा जो कि एक आदर्श शिक्षक थे द्वारा अपनी पत्नी को उद्बोधित करते हुए शिक्षकों की कसौटी का निरूपण किया है।

सिच्छक हों सिंगरे जग को तिय
ताको कहा अब देती है सिच्छा।
जे तपके परलोकन सुधारत,
सम्पत्ति की तिनको नहीं इच्छा।।
मेरे हिये हरि के पद पंकज,
बार हजार ले देखु परिच्छा।
औरन को धन चाहिए बावरी,
बाँभन को धन केवल भिच्छा।।

सुदामा जी की शिक्षक के रूप में गर्वोक्ति शिक्षक के वास्तविक स्वरूप और महिमा का दर्शन कराती है, शिक्षक का जीवन त्याग और तप का है, अपना और अपने पात्र शिष्य का लोक-परलोक सुधारने के साथ वह निस्पृह भाव से अपने-अपने शिष्य को तराशने का काम करता है, उसको प्रतिदान में किसी सम्पत्ति की इच्छा नहीं होती है, वरन उसका आत्म तोष चरम सीमा पर होता है, असल में धन का कामी शिक्षक अपने शिक्षकीय जीवन को सलीके और तरीके से जीने में सफल नहीं हो सकता तो दूसरी ओर एक स्वाभिमानी शिक्षक ही तेजस्वी, ओजस्वी, मनस्वी और यशस्वी हो सकता है, इन गुणों से लबरेज शिक्षक समाज और राष्ट्र के लिए शुभंकर और फलदायी साबित होकर अपने शिक्षकत्व को सार्थक कर सकता है। शिक्षक ऐसा प्रदीप्त चिराग है जो अपने ज्ञानालोक से बालक की चेतना को जाग्रत कर उसे सम्यक् दिशा देने के साथ ही 'स्व' और 'पर' कल्याणी बनाकर संचित पुण्य कर्मों की बदौलत प्राप्त

मानव जीवन को सार्थकता प्रदान करने में सहभागी बनने के गुरुत्तर और महनीय दायित्व का निर्वहन करता है, जो कि ईश्वरीय कार्य है।

शिक्षक रूपी चिराग का निरन्तर प्रदीप्त रहना आवश्यक है और उसे प्रदीप्त रहने के लिए ज्ञान रूपी तेल की आवश्यकता होती है, उस अपेक्षा से शिक्षक को स्वाध्यायी होना चाहिए। सच्चाई तो यह है कि उसके पास अपने ज्ञान पिपासु को देने के लिए पर्याप्त ज्ञान सम्पदा होनी चाहिए, ऐसा शिक्षक अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में विलक्षण आत्मानुभूति करने के साथ ही गर्व से बोल सकता है।

बुझने का मुझे कुछ दुख नहीं,
पथ सैंकड़ों को दिखा चुका हूँ।
(महाकवि-स्व. स्नेहीजी)

एक सच्चा और अच्छा शिक्षक मेरी दृष्टि से 'अमृत कलश' है, शिक्षार्थी उसमें विद्यमान ज्ञानामृत को छककर अपने जीवन को अमरता प्रदान कर सकता है। परिवार, समाज और राष्ट्र की अपेक्षा से एक कर्त्तव्यनिष्ठ और जिम्मेदार 'इन्सान' बनकर उनके उत्कर्ष में अपना महनीय अवदान दे सकता है, जो कि उसका धर्म है, कर्म है।

एक शिक्षक का शिक्षण अतिशय प्रभावी और बोधगम्य होना चाहिए, क्योंकि एक अपेक्षा से शिक्षण बालक के लिए बौद्धिक भोजन है, जो कि स्वादिष्ट, पौष्टिक और पाचक होना चाहिए तभी जाकर उसका बौद्धिक, मानसिक और आत्मिक विकास सम्भव हो सकता है।

वस्तुतः शिक्षण एक अनूठी कला है और यही उसकी उपयोगी शिक्षण सामग्री भी है, शिक्षक अपने वाक् चातुर्य से सहज रूप में विषय वस्तु को बालक तक सम्प्रेषित करने में सफल हो जाता है। पाठ्यसामग्री कितनी बढ़िया और उपयोगी हो लेकिन उसको बालक के सामने परोसने का तरीका बहुत महत्त्व रखता है, कहावत है कि 'वो ही काजल ठीकरी, वो ही काजल आँख।' ठीकरी में बनने वाला काजल आँख में ही शोभा पाता है, ठीक इसी तरह से बालक के कोमल अन्तस का मर्मज्ञ शिक्षक उसकी आँख को आँज कर उसे नई दृष्टि प्रदान करने में समर्थ होता है।

ख्यातनाम शायर-इकबाल का कथन द्रष्टव्य है-

है इल्तजा यही कि, अगर तू करम करे,
यह बात दे जुबाँ पे कि दिल पर असर करे।

इसका भावार्थ- यह है कि शिक्षक का शिक्षण बालक के दिल पर असर करने वाला होना चाहिए।

आस्तिकता, आत्मनिष्ठा, प्रामाणिकता और कर्त्तव्यनिष्ठा जैसे उदात्त चारित्रिक लक्षण व्यक्ति के जीवन को विलक्षण और अप्रतिम ऊँचाई प्रदान करने के साथ ही इसे सर्वग्राही बना देते हैं, इसलिए बालक में सकारात्मक सोच और दृष्टि का विकास आवश्यक है, क्योंकि इसी भाव पूंजी को संचित कर ज़िन्दगी की यात्रा का पथिक मनुष्य अपने मुकाम और पड़ाव को हासिल कर सकता है, जिस पर पहुँचना उसका परम लक्ष्य हुआ करता है। सच्चाई तो यह है कि व्यक्ति सकारात्मक दृष्टि और सोच से अपने लिए स्वर्ग का द्वार खोल सकता है, नकारात्मकता अन्ततोगत्वा अधोगति की ओर धकेलती है।

बालक के निर्माण की दृष्टि से आज की शिक्षा पद्धति को सर्वांगरूपेण खंगालने की महती आवश्यकता है, क्योंकि विद्यमान शैक्षिक परिवेश इस गौरवशाली राष्ट्र और मानवीय जीवन मूल्यों की अपेक्षा से व्यक्ति निर्माण करने में साधक नहीं लग रहा है, यदि हम ईमानदारी से चिन्तन करें तो भारतीय शिक्षा को हमारी माटी से जुड़ना पड़ेगा। गौरवशाली अतीत का संरक्षण और संवर्धन नितान्त आवश्यक है और यह सब कुछ शिक्षा के माध्यम से ही सम्भव है। बालक को हमारे वैयाक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति आस्थावान और श्रद्धावान बनाना युग धर्म है, जिसका निर्वहन कर हम हमारे बचपन और राष्ट्र का भला कर सकते हैं।

आज की गला काट प्रतिस्पर्धा और अन्धी दौड़ और होड़ से बालक को बचाना भी आवश्यक लग रहा है, जरूरत इस बात की है कि हम पवित्र शैक्षिक परिवेश का सृजन करते हुए उसकी अन्तर्निहित क्षमता, प्रतिभा और ऊर्जा को उद्घाटित करने का प्रयास कर उसे समुचित अवसर प्रदान करें।

प्राध्यापक (से. नि.)
रामपोल बस स्टेण्ड भीण्डर, (उदयपुर)-313603
मो: 9413208719

बेटी पढ़ाओ

❒ जगदीशचन्द्र मेहता

जीवन के परिवेश में
जन्मधात्री माँ का धर्म कर्म
दर्शन-रहस्य-आनन्द में
समभाव का वात्सल्य भरा प्रेम
दिव्य शिशु को प्यार से
गोदी भरी झूले में झुलाकर
बेटा-बेटी को अन्तर्मन से
छाती से लगाकर,
आत्मदर्पण में देखकर
भेद-भाव से रहित
आत्मीयता का स्नेह भरा चुम्बन,
आँचल का दूध पिलाकर
दैवी प्रकृति मातृत्व नारी धर्म
शिशु का आनन्द सुख
माँ तो माँ 'मातृदेवो भवः'
का रूप ही है।
अहल्या, द्रौपदी, सीता, तारा,
मंदोदरी, पंचकन्या
त्यागमयी आदर्श चरित्र नारी
धर्म की सरिता,
गंगा की धारा राधा बेटी ही तो है।
सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, व्यापक,
न्यायकारी प्रभु
बीज प्रदान पिता, प्रकृति रूपा माता
परमात्मा का प्रसाद बेटा-बेटी
आत्मारूप एक ही है।
मानवीय ज्ञान का
उत्कर्ष रहस्यमय चरित्र
समोऽहं नारीधर्म समदर्शन
सकारात्मक भाव है।
बेटी बचाओ, बेटा-बेटी पढ़ाओ,
ज्ञानवान संस्कारी बनाओ।
जीवन की यथार्थ सार्थकता का
दर्शन है।

प्रधानाध्यापक (से. नि.)
पैलेस रोड गेट, भोजापालिया, बाँसवाड़ा-327001
मो: 9414101983

स्मृति-संवर्द्धन हेतु सूत्र

❒ टेकचन्द्र शर्मा

अक्सर विद्यार्थियों से सुनने में आता है कि क्या करें पढ़ते हैं वह याद नहीं रहता। पढ़ते तो बहुत हैं पर याद बहुत कम रहता है। मनीषियों, मनोवैज्ञानिकों, महापुरुषों व पुस्तकों के अध्ययनोपरान्त निचोड़ रूप में याद्दाश्त कायम रहे इसके कुछ सूत्र यहाँ दिए जा रहे हैं इसमें मेरे अर्जित अनुभव भी कुछ मात्रा में हैं।

स्मृति संवर्द्धन हेतु स्वामी विवेकानन्द रोल मॉडल है। उनकी याद्दाश्त गजब की थी। एक बार पढ़ते ही उनके वह विषय पूर्ण रूप से याद हो जाता था। अतः विशेष इस संक्षिप्त आलेख में उन्हीं के इंगित संकलित सूत्रों को यहाँ दिया जा रहा है जिससे अधिकाधिक छात्र लाभान्वित हो सकें।

समयः–पढ़ने का समय प्रातःकाल 4:00 से प्रारम्भ होकर 6-7 बजे तक का सर्वोत्तम है इस समय मस्तिष्क व शरीर तरोताज़ा रहता है और इस समय किए काम व अध्ययन को मस्तिष्क पूर्णरूप से मनोयोगपूर्वक ग्रहण कर लेता है।

अतः शौचादि क्रियाओं से निवृत्त होकर थोड़ा-सा व्यायाम, ध्यान, योग आदि करके पढ़ने बैठ जाएँ। ऐसा करना याद्दाश्त के लिए लाभप्रद रहेगा।

शारीरिक मुद्राएँ (आकृति):–दूसरा सूत्र जो महत्त्वपूर्ण है-पढ़ते समय शारीरिक मुद्रा (Postures)।

रीढ़ की हड्डी एकदम सीधी रहे मस्तिष्क कटि एक सीध में रहे। अक्सर छात्र शरीर की मुद्राएँ Postures का ध्यान नहीं रखते। रीढ़ की हड्डी सीधी नहीं रखते। लेटे-लेटे पढ़ते हैं टेढ़े-मेढ़े हो जाते हैं जो स्मरण शक्ति में बाधा रूप है। अतः शारीरिक मुद्राओं का ध्यान अवश्य रखें।

एकाग्रताः अंग्रेजी में एक कहावत हैः–

Work while you work.
Play while you play.
That is the way.
To be happy and gay.

इस कहावत को सदैव ध्यान में रखें। जो कुछ कर रहे हैं बस उसी का ध्यान रहे उसी में तल्लीन हो जाएँ। इससे सम्बद्ध एक छोटा-सा

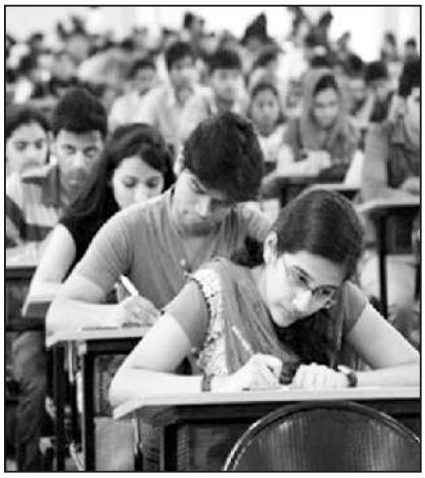

उदाहरण प्रस्तुत कर रहा हूँ। अर्जुन का लक्ष्य था मछली की आँख। गुरु आचार्य ने पूछा 'अर्जुन क्या देखा रहे हो अर्जुन का प्रत्युत्तर था सिर्फ मछली की आँख देख रहा हूँ और कुछ नहीं देख रहा। यह एकाग्रता का आदर्श एवं अनूठा उदाहरण है। जो कुछ पढ़ रहे हैं बस उसी पर ध्यान केन्द्रित रहे अन्य किसी पर ध्यान न जाए। फिर उसका परिणाम देखिए जो कुछ पढ़ा वह सब याद हो जाएगा। सदा याद रहेगा। कभी नहीं भुलोगे।

नियमितताः– अध्ययन में नियमितता रहे। रोज नियत समय पर पढ़ें। यह नहीं कि यदा-कदा पढ़े या परीक्षा के नज़दीक ही पढ़े।

लिखनाः– जो कुछ भी पढ़ा उसे संक्षिप्त रूप में लिखें अवश्य अंग्रेजी में कहावत है।

Reading makes a man wise.
Writing makes a man perfect.
When I read I forget.
When I write I remember.

ये दोनों उक्तियाँ याद्दाश्त के लिए लाभप्रद हैं, जो भी पढ़ा उसकी चर्चा अन्य छात्रों से करना न भूलें। चर्चा करने से तथ्य पक्के हो जाते हैं। अपने से पढ़ाई में कमजोर छात्रों को भी अपना पढ़ा हुआ बताएँ, यह भी याद्दाश्त को पैनी करेगा।

खानपानः– ये भी याद्दाश्त में सहायक है। ठूंस ठूंस कर न खाएँ, हल्का फुल्का खाएँ ताकि आलस्य हावी न होने पाए। बादाम जो रात में पानी में भिगोए हुए हैं प्रातः उठकर उन्हें खाएँ ये लाभप्रद सिद्ध होंगे।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें:– स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। यदि आपका शरीर स्वस्थ है तो मस्तिष्क स्वस्थ रहेगा और जो कुछ भी पढ़ोगे तुरन्त याद हो जाएगा।

एक बार विद्यालय के छात्रों ने स्वामी विवेकानन्द जी से पूछा ''क्या हमें गीता का अध्ययन करना चाहिए?'' उनका प्रत्युत्तर था- ''नहीं, आप मैदान में फुटबाल खेलें-दौड़ें। आपकी भुजाएँ बलिष्ठ हों। शरीर फौलादी हो/गीता तुम्हारे मस्तिष्क में तुरन्त आ जाएगी।'' अतः शरीर को बलिष्ठ बनाएँ, शक्ति अर्जित करें तो ज्ञान दौड़ा-दौड़ा तुम्हारे पास आएगा।

साथ साथ में यह भी याद रखें–

काकचेष्टा बकोध्यानम् श्वान निंद्रा तथैवच।
अल्पाहारी गृहत्यागी विद्यार्थी पंच लक्षणम्।

जहाँ भी ज्ञान मिले कौवे जैसी चेष्टा रखें विद्यार्थी तुरन्त वहाँ से ले लें। जैसे-

पड्यो अपावन ठौर में कंचन तजे न कोय। इस बात को भी ध्यान मे रखें।

सुख सुविधा में रहने वाले विद्याग्रहण नहीं कर सकेंगे, विद्यार्थी सुख की कामना न करें। इन दोनों सुखार्थी व विद्यार्थी में छत्तीस का आँकड़ा है इसलिए विद्यार्थी बने रहें सुखार्थी नहीं। सुखार्थी बनते ही विद्या गायब।

इति शुभम्।

जिला शिक्षा अधिकारी (से.नि.)
मुनि आश्रम के पास, झुंझुनूं
मो: 9667212236

आचार्य विनोबा भावे ने कहा-

सदियाँ बीत गई, जिनके सयानेपन की सुगंध आज भी दुनियाभर में फैली हुई है। उनका ध्यान जीवन को साक्षर की जगह सार्थक बनाने की ओर था। साक्षर जीवन भी निरर्थक हो सकता है। इसके उदाहरण वर्तमान सुशिक्षित समाज में पर्याप्त मिलते हैं और निरक्षर जीवन भी सार्थक हो सकता है इसके भी उदाहरण है।

समय अनमोल

❒ डॉ. कुंजलता सारस्वत

जिन्दगी का सबसे बहुमूल्य शब्द है समय। यह व्यक्ति के जन्म से लेकर अन्तिम साँस तक उसका साथ निभाता है। समय है तो जीवन है। समय को Recycle नहीं किया जा सकता है न ही खोए हुए समय को पुनः प्राप्त करना सम्भव है। यह सत्य है कि

वक्त बड़ा बलवान है, पलक झपकें कि शाम है।
वक्त कभी नहीं ठहरता
दो पल को भी नहीं सुस्ताता
वक्त बड़ा बलवान है।
जो भागे वक्त के आगे, वह पछताता है।
रह जाए वक्त के पीछे वह भी घबराता है।
जो साथ में कदम मिलाता है।
वही ऊँचे शिखर को पाता है।

अर्थात् समय रहते निर्णय लेने में ही मनुष्य का उद्धार है। क्योंकि समय के अनुरूप ढलना ही बुद्धिमता है। समय एक ऐसा गुरु है, जो बिना कहे सब कुछ सिखा देता है। समय के महत्त्व के संदर्भ में एक रोचक प्रसंग है-एक बार चित्रकला प्रतियोगिता में प्रतिभागियों को स्वेच्छा से चित्र बनाने के लिए कहा गया। चित्रकार ने एक छोटे से वायुयान जैसी मानव आकृति बनायी। उसके सीने के दोनों ओर पंख रखे हुए थे, सिर के सामने की ओर सीधे और लम्बे खड़े बाल थे, सिर पीछे की ओर से पूरी तरह गंजा था। इस चित्र को देखकर कोई भी दर्शक यह समझ नहीं पाया कि चित्र किसका है अन्त में चित्रकार से पूछा तब जवाब मिला यह चित्र 'समय' का है आश्चर्यचकित दर्शकों ने जिज्ञासावश पूछा कि यह समय का चित्र कैसे हो सकता है समय का तो कोई आकार ही नहीं होता, तब चित्रकार ने कहा यह सत्य है किन्तु मैंने समय के महत्त्व को दर्शाने के लिए एक रूपक के रूप में यह चित्र बनाया है-

समय बहुत तीव्र गति से आगे बढ़ता है मानो पैरों से धीरे-धीरे न चलकर पंखों की सहायता से वायुयान से भी तीव्र गति से उड़ जाता है।

इसके सामने के खड़े लम्बे बाल संकेत कर रहे हैं कि समय के आने से पहले ही सावधान रहकर सामने से इसके बालों को पकड़ लें तो यह हाथ में आ सकता है अन्यथा पीछे से पकड़ना सम्भव नहीं, क्योंकि यह गंजा है। कहने का तात्पर्य है कि समय आने से पूर्व यदि हम अपनी कार्ययोजना बनाकर तदनुसार कार्य कर लेते हैं तो कम समय में भी अधिक उपयोगी कार्य करके लाभ उठा सकते हैं, थोड़ी-सी भी असावधानी होते ही समय हाथ से निकल जाता है। कहते हैं कि इस चित्रकार ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।

साथियों समय का कोई मूल्य नहीं होते हुए भी यह अमूल्य निधि है। हम सब जानते हैं कि जन्म के बाद हम सबका शरीर स्वाभाविक रूप से बढ़ता है। दिन, महीने, वर्ष गुजरते जाते हैं शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था आ जाती है। जीवन के इतने वर्ष पता नहीं कैसे व्यतीत हो गए अब जीवन समाप्त होने के कगार पर है, इस समय यदि जीवन भर की इकट्ठी की गयी सम्पत्ति भी भेंट दे देवें तो अथक प्रयासों से भी एक दिन तो क्या एक क्षण के लिए भी बचपन या युवावस्था पुनः प्राप्त करना सम्भव नहीं है।

अपने पूर्व के जीवन की पड़ताल करने पर आप पाएँगे कि आपने अपने जीवन में जो चाहा था वह सब लक्ष्य प्राप्त कर लिया है तो आपको संतोष, आत्मसंतुष्टि व शान्ति की अनुभूति होगी। इसके विपरीत यदि ऐसा लगा कि आपका लक्ष्य तो कुछ और ही था। काम कुछ और करते रहे, दिन-रात सोते रहे, समय को व्यर्थ गंवाते रहे, आपका मन पछतावे में पड़ जाएगा। आपको लगेगा कि काश! पहले की तरह थोड़ा-सा समय मिल जाए तो जल्दी से अपने लक्ष्य को पाने के लिए प्रयत्न करूँगा परन्तु उस समय सब कुछ लुटाने पर भी बीता हुआ समय पुनः लौटकर नहीं आ सकता है।

अतः मित्रों हमें कीमती समय का उपयोग सतर्कतापूर्वक करना चाहिए। कहा गया है-

पुरुष बली नहीं होत है, समय होत बलवान।

अर्थात् व्यक्ति बलवान नहीं होता समय बलवान होता है। समय अपनी गति से चलता है। वह न किसी के लिए अपनी गति तेज करता है न किसी के लिए अपनी चाल धीमी करता है। न ही समय किसी के रोकने से रुकता है। समय का महत्त्व समझने वाला व्यक्ति ही अपनी बुद्धि व क्षमतानुसार समय का सदुपयोग करता है और जीवन में उपलब्धियाँ हासिल करता है। हमारे साथ समस्या है कि हम या तो बीते हुए कल के बारे में सोचकर चिन्तित रहते हैं या आने वाले कल के लिए विचार करके अपना समय खो देते हैं। कल से तात्पर्य है वह काल जो हमारे हाथ में नहीं है।

समय पर अपना काम नहीं करने वाले लोग वे काम भी नहीं कर पाते हैं जिस कार्य को करने की योग्यता उनमें है। समय के साथ पुराना काम बोझ बन जाता है। समय के गर्भ में ही सब कुछ है, धन, आविष्कार, सफलता, उन्नति..।

समय कीमती और वापस न मिलने वाला तत्व है इसके महत्त्व को जो समझते हैं वे विश्व पटल के इतिहास पर सदैव विद्यमान रहते हैं। सृष्टि समय से चलती है, दिन-रात समय से आते हैं। मौसम समय आधारित है। ईश्वर सभी को 24 घण्टे का एक दिन प्रदान करता है जो लोग 24 घण्टे का सही उपयोग करते हैं। दूसरों से मीलों आगे निकल जाते हैं एवं समय बर्बाद करने वाले केवल तमाशा देखते रह जाते हैं। उनके सपने हकीकत में कभी भी परिणत नहीं हो पाते हैं। विद्यार्थी जीवन मनुष्य के लिए बेशकीमती होता है उसके भविष्य का निर्धारण करता है। मानसिक, शारीरिक और बौद्धिक..सभी क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बनाता है। कहा गया है।

जो समय के साथ है, जीत उसी के हाथ है,
जो वक्त की कदर है करता,
जीवन में सुख समृद्धि पाता।

याद रखिए-

वक्त सबको मिलता है
जिन्दगी बदलने के लिए
किन्तु जिन्दगी दोबारा नहीं मिलती,
वक्त बदलने के लिए।

इसलिए वक्त रूपी धरोहर की रक्षा कीजिए, पहिचानिए, सदुपयोग कर उन्नति के मार्ग को प्रशस्त कर मनुष्य जीवन को सार्थक कीजिए।

प्रधानाचार्य
राज. बालिका उ.मा.विद्यालय
बिजयनगर (अजमेर)

शब्द स्वरूप, महिमा अनूप

❒ डॉ. दाऊ दयाल गुप्ता

आप कदाचित हमारी इस राय से सहमत होंगे कि जिनके पास शब्द-सम्पदा है, उन पर वाणी की अहेतुकी कृपा है। यह तथ्य सर्व विदित है कि 'अक्षर' ब्रह्म है। तब 'शब्द' इसी 'अक्षर' का संयोजित कार्यकारी रूप हुआ। वस्तुतः शब्द में ही रस है। अतः शब्दविहीन स्थिति नितान्त नीरस एवं शक्तिहीन है। महाकवि सूरदास ने एक पद में लिखा है-

चरन कमल बंदौ हरिराई।
बहिरौ सुने मूक पुनि बोले रंक चले सिर छत्र धराई।।

यहाँ भक्त कवि ने 'मूक' के बोलने को हरिकृपा माना है। इसी प्रकार कविवर तुलसीदास की मान्यता है-

मूक होय बाचाल पंगु चढ़े गिरिवर गहन।

हमें भी ईश्वरीय कृपा के इस चमत्कार से गुरेज नहीं। अन्तर मात्र इतना सा है कि हम इस करिश्मा को 'शब्द-ईश' की कृपा का फलागम मानते हैं। निर्विवाद रूप से जहाँ शब्द है वहीं नाद है।

शब्द-साधना, ईश्वरीय ब्रह्म की आराधना है। वाणी-विनायक की प्रतिस्थापना है। शब्द की सामर्थ्य असीम है और इस विलक्षण शक्ति की संप्राप्ति आनन्दानुभूति है। शब्द निनाद से वक्ता के मन को तोष होता है तो श्रोता के कामों में मधुरिमा की सृष्टि संभव है। शब्द-अभिव्यक्ति से एक साथ एक बारगी जो आनन्द स्रोत बहता है। वह हजारों मनुष्यों को स्पर्श करता हुआ वाणी की मुखरता का साक्षी बनता है। निःसंदेह वाणी का वरदान, प्राणी को सब कुछ सुलभ बना देने में सक्षम है। इसीलिए श्री रामचरित मानस में महात्मा तुलसीदास ने ग्रंथ का शुभारंभ करते हुए वाणी-विनायक की वन्दना की है-

वर्णानामर्थ संधानां रसानां छन्दसामपि।
मंगलानां च कर्त्तारौ बन्दे वाणी विनायकौ।।

(अक्षरों, अर्थ समूहों, रसों, छन्दों तथा मंगलों को करने वाली सरस्वती और गणेश जी की मैं वंदना करता हूँ।)

हमारी दृष्टि में जिसने आखर स्वरूप, अर्थसमूह, रस सिद्ध, छन्द-बद्ध शब्द को सेह लिया उसे वाणी का प्रसाद मिल गया तथा मंगल विधान से शब्द निधान बन गया। शब्द-सम्पदा का स्रोत खुल गया। अस्तु, शब्द सम्पदा हरिकृपा की प्रतीक स्वरूप अद्भुत सामर्थ्यवान है। शब्द-भण्डार में निरन्तर अभिवृद्धि नवीन उत्साह का संचार करती है तथा मानव-मानस की छटपटाहट से छुटकारा दिलाती है। साधक की मूकता तब मुखरता में बदल जाती है और तब कवि सूरदास को यह लिखना नहीं पड़ता कि

'ज्यों गूंगे मीठे फल कौ रस अंतरगत ही भावै।'

निरन्तर प्रयास व अभ्यास से सारस्वत शब्द-संपदा यों घटित होती है-

सरस्वती के भंडार की बड़ी अपूरब बात।
ज्यों खरचे त्यों-त्यों बढ़े बिन खरचे घटि जात।।

शब्द-सम्पदा का स्वामी, शब्द सामर्थ्य को प्राप्त कर लाचारी का अनुभव नहीं करता है। शब्दानुशासन से अपनी वाणी का प्रयोग कर भीड़ भरी दुनिया में अपना असर जमाता है। साथ ही शब्दों के अभाव की स्थिति में अगल-बगल झाँकने में बाजी मार ले जाता है। शब्दों का विपुल भंडार वक्ता को अवसरानुकूल अभिव्यक्ति के लिए उपयुक्त शब्द-चयन की अनुभूति देता है। शब्दों के पर्याय सुझाता है, जिससे साधक को शब्द-विकल्प चयन करने का अवसर सहज प्राप्त हो जाता है। यही शब्द सामर्थ्य है। महात्मा कबीर ने स्पष्ट कहा है-

बोली एक अमोल है, जो कोई बोले जानि।
हिये तराजू तोल के, तब मुख बाहिर आनि।।

मुख से निसृत तीर वापस नहीं आता। जिस शब्द का संधान 'रसाल' के रूप में किया जाना अभीष्ट था वह 'बवाल' बन गया। जिस शब्द प्रयोग से कमाल होना था, वह 'धमाल' मचा गया। वक्ता को लेने के देने पड़ गए। पश्चाताप की आग में तपकर 'यू टर्न' लेने को बाध्य होना पड़ा। शब्द साध्य के स्थान पर असाध्य साबित हुआ। आपके निजी शब्द-कोश की असमर्थता का चिट्ठा खोल गया।

सार्थक शब्द-प्रयोग की अपनी महिमा है। प्रासंगिक शब्दावली का स्वरूप वस्तुतः अनूप है। गाली भी दी जाए तो सलीके से ताकि रससिक्त शब्दों को सुनकर श्रोता के समक्ष हँस-हँसकर झेलने के अतिरिक्त मुँह विसूरने का अवकाश ही न हो। भली-भाँति संस्कारित शब्द, नपी-तुली वाणी यथार्थतः मुख की शोभा है, अधर लता से सहज ही झरते हुए।

शिक्षक हो या प्रशासक, नेता हो या न्यायाधीश अथवा प्रबंधक हो या पत्रकार सभी का शब्द से वास्ता होता है। शब्द की पकड़ न हो तो विरोध की रगड़ से बच नहीं सकता है। एक अच्छा खासा डील-डौल वाला व्यक्ति भी वाक् चातुर्य के अभाव में मात खा जाता है। शब्दों से प्रगाढ़ परिचय न होने पर अपने पास लिखा हुआ मसौदा भी साथ नहीं निभा पाता। शब्द जो पर्चे में लिखे हैं वह तो अन्य किसी के हैं। ऐसी स्थिति में आपके अधरों पर बखूबी चढ़कर असर दिखलाएँगे, संभव नहीं। तात्पर्य यह है कि शब्दों की आत्मा तक जिस व्यक्ति की पहुँच नहीं, वह उधारी से कैसे काम चलाएगा तथा कब तक अन्य के मुख की ओर ताकता रहेगा।

सौभाग्यवश हमारा देश स्वतंत्र है। लोकतंत्र में सबको अपनी बात कहने की छूट है। किन्तु भावाभिव्यक्ति में रस बाधित न हो, यह सावधानी एवं सजगता अपरिहार्य है। सीता स्वयंवर के समय, धनुष भंग के अवसर पर सर्व श्री परशुराम, राम और लक्ष्मण तीनों पात्र भावाभिव्यक्ति कर रहे हैं। किन्तु कथन में सार्थकता, रससिक्तता एवं प्रभावोत्पादकता किनकी वाणी में विराजित है, यह पाठक स्वयं समझ सकते हैं। एक अन्य दृष्टि से भी परख लें कि कविता या साहित्य रचना अनेक कवि व साहित्यकार करते हैं, हम सूरदास, तुलसीदास महावीर प्रसाद द्विवेदी, रामचन्द्र शुक्ल आदि को ही आदर्श क्यों मानते हैं।

निचोड़ यह है कि साधक को साधना करते रहने से ही अभीष्ट फल की प्राप्ति संभव है। शब्द-सागर असीम बनता रहे, उसमें विस्तार के साथ गहराई हो तो शब्द रत्नों का विपुल भंडार हाथ लगेगा। महात्मा कबीर का कथन मर्मस्पर्शी है-

जिन खोजा तिन पाइया गहरे पानी पैठ।
हों बौरी डूबन डरी, रही किनारे बैठ।।

मात्र दर्शन करने अथवा स्पर्श मात्र से कार्य का फलागम आशानुरूप संभव नहीं है। जब तक समुद्र मंथन नहीं होगा। सामर्थ्य है कि वह

प्रयोगकर्त्ता को पार उतार दे। यदि भ्रष्ट प्रयोग हो गया तो डुबो भी सकता है। अतः शब्द की समर्थता की तलाश अनवरत रहनी चाहिए।

शब्द-सागर विस्तार पाता रहे, गहराई भी ग्रहण करता हो तो शब्द-रत्नों का विपुल भंडार आपके हाथ लगेगा, आत्म विश्वास जगेगा तथा वाणी का प्रसाद फलेगा। शब्द-सागर मंथन से ही शब्द-स्वरूप तथा उसकी महिमा से साक्षात्कार संभव है। शब्द-सान्निध्य बना रहे, इसके लिए अग्रांकित सूत्र फलीभूत हो सकते हैं-

(क) सत्साहित्य का सतत् स्वाध्याय।
(ख) बहुश्रुत बनने की भूमिका में सक्रिय साझेदारी।
(ग) स्वकथन से सम्बद्ध अभिव्यक्ति के अंशों को पुनर्विचार में लाना।
(ल) नए-नए शब्दों का स्वागत करने में तत्परता दिखलाना तथा सारपूर्ण स्थिति में निजी शब्दकोश में स्थान देना।
(ङ) शब्द निर्माण प्रक्रिया में पटुता हासिल करना।
(च) खोटे अथवा ओछे शब्दों के प्रयोग से बचना।
(छ) पर भाषा के सार्थक एवं मार्मिक शब्दों को निज भाषा में संस्कारित कर सकने की विशेषज्ञता।
(ज) शब्दकोश को अपना मित्र मानना तथा अपना निजी शब्दकोश विस्तृत करते रहना।

निष्कर्षतः शब्द की उपेक्षा सृजन धर्म के प्रति प्रमाद एवं उदासीनता है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में वाणी की प्रसादात्मकता मानव को ही संप्राप्य है। वाणी विषमय न बने, मुख से निकले तो रस से सने, यह प्रयास शिक्षक की भूमिका को अहम बनाता है। चाहे हम किसी भी विषय से संबंधित हों, अभिव्यक्ति कौशल अर्थात् शब्दों का सुष्ठु प्रयोग सफल शिक्षक के नाते अपरिहार्य है। हम तो यही कहेंगे।

शब्द रसायन जिनके पास,
उनकी अभिव्यक्ति कुछ खास।
जाग्रत रहता मन विश्वास
सदा सफलता साधक पास।।

पुरुषोत्तमायन, दही वाली गली,
ब्यानियान मौहल्ला, भरतपुर-321001
मो: 9461462739

विद्यार्थी के शैक्षिक विकास में साहित्य का अवदान

❒ डॉ. दयाराम

इक्कीसवीं सदी सूचना क्रान्ति की सदी है। इस सदी में व्यापार, रोज़गार, आजीविका आदि क्षेत्रों में सूचना क्रान्ति के उपकरणों का भरपूर उपयोग किया जा रहा है। इसी परिवेश के प्रभाव से शिक्षा जगत भी अछूता नहीं रहा है। शैक्षिक नवाचारों के अंतर्गत इलैक्ट्रोनिक मीडिया व सूचना क्रान्ति के उपकरणों का बखूबी प्रयोग हो रहा है। पाठ्यक्रम निर्माण, शैक्षिक नवाचारों के नवीन प्रयोगों, शैक्षिक सहगामी क्रियाओं, पाठ्य-सहगामी सामग्री के साथ-साथ कक्षा-अध्यापन में भी इलैक्ट्रोनिक उपकरणों का प्रयोग किया जा रहा है। प्रोजेक्ट, यू-ट्यूब, कम्प्यूटर, सी.डी. के माध्यम से विद्यार्थियों को नवीन ज्ञान आसानी से सिखाया जा रहा है। एक दृष्टि से देखें तो यह पूर्णतः उचित है कि समय के साथ -साथ बदलाव आवश्यक है। इन्हीं बदलावों को देखते हुए ई-ज्ञान का उपयोग करना व इसका प्रचार-प्रसार आवश्यक हो गया है। विद्यार्थी व शिक्षक दोनों को ई-ज्ञान का ज्ञान होना शैक्षिक माहौल व शैक्षिक स्तर को सुदृढ़ता प्रदान करता है। किन्तु दूसरा पहलू सोचनीय स्थिति को उजागर करता है क्योंकि वर्तमान इक्कीसवीं सदी की चमक-धमक व इलैक्ट्रोनिक उपकरणों की क्रान्ति से विद्यार्थी साहित्य से कटता जा रहा है। विद्यार्थी वर्ग में साहित्यिक रुचि का अभाव आ चुका है। यह एक कटु सत्य है कि विद्यार्थी वर्ग पाठ्यक्रम के अतिरिक्त पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं का कम ही अध्ययन करता है। साहित्य समाज का निर्माण करता है, समाज को एक दिशा देता है जिससे विद्यार्थी वर्ग में संस्कार, मूल्य, आदर्श, मान-सम्मान की भावना उत्पन्न होती है। विद्यार्थी द्वारा पाठ्यक्रम के अतिरिक्त पुस्तकों का अध्ययन करना एक समस्या तो है किन्तु इसका समाधान भी है। हमारे शिक्षक वर्ग को इस समस्या की ओर ध्यान देना होगा तथा विद्यार्थी की रुचि को साहित्य की ओर लाना होगा।

विद्यालय एक ऐसा प्लेटफॉर्म है जहाँ अनेक प्रकार के ऐसे अवसर व स्थान हैं, जिनके माध्यम से बच्चों में साहित्यिक रुचि पैदा की जा सकती है। वर्षपर्यन्त विद्यालय में सहशैक्षणिक गतिविधियाँ आयोजित की जाती है, अनेक उत्सव, जयन्तियाँ, सप्ताहों का आयोजन होता है इन अवसरों पर ऐसे विषयों का चुनाव करें जिनसे विद्यार्थियों में साहित्यिक रुचि जाग्रत हो सके। प्रेमचंद, तुलसीदास, सूरदास, मीरां बाई, नानकदेव, दादूदयाल, सहजोबाई आदि अनेक साहित्यकार, जिनके जन्मदिवस मनाए जा सकते हैं। क्षेत्र विशेष के अनुसार स्थानीय साहित्यकारों को विद्यार्थियों से मिलवा सकते हैं। समय-समय पर विशेष विस्तार व्याख्यान, अतिथि व्याख्यान भी करवाए जा सकते हैं। वर्ष भर में एक-दो बार स्थानीय या आस-पास के साहित्यकारों को विद्यालय में आंमत्रित कर 'साहित्यकार से मिलिए' कार्यक्रम में विद्यार्थी का साहित्यकार से सीधा संवाद करवा सकते हैं। साहित्य एवं साहित्यकार का एकमात्र उद्देश्य समाज को नवीन दिशा देना होता है। कवि मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं-

मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए,
उसमें उचित उपदेश का मर्म होना चाहिए।

इस मर्म को विद्यार्थी का मन पहिचान सकता है। साहित्यकार से मिलकर विद्यार्थी के मन में साहित्य पढ़ने की रुचि अवश्य होगी। इस प्रकार हम विद्यार्थी को साहित्य की ओर ले जा सकते हैं। उसका यह झुकाव निरन्तर बढ़ता ही जाएगा। इसके अध्ययन से विद्यार्थी में संवेदना, त्याग, आदर्श, मान सम्मान जैसे सामाजिक मूल्य विकसित हो सकेंगे तथा विद्यार्थी का बौद्धिक विकास भी हो सकेगा।

साहित्य संवेदनाओं को जाग्रत करने की अपार क्षमता रखता है। इसके साथ ही साहित्य विद्यार्थी के मन में सुप्त भावों को जाग्रत करने के साथ-साथ मन को उद्वेलित करने वाले विकारों का शमन भी बराबर करता है। मानव के हृदय में नवरस शृंगार, हास्य, करुण, वीर, रौद्र, वत्सल आदि स्थायी रूप से विद्यमान रहते हैं। ये रस विविध परिस्थितियों के माध्यम से दीप्त होते हैं। ये रस ही मानव को खुशी, दुख, निराशा, आशा, उत्साह, आलस्य, उन्माद आदि का

बोध कराते हैं। विद्यार्थी जीवन में ही विद्यार्थी इन रसों के माध्यम से आनंदित होकर हृदय के उद्गारों की पहिचान कर लेता है तो उसका जीवन आनंद-उदधि बन जाता है। यह आनंद का अथाह सागर आजीवन रहने वाला है। वर्तमान परिवेश में विद्यार्थी वर्ग में निरन्तर उत्पन्न होती असंतोष, कुण्ठा, द्वेष, उग्रता व जड़ता की भावना इसी आनंद के अभाव और हृदय के भावों की अपहिचान का कारण है। इसी कारण विद्यार्थी अध्ययन को बोझ के रूप में लेने लगता है। हिन्दी के वरिष्ठ कवि रामदरश मिश्र की कलम विद्यार्थी वर्ग के असंतोष को जमीनी धरातल से पकड़कर, इस तरह बयान करती है-

स्कूलों की खिड़कियों के शीशे तोड़कर
विद्यार्थी बाहर आ रहे हैं
और उन्हीं के भीतर पैठ रही है
बन्दूकें ..... लाठियाँ.....
क्षत-विक्षत किताबों के पन्ने

यही असंतोष व द्वेष शिक्षक व विद्यार्थी के संबंधों में दूरियाँ बनाता है। इसी कारण विद्यार्थी अध्ययन के भावात्मक धरातल को छोड़कर उग्रता,लड़ाई, झगड़े, हड़ताल की ओर अग्रसर करता है। विद्यालय की शिक्षा मूलतः संस्कारों का सृजनालय है। इस सृजनालय में सृजित रत्नों का मूल्य विद्यार्थी का हृदय शिक्षक के हृदय से भावात्मक संबंधों का नाता जोड़कर ही प्राप्त कर सकता है। भावात्मक संबंधों की कुँजी, समग्र दृष्टिपात करने के पश्चात् साहित्य ही नज़र आता है। निश्चय ही, साहित्य का अध्ययन और अध्यापन ही एक ऐसा माध्यम है जो विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास कर सकता है। निष्कर्षतः एक अध्यापक को एक आदर्श शिक्षक की छवि का निर्वाह करते हुए पाठ्यसामग्री के अध्यापन के साथ-साथ साहित्य अध्यापन, अच्छे साहित्य की विद्यार्थी को जानकारी तथा विद्यार्थी वर्ग में साहित्यिक रुचि का बीज बोना चाहिए। उसी साहित्यिक बीज के विकसित होने पर प्राप्य होने वाले आनंदफल से विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास हो सकेगा। विद्यार्थी के विकास से ही समाज, देश, राष्ट्र का सुदृढ़ निर्माण एवं उद्धार हो सकता है।

व्याख्याता
रा.आ.उ.मा.वि.गोलूवाला, हनुमानगढ़ 335802
मो. 9649247309

दुलार ही बच्चों का विकास है

❒ दीपचन्द सुधार

बच्चा प्रकृति का सर्वश्रेष्ठ उपहार है। यह मन का साफ व शक्ल-सूरत से भोला लगता है। यही माता की ममता को आकर्षित, अन्तस को अतुलित आनन्द तथा जीवन को अनूठी ऊर्जा प्रदान करता है। इनमें दिव्य शक्ति समाहित होती है। जब बच्चा भूखा होता है तो वह ज़ोर-ज़ोर से रोता है। यह देख परिजन उसे चुप करने के लिए गोद में उठाते हैं। प्यार करते हैं। उसे तरह-तरह के खिलौने दिखाकर चुप करने का प्रयास करते हैं लेकिन वह उस ओर आँख उठाकर भी नहीं देखता है। परन्तु माता की ज़रा-सी पुचकार से शान्त होकर मुस्कुराने लग जाता है। यह है माता के वात्सल्य का अलौकिक आकर्षण। इस कारण ही हम माता की गोद को बच्चे की प्रथम पाठशाला कहते है। वह लोरियों के मधुर स्वरों के साथ-ही शनैः-शनैः संस्कारित होता है। इन संस्कारों की नींव पर ही उसके भावी जीवन रूपी भवन का निर्माण होता है। इस प्रकार यह दुलार ही उसके जीवन को रोशन करता है। परन्तु माता-पिता घरेलू कार्यकलापों की व्यस्ततावश इस ओर ध्यान नहीं देते हैं। ऐसी स्थिति में बच्चे अपनी नासमझी से यथार्थ-पथ से भटक जाते हैं। माता-पिता अन्य विकल्प न देखकर फिर बच्चों को बार-बार डाँटते रहते हैं। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इसका बच्चों के जीवन पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। इसी को लक्षित करते हुए 'मृत्युंजय' (उपन्यास) मूल-शिवानी सावंत, अनुवाद ओम शिवराज पृ. सं. 436 पर लिखते हैं कि बचपन में अनादर की जो भावना बन जाती है, वह पैर में कंकड़ लगने के बाद जमे हुए रक्त की एक कठिन गाँठ की तरह बन जाती है। बचपन में जो अनादर की भावना होती है वह युवावस्था में और भावी आयुष्य में और अधिक दृढ़ होती जाती है। इस कठिन गाँठ के कष्ट से अच्छे-अच्छे सशक्त व्यक्ति को भी मैंने लँगड़ा-लँगड़ा कर चलते देखा है। कहने में यह बात बड़ी साधारण-सी लगती है लेकिन गम्भीरता से सोचते हैं तो बड़ी हृदयस्पर्शी प्रतीत होती है, जो सारे जीवन को अपनी मुट्ठी में बंद

कर देती है। मैंने अपने अध्यापन के 37 वर्ष 6 माह में ऐसी कई घटनाएँ संजोकर रखी हैं। उदाहरण के तौर पर एकाध का वर्णन करना पाठकों की जानकारी के लिए उचित समझता हूँ। कक्षा चतुर्थ का अर्पित नाम का बालक बड़ा ही नम्र, निष्कपट, संवेदनशील, भावुक और सरल स्वभाव का था। गणित विषय में कम अंक लाने के कारण पिताजी ने आवेश में आकर बुरी तरह से डाँट दिया। परिणामस्वरूप वह गुमसुम रहने लगा। विद्यालय में अपने दोस्तों से भी बातचीत नहीं करता था। इसी दशा ने आहिस्ते-आहिस्ते विक्षिप्त की स्थिति तक पहुँचा दिया। अन्ततः वह कई महीनों के उपचार के बाद स्वस्थ हुआ।

इसके बदले वे दुलार करते हुए कहते खैर! कुछ नहीं अब की बार मेरा लाडला मेहनत करके और बढ़िया अंक लाएगा। मैं फिर बढ़िया ड्रेस दिलवाऊँगा। आदि शब्दों का प्रयोग करते तो उसका उत्साह बढ़ जाता। यथार्थ में बच्चे प्रशंसा के ही इच्छुक होते हैं और इसी के द्वारा हम उनकी प्रतिभा को उजागर कर सकते हैं। इसका कारण यह है कि जीवन की अधिकाँश सफलताएँ बच्चों की आदतों पर ही आधारित होती हैं। इसलिए थोड़ी-सी प्रशंसा करते हैं तो वे

दुगुने उत्साह से कार्य करते उत्तरोत्तर उन्नति के पथ पर बढ़ते रहते हैं। इसी को लक्षित करते हुए 'दिव्य जीवन' लेखक स्वेट मार्डेन पृ.सं. 124 पर लिखते हैं कि बच्चों के मन में प्रेम, सहानुभूति, पवित्रता और उच्चता की प्रेरणाएँ करते रहने से थोड़े ही समय में बच्चों का मन एक अद्‌भुत प्रकार के दिव्य प्रकाश से प्रकाशित हो उठेगा। उसके मन की दशा कुछ ऐसी विचित्र हो जाएगी कि बुरे तत्त्व फिर उसके पास फटकने तक न पाएँगे। क्योंकि प्रशंसा ही बच्चों के विकास की पुष्टिकर औषधि होती है। इसलिए माता-पिता का नैतिक दायित्व है कि वे अपने बच्चों के प्रति साफ और खुले दिल से बर्ताव करें। वे इस बात की पूरी चिन्ता रखें कि कभी बच्चों के दिल को व्यर्थ में ही न दुखाएँ।

कई बच्चों को तरह-तरह के खेलों के साथ-साथ गाने, बजाने, नाचने, चित्रकला आदि का शौक होता है, लेकिन माता-पिता यह समझते हैं कि इस प्रकार की क्रियाएँ करके वे अपने अमूल्य समय को व्यर्थ में ही नष्ट कर रहे हैं। यह उनका भ्रम है। यथार्थ में ऐसे ही कार्य कलापों से उनकी शरीरिक, मानसिक व बौद्धिक ज्ञान की वृद्धि होती है। इसी को हम सर्वांगीण विकास की संज्ञा देते हैं। इसलिए उनके बचपन के वास्तविक आनन्द के बाधक नहीं बनना चाहिए क्योंकि बच्चों की प्रारम्भिक क्रियाएँ ही उनके भावी व्यक्तित्व व कृतित्व का निर्माण करती हैं। इसी को परिलक्षित करते हुए 'कल्याण' जनवरी 1953 पृ. सं. 72 पर कहा गया है कि 'बालक प्रकृति की अनमोल देन है, सुन्दरतम कृति है, सबसे निर्दोष वस्तु है। बालक मनोविज्ञान का मूल है। शिक्षक की प्रयोगशाला है। बालक मानव जगत का निर्माता है। बालक के विकास पर दुनिया का विकास निर्भर है। बालक की सेवा ही विश्व की सेवा है।'

अतः बालक को अनुशासन में रखते हुए पूर्ण स्वतंत्रता देनी चाहिए ताकि वे खुले मन व माता-पिता के दुलार से चहुँमुखी विकास करते हुए जीवन को सफल बना सकें।

दयाल भवन के पास
उम्मेद चौक, ब्राह्मणों की गली
जोधपुर- 342001(राज.)

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का आधार

❒ बजरंग प्रसाद मजेजी

'शिक्षा जीवन की राह-प्रशस्त करती है। जीवन का मर्म सिखाती हैं।'

-रवीन्द्रनाथ ठाकुर

शिक्षा का अर्थ : जीवन में सफलता का मंत्र शिक्षा है। शिक्षा के अभाव में बालक का बौद्धिक विकास नहीं होता है और बौद्धिक विकास के अभाव में व्यक्ति अपनी क्षमताओं को नहीं जान पाता है। वर्तमान में अभिभावक, शिक्षार्थी और शिक्षक के मध्य में बहुत बड़ी खाई नज़र आ रही है। सभी एक दूसरे की कमियाँ बताकर, एक दूसरे पर दोषारोपण कर रहे हैं। यद्यपि इसके पीछे सामाजिक, राजनैतिक और व्यवहारगत समस्याएँ हैं। लेकिन केवल इनको गिनाकर उत्तरदायित्व से नहीं बचा जा सकता। शिक्षा क्षेत्र में अभिभावक (समाज), शिक्षार्थी, शिक्षक और सरकार की नीति महत्त्वपूर्ण घटक है। महर्षि अरविन्द के अनुसार - ''बालक की शिक्षा उसमें जो कुछ सर्वोत्तम, सर्वाधिक शक्तिशाली, सबसे अधिक जागरुक तत्त्व है, उसे बाहर लाना है।'' यह शिक्षा ही है जिससे मनुष्य तमाम बंधनों से मुक्त होकर, बाह्य ही नहीं आन्तरिक पूर्णता की स्थिति को प्राप्त कर सकता है। इसीलिए कहा गया है-''सा विद्या या विमुक्तए।'' ऋषि याज्ञवलक्य ने भी शिक्षा को मनुष्य के चरित्र निर्माण के साथ संसार भर के लिए उपयोगी बनाने का सेतु माना हैं।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में चिकित्सक, शिक्षा प्रशासन, इंजीनियर, तकनीकी विशेषज्ञ, वकील, चार्टड अकाउँटेंट, राजनेताओं का निर्माण हो रहा है। परन्तु क्या ये अपने व्यवसाय के प्रति राष्ट्रीय अपेक्षाओं पर खरे उतर रहे हैं या डिग्रीधारी, पेशेवर होते जा रहे हैं तथा मात्र धनोपार्जन का लक्ष्य लेकर चल रहे हैं। संस्कारवान नहीं बन पा रहे हैं। शिक्षा प्राप्त करने का उद्‌देश्य नौकरी प्राप्त करने की मानसिकता लेकर चल रहे हैं। उनका लक्ष्य 'वृत्ति देवो भवः' हो गया है। महात्मा गाँधी ने कहा था ''शिक्षा का लक्ष्य विद्यार्थी को आदर्श नागरिक, देशभक्त और परिवार, समाज तथा राष्ट्र के लिए समर्पित व्यक्ति बनाना है।'' आज की शिक्षा विद्यार्थी को ज्ञान, कौशल, नवीनतम जानकारी तो प्रदान करती है, परन्तु इनमें संस्कार, नैतिक आचरण तथा जीवन मूल्यों का विकास करने में पूर्णतः समर्थ नहीं है। शिक्षा का लक्ष्य मनुष्य निर्माण होना चाहिए। ऐसी शिक्षा दिए जाने की आवश्यकता है जो मनुष्य को सच्चा इन्सान बनाए। इसलिए वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए अभिभावक, शिक्षार्थी, शिक्षक के उत्तरदायित्त्व पर चिन्तन की आवश्यकता है।

अभिभावक का उत्तरदायित्व : रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अभिभावकों से कहा है, ''अपने बच्चों को नीले आकाश के नीचे जी भरकर शांति से उछलने कूदने दो। बच्चों के आनन्द में अकारण खलल न डालो।'' बालक को अपने प्रारंभिक विकास के अन्तर्गत अभिभावकों तथा समाज से बहुत कुछ सीखने को मिलता है और यह आकस्मिक होता है, योजनाबद्ध नहीं। बालक समाज के व्यवहार को देखकर अनुकरण करता है। अभिभावकों को बालक की मनोभावनाओं को ध्यान में रखना चाहिए। उन्हें सार्वजनिक स्थान पर डाँटने की बजाय स्नेह एवं प्रेम से उचित व्यवहार एवं शिक्षा के प्रति मानसिक रूप से तैयार करना चाहिए। माता-पिता का नकारात्मक व्यवहार बालक के मन पर बहुत प्रभाव डालता है। माता-पिता का सद्‌व्यवहार, मार्गदर्शन बालकों के आत्मविश्वास, आत्मबल को मजबूत करता है। वर्तमान में अभिभावकों को अपने बच्चों की ओर ध्यान देने का बहुत कम समय मिलता है। यांत्रिक उद्योगों में विकास के साथ जनजीवन आर्थिक बोझ एवं पति-पत्नी दोनों के नौकरी करने की स्थिति के कारण कुटुम्ब व्यवस्था में व्यवधान आ रहा है। संयुक्त परिवार के स्थान पर एकल परिवार में रहने के कारण नौकरी या व्यवसाय में संलग्नता के कारण बालक पर ठीक प्रकार से ध्यान नहीं दे पाते हैं। इस कारण बालकों में श्रद्धा, कर्त्तव्य निर्वहन, विनयभाव, अनुशासन में कमी देखी जा रही है। कभी-कभी बालकों में हठ प्रवृत्ति भी देखी जाती है। बालकों का सीखना अनुकरण से होता है। ऐसे में एकल परिवार में रहने से बालकों पर माता-पिता की

अनदेखी, पड़ौसियों, मोहल्ले के व्यक्तियों के आचरण, संस्कारों, आदतों का प्रभाव पड़ता है। इस कारण जैसा देखता है, वैसा बन जाता है। बालक की आदतों को बिगाड़ने में सामाजिक बुराइयों का बहुत प्रभाव पड़ता है। समाज का विकृत दृष्टिकोण बालक के व्यवहार की दिशा बदल देते हैं। इसलिए हमारे देश में कहा जाता है कि माता-पिता का कर्त्तव्य है कि वे अपने बालकों की उत्तम शिक्षा दीक्षा की उपयुक्त व्यवस्था करें तथा जो माँ बाप ऐसा नहीं करते उन्हें अपने बच्चों का दुश्मन कहा गया है।

माता शत्रुः पिता बैरी येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभामध्ये, हंसमध्ये बको यथा।

अर्थात्- अनपढ़, अशिक्षित व्यक्ति उसी प्रकार समाज में शोभा नहीं पाता जिस प्रकार बहुत सारे हँसों के मध्य बगुला उपहास का पात्र बन जाता है।

शिक्षार्थी का उत्तरदायित्त्व : भारत के विशाल युवक समुदाय को भारतीय समाज रचना में योग्य एवं गुणवान नागरिक किस प्रकार बनाया जाए यह आज की वास्तविक समस्या है। बालक की ग्रहणशील आयु में उनके मन पर सतत संस्कारों से यह सत्य अंकित कर देना चाहिए कि कर्त्तव्य सर्वोपरि होता है। आज के वातावरण में राजनैतिक हस्तक्षेप एवं गतिविधियों के कारण उत्पन्न कलुषित वातावरण का बालक पर बहुत प्रभाव पड़ता है। अध्ययन काल में ही विद्यार्थी छात्रसंघ से जुड़कर नेतृत्व के गुण सीख लेता है। लेकिन कभी-कभी दिशा विहीन होने पर जातीय दंगों, भेदभाव के कारण, सामाजिक आन्दोलन में जुड़कर स्वशिक्षा के मूल उद्देश्य से हट जाते हैं। उत्साही होकर भीड़तंत्र में जुड़ जाते हैं जिसका नतीजा विपरीत भी हो जाता है। वे उद्दंड, तर्क, विरोध करने की आदत, झगड़ालू वृत्ति के हो जाते हैं। इस कारण उनके मनोभाव, विचारों की दिशा बदल जाती है। अनुशासनहीनता की वृत्ति भी देखी जाती है। ऐसी स्थिति में माता-पिता को उनके व्यवहार, कार्यों पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

शिक्षकों का उत्तरदायित्त्व : अध्यापक का जीवन त्याग, तप और अध्यवसाय का जीवन होता है, उसे इसके लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। शिक्षक समाज में आदर्श का प्रतीक है। शिक्षक को सदैव स्मरण रखना होगा कि वह कर्म के प्रति प्रतिबद्ध है। उसे विद्यार्थियों की मन बुद्धि को समझकर ज्ञान प्राप्ति हेतु उन्हें तैयार करने की उदात्तता प्रकट करनी होगी। शिक्षक को देखना होगा कि विद्यार्थी में ज्ञान प्राप्ति की क्षमता बढ़े, सीखने की वृत्ति जागे और ज्ञानार्जन में आनन्द की प्राप्ति हो। स्वामी विवेकानन्द ने कहा है, ''गुरु को शिष्य की आत्मा में प्रवेश करके, उसमें प्रकाश उत्पन्न करना चाहिए।'' गुरु का चरित्र शिष्य के लिए आदर्श होना चाहिए ताकि शिष्य गुरु का अनुसरण कर सके। प्रत्येक शिक्षक का शिष्य के साथ व्यवहार पितृवत एवं मातृवत होना चाहिए। शिक्षक को शिक्षा की उज्ज्वल ज्योति घर-घर फैलाने जैसी पवित्र भूमिका का तन-मन-धन से निर्वाह करना चाहिए। वर्तमान शिक्षा की चिन्तनीय और सोचनीय स्थिति को देखते हुए शिक्षकों को अपने उज्ज्वल स्वरूप और पावन गुरु महिमा को पहिचानना होगा। आदि शंकराचार्य ने कहा है, ''सच्चा गुरु वह है जो स्वयं आत्मज्ञानी हो और जिसकी कृपा से संसार तापजन्म भ्रम दूर होकर शिष्य अखण्ड, एक रस, अद्वितीय, नित्य सर्वव्यापी आनन्दमय, परमपद को प्राप्त करे।'' गुरु कृपा से ही शिष्य में ब्रह्म भाव उत्पन्न होता है। गुरु वही हो सकता है जो जितेन्द्रिय, सत्यनिष्ठ, ज्ञाननिष्ठ, विनम्र, तपस्वी, कर्त्तव्यनिष्ठ, स्वाध्यायी, प्रवचनपटु हो तभी ऐसे शिक्षक का स्वतः ही सम्मान होता है। गुरु ही वह महान चेतन उपकरण है जो अपनी प्रकाशन वृत्ति से व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र का सृजन करता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देना ही उसका ध्येय होता है।

प्रधानाध्यापक (से. नि.)
सांपला (अजमेर)
मो: 9460894708

सांस्कृतिक हाइकु

❒ जगदीश प्रसाद त्रिवेदी

(1)
पीकर क्रोध,
क्षमा करता है जो
देव तुल्य वो।

(2)
मानवपन, सु-मन का दर्पण
सच्चा दर्शन।

(3)
ईश्वर एक, धर्म-पथ अनेक
बनिए नेक।

(4)
उत्तम पोथी, है जीवन की थाती
सदैव साथी।

(5)
सुव्यवहार, आत्मिक नमस्कार
धन्य संस्कार।

(6)
इन्द्र धनुषी, भारत की संस्कृति
भव्य प्रकृति।

(7)
कागज कोरा, बनते ही साक्षर
नयन-तारा।

(8)
संतोष धन, यदि मन को भाए
स्वान्तः सुखाय।

(9)
वीर जवान, अन्नदाता किसान
राष्ट्र महान।

(10)
श्रेष्ठ पुस्तक, करती ज्ञानदान
गुरु महान।

प्राध्यापक (से. नि.)
2 ख-17 दादाबाड़ी, कोटा-324009 (राज.)
फोन: 0744-2503486

मेले में भटके होते तो...

❒ भवानी शंकर 'तोसिक'

दुनिया को बदलने के लिए भीड़ की नहीं, कुछ लोगों की आवश्यकता होती है। दुनिया में जब भी परिवर्तन आता है, चन्द लोगों के प्रयास से ही आता है। ये चन्द लोग या तो शिक्षक होते हैं, या संत होते हैं अथवा सैनिक होते हैं। अब तक का इतिहास गवाह है, जब भी दुनिया में बदलाव आया है, शिक्षकों के माध्यम से आया है, संतों और सैनिकों के माध्यम से आया है। जितने भी परिवर्तन हुए हैं, जितनी भी क्रांतियाँ हुई हैं उन सभी के पीछे शिक्षकों, संतों और सैनिकों की त्रिवेणी ने ही अहम भूमिका निभाई है।

शिक्षक-समाज की आधारशिला है। वह मानवता का प्रखर प्रचारक है। संत, समाज का नैतिक चिकित्सक होता है। वह समाज में आई बुराइयों और विकृतियों का अपने तरीके से निवारण व निराकरण करता है। सैनिक राष्ट्र प्रहरी के रूप में देश की रक्षा और सुरक्षा के दायित्व का निर्वहन करता है। समाज इन तीनों का ऋणी है। शिक्षक और संत समाज के प्रति सतत चिन्तनशील बने रहते हैं। इनके चिन्तन पर यदि विराम लग गया तो समझो उस समाज के पतन को कोई नहीं रोक सकता। राष्ट्र प्रहरियों ने यदि अपने कर्त्तव्यों से मुँह फेर लिया और उदासीन हो गए तो क्या राष्ट्र शान्त और सुरक्षित रह सकता है? कदापि नहीं। इसलिए इन तीनों के महत्त्व को कभी भी कम नहीं आंक सकते। एक बात और ये तीनों कभी मरते नहीं हैं। हर युग में ये तीनों अमर रहते हैं। इन तीनों के कभी स्वर्गीय नहीं लगता। मैंने तो कभी किसी को यह कहते हुए नहीं सुना कि स्वर्गीय तुलसीदास, स्वर्गीय सूरदास, स्वर्गीय अमुख-अमुख रचनाकार अथवा स्वर्गीय सुभाष चन्द्र बोस या स्वर्गीय भगतसिंह। ऐसे महामानवों की कभी मृत्यु होती ही नहीं है। ये हर समय हर जगह उपस्थित रहते हैं। गाँव, गली और चौपाल पर आज भी जब कोई वार्तालाप होता है तब उस विचार-विमर्श के मध्य-कबीर, तुलसी, मीरा, माघ, राजिया आदि अपनी शिक्षाओं, उपदेशों या विचारों के रूप में अनायास ही उपस्थित हो जाते हैं।

दुनिया की जितनी भी क्रांतियाँ हुई है उन सभी के पीछे शब्द शिल्पियों का, कलम के सिपाहियों का, प्रखर विचारकों का, पुंगव संतों का और उद्भट सैनिकों का हाथ रहा है। कभी समर्थ गुरु रामदास बनकर, तो कभी चाणक्य बनकर, कभी विश्वामित्र, याज्ञवल्क्य अथवा संदीपन बनकर, कभी रवीन्द्रनाथ ठाकुर अथवा बंकिम चन्द्र बनकर, तो कभी सुभाष, भगत और बिस्मिल बनकर। बदलाव तो ऐसे आदर्श पुरुषों द्वारा ही संभव है।

शिक्षा के क्षेत्र में जितने भी नवाचार हुए हैं वे सभी नवाचार हमारे कर्मशील तथा कर्म के प्रति समर्पित संस्कारवान् शिक्षकों ने ही किए हैं। शब्द शिल्पियों ने ही किए हैं। कलम के पुजारियों ने ही किए हैं। श्रेष्ठ शिक्षक नवाचारों के प्रति कभी उदासीन नहीं रह सकता। श्रेष्ठ शिक्षण के प्रति वह सदैव चिन्तनशील बना रहता है। चिन्तन से नवाचारों की उत्पत्ति होती है। चिन्तन नवाचारों की जननी है। शैक्षिक उन्नयन की जन्म स्थली है। इस बात को स्वीकार करने में हमें किसी भी प्रकार की झिझक भी नहीं होनी चाहिए कि चंद उदासीन शिक्षकों की वजह से गुरुजनों की गरिमा में गिरावट आई है। तक्षशिला और नालन्दा विश्वविद्यालय का शैक्षिक वैभव विश्व विख्यात था। वह वैभव अब दृष्टिगोचर नहीं होता। इस वैभव का आकर्षण अब समाप्त हो गया है। उस वैभव की दिव्यता अब खो गई है। इसका मुख्य कारण यह है कि हमने शिक्षण जैसे पावन कर्म को सेवा से व्यवसाय में परिवर्तित कर दिया है।

शिक्षा का क्षेत्र सेवा का क्षेत्र है, व्यवसाय का नहीं। मैंने अनेक लोगों के घरों के बाहर नेमप्लेट लगी देखी हैं। अमुख नाम और नाम के आगे पद और पद के आगे कोष्ठक में आर.ई.एस. लिखा होता है। जिसका अर्थ है- राजस्थान एज्यूकेशन सर्विस। मैंने एक भी ऐसी नाम पट्टिका नहीं देखी जिस पर यह लिखा हो कि राजस्थान शिक्षा व्यवसाय। क्योंकि शिक्षा व्यवसाय है नहीं। हमने इसको बलपूर्वक कूट-पीटकर व्यवसाय में बदल दिया है। जब से यह व्यवसाय हुआ है। तभी से शिक्षकों की गरिमा में गिरावट प्रारम्भ हो गई है। जैसे एक बूँद खटाई पचासों लीटर दूध को फाड़ने की क्षमता रखती है। जैसे एक सड़ा हुआ फल टोकरी में भरे हुए सारे फलों को सड़ा देता है। वैसे ही कुछ ही शिक्षकों की वजह से आम शिक्षक के मान-सम्मान को ठेस पहुँची है। उसकी प्रतिष्ठा में गिरावट आई है फिर भी हम हताश और निराश नहीं हो सकते, क्योंकि हमारे प्रेरणा स्रोत, हमारे आदर्श राधाकृष्णन हैं। कर्मप्रधान विश्व प्रवर्त्तक श्रीकृष्ण हमारे उपास्य देव हैं। गुजरात के शिक्षाविद् 'मूँछों वाली माँ' गिज्जू भाई हमारे पथ प्रदर्शक हैं। स्वामी विवेकानन्द हमारे मार्गदर्शक हैं। विद्वता के आकाश में चमकने वाले ऐसे असंख्य दैदीप्यमान नक्षत्रों के आभामण्डल से जब हम प्रकाशित हो रहे हों तब हम अंधेरे में कैसे भटक सकते हैं? भटकने से मेरा अभिप्राय है हम जिस कर्म के प्रति समर्पित थे, उसके प्रति हम उदासीन हो गए हैं। इसलिए यह चिन्ता का विषय है। इस भयावह स्थिति को देखते हुए एक विचारक को यह कहने के लिए विवश होना पड़ता है कि-मेले में भटके होते तो कोई घर पहुँचा जाता। हम घर में भटके हैं, कैसे ठोर-ठिकाने आएँगे।

महाकवि माघ, भारवि, वराहमिहिर, आर्यभट्ट, खणा, आदि शंकराचार्य, रामचन्द्रिका के रचयिता केशव, सेनापति,

वाचस्पति मिश्र, वेदव्यास, तुलसी, सूर, वृन्द, विवेकानन्द, कालिदास जैसे असंख्य मनीषियों ने ऐसे शुभ और कल्याणकारी साहित्य का सृजन किया है कि जिसे देख सुनकर दाँतों तले अंगुली दबाने को विवश होना पड़ता है। ऐसे मनीषियों द्वारा सृजित साहित्य में विश्व का सम्पूर्ण ज्ञान-ध्यान और जानकारियाँ समाहित हैं और जो बात इस साहित्य सृजन में छूट गई है। वह विश्व में कहीं भी विद्यमान नहीं है। या यों कहें उसका अस्तित्व है ही नहीं। जीवन-मरण, व्यवहार-वार्तालाप, वैराग्य-संन्यास, दाम्पत्य जीवन, संबंधों की विवेचना, भावतरलता, कला प्रवीणता, व्याकरण, पाण्डित्य, अलंकार-कौशल, पर्यावरण, विज्ञान, खगोल एवं सम्पूर्ण ब्रह्मांड के बारे में विस्तृत एवं गहनता से प्राप्त गूढ़ रहस्यों के बारे में जो जानकारियाँ हमें उपलब्ध हुई हैं, आज का विज्ञान इतना साधन सम्पन्न होते हुए भी वह उस ज्ञान के सम्मुख बौना नज़र आता है। हमारे आदर्श पुरुषों ने मानव जीवन को भव्य बनाने के लिए मानवता, अस्मिता, तेजस्विता, भावप्रेम, दिव्यता, लोकोत्तरता का जो संदेश दिया आज के युग में यह सब कार्य आश्चर्यचकित कर देने वाले हैं।

सोते हुए को जगाना, बैठे हुए को खड़ा करना, खड़े हुए को चलाना और जब तक लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो जाती तब तक विश्राम नहीं करना जैसे दुष्कर कार्य और कोई नहीं कर सकता सिवाय संत, शिक्षक और सैनिक के। इसलिए ये तीनों ही श्रद्धा, वन्दन, नमन और आदर के पात्र हैं। इनके योगदान और सेवाओं को कभी भुलाया नहीं जा सकता। समाज और राष्ट्र सदैव इनका ऋणी है और सदैव ऋणी रहेगा।

व्याख्याता (से. नि.)
आदर्श कॉलोनी, गोविन्दगढ़ चौराहा,
पीसांगन, (अजमेर)-305204
मो: 9414746591

श्री माँ ने कहा–

भारत की सच्ची नियति विश्व गुरु बनना है। समस्त सृष्टि में पृथ्वी का एक विशेष स्थान है, क्योंकि अन्य ग्रहों से भिन्न यह विकसनशील है और अपने केंद्र में चैत्य पुरुष को लिए हुए है। उसमें भारत विशेष रूप से भगवान का चुना हुआ देश है।

एक भी छात्र फेल होता है तो...

❒ **सत्यनारायण शर्मा**

आज विद्यालय का परीक्षा परिणाम घोषित किया जाएगा। सारे बच्चे सुबह जल्दी उठकर, नहा-धोकर तैयार होने के बाद निर्धारित समय से पूर्व ही स्कूल में पहुँच चुके हैं। गजब का उत्साह है बच्चों में। कुछ बच्चे सुस्त, निराश और चिंतित भी हैं। पता नहीं पास होंगे या फेल।

कक्षाध्यापक ने परिणाम घोषित कर अंक तालिकाएँ बच्चों को दे दी है। पच्चीस बच्चों की कक्षा में दस बच्चे फेल हुए हैं। कक्षा का रिज़ल्ट 60% रहा है। चार-पाँच बच्चे रो रहे हैं, दो-तीन उदास हैं, ऐसे बच्चों का भागकर जाने, घर वालों को सूचना देने का उत्साह खत्म हो गया है। इधर घरवाले भी इंतज़ार कर रहे हैं। पता नहीं क्या रिजल्ट आया होगा बच्चों का।

इस आलेख में फेल हो जाने वाले बच्चों से संबंधित बात की जा रही है। उनका एक वर्ष बेकार चला गया है। जीवन के विकास की दौड़ में वे एक साल पीछे रह गए हैं। उनके साथी आगे बढ़ गए हैं। ऐसे बच्चे भयभीत हैं। घरवाले डाँटेंगे, पिटाई भी कर सकते हैं। विचित्र मनःस्थिति है उनकी। फेल हो जाने के बाद बच्चे की डाँट-डपट और पिटाई सामान्य बात है।

फेल घोषित होने वाले बच्चों की उस मानसिक स्थिति तक हमें पहुँचना होगा कि दो विषयों में दो-दो या चार-पाँच नंबर कम आए हैं। शिक्षक चाहता तो कृपांक देकर उसे पास या फिर पूरक कर सकते थे। पर वे भी तो नियमों से बंधे हैं। इधर घरवाले परेशान। ये क्या हुआ, बच्चा पढ़ता तो था। सालभर शिक्षक ने कुछ नहीं कहा और आज फेल होने की अंकतालिका थमा दी। पूरा एक वर्ष बेकार गया। बच्चा पिछड़ गया। फिर से वे ही पुस्तकें, वे ही टेस्ट और परीक्षाएँ, ये सब उबाने वाला होता है, उपेक्षा पैदा करता है।

तो बच्चा फेल हो गया। कौन दोषी है इसके लिए? वह पढ़ा नहीं एकमात्र यह कारण पर्याप्त नहीं है। कुल मिलाकर इस भागदौड़ के जीवन में पीछे तो रह ही गया बच्चा। कौन जिम्मेवार है इसके लिए? छात्र, शिक्षक, अभिभावक या फिर शिक्षा व्यवस्था? कमी कहाँ है? इस पर हमें विचार करना तो पड़ेगा? क्योंकि कक्षा का 40, 50 या 60% रिज़ल्ट रहना इतनी सरल साधारण बात तो नहीं है।

हम इस बात पर विचार कर तो रहे ही हैं। पिछले 10-15 वर्षों से गतिशील होकर प्रयोग पर प्रयोग कर रहे हैं। उन प्रयोगों में हर साल दो साल में परिवर्तन भी करते रहे हैं।

परीक्षा परिणाम कम रहा तो शिक्षक दोषी है। उस पर कार्रवाई की जाएगी। जबकि शिक्षक के पास 10-15 ऐसे ठोस कारण होते हैं कि उनका स्पष्टीकरण सिद्ध कर देगा कि उनकी गलती नहीं है। उसे ऐसे कार्यों में व्यस्त रहना पड़ा कि मूल शिक्षणकार्य के लिए पूरा समय ही नहीं मिल पाया।

(i) बच्चा पीछे से ही कमज़ोर आया था।
(ii) बच्चे में समझने की क्षमता (आई.क्यू.) बहुत ही कम है।
(iii) बच्चे का पढ़ने में मन नहीं है।
(iv) कक्षा से अनुपस्थित रहकर दोस्तों के संग मौज-मस्ती करता रहा सालभर।
(v) उसने पढ़ाई, होमवर्क नहीं किया, दो-तीन टैस्ट भी नहीं दिए।
(vi) हमने तो खूब प्रयास किया। शिक्षणेत्तर कार्यों में ड्यूटी लगती रही तो पाठ्यक्रम ही पूरा नहीं हो पाया आदि।

ऐसे अनेक कारण बच्चे के फेल होने, रिज़ल्ट कम रहने के आरोप से शिक्षक को तो मुक्त कर देगा। पर बच्चे का क्या? वह तो साल भर के लिए गया काम से।

बच्चे पढ़ें, ड्रॉप आउट न हों, पूरी उपस्थिति देवें, परीक्षा परिणाम सुधरे, इसके लिए हमने भी बहुत प्रयास किए हैं। बच्चों को मुफ्त भोजन दिया, साइकिलें, स्कूटी, छात्रवृत्तियाँ दी। लेकिन बालिका शिक्षा के कुछ अंश को छोड़कर परीक्षा परिणाम में अपेक्षित सुधार होता नहीं दिखा, तो आठवीं कक्षा तक कोई छात्र फेल नहीं होगा, ऐसा दुस्साहसी कदम भी उठाया गया और शिक्षा का विकास होने का भ्रम पालते रहे। आगे नवीं और दसवीं में वही हुआ, जो होना था। बच्चों का शैक्षिक स्तर और

योग्यता इन कक्षाओं के अनुरूप नहीं बन पाई। तब बच्चा पिछड़ गया, उसका एक वर्ष खराब हो गया। अभी बच्चे को पता नहीं चलेगा, पाँच-सात दिन में भूल जाएगा परंतु बाद के जीवन में वह इस बात का अफसोस तो करेगा ही। अतः शिक्षाविदों को मिल बैठकर, निरंतर विचार कर, प्रयोग करते-करते उनमें स्थाईत्व लाना होगा।

इस आलेख के लेखक को मराठी भाषा के डिप्लोमा कोर्स के लिए 1978 में सरकार ने पूना (महाराष्ट्र) भेजा था। वहाँ हम बीस विद्यार्थी थे। भाषा शिक्षण की अत्याधुनिक, सुसज्जित लैंग्वेज लैब आदि सुंदर व्यवस्था थी। वहाँ बीस में से दो छात्र नई भाषा सीखने में एकदम ठस्स थे। दस माह के कोर्स में आठ माह बीत गए। वे दो छात्र-शिक्षक कुछ भी नहीं सीख पाए। हमारे दो विद्वान् प्रोफेसर उनके लिए प्रतिदिन दो घंटे एक्स्ट्रा क्लास लेते, ड्यूटी आवर्स के अलावा भी उन्हें सिखाते। उन दो विद्यार्थियों पर बहुत ही मेहनत करते थे वे प्रोफेसर। मुख्य परीक्षा में येन-केन प्रकारेण वे दोनों द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। (बाकी सब प्रथम श्रेणी थे।) उन प्रोफेसर्स की मेहनत सफल हो गई।

इसी दौरान हमारे हम उम्र प्रोफेसर से मैंने पूछा, साहब, क्यों बेकार में इतनी मेहनत करते हो। यह सिद्ध हो गया है कि नई भाषा सीखने की इनमें क्षमता नहीं है। आप बेकार ही श्रम कर रहे हैं। आपका रिज़ल्ट आदि 90% भी रहता है तो क्या फर्क पड़ेगा? उस विद्वान प्रोफेसर का उत्तर वैसा का वैसा मुझे आज भी याद है और हम सबके लिए प्रेरणास्पद भी है। उन्होंने कहा, देखो शर्मा जी, ये विद्यार्थी हैं, नई भाषा के लिए अज्ञानी है और हम प्रोफेसर स्तर के शिक्षक हैं। सरकार हमें बंपर वेतन और अन्य कितनी ही सुविधाएँ देती है। शिक्षण कार्य हमारी रिजक है।

हमारे जितनी योग्यता और भी बहुत से लोगों की है, जो रोज़गार न मिलने के कारण परेशान हैं। पाँच-सात हजार से ज्यादा वेतन उन्हें देने को कोई तैयार ही नहीं होता है। हमें ऐसा गुरुत्वपूर्ण शिक्षक का पद मिला है तो इसकी जिम्मेदारी, उत्तरदायित्व हमें भी तो समझना चाहिए न। बच्चों को विभिन्न तरीकों से सिखाना हमारी ड्यूटी है। बच्चा नहीं सीख रहा है तो उसे कहाँ कठिनाई है, वह कठिनाई हमें दूर करनी ही चाहिए। इसके अलावा शर्मा जी, एक बात और भी है वह बात यह है कि **यदि आपका एक छात्र भी फेल होता है तो आप सच मानिए कि नैतिक रूप से कुछ अंशों में शिक्षक भी फेल होता है।**

धैर्यपूर्वक पढ़ा जाए तो उनका यह उत्तर हम सबको अंदर तक झकझोर देने वाला है। क्योंकि शिक्षक होना हमारा गुरुत्व है। हमारे शास्त्रों ने हमें यही मर्यादा सिखाई है। हमने तो कोर्स पूरा करा दिया, हमारा काम खत्म। छात्र कितना समझे या नहीं इससे हमें कोई मतलब नहीं। यह एक अच्छा जवाब नहीं हो सकता। बच्चों का रिज़ल्ट कम रहना हमारा मूल्यांकन भी तो है। उससे हम बच नहीं सकते हैं। अब रही बात आई. क्यू. की,

(i) छात्र के समझने की क्षमता

(ii) कक्षा में उपस्थिति कम रहने की,

(iii) शिक्षक की अन्य ड्यूटी के कारण पाठ्यक्रम पूरा न हो पाने की। तो हमें विचार करना होगा कि अन्य ड्यूटी के बाद जो समय हमें मिलता है तो क्या उस समय का निष्ठापूर्वक उपयोग तो हम करते हैं न! एक्स्ट्रा क्लास लेने में हमारी रुचि भी है क्या? या फिर येन केन प्रकारेण पाठ्यक्रम तो पूरा करा दिया। छात्र ने कितना समझा हम नहीं जानते। चालीस-पचास छात्रों की कक्षा में ऐसे एक-एक छात्र का हम कहाँ तक ध्यान रखें और तब हमें याद आना चाहिए फेल होने वाले उस मासूम बालक का चेहरा।

अतः हमें कोई रास्ता निकालना पड़ेगा। छात्र पढ़ाई में पिछड़ रहा है तो छात्र और उसके

अभिभावक को सत्र के मध्य तक विश्वास में लेकर यह बताना होगा कि यह स्थिति है और छात्र फेल भी हो सकता है। ऐसा होगा तो अभिभावक सहयोग करेंगे या फिर इस नकारात्मक परिणाम के लिए पहले से ही मानसिक रूप से तैयार भी रहेंगे। जबकि हम तो ऐनलास्ट में कहते हैं कि-मेघराज फेल। क्या सात या आठ अंक कम या ज्यादा मिलना ही जीवन दिशा तय करेगा। नहीं, छात्र अपनी कमजोरी स्वयं जान ले तो अभिभावक भी जान जाते हैं कि पढ़ाई के प्रति छात्र का क्या भविष्य है।

अब बात बच्चे का वर्ष बचाने की। तो उन एक या दो विषयों के लिए अगली कक्षा में जाने से रोकने की जरूरत नहीं है। अगली कक्षा में भेजकर भी प्रारंभ के तीन माह में सैमेस्टर पद्धति से पिछली कक्षा का पिछड़ापन दूर करने के लिए फिर से टैस्ट लेना होगा। वह पास हो जाता है तो ठीक अन्यथा फिर अपना भविष्य तय होते देखकर उसे झटका नहीं लगेगा, वह खुद ही समझ जाएगा।

शिक्षा प्राप्त करना, फेल या पास होना भाग्य की बात है, ऐसी एक शास्त्रीय मान्यता भी है। फिर भी हम शिक्षक अपने आचरण, व्यवहार के द्वारा छात्र को विद्यालय में अच्छे संस्कार तो दे ही सकते हैं ताकि भावी जीवन में वह समाज में उपयोगी और आदर्श नागरिक तो बन ही सके।

'आचार्य देवो भव'- शिक्षक गुरु होता है जो हमारे जीवन में अज्ञान के अंधकार को दूर करते हैं। यह हमारी सांस्कृतिक समझ है। जो समय के अंतराल में टाइमबार होती जा रही है। शिक्षक गुरु न होकर गवर्नमेंट सरवेंट बनता जा रहा है। शिक्षक और छात्र दोनों ही यह बात अनुभव करने लगे हैं।

इस धारणा को हमें बदलना होगा। बालकों के भविष्य को संवारने के लिए हमें गुरुत्व स्थापित करना होगा। अन्यथा तो प्रोफेसर साहब ने कहा था वही बात है कि- यदि आपका एक छात्र भी फेल होता है तो आप सच मानिए कि नैतिक रूप से कुछ अंशों में शिक्षक भी फेल होता है।

मनीषा साड़ी सेंटर, मुरलीधर कॉलोनी,
बीकानेर (राज.)-334004
मो: 9413278960

साहित्य का सामर्थ्य

❒ लालाराम प्रजापत

साहित्य संगीत कला विहीनः,
साक्षात् पशु पुच्छ विषाण विहीनः।
तृणं न खादन्नपि जीवमानस्तभागदेयं
परमपशुनाम्।।

समाज व्यक्तियों का समूह है। व्यक्ति से समाज का निर्माण होता है और समाज से ही पीढ़ी दर पीढ़ी संस्कारों व संस्कृति का सम्प्रेषण होता है। गहरी व विस्तृत मानसिकता वाला व्यक्ति समाज निर्माण का कुशल इंजीनियर बन सकता है। साहित्य व्यक्तियों की सोच में परिवर्तन द्वारा सामाजिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करता है। अतः समाज की उन्नति और चेतना के लिए, व्यक्ति का समुचित, चहुँमुखी विकास परम आवश्यक तत्त्व है।

समाज में चेतना, जागृति, उन्नयन व संगठनात्मक ढाँचे के लिए साहित्य का स्थान सर्वोपरि हो सकता है। विशेषकर हमारे समाज के परिप्रेक्ष्य में। हमारा समाज आज भी अशिक्षा, गरीबी एवं चेतनाशून्य स्थिति में विचरण कर रहा है। समाज को सही दिशा देने का दायित्व अंततः शिक्षित व प्रबुद्ध वर्ग का है। इस क्षेत्र में सामाजिक पत्र पत्रिकाएँ, ग्रन्थ, विशेषांक आदि साहित्य महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं। साहित्य प्रकाश है, साहित्य बिना चेतना संभव नहीं। लाखों व्यक्तियों को जोड़ने का महत्त्वपूर्ण कार्य साहित्य ही करेगा। साहित्य रोगी की औषधि है, साहित्य 'ब्रह्मानन्द सहोदर' है। दूर-दूर फैले भाइयों को देश विदेश में प्रतिस्पर्धात्मक जाल से अवगत कराकर अपने अस्तित्व के प्रति शक्ति का संचार करने का पुनीत कार्य साहित्य के बिना और कौन कर सकता है?

'दीपै वांरां देस, ज्यांरां साहित जगमगै'

वर्तमान युग में प्रत्येक समाज अपनी अस्मिता के लिए संघर्षरत है। प्रतिस्पर्धा के युग में अब व्यक्ति मात्र अपनी संकुचित विचारधारा के बंधन में निहित स्वार्थपूर्ति में लगकर अपनी भौतिक सुख सुविधाओं के विस्तार में ही लगा रहेगा तो एक विकसित, सुसंस्कृत एवं चेतन समाज की कल्पना कैसे की जा सकती है? व्यक्ति अपने दायरे से निकलकर समष्टिगत दृष्टिकोण रखे तभी सभ्य समाज का मजबूत ढाँचा निर्मित हो सकेगा। रामकृष्ण परमहंस ने कहा था-**''दीवारें तोड़ो, आगे अनंत मैदान है।''**

परमहंस के ये विचार आध्यात्मिक क्षेत्र में होंगे, लेकिन परिवार, समाज व राष्ट्र के परिप्रेक्ष्य में चिंतन किया जाए तो भी यह वाक्य खरा उतरता है। अपनी मानसिक बुद्धि के सामने कई तरह की दीवारें हैं जिससे प्रकृति का विस्तृत कला क्षेत्र दृष्टिगोचर नहीं होता। ये दीवारें ही हमें सीमित व पंगु बनाती हैं। आज इन दीवारों को तोड़ने की आवश्यकता है।

मस्तिष्क में चेतना आए, हृदय में स्वाभिमान जाग्रत हो, बुद्धि में प्रकाश का संचार हो, अंगों में स्फूर्ति जगे, हाथ आकाश की ओर बढ़े, कदम विकास की राह चले व नयनों में दूर दृष्टि हो। ये सब कुछ साहित्य के पठन-पाठन व रसास्वादन से संभव है। साहित्य कोई चुटकुला या परियों की कथा नहीं जिसे पढ़ा और मनोरंजन कर लिया। साहित्य को मनोरजंन के लिए नहीं चिंतन व मंथन के लिए पढ़कर मन मस्तिष्क का मंजन करें। 'साहित्य' दो शब्दों के योग से बना है स+हितों च साहित्य। जो सबका हित करे वह साहित्य है। कल्याणकारी उद्देश्य से लिखा हर वाक्य साहित्य है। आज हमारे घरों में गीता रामायण कल्याणकारी सन्देश के कारण ही युगों-युगों से पूजनीय है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के इस सन्दर्भ में ये विचार आज भी प्रासंगिक हैं-

''जिस साहित्य में हमारी रुचि न जागे, आध्यात्मिक और मानसिक तृप्ति न मिले, हममें गति व शांति पैदा न हो, हमारा सौंदर्य प्रेम न जाग्रत हो, जो हमारे में सच्चा संकल्प और कठिनाइयों पर विजय पाने की सच्ची दृढ़ता उत्पन्न न करे, वह आज हमारे लिए बेकार है, वह साहित्य कहलाने का अधिकारी नहीं।''

लोक मंगल व उदात्त भावों से पूर्ण सृजित साहित्य युगों-युगों तक ज्योतिपुंज के रूप में समस्त मानव जाति का पथ आलोकित करता है। इस प्रकार की प्रत्येक उक्ति पठन-श्रवण मात्र से ही अन्तःकरण में झंकृत होकर दिशा बोध कराती है।

वैदिक काल में कही गई सूक्ति **'माता भूमिः पुत्रोऽहम् पृथिव्याः'** व वाल्मीकि कृत रामायण का सद्वाक्य **'अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते, जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'** का उच्चारण करने मात्र से ही राष्ट्रभक्ति का 'भाव निर्झर' प्रस्फुटित हो उठता है।

जब-जब भी समाज, काल के कलुषित प्रभाव से किंकर्त्तव्यविमूढ़ हुआ है, साहित्यकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से नवजागरण का शंखनाद चारों दिशाओं की क्षितिज तक गुंजायमान कर सत्यता का बोध कराया है।

आदिकाल, भक्तिकाल या फिर आधुनिक काल हो, प्रत्येक कालावधि में कलमकारों व संतों ने सामाजिक विकृत्तियों का विरोधकर उच्च नैतिकता के आदर्श स्थापित किए हैं। 1857 की क्रांति के पश्चात् तत्कालीन समाज में भारतेंदु हरीशचन्द्र ने अपने काव्य से नव ऊर्जा का संचार किया।

अंग्रेज सुख-साज सजै सब भारी।
धन विदेस चलिजात इहै दुखारी।।

स्वाधीनता आन्दोलन की कालावधि में लेखनी के धनी साहित्यकार वीरोचित व्यवहार करते हुए नज़र आते हैं। बालकृष्ण शर्मा, रामधारी सिंह दिनकर, सोहनलाल द्विवेदी, श्यामनारायण पांडे आदि कवियों की साहित्यिक गर्जना के फलस्वरूप अंग्रेज शासन के विरुद्ध हवाएँ, 'प्रभंजन' बन उनके सपनों को तितर-बितर करती हुई दुष्टिगोचर होती है।

उठो-उठो कुरीतियों की राह तुम रोक दो
बढ़ो-बढ़ो कि आग में गुलामियों को झोंक दो
(रामधारी सिंह दिनकर)

संतान शूर वीरों की है, हम दास नहीं कहलाएँगे
या तो स्वतंत्र हो जाएँगे, या तो हम मर मिट जाएँगे
हम अमर शहीद कहलाएँगे, हम बलिवेदी पर जाएँगे
जननी की जय-जय गाएँगे।
-सोहन लाल द्विवेदी

समय-समय पर अपने जीवन के कुरुक्षेत्र में कर्त्तव्यपथ से विचलित पार्थ को सृजनकारों ने श्री कृष्ण की भूमिका का निर्वहन करते हुए

सत्यता का दर्शन कराकर समाज के समक्ष आदर्श प्रस्तुत किए हैं।

इसी सन्दर्भ में राजस्थान प्रदेश के केसरी सिंह बारहठ द्वारा मेवाड़ महाराणा फतेहसिंह का वायसराय कर्जन के दिल्ली दरबार में उपस्थित होने से अपने तीक्ष्ण 'सोरठो' से रोकना एक विशिष्ट उदाहरण है। अंग्रेजी सत्ता के प्रचण्ड वेग के विरुद्ध ये साहित्यकार लेखनी के धनी ही नहीं, अपितु तलवार के भी धनी थे।

मेवाड़ महाराणा का दिल्ली दरबार में उपस्थित होना शेखावाटी की आन, बान व शान के विरुद्ध था। महाराणा फतेह सिंह अपनी रेल द्वारा दिल्ली रवाना हो गए। केसरी सिंह बारहठ ने इन महाराणा के नाम **'चेतावनी रा चुंगटिया'** सोरठे लिखकर ठा. गोपालसिंह खरवा के साथ भेज दिए। ठा. खरवा ने चित्तौड़गढ़ स्टेशन पर ये दोहे महाराणा को दे दिए।

महाराणा ने अपनी रेल यात्रा में ही ये दोहे पढ़ लिए। इन दोहों ने महाराणा में सुषुप्त 'शौर्य सिंह' को जाग्रत कर दिया। महाराणा के समक्ष मेवाड़ के गौरवशाली इतिहास की कहानी जीवंत होकर गरजने लगी।

महाराणा दिल्ली तो पहुँचे लेकिन उन्होंने दरबार में अपनी उपस्थिति नहीं दी। इनकी कुर्सी रिक्त ही रही। यह है साहित्य की शक्ति व चमत्कार। ये प्रसिद्ध 'चेतावनी रा चुंगटिया' इस प्रकार है–

गिरद गंजा घमसांण, नहचै धर माई नहीं।
मावै किम महाराण, गज दौसे रा गिरद म ।।

ओरां ने आसान, हाका हरवळ हालणों।
(पण) किम हालै कुल राण,
(जिण) हरवळ साहाँ हाँकिया।।
सिर झुकिया शहंशाह सींहासण जिण सम्हने।
(अब) रळणों पंगत राह, फाबै किम तोने फता।।
सकल चढ़ावें सीस, दान धरम जिण रौ दियौ।
सो खिताब बखसीस, लेवण किम ललचावसी।।
देखेला हिंदवाण, निज सूरज जिण रौ दियौ
पण तारा परमाण, निरख निसासा न्हांकसी।।
कठिण जमानों कौल, बांधे न हीमत बिना।
(या) वीरा हंदो बोल, पातल सांगे पेखिए।।

सहायक निदेशक
कार्यालय उपनिदेशक माध्यमिक शिक्षा
आदर्श नगर, पाली 306401
मो. 9414549061

बदलाव की पहल : 'क्लिक्स' कार्यक्रम

❒ डॉ. जय बहादुर सिंह कच्छावा

21 वीं सदी भारतीय शिक्षा में बदलाव की साक्षी रहेगी और ये बदलाव शिक्षा में नवाचारों की कई नयी संभावनाओं को भी पैदा करेंगे। शैक्षिक नवाचारों का उद्भव स्वतः नहीं होता वरन इन्हें खोजना पड़ता है तथा सुनियोजित ढंग से इन्हें प्रयोग में लाना होता है, ताकि शैक्षिक कार्यक्रमों को परिवर्तित परिवेश में गति मिल सके और परिवर्तन के साथ गहरा तारतम्य बनाए रखा जा सके। इन्हीं शैक्षणिक नवाचारों के अंतर्गत वर्ष 2004 में राजकीय विद्यालयों में MHRD की योजना "ICT in School Education" से जुड़ते हुए तथा ICT प्रदत्त संभावनाओं को अपनाते हुए माध्यमिक स्तर पर गणित, विज्ञान एवं अंग्रेजी विषयों में सीखने-सिखाने की गतिविधियों को मजबूत करने के उद्देश्य से क्लिक्स (CLIx - Connected Learning Initiative) कार्यक्रम के अंतर्गत प्रयास शुरू किए गए।

क्लिक्स कार्यक्रम राजस्थान में MHRD के ICT कार्यक्रम के अंतर्गत फेज़-3 के विद्यालयों में शुरू किया गया। क्लिक्स कार्यक्रम शिक्षा में एक नवाचार है और जब भी शिक्षा में नवाचार आया है तब शिक्षा पद्धति को आधुनिकतावाद की ओर अग्रसर कर नई गतिशीलता प्राप्त हुई है। यह अनूठा उद्यम टाटा ट्रस्ट की वित्तीय मदद एवं टिस (TISS-Tata Institute of Social Sciences) के समन्वय से शिक्षा में नवाचार के लिए एक प्लेटफॉर्म उपलब्ध करवा रहा है, जो मुख्यतः अंग्रेजी, विज्ञान तथा गणित जैसे कठिन विषयों को लेकर कार्य कर रहा है। इसके अंतर्गत शिक्षण की गुणवत्ता को बेहतर बनाने हेतु तकनीक के जरिए विश्वसनीय, प्रामाणिक एवं आपस में जुड़कर सीखने के अनुभवों के लिए मौके सृजित करने के प्रयास किए जा रहे हैं। क्लिक्स कार्यक्रम अध्यापकों के व्यावसायिक विकास में भी मदद कर रहा है। विभिन्न संस्थानों, सार्वजनिक शिक्षा प्रणालियों, अध्यापकों तथा सीखने के संसाधनों के आपसी नेटवर्क की मदद से क्लिक्स कार्यक्रम मिश्रित ढंग (blended mode) से शिक्षा को एक बड़े पैमाने पर काम कर सकने वाले स्थायी मॉडल के रूप में उभारने का प्रयास है।

क्लिक्स कार्यक्रम का परिचयः क्लिक्स कार्यक्रम टाटा ट्रस्ट की एक पहल है, जिसमें ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के लिए बड़े पैमाने पर तकनीक सीखने के कार्यक्रम को बनाने तथा उसे लागू करने के विचार निहित है, इसके लिए टाटा ट्रस्ट ने 'मैसाचुसेट्स इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (MIT)' बोस्टन, संयुक्त राज्य अमेरिका तथा टाटा सामाजिक विज्ञान संस्था (TISS), मुंबई को आमंत्रित किया कि वे एक व्यापक दायरे में काम करने वाले संस्थानों की भागीदारी के साथ इस कार्यक्रम को बनावें ताकि उनके समृद्ध तथा विविध प्रकार के अनुभव को शामिल करते हुए इस अनूठी पहल को लागू किया जा सके। इनके अलावा कई अन्य प्रबुद्ध संस्थाएँ भी इस कार्यक्रम का हिस्सा हैं, जैसे सेंटर फॉर एजुकेशन रिसर्च एंड प्रैक्टिसेज (जयपुर), शिक्षा विभाग, मिजोरम विश्वविद्यालय (ऐजवाल), एकलव्य (भोपाल), होमी भाभा विज्ञान शिक्षा केंद्र, टीआईएफआर (मुंबई), नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ट स्टडीज (बेंगलुरु), स्टेट काउंसिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग (SCERT) ऑफ तेलंगाना (हैदराबाद), टाटा क्लासेज (मुंबई), इंटर-यूनिवर्सिटी सेंटर फॉर एस्ट्रोनॉमी एंड एस्ट्रोफिजिक्स (पुणे)।

कार्यक्रम के सफलतापूर्वक क्रियान्वयन में चारों राज्यों की सरकारें (राजस्थान,

छत्तीसगढ़, मिज़ोरम तथा तेलंगाना) सक्रिय भागीदारी दे रही है। इस पहल में गणित, विज्ञान, संवादपरक अंग्रेजी तथा डिजिटल साक्षरता के साथ जीवन-मूल्यों एवं 21वीं सदी के कौशलों को गूँथ कर सीखने के दिलचस्प, व्यावहारिक और गुणवत्तापूर्ण डिजिटल तकनीक आधारित मोड्यूल बनाए गए हैं। जिन्हें बनाने में शिक्षा के क्षेत्र में वर्षों से कार्यरत टिस संस्थान के विषय विशेषज्ञों ने सहयोग प्रदान किया है। यह मोड्यूल राजस्थान, छत्तीसगढ़, मिज़ोरम एवं तेलंगाना में सरकारी विद्यालयों के शिक्षार्थियों को उनकी अपनी स्थानीय भाषा में ही उपलब्ध करवाए जा रहे हैं।

क्लिक्स कार्यक्रम को वर्ष 2017 के लिए संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) के द्वारा शिक्षा में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) के उपयोग के लिए अन्तर्राष्ट्रीय 'हमद बिन ईसा अल-खलीफा पुरस्कार' के लिए भी चुना गया। इस पुरस्कार के लिए पहली बार नामांकन वर्ष 2005 में माँगे गए थे, तब से लेकर आज तक सर्वाधिक नामांकन गत 2017 वर्ष में प्राप्त हुए। जहाँ कुल प्रविष्टियों की संख्या 900 रही। इनमें से भी निर्णायकों की कसौटी पर विश्व भर के अलग-अलग 79 देशों से प्राप्त 143 प्रविष्टियाँ ही खरी उतरी। अंतिम दौर में इन 143 प्रविष्टियों में से पुरस्कार के लिए दो देशों भारत तथा मोरक्को का अंतिम चयन किया गया था। क्लिक्स परियोजना की निदेशक प्रो. पद्मा सारंगपानी ने दिनांक 7 मार्च, 2018 को पेरिस में स्थित यूनेस्को मुख्यालय में इस पुरस्कार को ग्रहण किया।

राजस्थान में क्लिक्स कार्यक्रम: भारत में क्लिक्स योजना अभी चार राज्यों राजस्थान, छत्तीसगढ़, मिज़ोरम एवं तेलंगाना में चलायी जा रही है, हालांकि हर राज्य में इसे लागू करने के मॉडल में अंतर है। क्लिक्स कार्यक्रम तेलंगाना राज्य के सरकारी विद्यालयों में राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (SCERT - State Council of Educational Research and Training) के सहयोग से चलाया जा रहा है। मिज़ोरम राज्य में क्लिक्स क्रियान्वयन मिज़ोरम विश्वविद्यालय के द्वारा स्कूल शिक्षा निदेशालय के साथ मिलकर कार्य किया जा रहा है। छत्तीसगढ़ में 'टिस' स्वयं के द्वारा क्लिक्स कार्यक्रम का क्रियान्वयन किया जा रहा है, जहाँ राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, रायपुर के अधिकारी और विभागीय शिक्षक क्लिक्स टीम को सहयोग प्रदान करते हैं। राजस्थान में क्लिक्स कार्यक्रम का क्रियान्वयन शिक्षा के क्षेत्र में वर्षों से कार्य कर रही प्रबुद्ध संस्था 'सेंटर फॉर एजुकेशन रिसर्च एंड प्रैक्टिस' के द्वारा किया जा रहा है।

राजस्थान में राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (रमसा) के साथ मिलकर सेंटर फॉर एजुकेशन रिसर्च एंड प्रैक्टिस संस्था की 300 विद्यालयों में इस कार्यक्रम को चलाने की योजना है। वर्तमान में यह कार्यक्रम दो जिलों जयपुर तथा सिरोही के कुल 101 विद्यालयों में चल रहा है तथा 1 अप्रैल, 2018 से 199 और विद्यालयों में इसे शुरू किया जाएगा। क्लिक्स विद्यार्थियों तथा शिक्षकों दोनों के लिए कार्यरत है, जिसमें लगभग 300 अध्यापकों एवं 10,000 विद्यार्थियों के साथ काम किया जा रहा है, नए विद्यालयों के जुड़ने पर कुल शिक्षकों तथा विद्यार्थियों की संख्या लगभग तीन गुना हो जाएगी। शुरूआती चरणों में क्लिक्स कार्यक्रम को कक्षा 9 तथा 11 में क्रियान्वयित किया जाना तय हुआ था तथा विभिन्न मोड्यूल कक्षा 9 के अनुसार बनाए गए और विद्यालयों को उपलब्ध करवाए गए थे, समय के साथ यह महसूस किया गया कि कक्षा 9 में आते-आते संबंधित अवधारणाओं को समझने के लिए उसके पास पर्याप्त तैयारी होगी, फिलहाल क्लिक्स के मोड्यूल राजस्थान के विद्यालयों की कक्षा 8 तथा 9 के लिए बनाए गए हैं जिसमें क्लिक्स डिजिटल साक्षरता, अंग्रेजी, विज्ञान तथा गणित विषयों के मॉड्युलों को लेकर काम कर रहा है। सभी मॉड्यूल विद्यालय की आई.सी.टी. प्रयोगशाला में ऑफ लाइन उपलब्ध हैं।

विद्यालयों में क्लिक्स कार्यक्रम: क्लिक्स कार्यक्रम की शुरुआत में विद्यालयों में कंप्यूटर लैब में परिस्थितियाँ काम करने के अनुकूल नहीं थी। अस्त-व्यस्त कंप्यूटर, टूटे पड़े उपकरण, धूल-मिट्टी खाकर बंद पड़ चुके हार्डवेयर से जूझना पहली चुनौती रही। कुछ विद्यालयों में लैब को कंप्यूटर कक्ष के स्थान पर अन्य कार्यों के रूप में भी उपयोग में लेते हुए देखा गया। अधिकांश विद्यालयों में एक या दो कंप्यूटर ही कार्यशील थे, जिन्हें भी विद्यालय के द्वारा ही उपयोग में लाया जा रहा था ऐसे विद्यालयों की गिनती लगभग नगण्य थी जहाँ कंप्यूटर पर विद्यार्थियों के द्वारा कुछ सीखा जा रहा हो। कंप्यूटर कक्ष में यदि बच्चे आकर कुछ शिक्षण सम्बंधित कार्य कर रहे थे तो वो भी केवल सेटेलाईट प्रसारण तक ही सीमित था। कार्यक्रम की शुरुआत में परिस्थितियाँ इतनी आसान नहीं थी, विभिन्न विद्यालयों में विजिट करने के दौरान सबसे बड़ी चुनौती कंप्यूटर लैब को दुरुस्त बनाए रखना था। क्लिक्स टीम के द्वारा लैब में सुधार तथा कार्यशील अवस्था में बनाए रखने के लिए प्रधानाध्यापकों एवं अध्यापकों का समय-समय पर आमुखीकरण किया गया। स्थानीय स्तर पर विद्यालयों में आई.सी.टी. सेवा प्रदाता के द्वारा आवश्यक उपकरणों की उपलब्धता ने कार्यक्रम को बेहतर तरीके से क्रियान्वयन होने में मदद की, सभी के सहयोग से कंप्यूटर लैब को संचालन की स्थिति में लाया जाना और कार्यशील बनाए रखना भी इस योजना की उपलब्धियों में गिना जा सकता है।

कार्यक्रम को विद्यालयों में बच्चों के साथ शुरू किए जाने से पूर्व सभी अंग्रेजी, गणित एवं विज्ञान अध्यापकों को डिजिटल तथा विषय आधारित प्रशिक्षणों में बुलाया गया। सत्र 2016-17 में नवम्बर माह में विद्यार्थियों ने क्लिक्स मोड्यूल पर कार्य करना शुरू किया।

कार्यक्रम की शुरूआत में राजकीय विद्यालयों में बच्चों को माउस और की-बोर्ड से जूझते हुए देखा गया, उनकी छोटी-छोटी अंगुलियाँ माउस पर अपने नियंत्रण में लेने के लिए उलझ रही थी, कभी दोनों हाथों से पकड़ कर कर्सर को कहीं रखना तो कभी कर्सर को सही जगह पर बना पाने की जद्दोजहद की स्थिति लगभग सभी विद्यालयों में देखी गई।

प्राइवेट विद्यालयों में विद्यार्थियों को विद्यालय या घर पर किसी न किसी रूप में कंप्यूटर से रूबरू होने का मौका मिल जाता है लेकिन सूदूर इलाकों के राजकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के परिवेश में ये घटना संभवतः पहली बार थी। बच्चों के साथ बातचीत में सामने आया कि कुछ ने तो कंप्यूटर को जीवन में पहली बार हाथ लगाया, हालांकि समय के

साथ परिस्थितियों में भी अंतर आया कुछ छात्र ऐसे भी नज़र आए जो आगे चल कर दूसरे छात्रों को कंप्यूटर पर काम कर पाने में मदद कर रहे हैं, पूरी लैब को बिना अध्यापक की सहायता से चालू करना तथा कक्षा समाप्ति पर सभी सिस्टम को सही तरीके से बंद कर पाने में वे सक्षमता दिखा रहे हैं ऐसा भी होगा ये हमने भी नहीं सोचा था।

वर्तमान स्थिति: 2016-17 में अधिकांश काम डिजिटल साक्षरता तथा अंग्रेजी के मोड्यूल के साथ ही हो पाया। गत सत्र 2017-18 में कार्य की शुरूआत सत्र के शुरू से कर दी गई। ग्रीष्मावकाश में शिक्षकों के प्रशिक्षण किए गए जिनमें दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम विद्यालय खंडीय स्तर तथा पाँच दिवसीय कार्यशाला जिला स्तर पर रखी गई। ऐसा माना जाता है कि तकनीक को युवा अधिक दिलचस्पी से सीखते हैं लेकिन क्लिक्स के प्रशिक्षण कार्यक्रमों ने ऐसी किसी भी अवधारणा को बदल कर ही रख दिया। प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने वाले अध्यापकों की आयु वर्ग लगभग 25-58 रहा होगा लेकिन तकनीक आधारित विषय मॉड्यूल को सीखने की ललक सभी आयु वर्ग में समान देखी गई, बल्कि कुछ विशेष अध्यापक जो 50-55 के आस-पास रहे होंगे उनके द्वारा अधिक रुचि दिखाई जा रही थी।

प्रशिक्षण कार्यक्रमों के पश्चात् प्रथम वर्ष की तुलना में द्वितीय वर्ष में अध्यापक विद्यालयों में स्वयं मॉड्युलों पर कार्य करवा पाने में अधिक सहज दिखाई दे रहे थे। डिजिटल साक्षरता, गणित, विज्ञान तथा अंग्रेजी सभी मॉड्युलों के साथ विद्यालयों में कार्य किया गया डिजिटल तकनीक के द्वारा अध्यापक-विद्यार्थियों के मध्य एक अलग प्रकार का संवाद दिखाई देने लगा था। अध्यापक तथा विद्यार्थी दोनों के लिए ये सभी गतिविधियाँ महत्त्वपूर्ण रहीं, जहाँ वे जान पाए कि शिक्षण में 'करके सीखना' सीखने की प्रक्रिया को कितना सरल बना देता है।

'क्लिक्स' को एक अध्यापक के द्वारा इस प्रकार भी बताया गया है 'क्लिक्स मोड्यूल बहुत ही रोचक तथा बच्चों के लिए काफी उपयोगी है। इन मॉड्यूल से विद्यार्थी सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ कंप्यूटर द्वारा प्रायोगिक रूप से विषयों को चित्रों, वीडियो तथा स्वयं करके सीखते हैं। इससे नई तकनीक को सीखने का मौका मिलता है, ऐसे मौके ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यार्थियों को कम ही प्राप्त होते हैं। क्लिक्स गतिविधियों में बच्चों की भागीदारी बहुत ही ज्यादा रहती है, नई चीजों को सीखने में मदद मिलती है तथा साथ ही मानसिक स्तर बढ़ाने में भी मदद मिलती है। पाठ्यक्रम की विषयवस्तु को सरल तरीके से कंप्यूटर द्वारा सीखने का यह प्रयास बहुत ही सार्थक है, जिसमें विद्यार्थी अपने अनुभव आपस में साझा भी करते हैं। निश्चित रूप से यह कार्यक्रम विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।'

वर्ष 2017-18 में (TISS) के द्वारा शिक्षक व्यावसायिक विकास केंद्र के माध्यम से क्लिक्स शिक्षकों के लिए स्नातकोत्तर प्रमाणपत्र कार्यक्रम-आई.सी.टी. युक्त विमर्शपूर्ण शिक्षण (Reflective Teaching with Information and Communications Technology - RTICT) भी उपलब्ध कराया जा रहा है, ये पाठ्यक्रम अभ्यास आधारित है। जिसमें शिक्षक अपनी कक्षाओं में क्लिक्स विद्यार्थी मॉड्यूल को लागू करते हैं कक्षा में मिलने वाले अनुभवों को क्लिक्स कार्यक्रम के अंतर्गत सोशल एप्लीकेशन पर बनाए गए शैक्षणिक समूहों में साझा करते हैं। अध्यापकों के द्वारा इन सोशल एप्लीकेशन का उपयोग इस तरह से किया जाना भी अद्भुत अनुभव रहा जिसमें एक विद्यालय के अध्यापक अपने द्वारा करवाए गए शिक्षण कार्य को दूसरे विद्यालय के अध्यापकों को बता रहे थे।

शिक्षण को तकनीकी से जोड़ना एक अच्छी सोच है तथा समाज के वंचित वर्ग या आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों का तकनीक आधारित शिक्षा को पाना और तकनीकी उपकरणों को उपयोग में लाना भी आवश्यक है, जो उन्हें समाज की मुख्य धारा में लाने का प्रयास तो कर ही रहा है साथ में उन्हें भविष्य के लिए भी तैयार करता है। इन्ही उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इस प्रकार के नवाचार कार्यक्रम काफ़ी सार्थक सिद्ध हो रहे हैं। 'क्लिक्स' के अंतर्गत हमारा प्रयास है कि एक ऐसा मॉडल विकसित करें जिससे तकनीक आधारित शैक्षणिक कार्यक्रमों को पूरे राज्य में लागू किया जा सके।

राजस्थान क्लिक्स कार्यक्रम क्रियान्वयन
समूह, सेंटर फॉर एजुकेशन रिसर्च एंड प्रैक्टिसेज,
जयपुर - 302015

शाला-प्रवेश से प्रस्थान

❒ रामरख बिश्नोई

मंद-मंद, मंद-मंद सज-धज
बाल-बाला चलरी।
स्वच्छ परिवेश, धार गणवेश,
प्रवेश शाला कररी
विटप बीच वल्लरी,
मंद-मंद हिल री देखो
पुष्प वृष्टी कर री।।

टन-टन टंकार शाला बजरी।
कतार-कतार लगातार,
देखो प्रार्थना स्थली सजरी
राष्ट्रगीत, गान, गायत्री वंदना
सुन-सुन देखो हंसवाहिनी हँस री।।

ध्यान योग, मौन कर पत्र वाचन
अमृत वचन।
बारी-बारी बाल-बाला वदरी
कक्षा-कक्षा, कक्षा-कक्षा,
कक्षा-कक्ष गत री
श्वेत पट्ट, श्याम पट्ट, हरित पट्ट,
पढ़-पढ़ लेख लेखनी लिखरी।।

सदा सदगुण, अक्षर गिनती
बाल-बाला सीख री।
देखो धधक-धधक,
ज्ञान-ज्वाला धधक री
वीणा-वादिनी मुदित री
टन-टन टंकार एकादशम बजरी
बाल-बाला गृह प्रस्थान कररी
देखो हंसवाहिनी हंस री,
वीणा वादिनी मुदित री।।

व. शा. शि.
राज.आदर्श उ.मा.वि. मेड़ता रोड (नागौर)
मो: 9983063950

स्थानस्य महिमा

❒ देवेन्द्रनाथ पण्ड्या

इस धरती पर मानवजाति के उद्भव के साथ ही मनुष्य तथा हर जीव का उस स्थान विशेष से जुड़ाव बनता गया तथा बढ़ता ही रहा, जहाँ पर वह आया। धीरे-धीरे उसका यह लगाव प्रेम भाव में परिणित होने लगा तथा श्रद्धा बन गया। परन्तु मानव की यह श्रद्धा केवल उसी स्थान विशेष तक सीमित नहीं रह जाती। स्थान विशेष के साथ-साथ मनुष्य अपनी सम्पूर्ण जीवन-यात्रा में अनेक स्थानों से गुजरता है जिनमें कुछ तो उसके जीवन के विकास यात्रा के अंतिम पड़ाव से गुजरते हुए 'शहर-ए-खामोश' का नागरिक बन जाता है।

मानव अनुभव के आधार पर व्यक्ति की जीवन यात्रा के दौरान उसके सम्पर्क में आने वाले स्थानों में मुख्यतः जिन स्थानों को गिना जाता है वे इस प्रकार हैं। जन्म एवं शैशवावस्था तक रहने के स्थान, ज्ञानार्जन के स्थान, उपासना एवं पूजा के स्थान, कर्म से जुड़ा कर्म स्थली, शान्ति, मनोरंजन एवं आनंद की अनुभूति प्रदान करने वाले स्थान, दूषित एवं वर्जित स्थान, मानव जाति की भूत में रही स्थितियों के प्रतिबिंब का दर्शन कराने वाले ऐतिहासिक उल्लेखनीय स्थान आदि। परन्तु इन सभी स्थानों में व्यक्ति के जीवन निर्माण में जिनकी अहम भूमिका होती है वे हैं परिवार एवं ज्ञानार्जन के स्थान। ज्ञानार्जन का पहला एवं सीधा संबंध तो विद्यालय से है। समग्र जीवन का आनुभविक निचोड़ यही है कि प्रेम, श्रद्धा तथा आत्मविश्वास का सहज प्रादुर्भाव तो छोटे-बड़े शिक्षा केन्द्रों में ही प्रारम्भ होता है। विवेक बुद्धि का विस्तार, पहल करने की प्रेरणा, नवीन कार्यों को करने की क्षमता व दक्षता, कर्त्तव्यबोध तथा परिवार व राष्ट्र के प्रति दायित्व भावना का सृजन तथा उनकी प्रगति, उन्नति की उत्कंठ इच्छा शक्ति एवं समर्पण भाव का जन्म आदि सभी का उद्गम हमारे विद्या मंदिरों ने ही सम्भव बनाया है। **संक्षेप में विद्यालय तो संस्कार अवदान तथा व्यक्ति व समूह की प्रगति एवं आत्मोत्कर्ष की पहली सीढ़ी है।** अधिकांश रूप में विद्या ही व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन का मूल है। संस्कृत भाषा में कहा गया है **'हृदयं पवित्रं यदि ब्रह्मज्ञानम्'**। यह ब्रह्मज्ञान जीवन में किसी सद्गुरु के माध्यम से ही सम्भव है तथा सद्गुरु का सान्निध्य शिक्षा केन्द्र पर ही मिलता है। अतः हर सूरत में इसे मजबूत एवं सभी प्रकार से सशक्त करने का प्रयास अपेक्षित ही नहीं वांछनीय भी है।

इसी क्रम में यदि स्थान विषय पर गहराई से विचार करें तो बहुत सारे पक्ष ऐसे हैं जो स्थान की महत्ता, गरिमा एवं आवश्यकता को व्यापकता प्रदान करते हैं। जीवन में कभी स्थान की महिमा प्रबल होती है तो कभी स्थान विशेष की महिमा बनने या बनाने का आधार ही मनुष्य होता है। कभी-कभी किसी स्थान विशेष पर बैठने से व्यक्ति की महत्ता व गरिमा अपने आप बढ़ने लगती है। स्थान विशेष पर बैठने से व्यक्ति को नए-नए अनुभव प्राप्त होते हैं, उसके कार्य करने का क्षेत्र व्यापक हो जाता है, उसके व्यवहार में परिवर्तन आ जाता है, वह कई नई बातें सीखने लगता है तथा उसका आत्म विश्वास बढ़ने लगता है फिर समाज में धीरे-धीरे उसकी पहिचान बनने लगती है। परन्तु यहाँ पर ध्यान देने योग्य बात यह है कि कभी व्यक्ति संयोग से स्थान विशेष पर पहुँच तो जाता है परन्तु उस स्थान पर उसे अपना औचित्य भी सिद्ध करना होता है। अन्यथा उसकी उपादेयता व प्रासंगिकता समाप्त हो जाती है। यह बात हर क्षेत्र में लागू होती है।

कभी कोई घटना भी स्थान की महिमा को बढ़ा देती है। हृदय में अनुकूल व प्रतिकूल भाव बनने लगते हैं। संक्षेप में स्थान बनते भी हैं और बनाए भी जाते हैं। परन्तु इन सभी पक्षों के परे महत्त्वपूर्ण बात है लोगों के हृदय में स्थान बनाना।

स्थान दिए भी जाते हैं तथा लिए भी जाते हैं। स्थान को सम्मान का एक दूसरा रूप भी कहा जा सकता है। स्थान प्राप्त करने हेतु उस स्थान के अनुरूप बनना पड़ता है। पहले लक्ष्य बिन्दु निर्धारित करना होता है क्योंकि लक्ष्य ही सर्वोपरि है यही सफलता का उद्गम स्रोत है। कई ऐसे इतिहास पुरुष एवं महिलाएँ हुई हैं, जिन्होंने आम लोगों के हृदय में अपना स्थान बनाया जिस कारण वे स्वयं इतिहास बन गए। आने वाली पीढ़ी उन्हें याद करती रहेगी। वे अपने कार्यों से आज भी पहिचाने जाते हैं। इसलिए सच ही कहा गया है कि "Man lives in deeds not in years."

स्थान की महत्ता के सम्बन्ध में एक अन्य पक्ष भी है जिस पर ध्यान देना आवश्यक हो जाता है। कभी-कभी किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना का होना स्थान विशेष पर ही श्रेयस्कर होता है। क्योंकि स्थान से हटते ही उसकी महत्ता स्वयंमेव समाप्त हो जाती है। इसलिए कहा गया है **'स्थान भ्रष्टा न शोभन्ते, दन्ता केशा नखा नराः'**। कभी व्यक्ति को स्थान विशेष पर होने से पृष्ठबल प्राप्त होता है तथा उसके कार्य अपने आप हो जाते हैं व्यक्ति योग्य या क्षमतावान है या नहीं फिर भी उसका विरोध करने का कोई साहस नहीं करता। एक पौराणिक प्रसंग इस बात को रुचिकर बना देता है जिसका यहाँ उल्लेख करना प्रासंगिक भी लगता है। भगवान शंकर और देवी पार्वती के विवाह प्रसंग के अवसर पर कई देवी-देवता आए। भगवान विष्णु चूँकि प्रमुख देव होने से एवं शंकर से ज्यादा नज़दीक होने से वे उनके पास बैठे थे। उस समय शंकर के गले में विराजमान नाग देवता ने विष्णु के वाहन गरूड़ को देखकर क्रोधपूर्वक फूंकार लगाते हुए अपनी नाराज़गी जताई। इस पर गरूड़ ने उसका कोई प्रतिकार नहीं किया परन्तु विनम्र शब्दों में नाग को जो बात कही वह ध्यान देने योग्य है।

स्थानप्रधानं न बलप्रधानम्
स्थाने स्थितः कापुरषोपि शूरः।
जानामि नागेन्द्र तव प्रभावम्
कण्ठे स्थितो गर्जसि शंकरस्य।।

स्थान की महत्ता के सन्दर्भ में एक पक्ष और भी है जिस पर भी विचार करना आवश्यक हो जाता है। कभी-कभी स्थान विशेष पर जाकर आदमी के विचारों में परिवर्तन आ जाता है। उस व्यक्ति के उस स्थान के प्रति श्रद्धा के भाव जागृत हो जाते हैं, उसे शान्ति की अनुभूति होती है और वह व्यक्ति इसके बाद ऐसे स्थानों पर प्रायः जाने लगता है। यहाँ पर एक प्रसंग जिसमें राजसूय यज्ञ के बाद महाराज युधिष्ठिर एवं नेवला जिसका आधा शरीर स्वर्ण का था के संवाद के बाद नेवले का निराश होकर यज्ञभूमि से लौट जाने से

युधिष्ठिर के अंहकार को चोट पँहुचती है बड़ा ही प्रासंगिक लगता है। कभी-कभी स्थान व्यक्ति को अधिकार भी प्रदान करते हैं। कर्त्तव्यबोध की भावना का प्रादुर्भाव स्थान से भी होता है। परन्तु कभी-कभी वर्जित स्थानों पर बैठने से व्यक्ति को संदिग्ध दृष्टि से भी देखा जाता है और वह व्यक्ति उपेक्षा एवं हँसी का पात्र तक बन जाता है। आज कई स्थान विश्व धरोहर की सूची में अपना महत्त्व लिए हुए हैं। दूसरी ओर मानव की किसी कार्य विशेष में सफलता बहुत कुछ स्थान व समय पर भी निर्भर करती है।

अस्तु स्थान के संबंध में ऊपर वर्णित बातें हमें संकेत देती हैं कि मनुष्य को अपने जीवन में लोकोपयोगी स्थानों का निर्माण करने, अच्छे व प्रेरणा रूपी ऊर्जा संचारित करने वाले स्थानों का अवलोकन करने तथा उन स्थानों की गरिमा व महत्ता को दर्शाने वाले अच्छे पहलुओं को आत्मसात करते हुए उन्हें अपने जीवन में व्यवहृत करने हेतु सतत् प्रयत्नशील रहना चाहिए। क्योंकि **स्थान मानव जाति के उत्कर्ष का आधार है, स्थान एकता व सामंजस्य के मूल है, स्थान श्रद्धा व आस्था के प्रतीक हैं, स्थान प्रेरणा रूपी ऊर्जा के अक्षय स्रोत हैं, स्थान में स्नेह का आकर्षण होता है, स्थान ही उत्सर्ग की भावना के संचार के स्रोत हैं तथा स्थान ही मानव के भूत, वर्तमान एवं भविष्य की तस्वीर हैं।**

प्रधानाचार्य (से. नि.)
सिविल लाइन्स गढ़ी, बाँसवाड़ा
(राज.)-327022

समय नहीं, कर्म हमें जीवंत बनाता है

❒ पूनम

भूरे बालों की-सी कतरन,
छिपा नहीं जिसका छोटापन।
वह समस्त पृथ्वी पर निर्भय,
विचरण करती श्रम में तन्मय।
वह जीवन की चिनगारी अक्षय,
दिनभर में वह मीलों चलती।
अथक कार्य से वह कभी न डरती।

-पंत

पंत जी ने चींटी के व्यस्त एवं कर्मशील जीवन का उदाहरण मनुष्य को आलस्य में समय नष्ट करने वाले समय से बचने के लिए दिया है क्योंकि मनुष्य का जीवन समय से ही बना है। चींटी का लघुत्तम जीवन परिश्रम से भरा हुआ है। वह अपने जीवन का प्रत्येक कार्य अथक परिश्रम से सुलझा लेती है, फिर मनुष्य तो ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है क्योंकि उसके पास बुद्धि है, विवेक है उसकी अद्वितीय शरीरिक संरचना है। ईश्वर स्वयं चाहते है-

कर्मण्येवाधिकारस्ते माफलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।।

इंसान को जीवन में कुछ पाने के लिए समय और कर्म इन दोनों की ही गहन आवश्यकता होती है। महान साहित्यकार शेक्सपीयर ने कहा है- 'यदि तुम समय को नष्ट करोगे, तो एक दिन समय तुम्हें नष्ट कर देगा।' समय की बरबादी हमारे जीवन में धीमे जहर का कार्य करती है। प्रसिद्ध रचना 'पंचतन्त्र' में कहा गया है कि कार्य मनोरथ से नहीं बल्कि उद्यम से सिद्ध होते हैं। मनुष्य को यथाशक्ति पुरुषार्थ करना चाहिए। यदि प्रयत्न करने पर भी कार्य सिद्ध न हो, तो यह विचार करना चाहिए कि इसमें हमारी क्या कमी रह गई और दुगुने उत्साह से उस कार्य में जुट जाना चाहिए।

यदि मानव-जाति के विकास पर नज़र डाली जाए, तो विश्व को विकास की ओर ले जाने का श्रेय उन लोगों को जाता है, जिन्होंने अपने विचारों एवं कृत्यों से सम्पूर्ण विश्व को बेहतर बनाने का प्रयास किया। कर्म की महत्ता इस बात से भी परिलक्षित होती है कि वह प्रत्येक व्यक्ति, सदैव एक महान कर्मयोगी बनकर जीवन-पथ पर चलता रहा। ऐसे व्यक्तियों में महात्मा गाँधी, अब्राहम लिंकन, नेल्सन मंडेला जैसी विभूतियाँ शामिल हैं। इन लोगों ने न केवल स्वयं कर्म की महत्ता समझी, अपितु लाखों-करोड़ों अन्य लोगों को भी कर्म पथ पर साहसपूर्वक आगे बढ़ने का अद्वितीय मंत्र समझाया। कर्म के सच्चे आराधक का जीवन न केवल समाज के लिए हितकारी होता है, अपितु वह अनेक निष्क्रिय लोगों के लिए भी प्रेरणापुंज सिद्ध हो सकता है।

गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है-

कर्म प्रधान विश्व करि राखा।
जो जस करही, सो तस फल चाखा।।

महान् कर्मयोगी स्वामी विवेकानन्द कहते हैं, **''कर्म करना बहुत अच्छा है, पर वह विचारों से आता है... इसलिए अपने मस्तिष्क को उच्च विचारों और उच्चतम आदर्शों से भर लो। इन्हें रात-दिन अपने सामने रखो। उन्हीं में से महान् कार्यों का जन्म होगा।''**

इस प्रकार हम देखते हैं कि जीवन कर्मों से बनता है, वर्षों से नहीं। कैसी विडम्बना है कि मानव भाग्य या समय की प्रतीक्षा करता है और भाग्य मानव के कर्म की।

हमें पूर्ण कर्मशील होकर भावी जीवन का निर्माण करना चाहिए क्योंकि सत्कर्म से हमें आत्मिक शांति मिलती है, मानव-हृदय पवित्र होता है, उसके संकल्पों में दिव्यता आती है, उसे सच्चे ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। उसे व्यक्तिगत उन्नति तो मिलती ही है साथ ही आत्म-गौरव का अनुभव होता है, आत्मनिर्भरता आती है क्योंकि कर्म वह दर्पण है, जो हमें अपना स्वरूप दिखाता है।

इस प्रकार जीवन में कर्म की प्रधानता स्पष्ट है। जीवन के महत्त्व को रेखांकित करते हुए वाल्टर स्कॉट ने कहा है 'गौरवपूर्ण जीवन का एक व्यस्त घंटा, कीर्तिरहित युगों से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है।'

प्राध्यापक
रा.आ.उ.मा. विद्यालय उदावास (झुंझुनूं)
मो: 9413972723

मूक-बधिर बालकों में लेखन कौशल का विकास

❒ डॉ. योगेन्द्र सिंह नरुका

मूक-बधिर बालकों के साथ शैक्षणिक कार्य करने के लिए सर्वप्रथम शिक्षक को धैर्यवान व मानसिक रूप से सन्तुलित रहना होगा क्योंकि मूक-बधिर बालकों के साथ लेखन-पठन का जो कार्य कक्षा-कक्ष या अन्य पाठ्येत्तर गतिविधियों के साथ करवाया जाता हैं, उसके परिणाम धीमी गति से प्राप्त होते हैं। ऐसे में शिक्षक को धैर्य बनाए रखने की आवश्यकता होती है। मूक-बधिर बालक बार-बार एक ही सवाल को पूछ सकते हैं। मूक-बधिर बालक वाक या वाचन कला में निपुण नहीं हो सकते लेकिन उनकी लेखन कौशल की क्षमता का विकास किया जा सकता है।

लेखन कौशल के विकास के लिए सर्वप्रथम यह आवश्यक है कि जिस भाषा में मूक-बधिर बालकों को पढ़ाया जा रहा है, उस भाषा के शब्दों का अवबोध उन्हें करवाया जाए। लेखन केवल लिखना ही नहीं है कि जो शिक्षक ने श्यामपट पर लिखाया या जो पुस्तक में लिखा हुआ है उसे पुस्तिका में नकल कर लिख दिया। किसी भी विषयवस्तु को पढ़ना और उसे ज्यों का त्यों लिख देना भी लेखन कौशल नहीं है। लेखन कार्य में मौलिकता व रचनात्मकता का होना आवश्यक है। मूक-बधिर बालकों में लेखन कौशल विकसित करने के चरण-

- सर्वप्रथम मूक-बधिर बालकों को हाथ व अगुंलियों की मदद से पेन्सिल पकड़ना सिखाना। पेन्सिल पर हाथ व अगुंलियों से नियन्त्रण कर साधारण आड़ी व खड़ी रेखाएँ खींचना सिखाना।
- धीरे-धीरे अक्षर ज्ञान करवाना और अक्षरों की नकल करवाना।
- बिना मात्राओं के अक्षरों से शब्द बनाना, मात्राओं का ज्ञान मात्राओं से सरल शब्दों का निर्माण।
- सरल शब्दों से वाक्यों का निर्माण (मात्रा व बिना मात्रा वाले) तथा उनका सांकेतिक भाषा में रूपान्तरण।
- मूक-बधिर बालकों को एकार्थी शब्द, विलोम शब्द, पर्यायवाची शब्द, संज्ञा,

सर्वनाम, लिंग, क्रिया, विशेषण आदि का ज्ञानबोध वाचन, लेखन के साथ सांकेतिक भाषा में अनुवाद कर करवाना।
- श्यामपट पर लिखते समय शिक्षक को चाहिए कि वह वाचन व सांकेतिक भाषा में रूपान्तरण करके मूक-बधिर बालकों को समझाए।
- मूक-बधिर बालकों को चित्र आदि दृश्य सामग्री दिखाकर उनके बारे में लिखने को भी प्रोत्साहित करना चाहिए।
- रिक्त स्थान की पूर्ति करो, वाक्य सही करो आदि के अभ्यास भी करवाने चाहिए।

मूक-बधिर बालकों में लेखन कौशल को विकसित करने के लिए आवश्यक है कि उन्हें स्वाध्याय के लिए प्रेरित करें और उनमें पढ़ने की आदत विकसित करने का प्रयास करें। लगातार पढ़ने से शब्दकोश ज्ञान व विषय के प्रति चिन्तन, भावना और अनुभूति का विकास भी होता है जो कि रचनात्मक लेखन कौशल के लिए अतिमहत्त्वपूर्ण है। इसके पश्चात् मूक-बधिर बालकों में स्वलेखन की आदत विकसित करने के लिए उन्हें ऐसे अभ्यास प्रदान करने चाहिए; जिससे उनमें मानसिक व बौद्धिक क्षमता का विकास हो और उत्साह के साथ वो रचनात्मक लेखन की ओर अग्रसर हो सके। प्रारम्भ में जैसे-अपने विद्यालय की विशेषताएँ लिखने, अपने बारे में लिखने, अच्छे शिक्षक के बारें में लिखने, मनपसन्द खेल या अन्य अभिरुचि के बारे में लिखने को प्रोत्साहित कर सकते है।

इसके साथ शिक्षक को यह ध्यान देने की आवश्यकता है कि उसके लेखन कौशल में कितने नवीन शब्दों का प्रयोग हो रहा है यदि मूक-बधिर सामान्य सरल शब्दों का ही लगातार प्रयोग कर रहा है तो उन्हें यह समझाना चाहिए कि अमुक शब्द के स्थान पर अमुक शब्द का प्रयोग भी किया जा सकता है। इससे वाक्य और भी सुन्दर बन सकता है।

इस तरह से मूक-बधिर बालकों के साथ लेखन में रचनात्मक प्रयोग करके उनके लेखन कौशल का विकास किया जा सकता है जिससे कि आगे चलकर मूक-बधिर बालक भी अपनी बात को सांकेतिक भाषा के साथ-साथ अपने लेखन कौशल से भी अभिव्यक्त कर जनमानस पर अपनी गहरी छाप छोड़ सकते हैं।

व्याख्याता
मुख्य डाकघर के पास,
सवाई माधोपुर रोड, टोंक-304001
मो: 9461627191

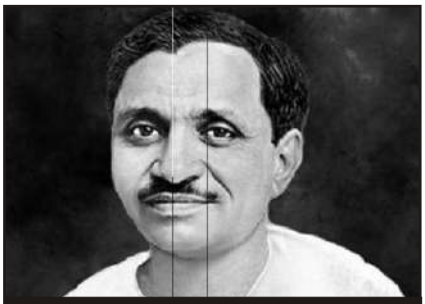

पं. दीनदयाल उपाध्याय ने कहा-

व्यक्ति जीवन का सर्वांगीण तथा चारों पुरुषार्थों के अनुसार विचार करने वाला, उसके लिए प्रयत्नशील रहने वाला और व्यक्ति से लेकर विश्व-मानव तक परिवार, राष्ट्र आदि विविध एकात्म समूहों और उनसे भी परे जाकर परमेष्टी से तादात्म्य स्थापित करने की क्षमता रखने वाला एकात्म मानव ही इस दर्शन का आदर्श है।

शिक्षा का महत्त्व

❒ हनुमान प्रसाद व्यास

आज का युग विज्ञान का युग है। इस आधुनिक समय में घटनाएँ तेजी से परिवर्तित हो रही हैं। कल तक जिन सुख-सुविधाओं की कल्पना भी नहीं की जाती थी वे सहज सुलभ हो गई हैं। लेकिन बहुत से लोगों के लिए जीवन आज भी कठिन और कष्टप्रद है। इसका कारण क्या है? प्रत्येक मनुष्य चाहता है कि वह सुखी रहे, खुश रहे परन्तु सभी एक समान नहीं होते। प्रत्येक मनुष्य यही चाहता है कि उसने अपना जीवन जैसे-तैसे कैसे भी जीया पर उसकी संतान का भविष्य उज्ज्वल हो इसलिए आजकल समाज के हर वर्ग में माता-पिता अपनी संतान के सुनहरे भविष्य के लिए उन्हें अच्छी शिक्षा देने की सोच रखते हैं। माता-पिता स्वयं कष्ट में रहकर अपनी आवश्यकताओं को सीमित कर संतान के लिए अच्छी सुख-सुविधाओं हेतु ज्यादा परिश्रम करते हैं।

समाज में इस प्रकार शिक्षा के प्रति सकारात्मक परिवर्तन आया है। एक समय था जब लड़के भी आर्थिक कठिनाइयों के रहते शिक्षा पूरी नहीं कर पाते थे। वहीं आज लड़का-लड़की सभी को शिक्षा प्राप्त करने के बहुत अच्छे अवसर हैं। शिक्षा के प्रति जो भी रुचि के साथ आगे बढ़ना चाहता है उसे पूरा सहयोग शासन और समाज दे रहा है। बालिका शिक्षा के लिए विशेष प्रोत्साहन है। अब प्रत्येक बालक-बालिका को अनिवार्य शिक्षा का अधिकार है।

'सब पढ़ें, सब बढ़ें' के भाव से सबको शिक्षित करना शासन और समाज की प्राथमिकता है। कहा भी गया है-

हाथ कंगन को आरसी क्या
पढ़े-लिखे को फ़ारसी क्या।

शिक्षित मनुष्य के जीवन में व्यवहारगत परिवर्तन आता है। घटनाओं को देखने-समझने की उसकी अपनी दृष्टि विकसित होती है। विकट परिस्थितियों में भी स्वविवेक से निर्णय लेकर श्रेष्ठ कार्य करने की संभावना पढ़े-लिखे नर-नारी में अधिक मानी गई है। अपनी सोच और क्षमता के अनुसार शिक्षित मनुष्य मनचाहे क्षेत्र में कार्य करके अधिक प्रगति करता है।

शिक्षा उसे निरन्तर आगे बढ़ने के अवसर देती है। शिक्षित मनुष्य न केवल स्वयं संस्कारित होता है अपितु अपने आसपास भी सकारात्मक वातावरण निर्मित करता है। 'जीओ और जीने दो' में उसका विश्वास दृढ़ होता है। उसमें रुढ़िवादिता और संकीर्ण विचारधारा की संभावना नहीं रहती।

प्रत्येक व्यक्ति की स्वतंत्रता, अधिकार और कर्त्तव्य शिक्षित मनुष्य बेहतर तरीके से समझ सकता है। अपने और अपनों के जीवन को आनन्ददायी बनाने में शिक्षा ही ऐसा माध्यम है जो अहिंसक तरीके से पूरी जीवन शैली और जीवन दृष्टि में परिवर्तन लाती है। हम सभी को अपनी जिम्मेदारी समझते हुए प्रत्येक बालक-बालिका को शिक्षित करना है।

वरिष्ठ सहायक
आनन्द भैरूं जी की बंगली के पास,
किकाणी व्यासों का चौक, बीकानेर
मो. 9460703484

अनीति-अन्याय को रोकें

❒ बंशीलाल जोशी

अनीति इसलिए बढ़ती है कि उसे रोका नहीं जाता। निर्बाध गति से जिसे रास्ता मिलेगा, वह आगे ही बढ़ता जाएगा। अच्छाई हो या बुराई सब की एक ही रीति है। अवरोध उन्हें रोकते हैं और निर्बाध निष्कंटक मार्ग मिले तो वे निरन्तर बढ़ती चली जाती है। हमें प्रगति के लिए, उपार्जन और उपलब्धियों के लिए प्रयत्न करना पड़ता है पर साथ ही यह भी ध्यान रखना पड़ता है कि आक्रमणकारी शक्तियाँ अपना अनिष्ट न करने लगें। उपार्जन की तरह सुरक्षा पर भी समान रूप से ध्यान न दिया गया तो सारा गुड़ गोबर हो जाएगा।

समुद्र टिटहरी के अण्डे बहा ले गया। इससे उन्हें बड़ा दुःख हुआ। दोनों पति-पत्नी रेत भर-भर कर समुद्र में डालने लगे। महर्षि अगस्त्य ने पूछा-टिटहरी तुम रेत से समुद्र को नहीं पाट सकतीं? टिटहरी बोली- न पटे न सही, परन्तु अन्याय के प्रतिकार की परम्परा को नष्ट नहीं होने दूँगी। अगस्त्य का मन भर आया और वे सहायता के लिए उद्यत हो गए। अपने तपोबल से समुद्र को तीन चुल्लू में पी गए। अनीति के विरुद्ध छोटे लोग खड़े हो जाते हैं, तो उन्हें चमत्कारी शक्तियों का सहयोग मिले बिना नहीं रहता।

जो सतर्क नहीं, सावधान नहीं, लापरवाही बरतता है वह जरूर किसी आक्रमण का शिकार होगा और घाटा उठाएगा। जो आगे बचाव और सुरक्षा का ध्यान नहीं रखता, वह दुष्टता के आक्रमण का शिकार बनेगा। प्रकृति चाहती है हर व्यक्ति सजग और सतर्क रहे। सावधानी बरते और घात-प्रतिघात से कैसे बचा जाता है, उस कला की जानकारी प्राप्त करे। सज्जन होना उचित है, पर मूर्ख होना अक्षम्य है। ठगी वहीं होगी जहाँ बेवकूफी और लालच की मात्रा बढ़ी-चढ़ी होगी। हमला उसी पर किया जाएगा जिसने अपना स्वरूप दूसरों की आँखों में दुर्बल जैसा बना दिया होगा। अनेक पापों में शारीरिक एवं मानसिक दुर्बलता भी एक भयंकर वर्ग के पातक हैं, हमें इनसे बचने के लिए अपना शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास इस तरह करना चाहिए कि किसी को अपनी दुर्बलता अनुभव न होने लगे और कोई हमारी कमजोरी भाँप कर आक्रमण की घात न लगाने लगे।

मित्रों के रूप में शत्रुता करना इस युग का नया फैशन है। पुराने जमाने में लोग आमने-सामने की लड़ाई पसंद करते थे और जिससे लड़ना होता था। उससे खुले मैदान में दो-दो हाथ करते थे। अब नए जमाने में दूसरे तरीके काम में लाए जाते हैं। अब जिसे पछाड़ना होता है, पहले उसका मित्र बना जाता है, घनिष्ठता बढ़ाई जाती है, विश्वासपात्र बना जाता है और जब यह स्थिति आ जाए कि अब पूरा भरोसा है तभी ऐसी घात चलाई जाती है कि बेचारा विश्वासी बुरी तरह मारा जाए। इस घात-प्रतिघात की आक्रमणकारी रीति-नीति से हर किसी को सजग रहना चाहिए। धोखा किसी को नहीं देना चाहिए, पर धोखा खाना कहाँ की बुद्धिमानी है।

हमें किसी के साथ अनीति नहीं करनी चाहिए, पर अनीति का शिकार भी नहीं होना चाहिए। ठगना बुरी बात है, पर ठगाना उससे कम बुरा नहीं है।

वरिष्ठ सहायक
'माँ आशापुरा सदन'
मुरली मनोहर मन्दिर के पास,
साले की होली, बीकानेर-334005
मो: 9414077921

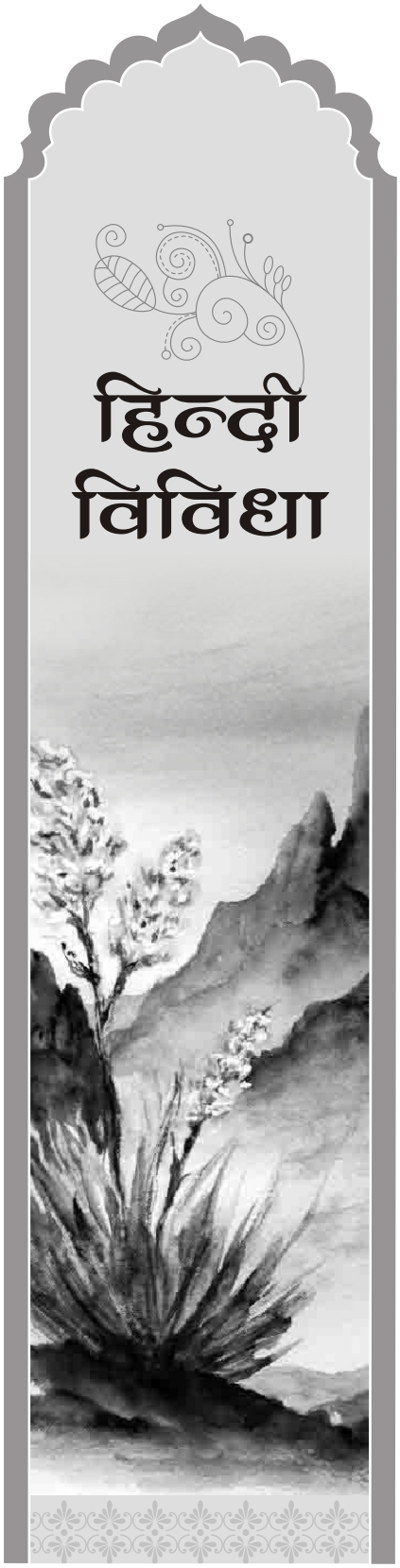

संकल्प

❒ छाजूलाल जाँगिड़

अरावली पर्वत की शृंखला में खोह की उत्तुंग पहाड़ी में विक्रमसिंह चौकसी कर रहा था। वह एक रौबदार आदमी था। तनी हुई मूँछें, गठीला शरीर, कान्तिमय मुखमण्डल सचमुच सेना का बहादुर जवान सा लग रहा था उसकी आँखें तेज थी। उसकी दृष्टि से ऐसा लग रहा था मानो वह शिकारी हो। वह कई वर्षों से पहाड़ में वन रक्षण की ड्यूटी दे रहा था। चारों ओर प्रकृति का साम्राज्य था। पतझड़ के बाद पेड़ों पर नई कोंपलें फूट रहीं थी। ढासर, गुलर, सालर, वट, पीपल, खेजड़ी, ढाक, खेरी, धो आदि अनेक वृक्ष वन की शोभा बढ़ा रहे थे। विक्रमसिंह उस प्रकृति के मध्य एकान्त में मग्न था। कभी वह एक लम्बी हाँक लगा देता तो सारा पहाड़ गुंजायमान हो जाता। कोई चोरी छिपे वृक्षों को काटने वाला ठिठक जाता और भाग जाता।

विक्रमसिंह बाँसुरी वादक भी था। अपनी बाँसुरी निकालकर राग आलाप करता। राजस्थानी गीतों की स्वर लहरी से सारा पहाड़ गूँज उठता। संगीत प्रेमी वन्य पशु-पक्षी भी विमोहित हो जाते। धीरे-धीरे वन में बसन्त का आगमन हो गया। वृक्ष हरीतिमा से आच्छादित हो गए। सारा पहाड़ी क्षेत्र नव पल्लवों से ऐसा लग रहा था मानो प्रकृति नायिका ने नई चूनर ओढ़ली हो और घूँघट निकाल रखा हो।

विक्रमसिंह गत पंद्रह वर्षों से वन विभाग की नौकरी पाकर इन्हीं वनों में रम रहा था। उसने बचपन में खेजड़ी ग्राम की इमरती देवी की कहानी सुनी थी। वह आत्मविभोर हो गया था। तब से ही वन संरक्षण का अनुराग उसके मन में उत्पन्न हो गया था। उसके सारे वृक्ष मित्र के समान लग रहे थे। ग्रीष्म ऋतु में भगवान भास्कर की तेज रश्मियों से बचने के लिए पहाड़ की ऊँचाई के मध्य में एक पर्ण कुटीर बना रखी थी जिसमें दोपहर में वह विश्राम कर लेता। वह कभी-कभी चिन्तन में डूब जाता था और सोचता रहता, 'वृक्ष हमारे कितने हितैषी हैं?' बेचारे बिना कुछ लिए हमें सूखी लकड़ियाँ प्रदान करते हैं। मृत्यु के मुँह में फँसे रोगी के लिए औषध के रूप में संजीवनी पिलाते हैं। इस मरुभूमि के लिए मानसूनी हवाओं के लिए चँवर ढुलाकर उनको बुला लेते हैं। वे हवाएँ इस प्रदेश को अपनी बौछारों से भिगो देती हैं। चमचमाता हुआ मुँह देखने योग्य फर्नीचर भी इन्हीं की देन है। लाखों पशु-पक्षी इनके नीचे-ऊपर अपना रैन बसेरा बनाते हैं। हमें रसीले फल देते हैं। धरती माता का तो वृक्ष शृंगार है। इनके बिना सब कुछ सूना-सूना लगता है हमारी रेतीली धरती तो इनके बिना भभकती रहती है और भट्टी बन जाती है। ये पेड़-पौधे कितने अच्छे हैं। हमारी सारी थकान मिटा देते हैं। उनके बिना तो हमें प्राण वायु भी नहीं मिल पाती है। ये मेरे मित्र कितने प्रेम से रहते हैं। ये कभी नहीं झगड़ते हैं। कोई लकड़हारा उनको आहत कर देता है तो बेचारे चीख पुकार करते हैं परन्तु उनकी पुकार कोई नहीं सुनता। वे लहुलुहान हो जाते हैं। इसलिये कटते समय इनकी देह से जल टपकने लग जाता है, मानो अश्रुकण हों। मनुष्य कितना बेदर्द है। इन पर अपनी कुल्हाड़ी चलाए बिना नहीं रहता।

कभी-कभी विक्रमसिंह को शृगाल, भेड़िया, लकड़बग्घा, बाघ जैसे हिंसक पशु भी मिल जाते हैं। वह पेड़ की आड़ में एक सीढ़ी लगा हुआ ढूँचा भी रखता था। इस पर चढ़कर तेज आवाज भी कर देता। थोथे फायर भी कर देता, वे भाग जाते। हिंसक पशुओं की प्रगति के केवल नमूने ही बच पा रहे थे इसलिए उसे आदेश था कि किसी भी हिंसक पशु को मारा नहीं जाए। वह अपनी जान को जोखिम में डालकर इन वन्य प्राणियों के बीच अपनी सेवा देता था। वह पक्षियों की बोलियों से भी परिचित था। उसको कोयल अपनी मृदुवाणी में कुहू-कुहू गान सुनाती। पपीहा पीऊ-पीऊ की आवाज करता। पहाड़ी शुक चिर-चिर करते। विभिन्न प्रकार की चिड़ियों की राग रंग रूप से वह परिचित था। वह दोपहर से अपनी पर्ण कुटीर में आराम करता था। ग्राम का एक युवक सज्जनसिंह उसके पास आ जाता। वह घण्टे दो घण्टे उससे बातचीत करता रहता। सज्जनसिंह ने उसको खबर दी आज उस पार पहाड़ की ओर दुर्जनसिंह अपने दो चार आवारा युवकों के साथ आया था। वह एक ट्रक गीली लकड़ियों का भरकर ले गया।

विक्रमसिंह ने कहा–उधर मेरी ड्यूटी नहीं है। यार! क्या बताएँ? लोगों के मुँह लार लगी हुई है। मुट्ठी गर्म करके ऐसा कार्य करते रहते हैं।

सज्जनसिंह बोला, दोस्त! तुमने नहीं पढ़ा क्या? आज अखबार में यह समाचार छपा था कि एक वन रक्षक रिश्वत लेते रंगे हाथों पकड़ा गया। लकड़हारों की सारी लकड़ियाँ बरामद कर ली गई।

विक्रमसिंह ने कहा, सजना! क्या बताएं इस देश का मालिक तो भगवान है। लोग चारों ओर इन बेचारे पेड़ पौधों के पीछे लगे हुए हैं। इन पहाड़ों को वनकटी बनाएँगे। मैं कहता हूँ यह प्रकृति इस क्रूर इंसान को एक दिन सजा देकर रहेगी। उस कुटिया में विक्रम सिंह एक स्टोव, चायपत्ती, दूध चीनी रखता था चाय बनाकर दोनों पीते। चाय पान के समय वह पहाड़ की सारी खबरें ले लेता। सजना कहता, दोस्त! इन चार पाँच छोकरियों से बचकर रहना। वे ईंधन लेने इस पहाड़ में जरूर आती हैं। वे झुण्ड बनाकर आती हैं।

विक्रमसिंह और सज्जनसिंह एक घण्टे अपनी सुख–दुःख की सारी बातें करके जी बहला लेते हैं। सज्जनसिंह नेक इंसान था। उसके दिल में इन वृक्षों के प्रति संवेदना थी। वह कहता रहता, ये पेड़ पौधे भी इन्सानों की तरह खाना, पीना, उठना, सोना सारी क्रियाएँ करते हैं। सर जगदीश चन्द्र बसु ने तो अपने उपकरणों से यह सिद्ध कर दिया कि पेड़ काटते समय इनकी पत्तियाँ थिरकने लग जाती हैं। इनको मनुष्य की तरह वेदना होती है। 'वाह! भाई तू भी पूरा वैज्ञानिक है। पेड़–पौधों की बातें बड़ी गहराई से जानता है।' विक्रमसिंह ने कहा।

इतनी बातें करके अपने घर चला गया। विक्रमसिंह ने वन का एक राउण्ड मारा। दोपहर के समय उसको आशंका रहती है कि कोई पेड़–पौधे काट न ले। एक घण्टे बाद उसको कुछ खट–खट की आवाज आई। वह अपनी बंदूक कंधे पर साधे खट–खट की आवाज़ की ओर गया। कुछ लड़कियाँ लकड़ी काटने में लगी हुई थी। उसने ज़ोर से कहा–खबरदार! यहाँ से भाग जाओ। एक भी लकड़ी काटना गुनाह है।

मनोहरी बोली, 'ऐ विक्रमा। तेरा क्या लेती हैं? क्या यह जंगल तेरे बाप का है?'

विक्रमसिंह ने जबाव दिया, 'मेरी ड्यूटी तुमसे लकड़ी कटवाने की थोड़े ही है। इस जंगल की रक्षा करना मेरा कर्त्तव्य है।'

मनोहरी बोली, तू तो बड़ा कठोर आदमी है। क्या चाहता है? जो कुछ चाहिए ले ले। हमें अपना काम करने दे।

विक्रमसिंह ने जबाव दिया, 'बकवास करने की कोई आवश्यकता नहीं है।'

गुलाबी बोली, 'मनोहरी यह लकड़ी नहीं काटने देगा।'

गुलाबी ने जबाव दिया, 'क्या बताऊँ विक्रम। मेरा आदमी बेरोजगार है। सारे दिन ताशपत्ती खेलता रहता है। उसने शराब पीना भी सीख लिया है। मैं मेहनत मजदूरी करके पेट भरती हूँ।'

विक्रमसिंह बोला, 'जब मेहनत मजदूरी करती है, तो यहाँ क्यों आई है?'

गुलाबी ने कहा, 'मैंने सोचा लकड़ियों का गठ्ठर बेचकर बच्चों के लिए खाने का कुछ जुगाड़ बिठाऊँ।'

मोहनी बोली, 'अरे। कैसी भोली है? इसको पेट की बात भी कह देती है।'

विक्रम बोला, 'तुम वकील बनकर यहाँ क्यों आई हो?'

मोहनी ने उत्तर दिया, 'मैं भी इनके साथ लकड़ी लेने आ गई।'

देखो मैं इस जंगल का एक भी पेड़ नहीं काटने दूँगा।

तुम किसी भी प्रकार का लोभ लालच दोगी तो मैं नहीं झुकूँगा। तुम यहाँ से चली जाओ। नहीं तो मैं कोई कार्यवाही करूँगा। वे सब बड़बड़ाती हुई चली गई। राह में बातें करने लगी कि गाँव के रामू दादा को कहेगी। वह इसकी अकड़ निकाल देगा।

दूसरे दिन सवेरे एक बुढ़िया पकड़ी गई। वह गिड़गिड़ाने लगी। कहने लगी बेटा। मुझे छोड़ दो। मेरे दो कपूत बेटे हैं। दोनों दारू पीते हैं। वे एक पैसा भी नहीं कमाते हैं। घर का सामान बेचने में लगे हुए हैं। वे मेरे से लकड़ियाँ मंगवाते हैं। मैं इनको बेचकर उनको पैसे देती हूँ। मैं तो आज ही इधर आई हूँ। मैंने पूर्व जन्म में कोई खोटे कर्म किए हैं, जिनका फल भोग रही हूँ। मुझे छोड़ दो मैं तेरी काली गाय हूँ। विक्रमसिंह को उस पर दया आ गई। उसको दस का एक नोट देकर भगा दिया और कह दिया 'आइन्दा इधर आने की हिम्मत मत करना।'

एक दिन विक्रमसिंह पहाड़ पर चक्कर लगा रहा था। उसने ज़ोर–ज़ोर से कुल्हाड़ियों के चलाने की आवाज़ सुनी। उसने पहाड़ से नीचे उतरकर देखा तो एक खूंखार आदमी तीन–चार जवानों को पेड़ काटने का आदेश दे रहा था। विक्रमसिंह ने उस आदमी को ज़ोर से ललकारा।

दुर्जनसिंह ने कहा, 'मैं जानता हूँ, तू विक्रमसिंह है।' अरे। जीना चाहता है तो कायरसिंह बनकर रह। बढ़कर बातें मत करना नहीं तो तू कुत्ते की मौत मारा जाएगा। सरकार का वफादार बन रहा है। भूखा है तो कुछ ले ले।

विक्रमसिंह बोला, 'मैं मर जाऊँगा लेकिन लकड़ियाँ नहीं काटने दूँगा।'

इतने में ही गोली चलने की आवाज़ आई। विक्रमसिंह ने भी जबाव पर थोथे फायर किए।

विक्रमसिंह अकेला था। दुर्जनसिंह ने निशाना बाँधकर उसकी ओर गोली चला दी गोली विक्रमसिंह के सीने में लगी। गोलियों की धांय–धांय की आवाज़ से सारा पहाड़ गूँज उठा। गाँव के लोग इक्कठे हो गए। सज्जनसिंह दौड़ता हुआ विक्रमसिंह के पास गया। विक्रमसिंह खून से लथपथ था। उसने अपनी गोद में विक्रमसिंह का मस्तक रख लिया। वह हड़बड़ाई आँखों से सज्जन को देखने लगा। रूंधी हुई आवाज़ में विक्रम ने कहा, 'सजना। मैं तो जा रहा हूँ, मैंने तो संकल्प किया था कि मेरे देखते मेरी सर्विस में किसी को भी लकड़ी नहीं काटने दूँगा। मेरा संकल्प अधूरा ही रह गया। मेरी पत्नी उच्छाव कंवर को कह देना तेरे इकलौते लाडले पुत्र को वन रक्षा में नौकरी के लिए भेज देना। मेरे अधूरे संकल्प को पूरा करना। इतना कहने के बाद वह इधर–उधर पलटी मार रहा था। उसके मुख से दो–दिन बार ऐ–ऐ का स्वर निकला। फिर उसकी आँखें पथरा गई। सजना ढा–ढा रोने लगा।

दूसरे दिन सज्जनसिंह एक एम्बुलेंस गाड़ी में विक्रमसिंह की लाश लेकर उसके गाँव जा रहा था। उसके साथ वन विभाग के कर्मचारियों का एक ट्रक भी था। सबकी आँखें नम थीं। सारे गाँव में खामोशी थी। मानो सारा गाँव शोक में निमग्न था। दूसरे दिन अखबारों में मुख्य खबर थी–

'एक वनरक्षक की निर्मम हत्या।' पास के शहर में हत्या के विरोध में एक दिन की हड़ताल हुई। जनसभा में हत्यारे को तुरन्त पकड़ने की माँग की गई। शहीद विक्रमसिंह की जय–जयकार और वनपालकों की रक्षा करो, के नारे लगाए गए।

व्याख्याता (से.नि.)
घूमचक्कर, नवलगढ़ (झुंझुनूं)
मो. 9461661412

अंगदान

❒ रामगोपाल राही

एल.आई.सी. के संभागीय कार्यालय में कार्यरत-नम्रता महिला सोशल ग्रुप की प्रमुख, यूथ फेडरेशन की सदस्य-ऑफिस-लंच के समय में रक्तदान शिविर में रक्तदान कर लौटी और ऑफिस कार्य में व्यस्त हो गई। ऑफिस समय खत्म होते ही नम्रता घर के लिए स्कूटर पर चली। प्रातः नम्रता आज जब घर से निकली जल्दी-जल्दी में अपना हेलमेट घर पर ही भूल आई थी।

कहते हैं, बुरे वक्त की शुरूआत अपनी भूल अथवा गलती से ही हुआ करती है। नम्रता ने सोचा भी नहीं होगा, उसकी यह छोटी सी भूल उसके लिए कितनी मँहगी पड़ेगी और उसकी ज़िन्दगी ले बैठेगी।

ऑफिस से स्कूटर पर सवार होकर घर के लिए निकली नम्रता, आगामी रक्तदान शिविर आयोजन के विचारों में खोई-खोई चली आ रही थी। सामने लाल बत्ती पर ट्रेफिक रुका देख वह भी रुक गई।

थोड़ी देर में हरी बत्ती हुई, सभी चलने लगे! नम्रता चौराहा पार कर थोड़ी दूर ही चली थी कि पीछे से तेजगति से आई इनोवा फोर व्हीलर ने स्कूटर को साइड से टक्कर मार दी।

नम्रता सड़क पर गिर गई और सड़क पर खून ही खून-बहने लगा। भागते शहर की भागती ज़िंदगी, किसी की नज़र पड़ी, किसी की नहीं। किसी ने देखकर भी रुकना ठीक नहीं समझा।

इनोवा वाले ने थोड़ा आगे आ गाड़ी रोकी, तत्क्षण उतर वह नम्रता के पास पहुँचा। स्थिति देख उसने देर करना उचित नहीं समझा। नम्रता को उठा गाड़ी से शहर के बड़े अस्पताल में ले आया। अस्पताल में इमरजेन्सी वालों ने बेहोश चोटिल जख्मी नम्रता को देख आइ.सी.यू. में एडमिट कर दिया। तत्काल डॉक्टर्स टीम ने नम्रता की चिकित्सा आरम्भ कर दी।

ख़बर मिलते ही घर वाले दौड़े आए तथा महिला सोशल ग्रुप के सदस्य तथा यूथ फेडरेशन के कार्यकर्त्ता भी चले आए।

नम्रता की स्थिति देख माता-पिता दुखी हो रोने लगे थे, लोग उन्हें ढाढ़स बँधाते रहे। उधर इंसानियत के तकाजे से आहत इनोवा के मालिक युवा उद्यमी उदय प्रताप का रो-रो बुरा

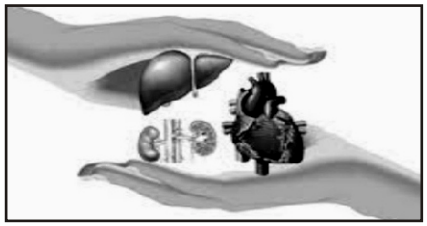

हाल था। उसने रो-रो अपना दोष सभी से स्वीकारा तथा सभी से माफी माँगी तथा चिकित्सा खर्च स्वीकारा, घर वालों व सभी ने पता किया तो पता चला कि नम्रता को उठा-लाने वाला भी तो वही था।

इंसानियत का आगाज देख सभी के गुस्से के तेवर ढीले-ढीले थे। उसके प्रति गुस्सा सब में था, यूथ फेडरेशन के लोग जहर का घूँट पी रहे थे तो महिला सोशल ग्रुप की सदस्य-सभी लाल पीले थे, पर सब ने अपने गुस्से को काबू में रखा। सभी ने सोचा अभी मुख्य बात-नम्रता की चिकित्सा उसके घर वालों को ढाढ़स बंधाते रहना है। इस बीच उदय प्रताप, गिड़गिड़ाता, रोता, माफी माँगता कहता आप मुझे मार-मार प्राण भले ले-लो। उधर पुलिस को पता चला-वह अपने तरीके से अपनी भूमिका निभाने लगी। आरोपी उदय प्रताप की सकारात्मक सोच देख सभी ने सोचा-मारपीट, झगड़ा ठीक नहीं-होनी तो हो गई, वैसे भी कानून हाथ में लेना सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के लिए मर्यादा लाँघने जैसा था। इन सभी हालातों के चलते उदय प्रताप-तीन बार आइ.सी.यू. में आ नम्रता को देख निराश हो लौटता, वह अन्दर ही अन्दर काफी दुखी था। दुख में आत्मा का अन्तःदर्शन जाग उठता है, 'स्वतः ही चेतना आने लगती है।' मौजूद सभी स्थितियों के चलते इंसानियत के आगाज और आत्मा की आवाज पर उदय प्रताप उन डॉक्टर्स से मिला जो नम्रता की चिकित्सा में व्यस्त थे। विनम्र हो बोला-डाक्टर साहब, मैं नम्रता को विमान से अभी दिल्ली बड़े अस्पताल में ले जाना चाहता हूँ। यह सुन-डॉक्टर उसे बार-बार देखने लगे। उदय प्रताप के आग्रह पर-डॉक्टर्स की टीम ने विचार विमर्श किया। डॉक्टर तो चिकित्सा अनुरूप नियमों से ही सोचते है। सभी सोच के बोले ले जाओ-पर नम्रता के घर वालों से भी पूछ लो।

इस पर उदय प्रताप ने कहा-सर! मेरे कहने के बजाए आप कहें तो घर वाले जरूर तैयार हो जाएँगे। उसने फिर कहा, डॉक्टर साहब-आपकी बात ज्यादा महत्त्वपूर्ण है, फिर कहने लगा, मैं तो नम्रता, उसके घर वालों, सभी का दोषी हूँ?

इस पर डॉक्टर टीम ने नम्रता के घर वालों को बुला, उदय की बात समझायी और ज़ोर देकर यह भी कहा कि यहाँ से अधिक चिकित्सा वहाँ मिल जाएगी।

नम्रता के माता-पिता बोले-जैसी आपकी मर्जी, नम्रता ठीक होनी चाहिए, कहते कहते घर वालों की आँखों से आँसू निकले जा रहे थे।

इस पर डॉक्टर्स बोले : आप चिंता न करें, हमारे में से एक डॉक्टर साथ होगा, घबराएँ नहीं।

उधर-सामाजिक कार्यकर्त्ताओं ने सुना तो सभी के मुँह से निकला कि सलाह तो अच्छी ही है।

सभी की सलाह पर हैड इंजरी से चोटिल कोमा में पहुँची नम्रता को डॉक्टर्स की देखरेख में विमान से जयपुर से दिल्ली ले जाया गया। वहाँ पहुँचते ही, एम्स में नम्रता को सम्बन्धित आइ.सी.यू. में रखा और चिकित्सा आरम्भ हो गई।

अगले दिन प्रातः होते-होते, महिला सोशल ग्रुप व यूथ फेडरेशन के प्रमुख कार्यकर्त्ता दिल्ली आ पहुँचे।

उधर अपराध बोध से ग्रसित, उदय प्रताप ने कुछ नहीं खाया, वह चाय पी के ही रहा! उसका हाल भी ठीक नहीं था। क्योंकि मन में आत्मग्लानी का बोझ, पहाड़ से भी अधिक वजनी महसूस होता है दोनों हटते नहीं।

आत्मग्लानि से आहत, उदय का हाल यूथ फेडरेशन के लोगों ने देखा तो उसके हाल पर उन्हें भी दया आ गई। उन्होंने उसे भी ढाढ़स बँधाया तथा अपने हाथों से उसे कुछ खिलाया-पिलाया। उदय बार-बार भगवान से नम्रता के

ठीक होने की दुआ माँगता।

दिन निकले जा रहे थे, अपराध बोध से ग्रसित उदय प्रताप, घर वाले, सामाजिक कार्यकर्त्ता, यूथ फेडरेशन के सदस्य नम्रता की तीमारदारी करते और भगवान से नम्रता के ठीक होने की कामना करते रहे।

इस बीच, आरोपी उदय प्रताप की सकारात्मक सोच देख, पुलिस ने भी अपना कार्य नम्रतापूर्वक किया।

नम्रता के ठीक होने के इन्तज़ार में देखते-देखते छः माह हो गए। चिकित्सा जारी रही, पर हैड इंजरी से कोमा में पहुँची, नम्रता को होश नहीं आया। नम्रता ने बिस्तर क्या पकड़ा, वो तो जैसे बिस्तर के चिपक ही गई।

नम्रता के दुर्बल हुए शरीर में धड़कन ही शेष थी केवल श्वास ही आ जा रही थी।

मृत्यु के सन्निकट पहुँची नम्रता को बचाने में डॉक्टरों के सारे प्रयास, निष्फल, नाकाफी रहे। इस पर डॉक्टर्स ने सभी संदर्भित जाँचे कर नम्रता को दिमागी तौर पर मृत घोषित कर दिया। फिर भी घर वालों के कहने पर डॉक्टर्स ने क्षीण काया नम्रता को कुछ दिनों के लिए बिस्तर पर रखा।

नम्रता के हितैषियों में घरवालों, महिला सामाजिक कार्यकर्त्ता, यूथ फेडरेशन के लोग सभी पढ़े लिखे थे। निराशा में कुछ सोच नहीं पा रहे थे।

इस बीच डॉक्टर्स ने महिला सोशल ग्रुप, यूथ फेडरेशन के लोगों को बुला संकेतों ही संकेतों में नम्रता के अंगदान के लिए समझाया। डॉक्टर्स की बात सुन सबको लगा बात तो सकारात्मक है। सबके हृदय में नम्रता के प्रति पूरी सहानुभूति थी, सभी उसे ज़िंदा देखना चाहते थे पर नम्रता को देख सभी को लग रहा था, अब नम्रता का बचना संभव नहीं है। सब ने सोचा-मानव सेवा में, अंगदान से बढ़कर और क्या सेवा, क्या दान और क्या पुण्य है?

यही सोच सबने नम्रता के घर वालों को समझाया। हम आप सभी निराश हैं। दिमागी तौर पर मृत नम्रता लौटने वाली नहीं। हम क्यों नहीं ऐसा काम करें, जिससे नम्रता मर कर भी, जीवित होने का अहसास देती रहे।

निराश भले ही थे, पर सभी लोग संवेदनशील थे, अतः ज्यादा समझाने की जरूरत नहीं हुई।

नम्रता के माता-पिता ने नम्रता के अंगदान के लिए नियमानुसार अपनी स्वीकृति दे दी।

इस पर नम्रता के अंगदान की तत्काल व्यवस्था आरम्भ हो गयी।

नम्रता को टीम ने आइ.सी.यू. से हटा मेडिकल अनुसंधान टीम को दे दिया। टीम ने सबसे पहले नम्रता का धड़कता दिल निकाल हार्टपेशेन्ट जीने की तमन्ना में सांसे गिन रही, मासूम किशोर होती बालिका को धड़कता दिल ट्रांसप्लाण्ट के लिए भिजवा दिया।

इससे किशोरी के निराश माँ-बाप किशोरी को प्राणदान मिलने पर खुश थे, तो नम्रता के माता-पिता के चेहरों पर भी किसी को ज़िन्दगी देने से, हल्की सी मुस्कान चली आई।

अब माता-पिता के हृदय बसी नम्रता किशोरी के माँ-बाप के हृदय में समा गई।

अंगदान प्रक्रिया के चलते नम्रता की दोनों किड़नी निकाल, इंतज़ार कर रहे दो जरूरतमंदों को ट्रांसप्लाण्ट कर दी गई। दोनों के घर वालों के उदास चेहरे प्रसन्नता से खिल उठे। जरूरतमंदों को किडनी ट्रांसप्लांट से प्रसन्नता में नम्रता के माँ-बाप घर वालों, महिला सोशल ग्रुप, यूथ फेडरेशन के सभी के हृदय को किन्हीं को मिली जिन्दगी का अहसास करा दिया। इतना ही नहीं, इससे पूर्व, नम्रता की दोनों आँखें निकाल आई बैंक में दी गई वो आँखें दो जन्मान्ध किशोर उम्र की बालिकाओं को लगा दी गई।

दोनों अंधी लड़कियों को आँखें क्या मिली, सारी दुनियाँ मिल गयी, जिन्होंने कभी सूरज नही देखा, अब सूरज और उजाला देख रही थी। दोनों को ज़िन्दगी की भरपूर खुशियाँ मिली थी।

नम्रता के माँ-बाप को पता चला उन्होंने दोनों किशोर लड़कियों को खुशी-खुशी अपना आशीर्वाद दिया। अकल्पनीय खुशियाँ जिन्हें मिलती है, वही जानते हैं? किसी ने ठीक ही कहा है? आँख है तो जहान है

जीते जी मानव सेवा को समर्पित नम्रता मरकर भी सभी को मानव सेवा करती नज़र आने लगी। इससे पूर्व घर वाले यूथ फेडरेशन के लोग, महिला सोशल ग्रुप के लोग सोच रहे थे, हो गया अंगदान। अब तो नम्रता का शव ले चलेंगे।

नम्रता का शव लेने की आतुरता देख-मेडिकल अनुसंधान में लगे युवा डॉक्टर्स की टीम ने बताया दिमागी मृत्यु पर, हृदय, हृदय के वाल्व, फेफड़े, जिगर, पाचक ग्रंथि तक, गुर्दे, आँखे, चमड़ी, हड्डियाँ, अस्थि मज्जा, जोड़ने वाले ऊतक, कान का मध्य भाग, रक्त की नाड़ियाँ, अंगदान हेतु निकाली जाती है। इनमें से कुछ अंग तो तुरन्त ट्रांसप्लांट होते है। जरूरतमंदों को लगाए जाते हैं। कुछ को चिकित्सीय विधि से सुरक्षित रखा जाता है। अनुसंधान टीम की बात सुन सभी को लगा नम्रता के शरीर में बचेगा क्या?

अगले दिन प्रातः मेडिकल कॉलेज अस्पताल से नम्रता के शेष माँस, कुछ हड्डियाँ, चमड़ी, टूटे-फूटे आंतरिक अंग, घर वालों को दिए, जिन्हें ले सभी वायुयान से अपने शहर लौटे।

नम्रता के दाह संस्कार में सभी सामाजिक कार्यकर्त्ता, महिला सोशल ग्रुप, यूथ फेडरेशन के लोग तथा और भी अनेक लोग शामिल हुए।

घर वाले-सोचते रहे, नम्रता मरकर भी किसी की आँखों में, किसी के दिल में, किसी के गुर्दों में ज़िन्दा है।

सब के दिलों में एक ही बात थी, अंगदान से बढ़कर कोई दान नहीं, कोई पुण्य व मानव सेवा नहीं।

उधर महीनों-नम्रता की तीमारदारी करता रहा उदय प्रताप आत्मग्लानि से मुक्त नहीं हो पा रहा था। वह स्वयं को हत्यारा मानने लगा था। तदनुरूप पुलिस की कार्यवाही हुई भी!

परन्तु पुलिस वालों ने सोचा! घर वालों की तरफ से न तो पहिले शिकायत और न अब, पुलिस कार्यवाही में सहयोग कौन करेगा।

इधर उदय प्रताप की ग्लानि यह थी उसके सिर लगा हत्या का कलंक तो सात समुद्र का पानी भी नहीं धो सकता।

सोचते सोचते व्याकुल उदय प्रताप, नम्रता के पद चिह्नों पर चल निकला, वह अपने उद्यम के साथ-साथ तन-मन-धन से यूथ फेडरेशन से जुड़ मानव सेवा में संलग्न हो गया। महिला सोशल ग्रुप को भी आर्थिक मदद देता रहा।

इतना ही नहीं, स्वयं ने जीते जी खुद की मृत्यु उपरान्त अंगदान हेतु अपनी घोषणा कर नाम लिखवा दिया।

मौहल्ला गणेशपुरा वार्ड नं. 04
लाखेरी-323615 (बून्दी)
मो: 9982491518

क्या हरिया पढ़ पाएगा?

❒ चैनराम शर्मा

सवेरा होते ही रामू ने हरिया को जगाया। दूध गरम कर दादी को पिलाने उसकी खाट के पास पहुँचा। गाँव के बंगाली डॉक्टर द्वारा दी गई गोली उठाकर दादी के मुँह में धरी। दूध का कटोरा उसके मुँह से लगाया। दादी आँखें भींच कर गोली को दूध के साथ गटक गई। रामू दादी के मन की बात समझ रहा था। रोगी को दवा तो अच्छी नहीं लगती पर कभी-कभी दूध और दलिया भी नफरत का कारण बन जाता है। वैसे यह दूध तो भला चंगा व्यक्ति भी पीना पंसद नहीं करेगा। पिछली शाम का दूध और वह भी उस दूधिये से जो सुबह का दूध शाम को बेचता है। रामू अन्दर ही अंदर घुट रहा था। स्नेह और ममता की मूरत अपनी दादी को इस घड़ी में भी सही दूध नहीं पिला पा रहा था जिसने अपने मुँह का निवाला उसे खिलाकर पाला पोसा और बड़ा किया। वह अपने बचपन की स्मृतियों में खो गया।

उसकी ना समझ निगाहें कभी अपनी सोई हुई माँ तो कभी अपने सोये हुए पिता को निहार रही थी। लोग रोते-बिलखते कुछ न कुछ कर रहे थे। दादी रो-रो कर बेहाल थी। कभी अपनी छाती पीटती तो कभी भूमि पर लुढ़क जाती। अन्य स्त्रियाँ उसे ढाढ़स बंधा रही थी। वह यह नहीं समझ पा रहा कि लोग उसके माँ और बाप को उठाकर कहाँ ले जा रहे हैं और क्यों? ज्यों-ज्यों वह उम्र के सोपान चढ़ता गया, हकीकत का जहर निगलता गया। मुखबिरी के आरोप में डकैतों के गिरोह ने उसके माँ-बाप सहित गाँव के दस लोगों को अंधा-धुन्ध बन्दूकें चलाकर भून डाला। तब से ही दादी ने इस दरिन्दगी के जंगल में उसे अब तक अपने आँचल में छिपाए रखा। दादी कभी-कभी उस घटना को बयां करती तो उसकी सूखी आँखें अनायास ही झरने लग जाती। वह कहती कुछ दयालु लोगों ने दाना-पानी देकर बुरे वक्त में मदद की, लम्बे इन्तजार के बाद पीड़ित परिवारों को सरकार ने दस-दस हजार रुपये देकर कुछ राहत दी। पर मौत का दर्द और गरीबी का अभिशाप तो इससे मिटने वाला नहीं था।।

हरिया के पाँवों की आहट उसे अतीत से वर्तमान में खींच लाई। वह स्कूल जाने की तैयारी कर आ गया। हरिया रामू का भानजा है। रामू की इकलौती बहन जो उसके माता-पिता के मारे जाने के पूर्व ही बचपन में ब्याह दी गई थी, विधवा हो गई और नाते चली गई। वह अपने चार वर्ष के हरिया को रामू के भरोसे छोड़ गई। रामू हरिया को माँ की ममता तो नहीं दे सकता पर दादी सहित उसकी पूरी सार-संभाल रखता था। वह अब उसे पढ़ाना चाहता है। वह चाहता है कि हरिया पढ़-लिखकर अच्छी नौकरी करे और इस गरीबी से निजात पाए। उसके लिए कपड़े, कॉपियाँ, पुस्तकें आदि सभी लाकर गाँव के अन्य बालकों के साथ विद्यालय जाने की व्यवस्था कर दी। वह उसे घर के कार्यों में भी नहीं लगाता था। हरिया भी पढ़ने में होशियार था। वह अब चौथी कक्षा का विद्यार्थी है।

हरिया स्कूल की ओर चला और रामू खाली मटका उठाकर हैण्डपम्प की ओर, हैण्ड-पम्प कोई पाँच सौ मीटर दूर है। निकट वाला हैण्डपम्प महिनों से खराब पड़ा है। चलते-चलते रामू का साथ भूरी काकी से हो गया। वह दो मटके लेकर पानी लेने जा रही थी। हैण्डपम्प मिस्त्री को गालियाँ निकालती हुई कह रही थी नजदीक का हैण्डपम्प ठीक हो जाता तो घर का सारा काम समय पर हो जाता। वहाँ लम्बी कतार लगी होगी। देर हो गई तो काम पर नहीं जा पाऊँगी। काकी की बातों से सहमत होता हुआ रामू साथ-साथ चल रहा था। रामू जब भी काकी को देखता उसका बड़ा लड़का भागचन्द उसे याद आ जाता। भागचन्द रामू का हम उम्र था। सालभर पहले ही खेत में पानी देता हुआ विद्युत लाइन का तार टूट जाने से उसकी चपेट में आ गया और वहीं उसके प्राण-पखेरू उड़ गए। भागचन्द की विधवा माँ के जवान बेटे की दर्दनाक मृत्यु पर किसी का भी दिल नहीं पसीजा। उसे राहत के नाम पर फूटी कौड़ी भी नहीं मिली और एक ओर ठाकुर हरिसिंह का बूढ़ा बैल अपनी मौत मरा तो उसे विद्युत खंभे को छूने से मरा बताकर दस हजार रुपये मुआवजा उठा लिया।

रामू के मन की बातों से काकी अनभिज्ञ थी। वह तो अपना ही राग आलाप रही थी। रामू उसकी हाँ में हाँ मिलाता चल रहा था। चलते-चलते काकी ने किसनू का प्रसङ्ग छेड़ दिया। बड़ा मुँह लगा है, गेट के काम पर तो आता नहीं और आ गया तो बबूल की छाया में पड़ा रहेगा। मगर चुकारा होने पर अंगूठा टेकने में सबसे आगे। एक तरफ हम लोग जो थोड़ी भी देर से पहुँचे तो पूरे दिन की मजदूरी हजम। काम पर से हटाने की धमकी अलग रामू ने काकी की बातों में भागीदारी आरंभ कर दी। किसनू की दादागिरी और मेट की तानाशाही उसे कचोट रही थी। किसनू एम.एल.ए. के साले का दामाद है। सरपंच से भी उसकी अच्छी पटती है। सुना है, सरपंच ने मस्टररोल में पाँच नाम फर्जी चला रखे हैं। जब कोई काम के निरीक्षण के लिए आता है तो खूब उसकी सेवा की जाती है। सभी ओर अंधेर है गरीबों की घिसाई है।

चलते-चलते हैण्डपम्प पर आ गए। पनघट पर खासा जमघट मच रहा है वातावरण में पानी की, काम की, मजदूरी की, बिजली की और बीमारी की शिकायतें गूंज रही हैं। तभी हाथ में खाली बाल्टी हिलाता हरिया अपने सहपाठियों के साथ आ पहुँचा। रामू को देखते ही बोला 'आज चपरासी जी नहीं आए है। मास्टरजी ने हमें पानी लेने भेजा है।' लोगों का ध्यान बरबस हरिया की ओर खिंच गया। चर्चाओं में गाँव का विद्यालय भी आ गया। चपरासी नहीं तो लड़के चपरासी का काम करते हैं। मास्टरजी नहीं तो लड़के चपरासी का हुक्म मानते हैं। वैसे मास्टरजी तो सप्ताह में दो दिन ही दर्शन देते हैं। कहते हैं सरकारी काम से जाना पड़ता है। ये सरकारी काम भी बड़े अजीब है। जिन पर लड़कों की पढ़ाई की बलि चढ़ जाती है। हम ग्रामीणों का तो कोई भी काम पूरा नहीं हो पाता है।

रामू बहुत गहरे विचारों में डूब गया। भूत के तमस को भुलाकर वर्तमान में हरिया को पढ़ाने का सपना संजोया था कि शायद भविष्य की धुँध छँट जाए, मगर उसके अरमानों का चिराग भी टिमटिमाहट का खेल खेल रहा था।

क्या हरिया पढ़ पाएगा?

प्रधानाध्यापक (से.नि.)
ग्राम- चन्देसरा, वाया-खेमली (उदयपुर)-313201

वो सरकारी स्कूल नहीं, एक घर-परिवार था

❒ डॉ. रवीन्द्र कुमार उपाध्याय

बात कर रहा हूँ वीर प्रसूता भूमि, राजस्थान के रणबंकों की खान मेवाड़ के अजेय चित्तौड़गढ़ जिले के दूरस्थ गाँव बड़ौलीघाटा की जो कभी धीर-गम्भीर नदी गम्भीरी के किनारे बसा हुआ था। पूर्व में गम्भीरी नदी के किनारे बसा बड़ौलीघाटा गाँव बहुत ही सुन्दर, सरसब्ज और खेतीबाड़ी से सम्पन्न था। औद्योगीकरण की अन्धी दौड़ और बड़े-बड़े बाँधों के निर्माण की लालसा में नदियों किनारे बसे बड़ौलीघाटा जैसे कई छोटे-छोटे गाँव बड़े-बड़े बाँधों के बनने के बाद जल-विप्लव में डूब गए।

कुछ ऐसी ही एक त्रासद कहानी है, बड़ौलीघाटा के आदर्श राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय की, जो कभी सरकारी स्कूल नहीं हो कर एक आदर्श घर परिवार की तरह कार्य करने और बुलन्दियों की ओर अग्रसर था, की गाथा सुनाना पसंद करूँगा।

पूर्व में रा.उ.मा.वि. बड़ौलीघाटा के सभी शिक्षक पारिवारिक सदस्यों की भाँति कार्य करते हुए हँसी-खुशी और गर्व के साथ अपने राजकीय दायित्वों का निर्वाह करते थे। यहाँ सभी शिक्षक एक दूसरे को भाई-बहिन, पिता-पुत्र, माता-पिता, सखा-मित्र और पारिवारिक सदस्य मान कर अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन करते-करते एक-दूसरे का सम्मान ही नहीं करते थे, बल्कि आपस में सुख-दुःख भी बाँट लेते थे। ऐसे पारिवारिक सदस्यों की तरह कार्य करने वाले शिक्षकों के मध्य मैं प्रधानाचार्य के रूप में स्वयं को गौरवान्वित पाता और हर जगह मेरे स्कूल के शिक्षकों की प्रशंसा करता।

प्रधानाचार्य के रूप में मैंने बहुत नज़दीक से देखा और अनुभव किया कि बड़ौलीघाटा के शिक्षकों की हर समय यही कोशिश रहती थी कि कोई भी शिक्षक-कार्मिक अपने राजकीय कार्यों की वजह से तनाव में नहीं आए। प्रत्येक शिक्षक एक दूसरे का कार्य बिना कुछ कहे ही कर देता और अपना शिक्षण कार्य भी प्रभावित नहीं होने देता।

मेरे द्वारा दिनांक 09 सितम्बर 2015 को बड़ौलीघाटा स्कूल में पीपल का पौधा रोप कर प्रधानाचार्य का कार्यभार ग्रहण करने के पन्द्रह मिनिट के अन्दर ही सभी शिक्षक अपनी कक्षाओं में शिक्षण कार्य हेतु प्रस्थान कर गए तो मुझे शिक्षकों की कार्यप्रणाली पर आश्चर्य हुआ। पूरे दिन सभी शिक्षक स्वचालित यन्त्र की तरह शिक्षण के साथ-साथ अन्य कार्य भी करते रहे। चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के ना होते हुए भी कालांश लगते रहे और समय पर छुट्टी हो गई।

लिपिक, सहायक कर्मचारी, प्राध्यापक आदि के कई पद रिक्त होने तथा कक्षा-कक्षों की कमी के उपरान्त भी मुझे किसी शिक्षक से कोई कार्य बताने की आवश्यकता ही नहीं हुई। सभी शिक्षक अपने कर्त्तव्य और दायित्वों का स्वतः स्फूर्त निर्वहन करते थे। मेरे शिक्षक साथी ऐसे थे जो शिक्षण कार्य की दृष्टि से एक से बढ़कर एक थे। इनके रहते मुझे कभी कोई कक्षा शिक्षक रहित नहीं दिखाई दी। प्रत्येक शिक्षक अपना गैर शैक्षणिक कार्य भी रिक्त कालांश में अन्य कक्षा में बैठ कर पूरा करता, जिससे कक्षा भी खाली नहीं रहती और शिक्षक का कार्य भी हो जाता। स्वाधीनता दिवस, गणतन्त्र दिवस, पर्व, जयन्ती, अन्य विभागीय कार्य और आयोजनों के लिए मुझे कभी कोई लिखित आदेश भी नहीं निकालना पड़ा।

बड़ौलीघाटा के तत्कालीन स्कूली परिवार के शिक्षकों की हालत यह थी कि हमें रविवार और अन्य सरकारी छुट्टियाँ भी नहीं सुहाती थी। हम अपने घर-परिवार और जीवन की परेशानियाँ-समस्याएँ, कष्ट, दुःख, दर्द आदि सब बड़ौली स्कूल में आकर भूल जाते थे क्योंकि हर व्यक्ति यहाँ अपने काम और शिक्षण में डूबा रहता था। कुछ शिक्षकों की व्यस्तता इतनी रहती थी कि मुझे कहना पड़ता था कि 'भैया! आधी छुट्टी हो गई है; भोजन कर लो।' 'मैडम! पूरी छुट्टी हो गई है, अब घर जाओ। शेष कार्य कल करना।' यहाँ की कार्य संस्कृति ऐसी हो गई थी कि मेरे अवकाश पर रहने के दिनों में भी कुछ लोग आधा एक घण्टे पश्चात् ही घण्टी लगने के बाद विद्यालय छोड़ते थे। समय पूर्व विद्यालय छोड़ने की तो किसी की आदत ही नहीं थी।

ये सभी शिक्षक दोपहर का भोजन इतने प्रेम, स्नेह, और आत्मीयता से करते कि पारिवारिक रिश्ते भी पीछे छूट जाते। किसी का टिफिन कोई और खोल लेता। किसकी सब्जी, किसकी रोटी, किसका दही, किसका सलाद, किसका पुलाव, किसकी चटनी कौन खा लेता किसी को पता ही नहीं चलता। सभी बड़ोलियन बन कर हँसते-मुस्कराते और बतियाते हुए आधे घण्टे में भोजन करके अपनी कक्षा मे चले जाते और सभी एक दूसरे को आने वाले कल के लिए अपने टिफिन में मनपंसद भोजन-सब्जी की फरमाइश भी कर देते।

बड़ौलीघाटा स्कूल को हम सब स्वर्ग कहते थे, जहाँ कोई दुःखी नहीं था, कोई किसी से घृणा, ईर्ष्या, द्वेष नहीं करता था। कोई भी शिक्षक किसी भी कार्य के लिए 'ना' नहीं करता था। सभी शिक्षक कार्य करने के लिए तत्पर और उत्सुक रहते थे। जिसके सामने जो कार्य आ जाता, वह उसे पूरा कर देता। तेरा-मेरा कार्य अथवा जॉब चार्ट या मुझसे नहीं होगा अथवा यह कार्य मेरा नहीं है, ऐसा अवसर कभी नहीं आया। परिवारिक सदस्यों की तरह एक दूसरे का कार्य और शिक्षण करके सभी खुश होते थे। सभी लोग (शिक्षक) एक-दूसरे का कार्य करने के अवसर ढूँढ़ते थे।

मेरे द्वारा विद्यालय मे कार्यग्रहण के महीने भर बाद विद्यालय के रंग रोगन का प्रस्ताव रखा गया तो श्री राधेश्याम जी कमाली और लक्ष्मीलाल जी धाकड़ ने दीपावली के मध्यावधि अवकाश में पूरे विद्यालय की पुताई करा कर मुझे दीपावली पर अरुण रंग में रंगे विद्यालय का उपहार दिया। मैं स्वयं दीपावली की छुट्टियों में स्कूल नहीं गया, पर उन दोनों शिक्षकों ने छुट्टियों में भी स्कूल जा कर पुताई का कार्य सम्पन्न कराया।

बोर्ड परीक्षा के दिनों में अक्सर मैं अपने शिक्षक साथियों को साथ लेकर रात्रि में बड़ौलीघाटा, कटथाना, अहीरपुरा शाहबाद, गुर्जरों की झोंपड़ियाँ, मेवातियों की झोंपड़ियाँ आदि गाँवों का भ्रमण करता और विद्यार्थियों की बोर्ड परीक्षा तैयारी उनके घर पर ही कराता।

एक बार पिकनिक पर विद्यार्थियों संग हम सब पुरानी बड़ौली गए। विद्यालय की महिला शिक्षिकाएँ अपने घर से बहुत स्वादिष्ट भोजन-व्यंजन बना कर लाई।

बसंत पंचमी पर विद्यालय में हमने यज्ञ-हवन किया तो मुस्लिम शिक्षकों फहमीदा बानु एवं अब्दुल रहमान जी ने भी आहुतियाँ डाल कर हमारी एकता-अखण्डता को मजबूत किया। इस यज्ञ में मैंने विशेष रूप से वंचित वर्ग SC व ST वर्ग के विद्यार्थियों से आहुतियाँ डलवाई।

इस विद्यालय में मेरे सर्वाधिक सम्मान के पात्र थे श्री राधेश्याम जी कमाली जो विनम्रता, ईमानदारी, त्याग, समर्पण और निष्ठा की प्रतिमूर्ति थे। दिन भर कार्य करने के बाद भी यदि शाम को मैं उन्हें जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय चित्तौड़गढ़ भेजता तो वे खुशी-खुशी चले जाते और अगले दिन समय पर विद्यालय आ जाते। ऐसे शिक्षक अब नहीं मिलते हैं।

गणित पढ़ाने वाले राजेश जी सुथार शाला दर्पण, छात्रवृत्ति, नोडल की डाक आदि सारे कार्य एडवान्स मे कर के मुझसे केवल हस्ताक्षर कराते थे। आपको आश्चर्य होगा कि राजेश जी सुथार के होते हुए मैंने डेढ़ साल तक शाला दर्पण को कभी हाथ भी नहीं लगाया। राजेश जी तो रविवार और छुट्टियों के दिनों में भी विद्यालय का कार्य करते रहते थे।

लक्ष्मीलाल धाकड़ शिक्षक नहीं हो कर मेरे लिए हनुमान स्वरूप थे। विद्यालय का सारा बाहरी कार्य, निर्माण कार्य आदि सब चुटकियों में कर देते थे। उम्र में मुझसे बड़े होने पर भी कभी मेरे सामने नहीं बोले। मनोहर जी गर्ग हमारे पितामह थे, जो हमें अक्सर संकटों से बचाते थे। इनकी सेवानिवृत्ति पर हमने विशाल जुलूस निकाल कर इन्हें शानदार विदाई दी।

श्रीमती अनिता नाहर वरिष्ठ अध्यापिका के रूप विज्ञान इतनी तल्लीनता से पढ़ाती थी कि मुझे कभी भी उन्हें कुछ कहने का ही अवसर नहीं मिला। कभी भी कार्य से जी नहीं चुराना श्रीमती अनिता नाहर की विशेषता थी। एक ओर सुरेश जी कुमावत इन्हें मातृवत सम्मान देते थे, तो मुझे वे मेरी बड़ी बहिन के रूप में नजर आती थी।

बात आती है विद्यालय की सर्वश्रेष्ठ शिक्षिका और लोह महिला श्रीमती फहमीदा बानु की, जिसे विद्यार्थी हाथ पकड़ कर अपनी कक्षा में ले जाते और उनसे सामाजिक पढ़ते थे। वरिष्ठ अध्यापिका सामाजिक से होने के बावजूद फहमीदा मैडम द्वारा कक्षा XII के विद्यार्थियों को इतिहास व भूगोल पढ़ाना प्रार्थना सभा में प्रेरक प्रसंग सुनाना, ग्रामीण विद्यार्थियों को अंग्रेजी बोलना सिखाने के लिए SPOKEN ENGLISH COURSE मेरे स्कूल में चलाना, स्थानीय परीक्षा प्रभारी के दायित्व सहित SUPW के शिविर और ग्रीष्मावकाश में समाज सेवा शिविर आयोजित करना, विद्यालय की वार्षिक पत्रिका उड़ान का प्रकाशन और मेरे द्वारा किसी भी कार्य को बताने पर 'ना' नहीं कहना इन्हें अविस्मरणीय बनाता है।

एक बार मेरे अल्प आग्रह पर ही लक्जरीयस लाइफ जीने वाली फहमीदा मेडम छात्राओं को ट्रेक्टर में बिठा कर निम्बाहेड़ा 'दंगल' फिल्म दिखाने ले गई। वे विद्यालय की सर्वाधिक लोकप्रिय शिक्षिका थी। यह मेडम फहमीदा का ही प्रताप और परिश्रम था कि कक्षा XII में मेरे सभी विद्यार्थी प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए। वे अक्सर स्कूटी लेकर अपने बीमार विद्यार्थियों से मिलने उनके घर और गाँव चली जाती थी।

मेरे शारीरिक शिक्षक फतहलाल जी पुरोहित शायद पहले ऐसे P.T.I. होंगे जो दसवीं से लेकर छठी तक के विद्यार्थियों को विज्ञान के साथ-साथ गणित भी पढ़ाते हैं। वे S.D.M.C., P.T.A. और S.M.C. के प्रभारी शिक्षक भी हैं। साथ ही ट्रेजरी और जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय सहित अन्य कार्य भी वे पूरी सहजता और सरलता से कर देते हैं।

सुरेश जी कुमावत के रूप में मुझे ऐसा शिक्षक मिला जो कक्षा 06 से 12 तक अंग्रेजी विषय पढ़ाता है और प्राथमिक कक्षाओं को भी हँसी-खुशी अंग्रेजी पढ़ाने का कार्य करता है।

ये सभी मेरे विद्यालय के अनमोल रत्न थे जो स्टाफिंग पैटर्न, समानीकरण, स्कूल मर्जिंग (विद्यालय-विलय) में पद टूटने से बड़ौली स्कूल को छोड़ कर चले गए। शुरूआत हुई पुत्री स्वरूप शिक्षिका शीला जाट के समानीकरण से जो मेरी प्राथमिक कक्षाओं का आधार थी। नम आँखों से पुत्री समान शीला जाट को विद्यालय से विदा किया।

लक्ष्मीलाल जी धाकड़, जिनके स्थानान्तरण से मेरे घुटने टूट गए। मुझ पर सबसे बड़ा वज्राघात हुआ राधेश्याम जी कमाली और फहमीदा बानु मेडम के समायोजन स्वरूप स्थानान्तरण से सन्निपात जैसी स्थिति हो गई। शरीर लकवाग्रस्त हो गया। एक खिलता-महकता उपवन किस तरह उजाड़ हो जाता है, वीरान हो जाता है, यह पहली बार साक्षात अनुभव हुआ।

राधेश्याम जी कमाली और फहमीदा मैड़म के समायोजन स्थानान्तरण पर हमने भी गाँव वालों के साथ मिल कर भव्य जुलूस निकाल कर डी.जे. के साथ नाचते-गाते जगह-जगह साफे बन्धवा कर इन्हें सम्मानपूर्वक बड़ौलीघाटा से विदाई दी। इनके हाथों विद्यालय में कल्पवृक्ष लगवा कर दोनों शिक्षकों को भावपूर्ण विदाई दी। इनकी विदाई के अवसर पर ऐसा लगा जैसे कोई रूह जिस्म छोड़ कर जा रही हो या किसी नदिया का पानी सूख गया हो।

एक परिवार के रूप में कार्य कर रहे विद्यालय के विघटन की रही सही कसर राजेश जी सुथार और श्रीमती अनिता नाहर के पदोन्नति पर अन्यत्र चले जाने पर पूरी हो गई। मेरे सारे निष्ठावान, समर्पित और प्रिय शिक्षक मुझसे दूर चले गए। सारा दारोमदार अब सुरेश जी और फतह लाल जी पर आ गया।

अब विद्यालय में सारे कार्य Online करने की बाध्यता, शिक्षकों की कमी आदि के बीच पंचायत सहायकों की नियुक्ति से मुझे और विद्यालय परिवार को राहत मिली।

अन्त में इतना ही कहना चाहूँगा कि विद्यालय में यदि पारिवारिक माहौल हो तो फिर सारे असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाते हैं। शिक्षकों की कमी, भौतिक संसाधनों का अभाव और कार्य करने की बाध्यता भी अच्छे और सहृदयी शिक्षकों के मध्य आनन्ददायी हो जाती है।

मैं परमपिता परमेश्वर से यही प्रार्थना करता हूँ कि बड़ौलीघाटा विद्यालय से स्थानान्तरित हो कर अन्यत्र जाने वाले मेरे शिक्षकों का शेष जीवन सुकून और शान्ति से व्यतीत हो। ईश्वर उनका जल्द प्रमोशन करें और उन्हें निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर करें। आमीन+हरि ऊँ। इतिशुभम्

प्रधानाचार्य
राउमावि. बड़ौलीघाटा तह. निम्बाहेड़ा (चित्तौड़गढ़)
मो: 9468661278

संघर्ष की मुस्कान

❒ सुधा पण्ड्या

रोते हुए बच्चे ने थकी हारी बैठी रधिया को झिंझोड़ कर पूछा 'माँ बाबा कहाँ हैं? घर क्यों नहीं आते?' खेलने के दौरान नन्दू को उसके दोस्तों ने चिढ़ाया था। 'जा, जा तेरे पिताजी को लेकर आएगा तो भी हम गेंद नहीं देंगे।' यही बात उसे चुभ गई थी और माँ से पिता के बारे में पूछने लगा था। रधिया बड़े पशोपेश में पड़ गई कि इस नासमझ बच्चे को कैसे समझाए, जिसने अपने पिता को देखा भी नहीं था, जो इसी तरह रिरियाते हुए ही बड़ा हो रहा था। छोटे से गाँव में रधिया अपने नन्हें नन्हें बच्चों के साथ बड़ी मुश्किल से जीवनयापन कर रही थी। कहने को तो अच्छे कुलीन परिवार में ब्याही गई थी पर सिवाय अभावों के उसने कुछ नहीं पाया। बाइस साल की उम्र में पति का निधन हो गया, घर में कुछ नहीं सिवाय कर्ज के, साथ ही चार साल व नौ माह के दो छोटे-छोटे बच्चे उसकी धैर्य परीक्षा के साथी रहे। भीषण प्लेग फैलने से गाँव के सभी लोग घरों को छोड़कर खुले मैदानों में चले गए थे ताकि सुरक्षित रह सकें परन्तु चिकित्सा सुविधा के अभाव में सैंकड़ों लोग मृत्यु के ग्रास बन गए। इनमें रधिया के पति भी काल कलवित हो गए। दूधमुँहा बच्चा इन सब स्थितियों से अनभिज्ञ बालहठ कर बैठता तब विवश माँ कहाँ से जुटाती सारी चीजें, मूक रुदन से पीड़ा विगलित करती, पर पूर्ण स्वाभिमान से उसने अपने बच्चों का पालन पोषण किया, कभी किसी के सामने हाथ नहीं पसारे न ही किसी ओर के घर काम करना गंवारा हुआ, इसलिए गायें पाली और दूध बेचकर अपने परिवार की गाड़ी आगे बढ़ाई। ऐसे संकटों में पले बड़े हुए नन्दू पंडित ने भी माँ की तरह श्रम को अपना साथी बना लिया। जीवन में घने अभावों के जंगल से स्नेह और श्रम का निर्झर सदैव उनके व्यवहार में प्रवाहित होता रहता है।

बहुत कम आमदनी में भी परिवार का पालन पोषण तथा अभ्यागतों का स्वागत करने में कोई कोताही नहीं रखी। ग्रामीण परंपरानुसार गाँव में आया कोई भी अतिथि सबका मेहमान हुआ करता था पर यहाँ की तो बात ही अलग थी। अतिथि को ठहराना, भोजन करवाना और उनके गंतव्य तक पहुँचाने की व्यवस्था करना भी पंडित की दिनचर्या का अंग है। यह काम इतनी सहजता एवं आत्मीयता से करते कि किसी को संकोच नहीं होता। बड़ा परिवार, बच्चे, माँ, भाई-भाभी सभी की जिम्मेदारियों को निभाते हुए कभी हौंसला पस्त नहीं हुआ बल्कि बड़ी संवेदनशीलता के साथ हर एक रिश्ते को निभाया। सरकारी नौकरी के साथ-साथ नन्दू पण्डित अन्य श्रमपूर्ण कार्य यथा-पूजा कर्मकाण्ड, ज्योतिष कार्य भी करते रहते ताकि सभी की आवश्यकताओं को पूरा कर सके। 'बाबा मुझे साइंस का सामान चाहिए बड़े बेटे ने कहा तो उसके साथ ही बेटी बोल पड़ी नहीं पहले मेरी कॉपियाँ लानी है।' 'हाँ हाँ दोनों को अपना सामान मिल जाएगा,' नन्दू पण्डित मुस्कुराते हुए उन्हें आश्वस्त करते। कैसे आवश्यकता पूरी करेंगे इससे बच्चों को कभी परेशान नहीं किया। उन्हें कभी क्रोध नही आया और शिक्षा की सुविधा के लिए तो वह अपना हर कार्य व आवश्यकता एक तरफ रख देते। सभी के चेहरे पर मुस्कुराहट देखना उनका ध्येय बन गया। अपने बचपन में पिता की छत्रछाया से वंचित रहने की व्यथा को अपने बच्चों को स्नेह की द्विगुणित बौछार से आप्लावित करने में तत्पर रहते। किसी भी स्थिति में कोई कमी न आए इस का पूर्ण प्रयास रहता। इसके लिए कितनी ही दूर कुछ आमदनी की आशा दिखती वह पहुँच जाते। दिन में तीन से पाँच किलोमीटर चलना उनकी दिनचर्या का अंग था। निःसंतान बड़े भाई की बीमारी और उनके कार्यस्थल की क़ानूनी कार्यवाही ने कोढ़ में खाज का काम कर दिया। भाई के हर संकट में उनके साथ ढाल की तरह खड़े रहे और उनके सामाजिक मान को बनाए रखने के लिए पूर्ण समर्पित रहे। आर्थिक, सामाजिक और मानसिक परेशानियों से झूझते हुए भी पंडितजी ने कभी हिम्मत नहीं हारी। आधा पैसा कोर्ट कचहरी और सामाजिक व्यवहारों में खर्च हो जाने पर भी बच्चे अच्छे पोषण से कभी वंचित नहीं रहे। इनके स्वभाव की एक विशेषता थी कि वह हर वय, वर्ग एवं स्तर के लोगों के साथ बड़ी आत्मीयता से जुड़ जाते। काम पर आते जाते जो भी खाने की चीज मिल जाती मोहल्ले के सभी बच्चों को बाँटते रहते थे। इसीलिए शाम होते ही बच्चे उनकी प्रतीक्षा करते कि दादाजी आएँगे और कुछ खाने का देंगे। जब वह अपना झोला खोलते तो बच्चों का हुजूम उनके चारों तरफ जुट जाता था। वास्तव में वह बच्चों के सांता क्लोज थे और महिलाओं के लिए तो विश्वास और श्रद्धा के आयाम थे। घर, परिवार, स्वास्थ्य और सामाजिक कोई भी समस्या होती नन्दु महाराज के पास उसका समाधान पाकर पूर्ण आश्वस्त हो जाती। कई बार घरवाले मना करते कि आपके किसी के घर जाने की जरूरत नहीं है जिसको भी ज्योतिषीय जानकारी चाहिए वे यहाँ आएँगे, इस पर वह हँसते हुए कहते कि यहाँ एक व्यक्ति आएगा और मैं जाऊँगा तो घर के सभी सदस्यों से बात होगी सबकी शंकाओं का समाधान होगा और वे संतुष्ट होंगे। इस तरह स्वयं के आराम एवं सुविधा की अपेक्षा अन्य लोगों की सुविधा और संतोष को ज्यादा महत्त्व देते थे। नाती, पोतों के तो वे देवदूत से थे। उनकी कोई भी आवश्यकता होती दादाजी के पास पहुँचने पर जरूर पूरी होगी, यह भरोसा था।

शिक्षा के प्रति सजगता, सहयोग और समर्पण भाव से न केवल अपने बच्चों की शिक्षा की लाठी बने बल्कि आसपास के गाँव जहाँ विद्यालय की सुविधा नहीं थी उन बच्चों के लिए एक छात्रावास प्रारंभ किया, जिसमें सभी पठन प्रेमी बालक रहकर अध्ययन कर सकते थे। रहने का व अन्य सुविधाओं का कोई भुगतान नहीं करना पड़ता था। विद्यार्थियों को केवल घर से राशन लाना होता था और कई बार घर से राशन आने में देरी होती तो पंडितजी कई कई दिनों तक अपने घर पर खाना खिलाते थे। अच्छे पढ़-लिख कर ऊँचे पदों पर पहुँचे ये विद्यार्थी अपने इस शिक्षा प्रेमी सहयोगी गुरुजी के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करते रहते हैं। जीवन में नकारात्मकता का भाव तो कभी रहा ही नहीं।

वृद्धावस्था में भी बाल सहजता, निर्मलता और मुस्कान भरा भाव एक बार मिलने वाले को भी उनका मुरीद बना देता था। कर्मकाण्ड एवं ज्योतिष कार्य से लोगों को संतुष्ट करने वाले पंडितजी ने कभी पूजा के नाम पर आडंबर को नहीं स्वीकारा। उनका मानना था कि चाहे रात हो या दिन जब मन में ईश्वर स्मरण का भाव उठे उसे याद करते रहें इसमें किसी तरह की पाबंदिया नहीं होनी चाहिए।

श्रम की मिसाल, स्नेह की मूरत, सेवा का अवतार और सहृदयता की खान नन्दू पंडित गाँव में बड़े लोकप्रिय रहे हैं। अत्यधिक श्रम से झुंझलाहट आना आज आम बात है। अपनी परेशानियों को औरों पर निकालने वाले बहुसंख्यक लोग देखने को मिल जाते हैं पर नन्दू पंडित को कभी माथे पर बल डाले किसी ने नहीं देखा। अधीर असंवेदनशील, स्वान्तः सुखाय की बढ़ती मनोवृत्ति ने समाज का स्वरूप बदल दिया है ऐसे में क्या पंडितजी का स्वभाव व कार्यशैली अन्य लोगों के मन-मस्तिष्क को सिंचित कर पाएगी, कठिनाइयों के बावजूद स्नेह और सहयोग की यह लौ कब तक जरूरतमंदों के चेहरों को मुस्कराहट से रोशन करती रहेगी?

प्रधानाचार्य (से.नि.)
सिविल लाइन्स गढ़ी, बाँसवाड़ा (राज.) 327022
मो: 9413195358

अकेला रह गया मकान है

❒ महेश चन्द्र जैन 'सावन'

शिकारी खड़े हैं, बाँध दी मचान है
लड़ेंगे हम भी जब तलक जान है।।
जरा आहिस्ता चलो, संभलकर चलो
सफर आगे का बियाबान है।।
सब चले गए रोजी-रोटी के लिए
अकेला रह गया मकान है।।
निर्दोष हूँ मगर दोषी ठहराया जाऊँगा
अदालत में चलेंगे सिर्फ तेरे बयान हैं।।
ना राम बसा है न रहीम बसा है
मेरे सीने में सिर्फ हिन्दुस्तान है।।

अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. भैकडा परमदा
तह. गिर्वा, जिला उदयपुर, पिन-313703
मो: 9549680451

अनुभूति

❒ शिवनारायण शर्मा

सेठ अमोलदास ने अपने त्रिमंज़िले नवनिर्मित्त भवन में दो दिन पहिले ही प्रवेश किया था। पूरी इमारत को दुल्हन की तरह सजाया गया था। विद्युत बल्बों, मर्करीदीपों तथा रंगबिरंगी कंदिलों की इन्द्रधनुषी आभा से भवन की सुन्दरता में चार चाँद लग रहे थे।

इस अवसर पर अमोलकदास ने अपने रिश्तेदारों, मित्रों एवं जिले के आला अफसरों को आमंत्रित किया था।

काशी से पधारे पण्डित वेदमंत्रों के साथ भवन में यज्ञ-हवन कर रहे थे। घर के बाहर मेहमानों के वाहनों की कतारें लगी हुई थी। बेण्डबाजों तथा वाद्ययंत्रों की सुरीली ध्वनियाँ वातावरण में मधुर रस घोल रही थी।

आगन्तुक मेहमान भवन के नक्शे, बानावट एवं वास्तुकला की मुक्त कंठ से प्रशंसा कर रहे थे। सभी शिल्पी के वास्तुकौशल की दाद दे रहे थे। इस अवसर पर मेहमानों ने सेठ अमोलकदास को बधाई देते हुए 'वास्तुकला' की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

गृह प्रवेश के बाद मेहमानों नें लजीज व्यंजनों का लुत्फ लिया। इसी कार्यक्रम के दौरान संयोग से उस इमारत को बनाने वाला शिल्पी उधर से गुजरा। उसे यह सब देखकर बड़ा विस्मय हुआ। उसने मोटरसाइकिल रोककर बाहर खड़े एक व्यक्ति से पूछा 'यह सब क्या माजरा है?'

प्रत्युत्तर में वह व्यक्ति बोला, 'आज सेठ अमोलकदास ने अपने नव निर्मित्त भवन में प्रवेश किया है। गृह प्रवेश के उपलक्ष्य में ही यह शाही आयोजन रखा गया है।'

शिल्पी पप्पू को काटो तो खून नहीं। उसने मन मसोस कर कहा 'वाह रे जमाना, जिस व्यक्ति ने पूर्ण निष्ठा, ईमानदारी, लगन, व वास्तुशास्त्र का ध्यान रखते हुए इस भवन का निर्माण किया, गृह प्रवेश के अवसर पर उसे ही निमंत्रण तक नहीं!'

उसने एक उचटती निगाह भवन पर डाली एवं मन ही मन विष के कड़वे घूंटों को पीता हुआ गाड़ी स्टार्ट कर चल पड़ा।

शाम के समय जब वह चौपाटी पर घूमने गया तो वहाँ कुछ लोगों को यह कहते हुए सुना, 'सेठ अमोलकदास का नवनिर्मित्त बहुमंजिला भवन वास्तुशास्त्र, बनावट, सजावट व मजबूती की दृष्टि से बेजोड़ है।' इसका निर्माता 'शिल्पी' वास्तुशास्त्र का प्रकांड पंडित लगता है।

लोगों की इस प्रशंसा ने पप्पू के अपमान व हीनता के घावों पर मरहम का काम किया।

फ़िलहकीक़त उसे अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा, शिल्पकला व वास्तुकला के ज्ञान पर आत्मगौरव की सुखद अनुभूति हुई।

पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी
पोस्ट-गिलूण्ड (राजसमन्द)-313207
मो: 9610706740

उपकार वही ही है

❒ शिवचरण मंत्री

बाहर से दरवाज़ा खटखटाने की आवाज सुन कर मनीषा के कान खड़े हुए। वह तुरंत खड़ी हुई और दरवाजे पर पहुँची और दरवाजा खोला। दरवाजे पर वही खड़ा था। बड़ी-बड़ी आँखें और बड़ी काली मूँछें उसकी ओर हाथ लम्बा करके हाथ मिलाने को उत्सुक मनीषा क्षण भर सुध-बुध खो बैठी और दूसरे क्षण बोली 'ओह। विजय तू आ गया' इतना कहकर वह विजय की ओर बढ़ी और बोली ओह! विजय तू आ गया।' रसोई में काम करती गरिमा ने बाहर आकर उसे पकड़ा और उसे अंदर घसीट कर ले गई और पोस्टमैन को कहा 'कृपया क्षमा करें।'

डाकिया अपने हाथ और माँजी को हैरानी से देखता ही रहा। वह बुदबुदायाः यह युवती....? गरिमा कुछ न समझ पाने पर अपनी चोटी पर हाथ फेरती रही। गरिमा ने रसोई में खाना बनाते देखा कि मनीषा लिफाफा खोल कर उसे गौर से देख रही है। लिफाफे में शहीद विजय का तिरंगे से लिपटा फोटो था।

श्रीनगर, अजमेर, (राज.) 305025

चार साथी और उन की बात

❒ रामलाल जाट

एक बार की बात है चार आदमी अपने रोजगार की तलाश में शहर की ओर जा रहे थे। पैदल यात्रा करते हुए चल रहे थे। रास्ते में एक नगर आया उस नगर से होकर जब वह आगे निकले तो एक आदमी बोला कि इस रास्ते से एक महिला गुजरी है। थोड़ा आगे चले दूसरा आदमी बोला कि वह महिला घर से रूठकर निकली है। आगे चलने पर तीसरा आदमी बोला कि वह महिला गर्भवती थी। थोड़ा आगे चलने पर चौथे ने अपना पक्ष रखा कि वह महिला घर से भूखी निकली है।

इस प्रकार चारों आदमी आपस में बातें करते अपना-अपना पक्ष रखते आगे चले जा रहे थे। उनके पीछे उस महिला का आदमी (पति) उनकी खोज में निकला हुआ था। जो उन चारों लोगों की बातें ध्यान से सुन रहा था। उसने सोचा कि ये लोग जो बातें कर रहे हैं सभी घटनाक्रम सही बता रहे। हो सकता है कि इन्होंने ही मेरी पत्नी को अगुवा किया हो। उसने नगर में जाकर राजा को सारा घटनाक्रम बताया। राजा ने तुरन्त अपने सैनिक भेजकर चारों लोगों को अपने दरबार में बुला कर पूछा कि तुम चारों ने इसकी पत्नी को अगुवा किया है। तो उन्होंने अनभिज्ञता जाहिर करते हुए कहा कि हम तो रोज़गार की तलाश में जा रहे हैं, हमने किसी महिला को देखा तक नहीं। राजा ने प्रश्न किया कि फिर तुम कैसे बात कर रहे थे (राजा ने घटनाक्रम के बारे में प्रश्न किया)। इस पर पहले व्यक्ति ने कहा कि वह नंगे पाँव थी इसलिए पैरों की अंगुलियों में पहनी जाने वाली बिछुड़ियों के निशान पैरों के साथ लगे थे। इसलिए मैंने महिला के पैर हाथ का अनुमान लगाया। दूसरे ने कहा कि महिला गुस्से में घर से निकल जाती है। लेकिन उसका मन घर में लगा रहता है। इसलिए रास्ते में जो उनके पैरों के चिह्न थे बार-बार वह थोड़ा चलके पीछे मुड़कर देख रही थी कि मुझे कोई मनाने वाला आ रहा है या नहीं। राजा ने तीसरे से प्रश्न किया तो उसने बताया कि रास्ते में लघुशंका के लिए नीचे बैठी वहाँ पर दोनों हाथों के चिह्न बने हुए थे इसलिए मैंने अनुमान लगाया कि महिला गर्भवती थी। राजा ने चौथे व्यक्ति से प्रश्न किया तो उसने बताया कि रास्ते में बोरड़ी (बेर का पेड़) का पेड़ था, अच्छे-अच्छे बेर लगे हुए थे और नीचे भी गिरे हुए थे, वहाँ पर महिला के पैरों के चिह्न बने हुए थे इसलिए मैंने अनुमान लगाया कि महिला ने पेट की भूख शान्त करने के लिए बेर लिए हैं। राजा चारों की बातें सुनकर बहुत प्रभावित हुए और चारों की तार्किक क्षमता एवं मन के विचारों से खुश होकर चारों को मंत्री, महामंत्री, सभाध्यक्ष, कोषाध्यक्ष का पद देकर अपने यहाँ काम पर रख लिया। अतः ज्ञान की सर्वत्र पूजा होती है और ज्ञान से सर्वोच्च पद प्राप्त होता है।

अध्यापक
रा.उ.मा.वि. कासोरिया (भीलवाड़ा)
मो: 9461805058

पूँजी

❒ रोहिताश कुमार 'रोहित'

भोलाराम नाम था उसका। जैसा नाम वैसा ही भोले की तरह स्वभाव। घर-घर सब्जी बेचकर दो जून की रोटी का जुगाड़ करना बस यही काम था उसका। सिर पर टोकरी लिए घूमते हुए जब वह पुकार लगाता था तो बुढ़ापे में टूटी बत्तीसी की वजह से पिचके मुँह से 'सबडी... शब्द की आवाज गली में गूँज उठती थी।

उस छोटे से गाँव के चंद घर उससे सब्जी लगभग अनिवार्य रूप से इसलिए नहीं खरीदते थे कि वह उनके पसंद की सब्जी रखता था बल्कि इसलिए खरीदते थे कि कहीं ऐसा न हो कि उसकी बची सब्जी सड़ने से उसका धंधा चौपट हो जाए और नौबत भूखों मरने की आ जाए।

सब्जी लाने के लिए रोज़ाना की तरह आज भी भोला बस-अड्डे पर बैठा शहर जाने वाली बस का इन्तज़ार कर रहा था। लोग बड़े सेठों की पूँजी के बँटवारे पर चर्चा करते हुए करोड़ों के कम ज्यादा मिलने पर एक-दूसरे बंधु का मन में पक्ष लेते हुए अफ़सोस ज़ाहिर कर रहे थे। उसी समय बस की पौं बजी और भोला ने चढ़ने की तैयारी की।

तभी अचानक अपनी जेब को संभाला तो भोला की रूलाई फूट पड़ी। जेब से पैसों की पोटली कहीं गिर चुकी थी। भोला बस में नहीं चढ़ा और वहीं बैठ गया। उसे लगा जैसे उसका सब कुछ उजड़ चुका था। जैसे-तैसे अपने आपको संभालते हुए बड़े भारी मन से घर की ओर चला। बीस किलोग्राम सब्जी का वजन उठाने पर भी इस बुढ़ापे में भोला के वो कदम जो गलियों में बड़े तेज़ी से उठते थे, आज वो घर की ओर बढ़ते समय उठाए भी उठ नहीं रहे थे।

मुश्किल से भोला ठाकुर जी मंदिर के पास पहुँचा था कि सुग्गु जैसे तीन-चार बच्चे दौड़ते हुए आए और अपनी तुतलाती आवाज में बोले, 'दादाजी, दादाजी आपकी पोतली, थरक पर मिली।'

पैसों की पोटली हाथ में लेते ही भोला की रूलाई फिर से मगर इस बार खुशी में फूट पड़ी। आँसू पौंछते हुए भोला ने अपने दौ सौ इक्यासी रुपये की पूंजी गिन ली और शाम को बच्चों को एक-एक गाजर ईनाम में देने की बात कहकर वापस बस अड्डे की ओर शहर जाने के लिए मुड़ गया।

मैं यह सब देखकर समझ नहीं पाया कि किसकी पूंजी को बड़ा मानूँ बड़े-बड़े सेठों की या भोला की। और बच्चों की ईमानदारी पर शाम को मिलने वाले इस पुरस्कार से बड़ा पुरस्कार और क्या मानूँ...।

अध्यापक
रा.उ.मा.वि. असरजाना, नोहर (हनुमानगढ़)
मो: 9414501289

जुर्म

❒ अरनी रॉबर्ट्स

''मैडम जी आपको प्रिंसिपल मैडम बुला रही हैं। जरा जल्दी आने को कहा है- मामला कुछ गम्भीर है।'' सरिता माथुर ने 12वीं कक्षा में पढ़ाना शुरू ही किया था कि प्रिंसिपल मैडम ने उन्हें बुलावा भेजा। सरिता अंग्रेजी विषय की व्याख्याता होने के साथ-साथ प्रथम सहायिका भी थी। विद्यालय के हर छोटे-बड़े मामलों में उसकी सलाह ली जाती थी। अपने पन्द्रह वर्ष का अध्यापन अनुभव व साथ ही उसका प्रभावशाली व्यक्तित्व इन सबके कारण व छात्राओं, अभिभावकों और शहर के सभी लोगों में वह लोकप्रिय थी। वह एक आदर्श शिक्षिका मानी जाती थी।

प्रिंसिपल शीला अग्निहोत्री का दबदबा भी कोई कम नहीं था। दबंग व्यक्तित्व और अपने उसूलों का पूर्ण पालन करने वाली, इस महिला के कारण विद्यालय का बोर्ड कक्षाओं का परीक्षा परिणाम श्रेष्ठ तो रहता ही था, साथ ही यह विद्यालय अन्य सह-शैक्षिक गतिविधियों में भी श्रेष्ठ रहता था। यही कारण था कि अभिभावक प्राइवेट स्कूलों में अपनी बेटियों को न भेजकर राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय में भेजना बेहतर समझते थे। बगैर अनुमति के कोई छात्रा स्कूल समय में बाहर नहीं जा सकती थी और न कोई बाहरी व्यक्ति बगैर प्रिंसिपल की अनुमति के अन्दर आ सकता था।

सरिता माथुर जब प्रिंसिपल के चेम्बर में पहुँची तो उन्होंने देखा कि मैडम कुछ परेशान सी थी, साथ ही उनके चेहरे पर गुस्से के भाव भी थे। उन्होंने सरिता मैडम को सामने वाली चेयर पर बैठने का इशारा किया।

'आज यह दूसरी बार है कि ग्यारहवीं कक्षा की उस छात्रा अलका के मोबाइल पर एक लड़के का घटिया मैसेज आया है-वही प्रेम प्रदर्शन का घटिया सा मैसेज आइ लव यू हमारी सख्त हिदायत के बाद भी ये लड़कियाँ स्कूल में मोबाइल ले आती हैं। वो तो मैसेज की रिंग बजी तो सुजाता मैडम ने उसके पास से मोबाइल ले लिया जो उसके स्कूल बैग में था। हम केवल लड़के को दोष नहीं दे सकते। पिछली बार हमने अलका को वार्निंग देकर छोड़ दिया था। 'नाओ दिस इज़ सेकिंड टाइम-दिस इज़ हाइली ऑबजेक्शनेबल।'

'आप बिल्कुल ठीक कह रही हैं मैम।'

सरिता ने कक्षा से अलका को बुलावा भेजा। उसके आते ही वह कड़ककर बोली- 'यह लड़का सुमित कौन है? इसका मैसेज तुम्हारे मोबाइल पर क्यों आया है? क्या चल रहा है, यह सब? लगता है तुम्हारी सांठगांठ है इस लड़के से! वो लड़की अलका फूट-फूट कर रो पड़ी।

'एक तो ऐसी हरकतें करती हो और ऊपर से आँसू बहाती हो। मना करने के बावजूद स्कूल में मोबाइल लेकर आती हो। मिसेज माथुर इसके फादर को फोन करके यहाँ बुलवाइए।' गुस्से से प्रिंसिपल मैडम ने कहा।

'मैडम प्लीज पापा को मत बुलवाइए। पापा बहुत गुस्सैल हैं। वो मेरा पढ़ना-लिखना छुड़वा देंगे जबकि मेरी कोई गलती नहीं है। गलती से आज मोबाइल मेरे स्कूल बैग में आ गया! मैं आपको सब कुछ सच-सच बताती हूँ।'

बोलो! प्रिंसिपल मैडम ने कहा। टेबल के निकट आकर अलका ने कहा 'मैडम पिछले वर्ष हमारे पड़ोस में शालिनी दीदी का विवाह हुआ था। उसी शादी में उनके किसी रिश्तेदार का लड़का सुमित आया था। सच कह रही हूँ मैडम कि मेरा उससे कोई विशेष परिचय भी नहीं हुआ, न मैंने उसकी ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाया। बस तभी से वह मेरे पीछे हाथ धोकर पड़ गया। जबरन मुझसे बात करता। वह पास के कस्बे हमीरगढ़ का है। जब देखो तब वह अपने मामा-मामी के पास आ जाता। यानि शालिनी दीदी के घरवालों के पास। स्कूल से आते-जाते मुझे रास्ते में रोक लेता और कहता कि मुझसे शादी करेगा और मैं नहीं मानी तो मेरे चेहरे पर तेजाब फेंक देगा। मैं बहुत डर गई क्योंकि वह मुझे एकदम गुंडा लगा। मैंने उसे हर बार यही कहा कि वह मेरा पीछा छोड़ दे क्योंकि मैं पढ़ लिखकर डॉक्टर बनना चाहती हूँ। जब तब वह मुझे उल्टे-सीधे मैसेज करता रहता है। मेरी कोई गलती नहीं है मैम मैं तो उससे नफरत करती हूँ।'

'तुमने अपने पेरेन्ट्स को उसकी हरकतों के बारे में क्यों नहीं बताया?'

'मैम मेरे बड़े भइया और मेरे पापा दोनों का गुस्सा बहुत खराब है... वे उस लड़के की हालत बिगाड़ देते... बेकार ही उन लोगों से दुश्मनी हो जाती क्योंकि वो लड़का पूरा गुंडा है और चुप बैठने वालों में से नहीं है।'

सरिता माथुर बोली ऐसे सब अगर डर कर बैठ जाएँ तो गुंडों का राज हो जाएगा और बहिन-बेटियों का घर से निकलना मुश्किल हो जाएगा।

प्रिंसिपल मैडम बोली 'हमारा कर्त्तव्य है कि तुम्हारे घरवालों को इस बारे में अवगत कराया जाए ताकि वे इस लड़के की रिपोर्ट थाने में लिखवा सकें।' और उन्होंने सरिता माथुर की ओर मुड़कर कहा 'इसके पापा को फोन करके बुलाइए।'

'क्या करते हैं तुम्हारे पापा?'

' जी वे अशोक नगर थाने में सी.आई. हैं, पुलिस विभाग में।'

फोन लगाने के आधे घंटे के भीतर एक पुलिस की जीप स्कूल के सामने आकर रुकी। आसपास के लोग व दुकानदार पुलिस को आया देख चौंके, फिर सोचा शायद किसी सरकारी काम से आए होंगे।

प्रिंसिपल कक्ष में प्रवेश करते हुए सी.आई अखिलेश ने पूछा 'क्या बात है प्रिंसिपल मैडम कैसे याद किया?' कुरसी पर बैठते हुए उनकी दृष्टि अपनी बेटी पर पड़ी। 'क्या इसने कोई बदतमीजी की है?'

'जी ऐसा कुछ नहीं है। बात कुछ और ही है।' यह कहते हुए उन्होंने सुमित नाम के लड़के

का मैसेज जो अलका के मोबाइल पर आया था वह उनके समक्ष रख दिया। मोबाइल पर मैसेज पढ़ते ही सी.आई. साहब गुस्से से भर उठे। उन्होंने आग्नेय दृष्टि से अपनी बेटी की ओर देखा जो भय के मारे पत्ते की तरह काँप रही थी।

'कौन है यह लड़का सुमित। मुझे अभी बताओ, मैं थाने बुलवाकर उसकी खाल खिंचवा दूँगा।' उन्हे शांत करते हुए मिसेज अग्निहोत्री ने कहा, 'थोड़ा धैर्य रखिए सी.आई. साहब। जल्दबाजी में ऐसा कदम उठाना ठीक नहीं होगा। पहले इस मामले को ठीक से सुनिए।'

'तुम्हारे पास यह मैसेज कैसे आया अलका?' उन्होंने बेटी की ओर रुख करके पूछा।

'जी पापाजी पड़ोस की शालिनी दीदी की शादी में आया था यह। उनकी मौसी का लड़का है। तभी से वह मेरे पीछे पड़ गया। शादी के दिनों में भी बहुत परेशान किया मुझे। बस बार-बार यही कहता 'आइ.लव.यू'। मैंने सोचा दीदी का विवाह होते ही यह चला जाएगा। पर अब प्रायः यह हमीरगढ़ से आ जाता है और रास्ते में रोककर परेशान करता है।'

'इतना कुछ हो गया और तूने मुझे बताया नहीं। इसलिए ही तो इन गुंडे-बदमाशों के हौसले बुलन्द हो जाते हैं। अरे फिर पुलिस है किसलिए?

'जी मैंने सोचा बात बढ़ जाएगी इसलिए।'

'पिछली बार कब आया था वो?'

'जी पिछले सोमवार को उस समय मेरी सहेली मुक्ता भी मेरे साथ थी। आप उससे भी पूछ सकते हैं।' प्रिंसिपल मैडम ने मुक्ता को भी कक्षा से बुलवा भेजा। सी.आई साहब ने कहा 'बताओ बेटी उस लड़के के बारे में जो अलका के पीछे पड़ा है।'

'जी अंकल वो एकदम गुंडा लड़का है। वह शक्ल से ही आवारा और बदमाश लगता है। अलका उसके डर के मारे मुझे साथ ले लेती थी। हम दोनों साथ ही घर जाती थी स्कूल की छुट्टी के बाद पिछले सोमवार उसने हमारा रास्ता रोका और उल्टी-सीधी बातें करने लगा। अलका ने गुस्से से कहा 'मेरा रास्ता छोड़ो जानते नहीं मेरे पापा पुलिस में हैं और सी.आई. पद पर हैं।' इस पर उसने ज़ोर-ज़ोर से हँसते हुए कहा तेरा बाप चाहे सी.आई. हो डी.एस.पी. ऐसे लोगों को मैं जेब में रखता हूँ तुझे अपना बनाकर ही छोड़ूँगा।'

अलका की सहेली मुक्ता की बात सुनकर सी.आई. साहब का चेहरा गुस्से से लाल हो गया। 'इतने दिन चुप रहकर तुमने बहुत बड़ी गलती की। जब सी.आई. की बेटी को वह छेड़ सकता है तो सोचो अन्य लड़कियों के साथ कैसा व्यवहार करता होगा।'

प्रिंसिपल मैडम ने कहा 'यह सब सुनने के बाद सी.आई. साहब हमारी बच्ची की कोई गलती नहीं है, मैं इस नतीजे पर पहुँची हूँ। अतः ऐसे दुष्ट लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जानी ही चाहिए जो इन बच्चियों को अपनी हरकतों से परेशान करते हैं।'

'आप ठीक कह रही हैं। रोज़ थाने में ईव-टीजिंग, महिला अत्याचार, महिला उत्पीड़न, बलात्कार व दहेज प्रताड़ना के केसेज आ रहे हैं। इनकी हिम्मत तो देखो पुलिस अधिकारी की बेटी को सरे-राह तंग कर रहे हैं। अब मैं इसे ऐसा सबक सिखाऊँगा कि फिर जीवन भर यह किसी लड़की की तरफ आँख उठाके नहीं देखेगा।'

सी.आई. साहब ने उस लड़के द्वारा भेजा गया मैसेज अपने मोबाइल पर ले लिया और उठ खड़े हुए -'मैं आपके स्कूल के अनुशासन और ऐसे नाजुक मामलों में आपकी सक्रियता की प्रशंसा करता हूँ। आपको उस लफंगे लड़के के खिलाफ की गई कारवाही की रिपोर्ट दो-चार दिन में मिल जाएगी। इस बीच मेरी बच्ची के मन में जो डर बैठ गया है उसे दूर करने में उसकी सहायता कीजिए।

'उसकी आप चिन्ता न करें। मैं अपने ढंग से उसे समझा दूँगी।' सी.आई. साहब ने प्रिंसिपल महोदया से विदा ली।

अगले दिन पुलिस ने अलका और मुक्ता के बयान दर्ज कर लिए और सुमित के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली। उसी दिन पुलिस की गाड़ी हमीरगढ़ कस्बे की ओर दौड़ गई जहाँ वह लड़का सुमित रहता था।

हमीरगढ़ पहुँच कर पुलिस को सुमित का घर ढूँढ़ने में कोई देर नहीं लगी। सुमित के पिता राजेन्द्र नाथ अनाज के व्यापारी थे। साथ ही साहूकार भी। गरीब और जरूरतमंद लोगों की जमीने और आभूषण गिरवी रखना और ऊँचे दामों पर ब्याज लेना उनका धंधा था। ब्याज न देने पर रहन रखी वस्तुएँ हड़प लेने में भी वे पीछे नहीं हटते थे पूरा कस्बा उन जैसे धूर्त व्यक्ति से नफरत करता था। ऐसे ही व्यक्ति की औलाद थी वह सुमित। पुलिस की जानकारी में यह भी आया कि वह आवारा और निकम्मा लड़का था। यहाँ कस्बे की युवतियों को परेशान करना उसका रोजमर्रा का काम था। ऐसे सिरफिरे और उद्दण्डी युवक से कोई उलझना नहीं चाहता था। स्थानीय पुलिस रिकार्ड के अनुसार दो बार वह थाने में बंद किया जा चुका था। पर हर बार उसका बाप ले देके उसे छुड़ा लाता था।

पुलिस जब सुमित के घर पहुँची तो उसके पिता राजेन्द्र नाथ ने दरवाजा खोला। शहर की पुलिस देखते ही वह चौंक उठा। 'क्या हुआ साहब आप लोग यहाँ कैसे?'

' तुम राजेन्द्रनाथ हो?'

' हाँ श्रीमान।'

'तुम्हारा होनहार सुपुत्र सुमित कहाँ है?'

'यहीं है घर में। क्या कर दिया साहब उसने?'

'उसके खिलाफ अरेस्ट वारन्ट है। लगता है कुछ ज्यादा ही जवानी का जोश चढ़ा है उस पर हमें उसे शहर थाने ले जाना है अरेस्ट करके। वह न केवल लड़कियों को परेशान करता है बल्कि उन्हे धमकियाँ भी देता है। सी.आई. साहब की बेटी पर तेजाब फेंकने की धमकी दी और आपत्तिजनक मैसेज भेजे हैं मोबाइल पर वो शायद जानता नहीं क़ानून कितना सख्त है ऐसे मामलों में।'

सुमित को अरेस्ट करके पुलिस शहर के मुख्य पुलिस स्टेशन ले आई। विभिन्न आरोपों के तहत कई धाराओं में उस पर केस दर्ज़ किए गए। लड़कियों को उत्पीड़न करने वे परेशान करने, उनसे जबरन दोस्ती करने का प्रयास करने, रास्ता रोककर उनकी बेइज्जती करने व आपत्तिजनक मैसेज भेजने के आरोपों के कारण उस पर केस चला और उसे दो वर्ष की सश्रम कारावास की सजा तो मिली ही साथ ही बीस हजार रुपये भरने का दण्ड भी मिला। इन दिनों सुमित जेल की सज़ा काट रहा है। जिसे उसने खेल समझा था वही उसके लिए गलफांस बन गया। उसने कभी सपने में भी नहीं सोचा होगा कि उसकी ये हरकतें उसे जेल के सींखचों के पीछे पहुँचा देगी।

पोस्ट ऑफिस रोड, भीमरांज मंडी
कोटा(राज.) 324002
मो: 9414939850

लीना का गणित

❒ डॉ. चेतना उपाध्याय

लीना जीजी आपका पेपर कैसा हुआ? देखो ना मुझे तो यह प्रश्न आया ही नहीं पूरा छोड़ना पड़ा। लाली रूआंसी हो बोली.... मेरा भी बस सो सो (ठीक ठीक) हुआ। हमारा पेपर तो बहुत डिफिकल्ट था। पूरी कक्षा को ही बड़ी प्रॉब्लम (कठिनाई/समस्या) हुई कहते हुए लीना ने लाली के हाथ से पेपर ले देखने का प्रयत्न किया।

ओह माय गॉड.... सेम टू सेम (एकदम समान) हमारा भी पेपर यही है। इतना डिफिकल्ट कैसे किया होगा तुमने? मुझे तो बड़ा दुःख हो रहा है, तुम तो रात दिन मेहनत करती थी, हे भगवान मेरी लाली को पासिंग मार्क्स (उत्तीर्णांक) तो कम से कम दे ही देना। लीना अपनी यूनिफॉर्म की क्रीज समेटते हुए बोली....अरे जीजी इतना मत डरो, इस प्रश्न को छोड़कर बाकी सभी प्रश्न हल किए हैं मैंने। मेरे 80% के आस-पास नम्बर आ जाएँगे। लाली पूरे आत्मविश्वास के साथ बोली। अच्छा.....तू तो बड़ी ग्रेट निकली। मुझे भी बता कैसे किए? लीना ने वहीं कुर्सी सरका ली व बैठते हुए बोली।

लाली ने झट से फूँक मार कर फर्श की धूल हटाई और वहीं बैठ गई। फटाफट पेपर हाथ में लेते ही पहले प्रश्न से ही उत्तर बताने शुरू कर दिए....इस प्रश्न में यह सूत्र लगेगा, तीसरे और ग्यारहवें प्रश्न में यह सूत्र लगेगा, देखो मेरा यह उत्तर आया है। इस विधि से इसे चैक भी कर लिया उत्तर सही निकला, लाली ने खुश होते हुए कहा। उसका आत्मविश्वास चेहरे व शब्दों से प्रकट हो रहा था। लीना की पुरानी यूनिफॉर्म पहने हुए भी लाली बहुत प्यारी लग रही थी। नई शानदार प्रैस्ड यूनिफॉर्म पहने लीना के चेहरे पर भी वह नूर नहीं था, जो लाली के चेहरे से टपक रहा था। उसने फटाफट पूरा प्रश्न पत्र हल करके दिखा दिया। बस एक प्रश्न में उसकी गाड़ी अटकी, जिससे वह परेशान थी।

लीना तो आश्चर्यचकित सी देखती रह गई, इस सरकारी विद्यालय की बाला को। कितनी सहजता से उसने सब प्रश्नोत्तर बता दिए जो कि उसे तो आते ही नहीं थे। वाह लाली वाह मुझे तुझ पर गर्व है, तुझ पर और अपनी दोस्ती पर। अच्छा दिखा तो.... वो हिन्दी और साइंस (विज्ञान) का पेपर.... अभी लाई जीजी, कह कर लाली ने अपने घर (सर्वेन्ट क्वार्टर) की तरफ दौड़ लगा दी।

लीना ने भी इतने में अपनी ड्रैस चेंज कर ली। उसने भी हिन्दी व साइंस के अपने पेपर भी निकाल लिए। लाली के आते ही वो उसे अपने कमरे में ले गई वहाँ दोनों सखियाँ इत्मीनान से पलंग पर बैठ गई। बाकायदा एक-एक प्रश्न का मिलान हुआ। इसका मतलब हमारे सभी प्रश्न पत्र समान है? सिर्फ भाषा के माध्यम का अंतर है। हमें अंग्रेजी में उत्तर लिखने होते हैं और तुम्हें हिन्दी में, पर ऐसा कैसे? हमारा स्कूल तो शानदार बिल्डिंग शानदार इन्फ्रास्ट्रक्चर और छात्र संख्या भी लगभग 2500, इनके स्कूल की बिल्डिंग भी छोटी सी, ना कोई लाइब्रेरी, खेल मैदान, छात्र संख्या भी हमारे आगे कहीं नहीं टिकती मात्र दो सौ। कहाँ हम ढाई हजार विद्यार्थी हमारे टीचर्स भी वैल अप-टू-डेट और इनके यों ही फटीचर से....

नहीं बेटा अपनी गलती सुधारो। तुम्हारा वैल अप टू डेट और इनके वैल एड्यूकेटेड। तुम्हारा विद्यालय। वो भी सरकारी ढर्रे का। दादाजी अपनी रौबदार आवाज़ में बोले वो भी लीना की परेशानी भरी आवाज़ सुनकर इसके कमरे में ही आ गए थे। बेटा संवैधानिक गरिमा की बात है। सभी चौदह वर्ष तक के बालकों को निःशुल्क शिक्षा, समान शिक्षा का अधिकार है। इसके तहत ही आजकल राज्य सरकारें भी अपनी अपनी समान शिक्षा प्रणाली अपने स्तर पर निर्मित कर लेती है।

तुम लोगों को आठवीं कक्षा को प्रश्न पत्र जो समान प्राप्त हुए हैं वो प्रारम्भिक शिक्षा पूर्णता प्रमाण पत्र मूल्यांकन प्रक्रिया के तहत प्राप्त हुए हैं। इसके लिए राज्य सरकार का विशेष प्रावधान अनिवार्य किया गया है। अतः निजी शिक्षण संस्थानों को भी इनका पालन अनिवार्य कर दिया गया है। यहाँ इस परीक्षा को मात्र दिव्यांगों हेतु वैकल्पिक रखा गया है। शेष सभी को अनिवार्य है। पर दादाजी हमारे स्कूल का एड्यूकेशन स्टैण्डर्ड तो बेहद शानदार है। पूरे शहर में इसका नाम है। अनेक शहरों में इसकी ब्राचेंज हैं। हमारे सारे स्टूडेण्ट वेल टूडू स्मार्ट फेमेलीज़ से है।

तो क्या हुआ बेटा समान शिक्षा का अधिकार तो समस्त बालकों को समान रूप से प्राप्त है। सभी बालकों को अपनी योग्यताओं, क्षमताओं के अनुकूल निखरने के अधिकार हमारे भारतीय संविधान द्वारा प्राप्त हैं। इसलिए समस्त बालकों को समान मानते, स्वीकारते हुए, शिक्षा व्यवस्था का यह प्रावधान रखा गया है। तुम्हारा स्कूल निजी या गैर सरकारी है। धनिक वर्ग द्वारा प्रारम्भ किया गया है। उसमें छात्र भी अच्छी आर्थिक स्थिति वाले परिवारों से आते हैं। उनसे अच्छा खासा शुल्क वसूला जाता है और उन पैसों में से ही कुछ खर्च करके स्टेण्डर्ड मेंटेन करने में लगा दिया जाता है। सरकारी विद्यालय में बालक निःशुल्क शिक्षा प्राप्त करते हैं। अतः आय के बगैर व्यय सम्भव नहीं हो पाता। बस यही अंतर है तुम्हारे और लाली के विद्यालय में। और हाँ लाली के विद्यालय में शैक्षिक दृष्टिकोण से समृद्ध व शैक्षिक गुणवत्ता में खरे उतरने वाले शिक्षक ही प्रवेश पाते है। तुम्हारे यहाँ शिक्षकों का ऐसा कोई लिखित परीक्षण नहीं होता, सिर्फ अंग्रेजी भाषा बोलचाल में महारत होनी चाहिए। उन्हें सेवा अवसर मिल जाता है।

यह अंतर तुम्हें समझ में आ भी गया होगा कि कैसे लाली सभी प्रश्नों से सही उत्तर सहजता से दे रही थी। क्यों लाली बेटा आपके विद्यालय के ही शिक्षकों की ही शिक्षा का असर है ना ये? हमारे विद्यालय में बहुत अच्छी पढ़ाई होती है। जी हाँ दादाजी। लाली ने खुश होकर जवाब दिया। लीना कुछ मायूस सी हो गई।

अच्छा बेटा अब बहुत देर हो गई है। डाइनिंग टेबिल पर खाना आपका इंतजार कर रहा है। लाली बेटा आज आप भी यहाँ लीना के साथ खाना खा लो। लाली ने भरपूर नज़र डाइनिंग टेबिल पर डाली, सुसज्जित टेबल, जिस पर तरह-तरह के पकवान, ट्रांसपेरेंट क्राकरी में बड़ा ही आकर्षक दृश्य दिखा रहे थे। जिसे देखने के बाद लाली ने कहा नहीं दादाजी मेरी मम्मी भी मेरा इंतजार कर रही होगी, अभी तो मुझे घर जाना ही होगा। बहुत देर हो गई।

अच्छा जीजी टा टा अब मैं शाम को खेलने आऊँगी कहकर वह अपने घर को सरपट दौड़ गई।

दादाजी ने लीना को डाइनिंग टेबिल की ओर बड़े प्यार से धकेला..... दादाजी मुझे भूख नहीं है। मैंने तो अपने स्कूल की हर क्लास अटेंड की है, घर पर भी सब कुछ दोहराया है। पर पेपर में पूछे गए प्रश्न तो अधिकतर हमें समझाए ही नहीं गए थे। वह आँखे तरेरते हुए बोली। मुझे तो बड़े होकर आइ.ए.एस. बनना है। अब मैं भी लाली के विद्यालय में ही पढ़ने जाउँगी.....।

ठीक है पर वहाँ टाटपट्टी पर बैठना होता है बच्चों को.... हाँ वह तो है। ठीक है, मै थोड़ा सोचती हूँ। चलो, पहले खाना खा लो फिर सोचना। नहीं नहीं दादाजी खाना खाने के बाद तो नींद आने लगती है। फिर कैसे सोचूंगी? लीना दादाजी को वहीं छोड़ उछलती हुई अपने कमरे में पहुँच गई। दादाजी वहीं खड़े रह गए, लीना की फितरत समझना अब उनके बस का भी नहीं.... वे भी धीरे-धीरे अपने कमरे में चल दिए।

अचानक बरामदे की खिड़की से आती हवा रेशमी परदों को लहराने पर मजबूर कर गई। श्वेत रंग के रेशमी परदे सुनहरे लैस के साथ झूम रहे थे। अच्छा ही है बेटा बहु अभी घर में नहीं है। वरना तुरन्त ही बरामदे की खिड़की बंद करने का आदेश जारी हो जाता। इतना खूबसूरत दृश्य कभी कभार ही देखने को मिलता है। घर में लगे, ए.सी (एयर कंडीशनर) ने तो इस दृश्य पर स्थायी विराम लगा रखा है। चलिए, खैर यह भी समय का तकाजा है।

शाम को गार्डन में गुलाबी रंग की फ्रिल वाली फ्रॉक पहने लीना लगभग दौड़ती हुई आई..... मैंने सोच लिया दादाजी, क्या बेटा..... यही कि अब मुझे लाली के विद्यालय में जाना है, एक बढ़िया आइडिया आया है मुझे।

अरे बिटिया रानी मात्र आइडिया आने से काम नहीं चलता, शिक्षा के लिए पूरा गणित बैठाना पड़ता है। दा...दा...जी आप भी ना, माना मेरा गणित का पेपर बिगड़ा है, मगर मेरा गणित इतना कमज़ोर नहीं है अच्छे से पूर हिसाब बैठाया है। आप बस ध्यान से सुनिए....

देखिए मेरी मंथली स्कूल फीस है 4000/- वेन के लगते हैं 2000/- फिर पुअर फाउण्डेशन के लिए डोनेशन देते हैं 5000/- तो देखिए 4000×12=48000/- + 2000×12=24000+5000 कुल मिलाकर हुआ 77000/- लाली के विद्यालय में फीस लगती नहीं है। पास में होने से मैं और लाली पैदल ही स्कूल पहुँच जाएँगे। बच गए पूरे 77000/-

ओ....हो....बड़ा जोरदार गणित लगाया है। अरे.....यह तो कुछ भी नहीं आगे भी देखिए मेरा कमाल, डेडी बता रहे थे कि इस बार मेरे बर्थडे पर नया प्रोजेक्ट लीना एण्टरप्राइजेज लगभग अस्सी लाख का स्टार्ट करने वाले हैं। हैं कि नहीं ....? हाँ हाँ डाल तो रहे है।

प्रोजेक्ट मेरे नाम से, बर्थडे भी मेरा.... तो उसमें थोड़ी तो मेरी भी चलेगी ना? अस्सी लाख में से बस आठ लाख इतने से.... तर्जनी ओर अँगूठे को एक साथ मिलाकर मुँह बिचकाते हुए, लीना बोली हटा दो।

कहाँ हटा दो? अरे दादाजी समझा करो ना मेरा मतलब है कम कर दो और आठ लाख सत्तर हजार में से लाली के स्कूल का फर्नीचर बनवा दो। तो मुझे टाटपट्टी पर नहीं बैठना पड़ेगा। हमारे स्कूल के सारे बच्चे फर्नीचर पर बैठेंगे तो कितना खुश होंगे सब बच्चे ढंग से पढ़ाई भी कर पाएँगे।

अरे वाह हमारी गुड़िया रानी का यह आइडिया भी शानदार है और गणित भी लाजवाब कहते हुए उन्होंने लीना को दोनों हाथों से उठाते हुए हवा में उछाल दिया एकदम से खिलखिला पड़ी लीना।

लीना की खिलखिलाहट दादाजी को भीतर तक रोमांचित कर गई। जिससे एक आइडिया उनको भी आ गया वो बोले बिटिया रानी जब तुम्हारे आठ लाख सत्तर हजार से फर्नीचर स्कूल में आ सकता है तो मैं तुम्हारा दादा हूँ मुझे तो कम से कम चार गुना नहीं तो दुगुना ही सही गणित तो बैठाना ही पड़ेगा। सत्तर लाख चौपन हजार मेरे भी बनते हैं। इसमें से पुस्तकालय और पुस्तकें, कम्प्यूटर, खेल सामग्री भी आ जाएगी। हाँ दादाजी, चिंहुकते हुए लीना बोली आप कितने अच्छे है?

पर बिलकुल बुद्धू भी....क्यों? दादाजी ने मूँछें तरेरते हुए कहा। मैं तो स्कूल फीस बचाकर और अपने नाम के प्रोजेक्ट में से बचाकर हिसाब लगा रही थी। पर आप तो कोई स्कूल भी नहीं जाते कहाँ से फीस के पैसे बचाएँगे ओर आपके नाम का कोई प्रोजेक्ट भी नया नहीं डल रहा आपका गणित कैसे बैठेगा....? लीना ने मासूमियत भरे अंदाज़ में प्रश्न किया।

दादाजी की आँखें भीग गई, उन्होंने लीना को सीने से लगाते हुए कहा....चिंता न करो बिटिया रानी....स्कूल फीस की तो उम्र रही नहीं। नया प्रोजेक्ट भी नहीं है मगर पुराने प्रोजेक्ट की कमाई तो है। बैंक में से उसके ब्याज को निकालकर मैं भी थोड़ा बहुत जोड़ तोड़ बिठा लूँगा।

अब हम दादा पोती मिलकर अपना कमाल का गणित बैठाएँगे। आज गणित का पर्चा हो सकता है हमारी बिटिया का बिगड़ गया हो। मगर गणित नहीं बिगड़ा है। हमें हमारी बिटिया रानी के गणित पर बड़ा गर्व है....आओ इसी खुशी में आइसक्रीम खाने चलते हैं। लाली को भी अपने साथ ले चलेंगे....।

बिलकुल दादाजी वो भी बस अभी आने ही वाली है।

वरिष्ठ व्याख्याता
डाइट मसूदा अजमेर
मो: 9828186706

माँ

❒ रामचन्द सतवानी

हर जीवन भर ममता के रंग पहनाती रही मुझे।
उसे ईद, दीवाली पर
दो जोड़े कपड़े सिला न सका
बीमार बिस्तर से उसे निजात, दिला न सका
खर्च के डर से उसे
बड़े अस्पताल ले जा न सका
माँ के बेटा कहकर दम तोड़ने के बाद से
अब तक सोच रहा हूँ।
दवाई इतनी भी महँगी न थी कि मैं ला ना सका
वो भूखी सो गई बहू के डर से एक बार माँगकर
मैं सुकून के दो निवाले उसे खिला न सका
बुढ़ापे का सहारा हूँ। एहसास दिला न सका
पेट पर सुलाने वाली माँ को मखमल
पर सुला न सका
नज़रे उन बूढ़ी आँखों से कभी मिला न सका
वो दर्द सहती रही, खटिया पर तिलमिलाती रही
माँ ने गुस्से में गाली भी दी तो
मैं मूर्ख उस गाली में छुपी दुआ को न समझ सका
माँ के पैसे माँगने पर मैं मूर्ख 'बरकत' न समझ सका।

अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि.
गंगपुर का खेडा, भवानीमंडी

बेटी का बाप

❒ शकुन्तला सोनी

रामनाथ ने हिसाब लगाया तो कलेजा मुँह को आ गया, अब क्या होगा? पलंग, अलमारी, सोफा आदि में ही इतना खर्च हो जाएगा तो आगे क्या होगा? यह तो ठीक हुआ कि सारा फर्नीचर आसान किश्तों पर मिल रहा है, आखिर दोस्त समय पर काम आ ही गया, बेचारे ने इतना सामान किश्तों पर देना स्वीकार कर लिया, परन्तु इतनी किश्तों को चुकाते चुकाते तो उसकी सारी व्यवस्था डगमगा जाएगी। रामनाथ का मन कसैला हो गया, सोचने लगे, नौकरी भी केवल तीन वर्ष की रह गई है, दमयन्ती को अपने बेटों पर पूरा भरोसा था, पर वह भी कहाँ काम आ रहे हैं, बेटों का नाम आते ही मन दुःखी हो गया, लोग कहते है तुम्हें क्या चिन्ता तीन बेटे हैं? हूँ तीन बेटे? मैं तो नहीं चाहता था, उनके सामने हाथ फैलाऊँ पर दमयन्ती नहीं मानी, उसके कहने पर गया उनके पास, तो तीनों ने ही अपनी गृहस्थी व खर्चों के रोने रो दिए।

रामनाथ स्वयं पर झुंझला गए, क्या जरूरत थी मुझे ऊँचा खानदान और इन्जीनियर दामाद देखने की, राधेश्यामजी का लड़का ही ठीक था, पर मुझे ही क्लर्क रास न आया, अब किसे दोष दूँ अपनी हैसियत से बढ़कर करने चला था, बेचारी दमयन्ती ने तो मना किया था, कि रिश्ता बराबरी में ही निभता है, ज्यादा ऊँचे मत उठो पर कहाँ मानी थी उसकी बात? और बेचारी को डाँटा था। वहाँ रिश्ता करता तो इतना जोड़ तोड़ तो नहीं करना पड़ता और फिर राधेश्यामजी ने सुरभि का हाथ माँगा था..... और.....। अब जो हो गया उसे पूरा तो करना ही पड़ेगा।

क्या करूँ बेटी को सुखी देखना कौन बाप नहीं चाहेगा? वेदप्रकाशजी का इकलौता लड़का वह भी इन्जीनियर, इस कारण वह रिश्ते को करने में उत्साही थी। वैसे वेदजी ने प्रत्यक्ष में तो कुछ भी माँग नहीं रखी, पर उनकी घूमा फिराकर बातें करने की तरकीब से इन्हें परेशानी हो रही थी, उनकी बातों का सार यही निकलता है कि किसी काम में कमी न रह जाए, वे भी अपनी सारी आकांक्षाएँ इसी विवाह में पूरी करेंगे, आखिर एक ही लड़का तो है। अभी कुछ दिन पहिले की ही तो बात है, वेदजी की दो लड़कियाँ सुरभि को देखने आई थी, क्योंकि रिश्ता तय होने के समय वे अपनी ससुराल थी, किसी कारणवश नहीं आ सकी..... दोनों ही कैसी तारीफों के पुल बाँध रही थी, हमारी शादी में पिताजी ने ये दिया, वो दिया, इतनी साड़ियाँ दी। यहाँ तक कि हमारी सास को भी सोने के झुमके दिए दमयन्ती तो उनकी बातों से डर ही गई। उनके जाने के बाद रामनाथजी से बोली, मुझे तो बड़ा डर लग रहा है, देखो ना वेदजी ने अपनी बेटियों को कितना कुछ दिया है और वह भी तीन-तीन बेटियों को। हम उनकी बराबरी कैसे कर पाएँगे? अब रामनाथ को भी चिन्ता हुई व बैचेनी सी लगने लगी फिर भी लापरवाही दिखाते हुए बोले, क्यों करेंगे उनकी बराबरी, जैसा हमसे बनेगा कर देंगे, वैसे भी वेदजी ने तो हमसे कुछ माँगा भी नहीं है।

भड़क उठी थी दमयन्ती, वाहजी आप भी कैसी बातें करते हो, इतना भी नहीं समझते? सभी को अपने जैसा ही सीधा समझते हो। याद नहीं उस दिन वेदजी कैसी घूमा फिराकर बातें कर रहे थे, आपको थोड़े ही समझ आयेगी। चौंके थे रामनाथ जो उन्हें कुछ याद आया.....हाँ वो कमरे वाली बात ही ना.....हाँ कैसा कह रहे थे कि सुरभि के लिए ऊपर बड़ा कमरा बनवाया है, छोटे कमरों में सामान रखने की कितनी परेशानी होती है? फिर आजकल की लड़कियों को तो सभी आराम की चीजें चाहिए उन्हें रखे कहाँ? टी.वी., कूलर और फ्रिज बिना तो जैसे दिन ही नहीं निकलते।

सच दमयन्ती मैं तो उनकी बातों से कुछ भी नहीं समझ पाया, मान गया तुम्हारी बुद्धि को.....हँस पड़ी दमयन्ती.....आप भी, कभी तो कहते हो औरत की बुद्धि एड़ी में होती है..... दोनों ही हँस पड़े। तभी दमयन्ती को भी याद आया..... वह बोली जानते हो उस दिन मैं रस्मों रिवाज के बारे में पूछने उनके घर गई तो समधिन ने भी कितनी चतुराई से मुझे कहा था कि कपड़े ढंग के न होंगे तो हमारी देवरानियाँ, जिठानियाँ ताने देंगी, उन्हें तो बस मौका मिलना चाहिए और कह रही थी उनके जेठ के बेटों के विवाह में भी बहुत अच्छा दिया था, हमारा भी तो ले देकर एक ही लड़का है, हमारा भी कुछ अच्छा तो लगना ही चाहिए। रामनाथ कुछ सोचते हुए बोले.....हाँ सभी ने मिलकर एक अच्छी भूमिका तैयार कर दी है, अब तो हमें भी समझना होगा।

विवाह का दिन भी आ ही गया, आज वेदप्रकाश जी बहुत खुश नजर आ रहे थे, खुश होते भी क्यूं नहीं उनके इकलौते पुत्र का विवाह जो था, बड़ी शान से आतिशबाजी के शोर शराबे और नवयुवकों के डिस्को डाँस के साथ बारात लड़की वालों के दरवाजे पर पहुँच गई, बारात का भव्य स्वागत हुआ। वेद जी बड़े प्रसन्न थे..... विवाह स्थल पर एक तरफ टी.वी., फ्रिज, वाशिंग मशीन व अन्य ढेरों सामान सजा था। वेदजी सोचने लगे, आज ये सभी मेरा होगा, आज तक तो देता आया हूँ, तीन बार दिया तब आज लेने का मौका आया है।

फेरों की रस्म पूरी होने पर रामनाथ ने वेदजी को बुलाकर हाथ जोड़कर विनम्र स्वर में कहा ..... श्रीमानजी बहुत मुश्किल से यह .....जुटा पाया हूँ, अपनी हैसियत से जैसा भी जुटा पाया हूँ स्वीकार कीजिए और कुछ कमी रह गई हो तो क्षमा करें.....आज से ये कंकू, कन्या आपकी हुई।

वेदजी के मन में विचार आया, अच्छा मौका है, क्यों न एक स्कूटर और माँग लूँ आज तक देता ही रहा हूँ, आज चूका तो शायद फिर कभी मौका न मिले, नज़र उठाकर एकटक रामनाथजी की ओर देखने लगे, कुछ पल यूं ही देखने के बाद बोले..... ठहरो.....। बेचारे रामनाथ स्तब्ध रह गए, उन्हें अपनी साँस अटकती सी लगी.....कहीं कुछ.....और न माँग लें.....? सभी विस्मित से देखने लगे।

वेदजी बोले, मुझे कुछ नहीं लेना, कुछ नहीं चाहिए मुझे। रामनाथ घबरा गए....मुझसे कोई भूल हो गई है क्या? वो थर थर काँपने लगे.....। तभी वेदजी का गम्भीर स्वर उभरा, गलती तुमसे नहीं, मुझसे होने जा रही थी.....। लेकिन तुमने बचा लिया। मैंने.....बचा लिया....। हाँ.....जानते हो आज मैंने तुम्हारी आँखों में अपने को देखा, एक बेबस, लाचार बाप को, जो अपनी तीन-तीन बेटियों के दहेज जुटाता-जुटाता बौखला गया जो दहेज देते समय उन बातों को कोसा करता, गालियाँ देता, मन ही मन कुढ़ता, आक्रोश को दबाता, ऊपर से बनावटी हँसी का लबादा ओढ़े रस्में निबाहता गया, उस वक्त जिस पीड़ा को झेला है, मैं ही जानता हूँ। अब तुम्हें उस पीड़ा को झेलने नहीं दूँगा, तुम भी तो यह तीसरा दहेज दे रहे

हो.....मैं जानता हूँ तुमने अपनी हैसियत से बढ़कर ये सब किया है, कैसे किया है इसका भी मुझे पता है? रामनाथ..... वेदजी को अपलक देखे जा रहे थे, उन्हें लगा वेदजी कोई असाधारण इन्सान नहीं.....देवता है.....। वह अपने समधी के पैरों में गिर पड़े.....धन्य हो वेदजी, काश सभी आदमी आप जैसा ही सोचने लगे..... तो किसी भी बाप को बेटी के जन्म पर क्षोभ न होगा।

रामनाथ की आँखें सजल हो आई....उन्हें लगा अभी कुछ देर पहिले जो मनोबोझ लिए घूम रहे थे मानों उतर गया। आज उन्हें वेदजी केवल एक बाप नज़र आए। एक बेटी के बाप।

शिक्षिका
15-न्यू त्रिमूर्ति कॉम्पलेक्स, हि.म.सं.4,
मनवाखेड़ा रोड, उदयपुर (राज.)-313002

परीक्षा

❒ उत्सव जैन

ऋतु परिवर्तन के साथ,
पढ़ाई में परिवर्तन आया है।
बरसात में पढ़े, सर्दी में याद किया,
गर्मी में अब परीक्षा का समय आया है।।1।।
निर्भीक होकर देवे परीक्षा,
यह हमें गुरुओं ने सिखाया है।
कोई दबाव नहीं, कोई डर नहीं,
हमनें सबकुछ याद किया है ।।2।।
अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होना
यही लक्ष्य बनाया है।
ऋतु परिवर्तन के साथ,
पढ़ाई में परिवर्तन आया है ।।3।।
आज के समय में सरल है पढ़ाई,
मन लगा के परीक्षा देना है।
वर्षभर की हमने पढ़ाई,
अब सफलता पाना है ।।4।।
परीक्षा देने से ऊर्जा बढ़ती है,
ज्ञान में बढ़ोत्तरी होती है।
एकाग्रचित्त हो जाते हम,
जब परीक्षा की घड़ी आती है ।।5।।
परीक्षा में दृढ़ संकल्पित हो जाते,
अब तो अच्छे अंक लाना है।
आने दो परीक्षा,
सफलता निश्चित पाना है।।

वरिष्ठ सहायक
आदर्श रा.उ.मा.वि. बागीदौरा, बाँसवाड़ा-327603
मो: 9460021783

वंश का दंश

❒ मुरारी लाल कटारिया

'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' - नारा सार्थक बन पाए, आवश्यकता है साहस की, समानता की, धैर्य की, रूढ़िवाद से हटने की, लकीर का फकीर न बनने की! बेटा नहीं, तो वंश कैसे बढ़ेगा? वंश.... वंश!

हवा के झोंके ने उसके दिमाग में उमड़ते बादलों को बरसने को उद्विग्न कर दिया। वह खो गया, बह गया उस निर्झर में डुबकियाँ लगाने को, जो उसके जीवन में अमृत-धारा बनकर प्रवाहित हुआ था। स्वर्णिम युवावस्था में सुन्दर, सुशील, सुकोमल संगिनी पाकर वह खिल उठा था। रंगीन दुनिया हरे भरे खेतों की हरियाली के साथ-साथ रंगबिरंगे फूलों की मदहोश सुगन्ध उसके हृदय की तरंगों को उद्विग्न करती रही!

अध्यापन के संग अध्ययन भी जारी रखा। वह कब पिता बन गया, पता न चला। एक के बाद एक चार पुत्र उसके कुल की वृद्धि करने, चार चाँद लगाने, घर की शोभा बढ़ाने लगे। एक कन्या के जन्म लेने की इच्छा हुई, परन्तु फलीभूत न हुई। वह ईश्वर से प्रार्थना करता ही रह गया। समय दौड़ने लगा। उसके भाइयों के विवाह हुए। उनके घरों में कन्याओं ने जन्म लिया। परिवार बढ़ता चला गया। भाइयों की पत्नियाँ उलाहना देती-'दादा' को अर्थात उसे कन्या चाहिए थी, हमें ही मिली।

संतानें बढ़ने लगीं-वटवृक्ष बढ़ने लगा। सघन छाया बढ़ने लगी। उसके पुत्रों और भतीजियों का विवाहोपरांत परिवार बढ़ता चला गया। उसके पुत्रों के जीवन में भी उल्लास छाने लगा। तीन पुत्रों की वधुओं को दो-दो पुत्रियाँ जन्मी। चौथे पुत्र की पत्नी की अभी गोद नहीं भरी थी। वह पोतियों को पाकर प्रसन्न था। सावन के झूलों में झूलता था।

दूसरे नम्बर की पोती की शादी पहले तय हुई। वह इंजीनियरिंग की पढ़ाई कराने वाले युवा संग ब्याही गई। सबसे बड़ी पोती सी.ए. कर वर्ल्ड बैंक की सेवा में लग गई और उसका वर भी सी.ए. था। वह भी गुड़गाँव में पदस्थापित हो गया। उसकी बहिन वकालत की पढ़ाई में व्यस्त हो गई। वंश बढ़ता गया।

वह अपने परिवार की इस तरह वृद्धि देख आह्लादित हो उठता। उसका मन-मयूर नाच उठता। एक और पोती वाणिज्य वर्ग में स्नातक हो गयी तो उसकी छोटी बहिन बी.टेक. में सफलता की सीढ़ियाँ तय करने लगी। सबसे छोटी पोती बारहवीं विज्ञान-गणित की तैयारी में जुटी हुई थी। प्रभु की कृपा से अब वह वट वृक्ष की सघन छाया तले अंतिम पड़ाव में आनन्द ही आनन्द ले रहा था। बच्चे खुशियाँ बाँट रहे थे। उसके जीवन में अनेकानेक अंधड़, तूफान आते रहे, फिर भी वह विचलित नहीं हुआ। कुछ वर्ष पूर्व उसकी जीवनसंगिनी उसे अकेला छोड़ गई थी। असीम वेदना हुई। फिर भी वह हताश होकर अकर्मण्य नहीं बन गया। अपने पुत्रों के व्यवसाय में साथ बँटाने लगा। रिक्तता को भरने लगा।

शारीरिक क्षीणता उसे कभी-कभी उद्विग्न करती, परन्तु वह टूटा नहीं। उसने सोचा 'बेटी-बचाओ-बेटी पढ़ाओ' नारा तो कुछ वर्ष पूर्व का है। वह तो पिछले पाँच दशक से इसका पक्षधर रहा है। सज्जन व मित्रगण कहते-तुम्हारा वंश कैसे चलेगा वह मन ही मन मुस्करा उठता। वंश बचाने की बात उसे सालती अवश्य थी। फिर सोचने लगता-एक पीढ़ी में भाई-भाई, दूसरी पीढ़ी में चचेरे भाई, तीसरी पीढ़ी में बिरादरी और अगली-पीढ़ी में दूर का रिश्तेदार।

यह सब कुछ उसके जेहन पर हथौड़े की तरह चोट करता? फिर वंश कौन चलाएगा? कुछ वर्षों बाद वंश की धार भोंटी होने लगती। अलगाववाद हावी होने लगता। वातावरण में मधुरता का स्थान कुण्ठा लेने लगती। मिठास की भी सीमा होती है। अधिक मीठा भी कड़वाहट का अहसास कराता है। वस्त्र बदलना आवश्यक है। नवीनता का द्योतक है। पाने के स्थान पर देने की इच्छा बलवती होती गई। स्वतंत्रता-सेनानी चाचा ने मार्ग प्रशस्त किया था। कन्या के जन्म पर अवसाद नहीं, पुत्र के जन्म पर ढोल पीटने से दूरी बनाए रखना-यह अद्भुत सूत्र उसे व उसके परिवार को जोड़ हुए था। वंश के दंश से मुक्त रखे हुए था।

554, शास्त्री नगर,
दादाबाड़ी कोटा-324009

आदेश-परिपत्र : सितम्बर, 2018

1. शांति कुंज, हरिद्वार द्वारा आयोजित भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा–2018 के आयोजन में सहयोग प्रदान करने बाबत।
2. शांति कुंज, हरिद्वार द्वारा आयोजित भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा–2018 के आयोजन में सहयोग प्रदान करने हेतु।
3. राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अनुपयोगी निःशुल्क पाठ्यपुस्तकों की नीलामी के संबंधी में।
4. शिक्षा सत्र 2018–19 में कक्षा 7 व 8 में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक भ्रमण के क्रम में।
5. वर्ष 2011–12 एवं 2012–13 में अध्यापकों के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा के अंतर्गत देय वित्तीय सहायता राशि स्वीकृति के संबंध में।
6. हितकारी निधि के अन्तर्गत माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा में कार्यरत कार्मिकों के बच्चों को व्यवसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर वित्तीय सहायता हेतु प्रार्थना–पत्र आमंत्रण की अन्तिम तिथि 15.10.2018।
7. विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम, 8. शिविरा पञ्चाङ्ग सितम्बर– 2018

1. शांति कुंज, हरिद्वार द्वारा आयोजित भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा–2018 के आयोजन में सहयोग प्रदान करने बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/मा/स/22448/2014–18/21 दिनांकः 12.07.2018 ●समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक प्रथम/द्वितीय ● विषयः शांति कुंज, हरिद्वार द्वारा आयोजित भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा–2018 के आयोजन में सहयोग प्रदान करने बाबत। ● प्रसंगः– राज्य सरकार का पत्रांकः प.16(36) शिक्षा–6/2004, जयपुर, दिनांकः 23.09.2014 एवं जिला सचिव, भा.सं.ज्ञा. परीक्षा प्रकोष्ठ, बीकानेर का पत्रांकः भासंज्ञाप/2018/05 दि. 01.07.2018

उपर्युक्त विषयान्तर्गत राज्य सरकार द्वारा प्रासंगिक पत्र में पूर्व प्रदत्त निर्देशों के क्रम में जिला सचिव, भा.सं.ज्ञा. परीक्षा प्रकोष्ठ, बीकानेर द्वारा अवगत करवाया गया है कि भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा–2018 का आयोजन दिनांकः 25 अक्टूबर, 2018 (गुरुवार) को दोपहर 12.00 बजे से 1.00 बजे तक किया जाएगा, जिसमें कक्षा–5 से 12 तक के विद्यार्थी भाग ले सकेंगे।

शासन के प्रासंगिक निर्देशों के क्रम में लेख है कि अधीनस्थ संस्थाप्रधानों को विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी उक्त परीक्षा के सुचारू संचालन हेतु आयोजकों को वांछित सहयोग प्रदान करने हेतु निर्देशित करें।

● **(मूलचंद मीना)** उप निदेशक (माध्यमिक), माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

2. शांति कुंज, हरिद्वार द्वारा आयोजित भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा–2018 के आयोजन में सहयोग प्रदान करने हेतु।

● कार्यालय निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/प्रारं/शैक्षिक/एबी/3531/शाँति कुँज/2018/04 दिनांकः 26.07.2018 ● उप निदेशक प्रारंभिक शिक्षा (समस्त), जिला शिक्षा अधिकारी–प्रारंभिक शिक्षा (समस्त) ● विषयः शांति कुंज, हरिद्वार द्वारा आयोजित भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा–2018 के आयोजन में सहयोग प्रदान करने हेतु। ● प्रसंगः शासन का पत्रांक प. 16 (36) शिक्षा–6/2004 जयपुर दिनांक 23.09.2014 एवं जिला सचिव, भा.सं.ज्ञा. परीक्षा प्रकोष्ठ, बीकानेर का पत्र दिनांक 01.07.2018।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत एवं प्रासंगिक पत्र के क्रम में जिला सचिव, भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रकोष्ठ, शांति कुँज हरिद्वार (उत्तराखंड), जिला शाखा, बीकानेर द्वारा यह अवगत कराया गया है कि विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी शांति कुँज, हरिद्वार द्वारा भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन दिनांक 25 अक्टूबर, 2018 गुरुवार को दोपहर 12.00 बजे से 01.00 बजे तक करवाया जा रहा है।

अतः आप अपने अधीनस्थ संस्थाप्रधानों को उक्त परीक्षा में वांछित सहयोग प्रदान करने हेतु निर्देशित करें।

●जिला शिक्षा अधिकारी, प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

3. राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अनुपयोगी निःशुल्क पाठ्यपुस्तकों की नीलामी के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः उनि/सशि/विविध/एफ–502/वो.–III/विविध/2017–18/52 दिनांकः 08.08.2018 ● समस्त उप निदेशक माध्यमिक शिक्षा, समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक (प्रथम/द्वितीय) ● विषयः राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अनुपयोगी निःशुल्क पाठ्यपुस्तकों की नीलामी के संबंध में। ● प्रसंगः इस कार्यालय का समसंख्यक पत्रांक 41 दिनांक– 20.04.2018 एवं शासन का पत्रांक प. 6 (1) वित्त/ साविलेनि/ 015 पार्ट–। जयपुर दिनांक 21.06.2018

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक परिपत्र के क्रम में लेख है कि राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को प्रतिवर्ष निःशुल्क पाठ्यपुस्तकों का वितरण किया जाता है। वितरित निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें सत्रपर्यन्त उपयोग के बाद, सत्रावसान पर प्राप्त कर नए सत्र में विद्यार्थियों को पुनः 50 प्रतिशत वितरित की जाती है। प्रायः देखा गया है कि कुछ विद्यालयों में विद्यार्थियों द्वारा कटी–फटी पुस्तकें भी जमा करवा दी जाती हैं। यह कटी–फटी पुस्तकें अनुपयोगी होने के कारण पुनः पढ़ने योग्य नहीं होती हैं। पाठ्यक्रम परिवर्तन के उपरांत अनेक विद्यालयों में अप्रचलित पाठ्यक्रम की अवितरित नई पुस्तकें भी शेष रह जाती हैं। ये निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें भी विद्यार्थियों हेतु अनुपयोगी है। इस प्रकार की पाठ्यपुस्तकें विद्यालयों में अनावश्यक स्थान/कक्ष घेरती हैं।

इन पुरानी जीर्ण–शीर्ण एवं अप्रचलित पाठ्यक्रम की पाठ्यपुस्तकों का निस्तारण करने के लिए GF & AR-II के नियम 16 से 27 में नीलामी प्रक्रिया हेतु उक्त सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियमों की पालना करते हुए दिनांक 30.06.2018 तक संपूर्ण नीलामी प्रक्रिया प्रासंगिक परिपत्र में प्रदत्त दिशा–निर्देशों के अनुरूप विद्यालय स्तर पर संपादित करने के निर्देश जारी किए गए थे। वित्त विभाग के आदेशानुसार नीलामी प्रक्रिया तिथि 30.09.2018 तक बढ़ा दी गई है। निर्धारित तिथि तक निस्तारण करने के लिए प्रत्येक स्तर पर प्रबोधन की आवश्यकता है।

GF & AR-II के नियम 17 एवं 18 के अनुसार अनुपयोगी/

अप्रचलित घोषित करने के लिए संपूर्ण कारणों का उल्लेख करते हुए एस.आर.-5 एवं 6 में विवरण संधारित करें। नीलामी से प्राप्त राजस्व को विभागीय आय मान कर वित्तीय एवं लेखा नियमानुसार अभिलेख संधारित करते हुए माध्यमिक शिक्षा के राजस्व बजट मद में जमा करवाकर इस कार्यालय को दिनांक 07 अक्टूबर 2018 तक अवगत करावें। इस क्रम में अग्रांकित निर्देशों की पालना सुनिश्चित की जाए।

उपनिदेशक स्तर पर

1. अधीनस्थ जिले के जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक की बैठक आयोजित कर अब तक की प्रगति एवं आगामी प्रक्रिया की योजना बनाकर नीलामी संबंधित कार्यवाही का प्रबोधन करेंगे।
2. यदि नीलामी संबंधित कार्यवाही आरम्भ नहीं की गई है तो संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी से कमेटी गठन की कार्यवाही सुनिश्चित करवाएँगे।
3. यदि नीलामी प्रक्रिया में कोई शंका/समस्या हो तो जिले के कोषाधिकारी/उपकोषाधिकारी से आवश्यक परामर्श प्राप्त किया जा सकता है।

जिला शिक्षा अधिकारी स्तर पर

1. इस कार्य के लिए जिला शिक्षा अधिकारी की अध्यक्षता में जिला स्तरीय कमेटी का गठन करें। इस कमेटी में राजपत्रित अधिकारी, वरिष्ठ पुस्तकालयाध्यक्ष, कार्यालय में पदस्थापित लेखाधिकारी/सहायक लेखाधिकारी (प्रथम/द्वितीय) व लिपिकीय कार्य हेतु मंत्रालयिक कर्मचारी को भी नीलामी कमेटी में शामिल करेंगे। यदि कार्यालय में लेखा संवर्ग के अधिकारी पदस्थापित नहीं है तो जिला कोष कार्यालय से सम्पर्क कर समुचित व्यवस्था करावें। यह कमेटी आवश्यक योजना बनाकर जिला स्तर पर नीलामी प्रक्रिया का प्रबोधन करेगी।
2. संस्थाप्रधानों को उक्त संबंध में तत्काल आवश्यक दिशा-निर्देश जारी कर प्रबोधन किया जाए।
3. अधीनस्थ विद्यालयों में नीलामी प्रक्रिया प्रदत्त निर्देशों के अनुरूप निर्धारित समय अवधि में सुनिश्चित करवाई जाए तथा संस्थाप्रधानों से वाक्पीठ एवं ब्लॉक नोडल केन्द्र पर प्रतिमाह आयोजित की जाने वाले मासिक बैठक में सूचनाएँ अग्रांकित परिशिष्ट 1 एवं 2 में संकलित करें।
4. समस्त सूचनाएँ ब्लॉक नोडल केन्द्र के माध्यम से संकलित करने के उपरांत जिला स्तर पर गठित कमेटी के माध्यम से नीलामी प्रक्रिया हेतु निविदा आमंत्रित कर प्रक्रिया पूर्ण की जाए।
5. निविदा आमंत्रित करते समय निविदा की सामान्य शर्तों के अंतर्गत यह अति आवश्यक रूप से शामिल किया जाए कि सफलतम निविदादाता को प्रत्येक विद्यालय से स्वयं के स्तर पर नाकारा (अनुपयोगी/जीर्ण-शीर्ण) पाठ्यपुस्तकें उठानी होगी।
6. गत शैक्षिक सत्रों में विद्यार्थियों के अध्ययन पश्चात् जमा की गई जीर्ण-शीर्ण निःशुल्क पाठ्यपुस्तकों एवं अप्रचलित पाठ्यक्रम की स्टॉक रजिस्टर के अनुसार पाठ्यपुस्तकों का निस्तारण सामान्य वित्त एवं लेखा नियमों के इस कार्यालय के पत्र दिनांक 20.04.2018 के अनुसार बोलीदाता से प्राप्त निविदा राशि को अग्रांकित मद में जमा करवाकर प्रमाण-पत्र प्रेषित किया जाए:-

राजस्व मद-

0202- शिक्षा, कला, संस्कृति, 01- सामान्य शिक्षा, 102- माध्यमिक शिक्षा, (02)- (पाठ्यपुस्तकों की प्राप्तियाँ)

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि जिले में अप्रचलित/अनुपयोगी/नाकारा निःशुल्क पाठ्यपुस्तकों का नियमानुसार शत-प्रतिशत निस्तारण जिला स्तर पर संपन्न करवा दिया गया है तथा प्राप्त राजस्व अखरे रुपये..... को दिशा-निर्देशानुसार बजट मद में जमा करवा दिया गया है। चालान की प्रति संलग्न है।

जिला शिक्षा अधिकारी
माध्यमिक शिक्षा....

संस्थाप्रधान स्तर पर (समस्त सूचनाएँ जिला शिक्षा अधिकारी मा. को प्रेषित करें)

1. संस्थाप्रधान विद्यालय में उपलब्ध अनुपयोगी/अप्रचलित/ नाकारा निःशुल्क पाठ्यपुस्तकों से संबंधित जीएफएंडआर. पार्ट-2 के प्रपत्र एसआर.-5 व 6 में उपलब्धता एवं भौतिक सत्यापन रिपोर्ट प्रस्तुत करेंगे। साथ ही संलग्न परिशिष्ट-1 व 2 में सूचनाएँ संकलित कर ब्लॉक नोडल केन्द्र पर आयोजित की जाने वाली मासिक बैठक में आवश्यक रूप से उपलब्ध करवाएँगे।
2. जिस सत्र में निःशुल्क पाठ्यपुस्तक अनुपयोगी हुई है, उस सत्र की नामांकन एवं प्रेषित माँग पत्र की कार्यालय प्रति की सत्यापित प्रतियाँ प्रस्तुत करेंगे।
3. वितरित की गई एवं अधिशेष रही पुस्तकें जो वर्तमान में अप्रचलित /अनुपयोगी/नाकारा घोषित की जा रही है, उनका सम्पूर्ण विवरण व तुलनात्मक तालिका प्रस्तुत करेंगे।

जीर्ण-शीर्ण निःशुल्क पाठ्यपुस्तकों के लिए **परिशिष्ट-1**

क्र.सं.	सत्र	अनुपयोगी/नाकारा पाठ्यपुस्तकों की संख्या	वजन (किलोग्राम)	विशेष विवरण

अप्रचलित पाठ्यक्रम की निःशुल्क पाठ्यपुस्तकों के लिए

परिशिष्ट-2

क्र. सं.	सत्र	कक्षा	नामांकन	विषय	प्रेषित माँग	प्राप्त निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें	वितरित निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें	अधिशेष रहीं पाठ्य पुस्तकों की संख्या	वजन (किग्रा.)	अधिशेष रहने का कारण

विशेषः- विद्यालय में अप्रचलित पाठ्यक्रम की उपलब्ध पुस्तकों में से प्रत्येक विषय की एक प्रति पुस्तकालय में संधारित की जाए। ये

पुस्तकें भविष्य में संदर्भ पुस्तकों में रूप में काम आ सकती है।

4. अधिशेष अप्रचलित/अनुपयोगी/नाकारा अवितरित पुस्तकों के संबंध में संस्थाप्रधान एवं संबंधित प्रभारी अपने स्तर पर निस्तारण हेतु किए गए प्रयासों की प्रयासों की प्रतियाँ उपलब्ध करावें।
5. अप्रचलित/अनुपयोगी/नाकारा पुस्तकों की नीलामी/निस्तारण की ईकाई किलोग्राम में होती है अतः उपलब्ध उक्तानुसार पुस्तकों का विद्यालय स्तर पर वजन करवाकर व सत्रवार अधिशेष रहीं पाठ्य पुस्तकों का बण्डल बनवाकर सही वजन प्रस्तुत करें ताकि नीलामी/निस्तारण की आवश्यक कार्यवाही जिला स्तर पर संपादित की जा सकें।

● **(ब्रह्मदत्त शर्मा)** वित्तीय सलाहकार, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

4. शिक्षा सत्र 2018-19 में कक्षा 7 व 8 में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक भ्रमण के क्रम में।

● कार्यालय निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/प्रारं/शैक्षिक/सी-एफ/3664/ सीएम घोषणा/शैक्षिक भ्रमण/2018-19/1 दिनांकः 13.08.2018 ● उप निदेशक प्रारंभिक/माध्यमिक शिक्षा (समस्त) जिला शिक्षा अधिकारी प्रारंभिक /माध्यमिक शिक्षा (समस्त) ● विषयः शिक्षा सत्र 2018-19 में कक्षा 7 व 8 में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक भ्रमण के क्रम में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत विद्यार्थियों के लिए शैक्षिक भ्रमण के संबंध में योजना एवं वित्तीय प्रावधान राज्य सरकार के पत्रांक प.1 (17) 9 शिक्षा-1/प्राशि/2010 दिनांक 01.09.2011 के द्वारा स्वीकृत किया गया। इसकी पालना में सत्र 2018-19 के लिए शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम का टाईम फ्रेम जारी किया जा रहा है। योजना के अनुसार राजकीय विद्यालयों में कक्षा 7 व 8 में अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण का कार्यक्रम निर्धारित किया गया है। वित्तीय वर्ष 2018-19 में अन्तर्जिला शैक्षिक भ्रमण के लिए स्वीकृत प्रावधान के अनुसार राशि अलग से जारी की जा रही है। अन्तर्जिला शैक्षिक भ्रमण का दायित्व जिला शिक्षा अधिकारी, प्रारंभिक शिक्षा तथा सर्किल आर्गनाईजर सीओ स्काउट एवं गाईड (नोडल अधिकारी) को दिया जाता है। कार्यक्रम की क्रियान्विति निम्नानुसार की जानी हैः-

क्र.सं.	कार्यक्रम	तिथि/अवधि
1.	जिशिअ. प्रारं. शिक्षा कार्यालय में संस्थाप्रधान के माध्यम से छात्र-छात्राओं के आवेदन प्राप्त करना।	12.9.18 तक
2.	जिशिअ. प्राशि. द्वारा प्राप्त आवेदन पत्रों में से वरीयता के आधार पर निर्धारित संख्या में छात्र-छात्राओं का चयन कर संबंधित को सूचित करना।	28.9.18 तक
3.	उपनिदेशक द्वारा अन्तर्जिला शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम का अनुमोदन करना।	8.10.18 तक
4.	पाँच दिवसीय अन्तर्जिला शैक्षिक भ्रमण की अवधि	29.10.18 से 2.11.18 तक

योजना की क्रियान्विति सुनिश्चित करावें। इसी क्रम में अतिरिक्त आयुक्त, राजस्थान प्रारंभिक शिक्षा परिषद्, जयपुर के पत्रांकः राप्राशिप/जय/औशि/2014-15/8519/दिनांक 20.08.14 (छाया प्रति संलग्न) के द्वारा छात्र-छात्राओं को शैक्षिक भ्रमण पर ले जाने में बरती जाने वाली सावधानियों के क्रम में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा दिनांक 28 जुलाई, 2014 को जारी किए गए दिशा-निर्देशों (छाया-प्रति संलग्न) भी प्रसारित किए जाने है, जिनमें संलग्न पत्र के अनुसार Standard Safety measures के बिन्दु लिखे हैं। उक्त दिशा-निर्देशों की पालना में किसी प्रकार की लापरवाही नहीं बरती जावे। समय-समय पर कार्यक्रम की प्रगति के बारे में इस कार्यालय को अवगत करवाया जावे तथा शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम की समाप्ति के पश्चात् लाभान्वित विद्यार्थियों की संख्या आगामी कार्यदिवस में इस कार्यालय को विभाग की ई-मेल आई.डी.- shakshikcelledu@gmail.com पर आवश्यक रूप से उपलब्ध करवाना सुनिश्चित करावें।

●संलग्न : उपर्युक्तानुसार

● **श्याम सिंह राजपुरोहित** (आई.ए.एस.), निदेशक प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

(i) ● कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● प्रारम्भिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए राजस्थान दर्शन शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा का आयोजन करने के संबंध में योजना।

विद्यार्थियों को शैक्षिक ज्ञान के साथ-साथ राज्य के परिवेश, भौगोलिक स्थिति, प्राकृतिक स्थिति, ऐतिहासिक स्थल एवं सांस्कृतिक स्थलों की व्यावहारिक जानकारी उपलब्ध करवाई जानी भी उपयोगी सिद्ध हो सकती है, इस हेतु योजना निम्नानुसार हैः-

1. उद्देश्य :-

1. राज्य के ऐतिहासिक/सांस्कृतिक/प्राकृतिक धरोहरों से परिचित करवाना।
2. स्थापत्यकला की जानकारी कराना।
3. विद्यार्थियों को प्राकृतिक धरा का आनंद उठाने का अवसर प्रदान करना।
4. विद्यार्थियों को सामुदायिक जीवन से ओतप्रोत करना।
5. विद्यार्थियों में पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त अन्य ज्ञान की वृद्धि करना।

2. शैक्षिक भ्रमण :-

अन्तर्जिला शैक्षिक भ्रमण एवं विद्यार्थी योग्यता-

1. राजकीय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 7 व 8 के विद्यार्थियों को प्रतिवर्ष दीपावली अवकाश में राज्य के अन्य जिले में 5 दिवसीय राजस्थान दर्शन कार्यक्रम अन्तर्गत शैक्षिक भ्रमण हेतु भेजा जाएगा।

2. योग्यताः-

- राजकीय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 7 व 8 के विद्यार्थी जिन्होंने गत परीक्षा कक्षा 6 व 7 में न्यूनतम 70 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हों।
- राष्ट्रीय/राज्य स्तर पर सांस्कृतिक/साहित्यिक/खेलकूद/स्काउट एवं गाइड प्रतियोगिता में भाग लेकर सहभागी/विजेता रहे हों।

3. विद्यार्थियों एवं अध्यापकों की संख्याः–

अन्तर्जिला शैक्षिक भ्रमण–प्रत्येक जिले के 24 विद्यार्थी (कक्षा 7 के 12 व कक्षा 8 के 12) एवं 02 अध्यापक।

4. मेरिट का निर्धारण :–

अन्तर्जिला शैक्षिक भ्रमण के लिए विद्यार्थियों का चयन पूर्णतः वस्तुनिष्ठ प्रणाली (Objective Pattern) के आधार पर निम्नानुसार किया जाएगा।

अ प्रतिभावान (Scholor) के आधार पर जिले की वरीयता से प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा के 6+6 छात्र, कुल 12 (प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय) का चयन होगा।

ब गतिविधियाँ (Activities) राज्य पुरस्कार/तृतीय सोपान प्राप्त स्काउट एवं गाइड प्रतियोगिताओं में सहभागिता के आधार पर 12 विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा। कुल 24 विद्यार्थियों का दल होगा। चयन हेतु छात्र–छात्रा द्वारा गत परीक्षा में प्राप्तांक प्रतिशत के आधार पर गणना की जाएगी।

5. विद्यार्थियों से आवेदन प्राप्त करना एवं चयन प्रक्रिया–

अन्तर्जिला शैक्षिक भ्रमण–जिला शिक्षा अधिकारी प्रारम्भिक शिक्षा द्वारा जिले में संस्थाप्रधान के माध्यम से प्रतिवर्ष विभाग द्वारा निर्धारित समय पर प्राप्त आवेदन पत्रों का अवलोकन कर निर्धारित मेरिट प्रक्रिया के द्वारा शैक्षिक भ्रमण हेतु विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा। चयनित विद्यार्थियों को दीपावली अवकाश के समय राज्य के अन्य ज़िलों के लिए ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व के स्थानों पर पाँच दिवस के लिए भ्रमण पर भेजा जाएगा।

6. यात्रा व्यय– विद्यार्थियों की यात्रा का संपूर्ण व्यय राज्य सरकार वहन करेगी। इस हेतु बजट राज्य सरकार द्वारा उपलब्ध करवाया जाएगा। यह बजट संबंधित नोडल अधिकारी को आंवटित किया जाएगा जो संबंधित दिशा निर्देशों एवं वित्तीय नियमों की पालना करते हुए व्यय करेगा। अध्यापक की यात्रा का संपूर्ण व्यय यात्रा भत्ता नियमों के तहत राजकीय मद से देय होगा। यह विद्यार्थियों के व्यय में सम्मिलित नहीं होगा तथा समस्त लेखे विधिवत संधारित करते हुए व्यय विवरण **सहायक लेखाधिकारी योजना एवं लेखाधिकारी बजट प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर** को नियमानुसार यथासमय प्रस्तुत करेंगे।

7. नोडल अधिकारी–अन्तर्जिला शैक्षिक भ्रमण– जिला शिक्षा अधिकारी प्रारम्भिक शिक्षा तथा सर्किल ऑर्गनाइजर स्काडट/गाइड द्वारा भ्रमण की योजना का निर्माण किया जाएगा तथा अपने जिले में आने वाले दल के भ्रमण तथा आवास आदि की व्यवस्था की जाएगी।

8. प्रारम्भिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए राजस्थान दर्शन शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा का आयोजन करने के संबंध में अनुमानित व्यय का विवरण–

(अ) विभिन्न मदों में अनुमानित व्यय हेतु विवरण प्रति विद्यार्थी प्रस्तावित व्यय (रुपयों में) किराया– 1500/– भोजन–600 अल्पाहार–300/ आवास–500/ स्टेशनरी–200/– अन्य व्यय–186, कुल व्यय प्रति विद्यार्थी 3286/–

(ब) प्रतियोगिताओं में प्रथम से तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार राशि निम्नानुसार देय होगीः–

प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को 350/–

द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को 250/–

तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को 200/–

9. भ्रमण के दौरान समस्त संभागी विद्यार्थी एवं एस्कोर्ट शिक्षक जिला मुख्यालय पर स्थित स्काउट हैड क्वार्टर पर ठहरेंगे।

10. अध्यापक का चयन–स्काउट/गाइड अध्यापक को प्राथमिकता दी जाएगी।

11. संभाग स्तर पर शिक्षा उपनिदेशक प्रारम्भिक तथा सहायक राज्य संगठन आयुक्त (ए.एस.ओ.सी.) यात्राओं का अनुमोदन तथा उनके परिक्षेत्र में आने वाले दलों की यात्रा एवं व्यवस्था का परिवीक्षण करेंगे। व्यय का संपूर्ण समायोजन कर अपने कार्यालय के सहायक लेखाधिकारी से जाँचोपरान्त प्रेषित करेंगे।

एक जिले के दल व भ्रमण का कार्यक्रम निर्धारण संबंधित संभाग के उपनिदेशक एवं सहायक राज्य संगठन आयुक्त द्वारा किया जाएगा।

12. भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों की कुछ प्रतियोगिताएँ यथा–**भ्रमण आलेख, क्विज, सांस्कृतिक प्रतियोगिताएँ** आदि भी आयोजित की जाएँ तथा प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार वितरण भी किया जाएगा।

13. प्रतिवेदन– अन्तर्जिला दर्शन हेतु शैक्षिक एवं साँस्कृतिक यात्रा में भाग लेने वाले सभी विद्यार्थी विधिवत यात्रा वृतान्त लिखेंगे, इस हेतु उन्हें एक डायरी एवं एक बॉलपैन उपलब्ध कराया जाएगा। सभी संभागियों में से किसी एक को मुख्य प्रतिवेदक (Chief Reporter) यात्रा के प्रबंधक नोडल अधिकारी द्वारा नामित किया जाएगा जो यात्रा उपरान्त सभी यात्रा सहभागी अध्यापकों/विद्यार्थियों से उनकी रिपोर्ट प्राप्त कर समेकित प्रतिवेदन तैयार कर संबंधित नोडल अधिकारी को प्रस्तुत करेंगे।

● निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

शिक्षा सत्र 2018–19 में कक्षा 7 व 8 में अध्ययनरत विद्यार्थियों के राजस्थान दर्शन शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा हेतु छात्र/छात्रा आवेदन पत्र।

(शैक्षिक सत्र 2017–18 की उपलब्धि के आधार पर)

1. छात्र/छात्रा का नाम.....
2. पिता का नाम .....
3. जन्म तिथि .....
4. कक्षा (जिसमें अध्ययनरत है) .....
5. विद्यालय का नाम .....
6. विद्यालय स्कॉलर रजिस्टर क्रमांक .....
7. घर/पत्र व्यवहार का पता .....

फोटो

.....

8. घर का फोन नम्बर ..... मोबाइल नं.....

9. शैक्षिक सत्र 2017-18 में उत्तीर्ण परीक्षा का विवरण-

कक्षा	कुल अंक	प्राप्तांक	उत्तीर्ण %
कक्षा 6 (कक्षा 7 में अध्ययनरत)			
कक्षा 7 (कक्षा 8 में अध्ययनरत)			

10. शैक्षिक सत्र 2017-18 में शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित खेलकूद गतिविधि में सम्भागित्व (प्रमाण-पत्र की प्रमाणित प्रति संलग्न करें):-

स्तर	गतिविधि का नाम	आयोजन स्थल
1. राष्ट्र स्तर		
2. राज्य स्तर		

11. शैक्षिक सत्र 2017-18 में शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित साहित्यिक, सांस्कृतिक गतिविधि में सम्भागित्व (प्रमाण-पत्र की प्रमाणित प्रति संलग्न करें) :-

स्तर	गतिविधि का नाम	आयोजन स्थल
1. राष्ट्र स्तर		
2. राज्य स्तर		

आवेदन पत्र के साथ मेरे द्वारा आवश्यक प्रमाणित प्रमाण-पत्र संलग्न कर दिए गए हैं। आवेदन पत्र में अंकित सभी तथ्य पूर्णतया सत्य हैं। मैं अन्तर्जिला शैक्षिक भ्रमण हेतु जाना चाहता/चाहती हूँ।

छात्र/छात्रा के हस्ताक्षर

अभिभावक द्वारा सहमति

मैं (नाम).....अपने पुत्र/पुत्री (नाम).....को विभाग द्वारा आयोजित अन्तर्जिला शैक्षिक भ्रमण पाँच दिवसीय राजस्थान दर्शन यात्रा पर भेजने के लिए अपनी सहमति प्रदान करता हूँ। मेरा पुत्र/पुत्री यात्रा हेतु पूर्णतया स्वस्थ है तथा किसी गंभीर रोग से ग्रस्त नहीं हैं।

हस्ताक्षर

(नाम अभिभावक)

संस्थाप्रधान द्वारा प्रमाणित

आवेदन पत्र में अंकित सभी सूचनाओं एवं प्रलेखों की सत्यता की जाँच स्वयं मेरे द्वारा कर ली गई हैं। छात्र/छात्रा के अन्तर्जिला शैक्षिक भ्रमण के लिए अनुशंसा की जाती है।

(हस्ताक्षर संस्थाप्रधान मय मोहर)

(ii) संयुक्त सचिव, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग, शास्त्री भवन, भारत सरकार नई दिल्ली के पत्रांक- D.O. No. 32-5/2014-RMSA-I, July-28, 2014

(ii) Dear

1. Recent tragedy involving students on study tour has once again underlined the need for putting in place a set of standard safety measures by the institutions that undertake such tours.
2. States have been organising study tours for its students and teachers in schools under various schemes of the States as well as Government of india such as the SSA, RMSA etc. There is a need to ensure basic safety measures before a school embarke on such tours.
3. States are requested to kindly issue appropriate guidelines so that necessary safety measures are in place across all schools. Please find enclosed a set of recommendations on the subject that you may like to consider while formulating the State guidelines.

● Yours sincerely **(Radha Chauhan)**

Standard safety measures

i. The Head of the Institution should ensure that the tour undertaken is required for the benefit of students and is related to the curriculum of the course in which such students are enrolled.

ii. The Head of the Institution should ensure issuing security i-cards to all such students and maintain a separate data base of the personal details like guardian/local guardian, home address, mobile, email etc. of such students and the same is carried by the Student on his person.

iii. The Head of the Institution should ensure that written permission) of one of the parents or the local guardian is submitted on behalf of every such student wanting to participate in an educational tour.

iv. The Head of the Institution should ensure that there is a senior teacher accompanying the students on such an educational tour. Further, a senior lady teacher should accompany if there are girl students Participating in the educational tour.

v. The Head of the Institution should ensure that prior permission of the organisation is obtained in advance such educational tours are undertaken.

vi. If the tours is undertaken to public places, dam, cities, power plants, sea beaches etc., a written communication must be made to the District magistrate of concerned authorities.

vii. If the educational tour has more than 10 particiapants it is necessary to hire a local tour operator who is well aware of the local conditions and can advise accordingly.

viii. The Head of the Institution should ensure that an undertaking is taken from every participating student that they would abide by all the rules and also that they have submitted the permission by their parents of local guardian before they participate in the educational tour.

ix. The Head of the Institution should also certify in the form of an undertaking that the institute will provide all

necessary help in case of emergency or otherwise to all such students who are part of the educational tour.

5. वर्ष 2011–12 एवं 2012–13 में अध्यापकों के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा के अंतर्गत देय वित्तीय सहायता राशि स्वीकृति के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा–मा/राशिकप्र/31590/2011–12/2011–13 दिनांकः 16.8.2018 ● कार्यालय आदेश ● विषयः वर्ष 2011–12 एवं 2012–13 में अध्यापकों के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा के अंतर्गत देय वित्तीय सहायता राशि स्वीकृति के संबंध में।

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा वर्ष 2011–12 एवं 2012–13 में अध्यापकों के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत देय वित्तीय सहायता राशि स्वीकृत की गई। संबंधित अध्यापकों को उनके कार्यस्थान पर कुछ आवश्यक दस्तावेज यथा बैंक विवरण इत्यादि भिजवाने हेतु पत्र जारी किए गए लेकिन उनके (कतिपय के) वर्तमान पदस्थापन स्थान के बारे में जानकारी नहीं होने के कारण उनको सूचना प्रदान नहीं की जा सकी है।

अतः इस पत्र के साथ संलग्न सूची में उल्लेखित कार्मिक अपनी बैंक सम्बन्धी सूचनाओं यथा अध्यापक का नाम, मोबाइल नम्बर, बैंक का नाम, शाखा का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस.सी. कोड, पासबुक की प्रति इत्यादि तत्काल उपलब्ध करवाएँ ताकि स्वीकृत राशि ई.सी.एस. की जा सके। यदि सूचना अतिशीघ्र प्राप्त नहीं होती है तो उसके अभाव में भुगतान संबंधी समस्त जिम्मेवारी संबंधित कार्मिक की होगी।

● संलग्न : उपर्युक्तानुसार

● **उप निदेशक (प्रशासन),** राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत वित्तीय सहायता वर्ष 2011–12 वर्ष 2013 में कार्यरत स्थान की सूची

क्र. सं.	स्वीकृति	नाम कर्मचारी, पद एवं आवेदन पत्र देने के समय 2013 में कार्मिक का पदस्थापन स्थान	स्वीकृत राशि
1.	67	श्री श्रवण लाल सांभरिया, अध्यापक, राउप्रावि. बनवाली, कुचामन सिटी (नागौर)	15000
2.	216	श्रीमती अन्जु गोयल, व.अ. रा वरि. उपाध्याय संस्कृत विद्यालय सारंगपुरा, बड़ के बालाजी (जयपुर)	15000
3.	221	श्रीमती संतोष राठौड़, व्या. राबाउमावि. माणक चौक, जयपुर	15000
4.	225	श्री अशोक कुमार, अध्यापक, राप्रावि. सेठों वाली ढाणी, बेनार, आमेर (जयपुर)	15000
5.	261	श्री सुरेश चन्द सुवास, प्र.अ. सर्व शिक्षा अभियान, मण्डलगढ़ (भीलवाड़ा)	15000
6.	274	श्री मनोहर लाल शर्मा, अध्यापक, राउप्रा. संस्कृत वि. धौसल्या की ढ़ाणी, झोटवाड़ा, जयपुर	15000
7.	285	श्री जगदीश प्रसाद जाट, अध्यापक, राउप्रा. संस्कृत विद्यालय धौसल्या की ढाणी, झोटवाड़ा, जयपुर	15000
8.	300	श्री मोहन लाल, अध्यापक, रामावि. जवानपुरा, शाहपुरा (जयपुर)	15000
9.	319	श्रीमती मधु जैन, अध्यापिका, राप्रावि. सीताराम नगर, जयपुर	15000
10.	441	श्री मनोज माथुर, अध्यापक, रामावि. त्रिलोकपुरा, पिपराली (सीकर)	15000
11.	469	श्री लाल सिंह, अध्यापक, राप्रावि. छपरतलाई का धमका वास, धोद (सीकर)	15000
12.	514	श्री नरसी राम यादव, अध्यापक, राउप्रावि. माजरा महनिया, तिजारा (अलवर)	15000
13.	530	श्री सन्त राम, अध्यापक, राप्रावि. जटियाना (अलवर)	15000
14.	532	श्री लालाराम यादव, अध्यापक, राप्रावि. प्रतापपुरा, चक नं. 3, नीमराना (अलवर)	15000
15.	569	श्री गुमानाराम जाखड़, अध्यापक, राप्रावि. मेघवालों की ढाणी (बाड़मेर)	15000
16.	572	श्री सत्यपाल शर्मा, व.अ., राउप्रावि. सियाग व सुनारों की बस्ती महादेवपुरा (बाड़मेर)	15000
17.	697	श्री गौकुल चन्द्र व्यास, व.अ., रामावि. रामगढ़ (सिरोही)	15000
18.	701	श्री सतवीर सिंह, अध्यापक, राप्रावि. हरजीराम की ढाणी, सांकड़ा (जैसलमेर)	15000
19.	704	श्री लाखाराम, अध्यापक, राप्रावि. बाली की ढाणी, सम (जैसलमेर)	15000
20.	757	श्री पेमाराम, अध्यापक, राप्रावि. खेजड़ी का बाला, सोजत (पाली)	15000
21.	759	श्री अनिल कुमार माथुर, अध्यापक, राउप्रावि. नई आबादी, दोहाली (पाली)	15000
22.	837	श्री रविन्द्र पुरोहित, प्र.अ., राउप्रावि. जमलावाड़ा (उदयपुर)	15000
23.	842	श्री बीरबल सिंह चौहान, शाशि., राउमावि. केसुन्दा (प्रतापगढ़)	170
24.	876	श्रीमती कल्पना याग्निक, अध्यापिका, राप्रावि. भाव सारवाड़ा (बाँसवाड़ा)	15000
25.	884	श्री भानु सिंह राठौड़, अध्यापक, राउप्रावि. सलारिया खुर्द, शाहपुरा (बाँसवाड़ा)	15000
26.	894	श्रीमती निशा व्यास, अध्यापिका, राप्रावि. डूंगरीपाड़ा, सुन्दनपुर, मं. तलवाड़ा, (बाँसवाड़ा)	15000
27.	923	श्री श्याम सिंह चौहान, अध्यापक, राउप्रावि. जीवनायक का खेड़ा, गंगरार (चित्तौड़गढ़)	15000
28.	924	श्रीमती सुनिता जैन, अध्यापिका, रा. आदर्श उप्रावि. चित्तौड़गढ़	15000
29.	946	श्रीमती कन्कू कलाल, अध्यापिका, राप्रावि. बालाडीट (डूंगरपुर)	15000
30.	1022	श्री कैलाश शर्मा, अध्या., राबाउप्रावि. सेवर (भरतपुर)	1250
31.	1035	श्री अंकित सिंह, अध्यापक, रा. आदर्श प्रावि. सेवर (भरतपुर)	15000

32.	1049	श्रीमती सुनिता शर्मा, व.अ., राप्रावि. झीलरा (भरतपुर)	15000
33.	1084	श्री जगदीश बाबू सक्सेना, अध्यापक, राप्रावि. फुसपुरा, (धौलपुर)	15000
34.	1106	श्री कल्याण प्रसाद मीणा, अध्यापक, राउप्रावि. धनेरा सरमथुरा, बसेड़ी (भरतपुर)	15000
35.	1151	श्री राजेश कुमार शर्मा, अध्यापक, राउप्रावि. गणेश गेट जुगीनपुरा, सपोटरा (करौली)	15000
36.	1156	श्री रमेश चंद्र शर्मा, अध्यापक, राप्रावि. भोडेर (करौली)	15000
37.	1318	श्री हरिराम पूनियां, प्र.अ., राप्रावि. मीणा की ढाणी बजावा (झुंझुनूं)	15000
38.	1363	श्री ख्यालीराम पछार, अध्यापक, राप्रावि. डूंगर की ढाणी (झुंझुनूं)	15000
39.	1371	श्री दिनेश कुमार, अध्यापक, राप्रावि. गवारियों की ढाणी (झुंझुनूं)	15000
40.	1449	श्रीमती सुमन शर्मा, अध्यापिका, रामावि. बैरासर (चूरू)	15000
41.	1590	श्री कल्याणमल वर्मा, व्या., जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान झालावाड़	15000
42.	1604	श्री महेश कुमार शर्मा, प्र.अ., राउप्रा. संस्कृत वि. रूपवती खुर्द, रानीवाड़ा (जालोर)	15000
43.	1613	श्री कृपाशंकर दीक्षित, प्र.अ., राउप्रावि. कोडिजा, केशोरायपाटन (बूँदी)	4250
44.	1626	श्री ओमप्रकाश शृंगी, अध्या., राबाउप्रावि. लक्ष्मीपुरा (बूँदी)	15000
45.	1627	श्री रामस्वरूप शर्मा, अध्यापक, राप्रावि. बंजारों की झोपड़ियाँ, केशोरायपाटन (बूँदी)	15000
46.	1652	श्री प्रेम सागर मीणा, अध्यापक, राउप्रावि. निमोड़ा डारा, अटरू (बारां)	15000
47.	1668	श्री नरेन्द्र शर्मा, अध्यापक, राउप्रावि. मन्डोला वार्ड (बारां)	15000
48.	1680	श्री गिरजानन्दन शर्मा, अध्यापक, राउप्रावि. गजनपुरा (बारां)	15000
49.	1746	श्री सोमेश्वर प्रसाद व्यास, अध्यापक, राउप्रावि. जीतिया, कपासन (चित्तौड़गढ़)	15000
50.	1776	श्री प्रेम नारायण कोली, प्रबोधक, राप्रावि. नैनछा पटेल की ढाणी, जमवारामगढ़ (जयपुर)	400

व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत वित्तीय सहायता वर्ष 2012–13 वर्ष 2013 में कार्यरत स्थान की सूची

क्र. सं.	स्वीकृत	नाम कर्मचारी, पद एवं आवेदन पत्र देने के समय 2013 में कार्मिक का पदस्थापन स्थान	स्वीकृत राशि
1.	8	श्री राजकुमार शर्मा, व.अ., श्री खोराजी राउमावि. हींगपुरा (जयपुर)	15000
2.	12	श्री कालू राम जाट, अध्यापक, राउप्रावि. महाराजवाली, शाहपुरा (जयपुर)	12000
3.	40	श्रीमती निर्मला मूण्ड, अध्यापिका, राप्रावि. विदायका (जयपुर)	15000
4.	64	श्री मालीराम शर्मा, व.अ., राउप्रावि. आथूणाबड़ा, गोविन्दगढ़ (जयपुर)	15000
5.	70	श्री सुशील कुमार अग्रवाल, व.अ., रामावि. बंध की ढाणी (जयपुर)	15000
6.	90	श्रीमती सविता शर्मा, अध्यापिका, राउप्रावि. बांसड़ा, दूदू (जयपुर)	15000
7.	93	श्रीमती तारा शेखावत, अध्यापिका, रामावि. हाथोज (जयपुर)	15000
8.	248	श्री राजाराम यादव, अध्यापक, राप्रावि. खोह, किशनगढ़वास (अलवर)	15000
9.	364	श्री ताराचन्द्र कोली, अध्यापक, राउप्रावि. जावदा, माण्डलगढ़ (भीलवाड़ा)	15000
10.	464	श्री श्याम लाल पालीवाल, प्रधानाचार्य, राउमावि. फलासिया (उदयपुर)	15000
11.	530	श्री दिलीप सिंह शक्तावत, अध्यापक, राउप्रावि. भोजुण्डा (चित्तौड़गढ़)	15000
12.	541	श्रीमती सीमा चंचावत, अध्यापिका, राउप्रावि. बोरतलाव, तलवाड़ा (बाँसवाड़ा)	15000
13.	563	श्रीमती अलका शर्मा, व.अ., राबाउमावि. बरार (राजसमन्द)	15000
14.	615	श्री मांगी लाल कहार, अध्यापक, राउप्रावि. कवरपुरा, तालड़ा (बूँदी)	15000
15.	701	श्री गिरिजा शंकर पारीक, व.अ., राउप्रावि. हलौन्दा, खण्डार (सवाई माधोपुर)	15000
16.	712	श्री ओम प्रकाश मीणा, अध्यापक, राउप्रावि. रईवाकलां (सवाई माधोपुर)	15000
17.	761	श्री सुरेश प्रसाद गुप्ता, प्र.अ., राउप्रावि. गढ़ी का गाँव, सपोटरा (करौली)	15000
18.	764	श्री नेतराम वर्मा, अध्यापक, राउमावि. माढ़ई (करौली)	15000
19.	781	श्री राजेश कुमार शर्मा, अध्यापक, राउप्रावि. जुगीनपुरा (करौली)	15000
20.	836	श्री भजना राम मान्झू, प्र.अ., राउप्रावि. कल्याणों की ढाणी, शिवनगर (जोधपुर)	15000
21.	898	श्री धन्नाराम, अध्यापक, राप्रावि. गोलेसोड़ा, बालोतरा (बाड़मेर)	15000
22.	967	श्रीमती शारदा जोशी, अध्यापिका, राउप्रावि. चवरड़ा (पाली)	15000
23.	1003	श्रीमती स्वर्णलता पजामिन, व.अ., राउमावि. आबूरोड़ (सिरोही)	15000
24.	1222	श्री मातादीन, व.अ., राउमावि. नवां, राजगढ़ (चूरू)	15000
25.	1291	श्री जयवीर सिंह, अध्यापक, राउप्रावि. बिजाला, धीराबड़ी (झुंझुनूं)	15000
26.	1368	श्री रामवीर सिंह उपाध्याय, अध्यापक, राबाउप्रावि. ढिलसर (झुंझुनूं)	15000
27.	1369	श्री बाबू लाल जांगिड़, अध्यापक, रामावि. रामपुरा, अलसीसर (झुंझुनूं)	15000

6. हितकारी निधि के अन्तर्गत माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा में कार्यरत कार्मिकों के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर वित्तीय सहायता हेतु प्रार्थना-पत्र आमंत्रण की अन्तिम तिथि 15.10.2018।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
●क्रमांक:शिविरा/हिनि/28129/2018-19 दिनांक :13.8.2018
● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी, (माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा)
● विषय: हितकारी निधि के अन्तर्गत माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा में कार्यरत कार्मिकों के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर वित्तीय सहायता हेतु प्रार्थना-पत्र आमंत्रण की अन्तिम तिथि 15.10.2018।

हितकारी निधि माध्यमिक शिक्षा/प्रारंभिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर के अन्तर्गत शिक्षा विभाग में राजकीय सेवा में कार्यरत समस्त वर्ग के शिक्षा अधिकारियों/व्याख्याता (स्कूल शिक्षा)/अध्यापकों/ मंत्रालयिक/ सहायक कर्मचारियों) के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनार्थ वित्तीय सहायता दिए जाने बाबत संलग्न प्रारूप में प्रार्थना पत्र आमंत्रित किए जाते हैं। प्रार्थी द्वारा प्रार्थना-पत्र भरते समय एवं संबंधित अधिकारी द्वारा अग्रेषित करते समय निम्न बिन्दुओं को ध्यान में रख कर अग्रेषित किए जावें:-

1. यह योजना राजस्थान राज्य के शिक्षा विभाग माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा में कार्यरत समस्त वर्ग के कार्मिकों के बच्चों के लिए ही लागू होगी।
2. **व्यावसायिक शिक्षा :** इंजीनियरिंग, मेडिकल एवं मैनेजमेन्ट, बी.एड., सी.ए., एस.टी.सी., नर्सिंग फार्मेसी पाठ्यक्रम में अध्ययनरत को ही वित्तीय सहायता देय होगी। निर्धारित पाठ्यक्रमों का विवरण निम्नानुसार है:-

(अ) इंजीनियरिंग में स्नातक पाठ्यक्रम (चार वर्ष)-(आठ सेमेस्टर): डिसिपलिन ऑफ सिविल, मैकनेनिकल, इलेक्ट्रिकल, इलेक्ट्रोनिक्स एवं टेली-कम्यूनीकेशन, कम्प्यूटर साईन्स एण्ड इंजीनियरिंग, ऑटोमोबाइल, आर्केटैक्चर, टैक्सटाईल, माईनिंग, रबर टैक्नोलोजी, केमिकल इंजीनियरिंग, इन्स्टुमेन्टेशन एण्ड कन्ट्रोल, प्रिन्टिंग, केमिकल टेक्नोलाजी, मेटेलर्जीकल इंजीनियरिंग, एरोनोटिकल इंजीनियरिंग, प्रोडेक्शन टेक्नोलाजी, शिप बिल्डिंग एण्ड फेब्रिकेशन टैक्नालोजी, नेवल आर्किटैक्चर, पैट्रोलियम इंजीनियरिंग।

(ब) मेडिकल (एलोपेथी), होम्योपेथी, आयुर्वेदिक फार्मस् ऑफमेडिसन्स एवं पशु आयुर्विज्ञान।

(स) उपर्युक्त पैरा (अ, ब) में उल्लेखित डिग्री (4 वर्ष), डिप्लोमा पाठ्यक्रमों की अवधि तीन वर्ष से कम की नहीं होनी चाहिए।

(द) डिप्लोमा पाठ्यक्रम, बी-फार्मा की अवधि दो वर्ष से कम की नहीं होनी चाहिए।

(य) स्नातक पाठ्यक्रम के पश्चात् मैनेजमेन्ट पाठ्यक्रम की अवधि दो वर्ष से कम की नहीं होनी चाहिए।

(र) बी.एड. तथा एस.टी.सी. पाठ्यक्रम की अवधि दो वर्ष की मान्य है।

3. प्रार्थना-पत्र की सभी प्रविष्टियाँ स्वयं कर्मचारी/संस्थाप्रधान द्वारा भरी जानी चाहिए।
4. भुगतान किया गया वास्तविक शुल्क प्रार्थना-पत्र के कॉलम संख्या 12 में स्पष्ट रूप से अंकित करें। **प्रार्थना-पत्र के साथ शुल्क की मूल रसीदें संलग्न करें। फोटो स्टेट प्रतियाँ स्वीकार्य नहीं होगी। सम्पूर्ण भुगतान की रसीद यदि प्रस्तुत की जाती है तो उसका मदवार विवरण प्रस्तुत करने पर ही प्रार्थना-पत्र विचारणीय होगा।**
5. सत्र 2018-19 में छात्र जिस महाविद्यालय में अध्ययनरत है, उस महाविद्यालय के प्रधानाचार्य का प्रमाण-पत्र संलग्न प्रारूप में संलग्न करें।
6. सहायता राशि मात्र ट्यूशन, पुस्तकालय एवं प्रयोगशाला (लेबोरेटरी) शुल्क के भुगतान पर ही देय है। अत: अन्य मदों पर किए गए भुगतान एवं एक मुश्त में दर्शायी गई राशि पर सहायता देय नहीं होगी।
7. सहायता राशि एक शैक्षणिक सत्र तक ही सीमित है। राज्य कर्मचारी के बच्चों को वित्तीय सहायता हेतु प्रार्थना-पत्र छात्र के शैक्षणिक सत्र 2018-19 में अध्ययनरत के लिए ही स्वीकार्य होगें।
8. व्यावसायिक शिक्षा में सहायता हेतु परिवार के एक ही बच्चे के लिए प्रार्थना-पत्र स्वीकार्य होगा।
9. यह सहायता राशि वर्ष 2018-19 के लिए ही मान्य होगी। जिन्होंने इस सत्र में प्रवेश लिया हो उन्हें ही सहायता दी जावेगी।
10. प्रार्थना-पत्रों के आधार पर पात्रता की जाँचोपरान्त एवं हितकारी निधि कोष में राशि उपलब्ध होने पर सहायता देय होगी। <u>प्रार्थना-पत्र प्रेषित कर दिए जाने से यह तात्पर्य नहीं है कि आपको सहायता मिल जावेगी। अत: अनावश्यक पत्र व्यवहार नहीं किया जावे।</u>
11. राज्य कर्मचारी, हितकारी निधि का नियमित अंशदाता वर्ष 2017-18 से होना चाहिए। यदि अंशदान जमा करवाया हुआ है तो भेजे जाने वाले अंशदान का डी.डी. नम्बर, दिनांक व राशि का उल्लेख सहित विवरण प्रस्तुत किया जावे।
12. यदि आप हितकारी निधि के सदस्य नहीं हैं तो आज ही वर्ष 2017-18 का अंशदान जमा करा कर सदस्य बनकर अंशदान राशि का बैंक ड्राफ्ट <u>अध्यक्ष, हितकारी निधि, शिक्षा विभाग, राजस्थान, बीकानेर</u> के नाम से भिजवाएँ। अंशदान के अभाव में सहायता राशि प्रदान नहीं की जा सकेगी।

13 सहायता राशि- एक वर्ष से दो वर्ष तक की अवधि के पाठ्यक्रम हेतु रुपये 5000/-, दो वर्ष से अधिक अवधि के पाठ्यक्रम हेतु रुपये

10,000/- निर्धारित है। **यह सहायता राशि पाठ्यक्रम की अवधि हेतु केवल एक बार ही देय होगी।**

14. प्रार्थना पत्र निर्धारित सीमा तक प्राप्त नहीं होने की सूरत में शेष प्रार्थना-पत्रों पर विचार किया जा सकेगा।
15. अपूर्ण प्रार्थना-पत्र, शुल्क की मूल रसीदें नहीं होने एवं देरी से प्राप्त होने वाले प्रार्थना-पत्र पर कोई विचार नहीं किया जावेगा। अत: ऐसी स्थिति में एवं निरस्त हुए प्रार्थना-पत्रों के बारे में कोई सूचना भी नहीं दी जावेगी। सहायता राशि 100 कार्मिकों के प्रार्थना पत्रों पर दी जानी है जिसे वरीयता के आधार पर प्रदान की जावेगी।

कृपया उक्त विषयक सूचना अपने अधीनस्थ विद्यालयों/कार्यालयों में प्रसारित एवं प्रचारित करावें ताकि अधिकाधिक कर्मचारीगण इसका लाभ उठा सकें। अत: निर्देशित किया जाता है कि अधीनस्थ संस्थाप्रधानों को पाबन्द करावें कि प्रार्थना पत्र सीधे नहीं भेजें, प्रार्थना पत्रों को अपनी अनुशंसा सहित दिनांक 15.10.2018 तक अधोहस्ताक्षरकर्ता को पद नाम से भिजवाने की व्यवस्था करें। तत्पश्चात् प्राप्त होने वाले प्रार्थना-पत्रों पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

● संलग्न : निर्धारत प्रार्थना-पत्र

● **उप निदेशक (प्रशासन)** एवं सचिव हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

हितकारी निधि से राज्य कर्मचारियों, राजपत्रित शिक्षा अधिकारी/व्याख्याता (स्कूल शिक्षा)/शिक्षक/मंत्रालयिक/सहायक कर्मचारी एवं समस्त वर्ग के राज्य कर्मचारियों (माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा) के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर सहायता हेतु प्रार्थना-पत्र

1. कर्मचारी का नाम.....जन्मतिथि..... आयु.....
2. पद एवं पदस्थापन स्थान.....
3. कर्मचारी की नियुक्ति तिथि.....
4. कर्मचारी का स्थायी पता.....
   टेलीफोन नम्बर/मोबाइल नम्बर.....
5. कार्मिक का बैंक खाता विवरण :
   1. बैंक का नाम एवं शाखा का नाम.....
   2.आई.एफ.एस.सी.कोड नम्बर.....
   3. कार्मिक का बैंक खाता संख्या(पासबुक की प्रति).....
6. अध्ययनरत छात्र/छात्रा का नाम..... जन्मतिथि..... आयु.....
7. छात्र/छात्रा से सम्बन्ध.....
8. छात्र/छात्रा के व्यावसायिक शिक्षा का नाम (✓करें) मेडिकल/इंजीनियरिंग/मैनेजमेन्ट/बी.एड/एस.टी.सी./नर्सिंग/सी.ए.).....
9. पाठ्यक्रम की अवधि.....
10. महाविद्यालय में प्रवेश तिथि(प्रथम वर्ष).....
11. महाविद्यालय/विद्यालय का नाम एवं पता जहाँ छात्र/छात्रा अध्ययनरत है.....(✓करें)(संस्था राजकीय/अराजकीय/निजी/मान्यता प्राप्त)
12. **व्यावसायिक विषय के लिए भुगतान की गई राशि की मूल रसीदें संलग्न करें :-**
    संलग्न कुल रसीद संख्या.....राशि.....
13. संस्था से कोई छात्रवृत्ति ली जा रही है अथवा नहीं यदि हाँ तो कितनी.....
14. राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान से यदि कोई सहायता राशि मिली है अथवा नहीं, यदि हाँ तो कितनी.....
15. छात्र/छात्रा जिस महाविद्यालय में अध्ययनरत है उस संस्था से प्राप्त प्रमाण पत्र संलग्न है : (हाँ/नहीं)
16. हितकारी निधि पंजीयन संख्या (वर्षवार कटौती विवरण) संलग्न पृष्ठ.....
17. बकाया अंशदान भिजवाने का ड्राफ्ट संख्या व दिनांक.....

मैं प्रमाणित करता हूँ/करती हूँ कि मेरी सर्वोत्तम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिया गया विवरण बिल्कुल सही है। इन बिन्दुओं में कोई असत्यता पाई जाती है तो हितकारी निधि, शिक्षा विभाग, बीकानेर मेरे विरुद्ध जो भी उचित समझे कार्यवाही कर सकेगा, वह मुझे स्वीकार्य होगी।

कर्मचारी के हस्ताक्षर
(पद एवं कार्यरत स्थान)

संस्था प्रधान द्वारा दिया जाने वाला प्रमाण-पत्र जहां कर्मचारी कार्यरत है

(संस्थाप्रधान अराजपत्रित होने पर आहरण वितरण अधिकारी से अग्रेषित करवाया जाना आवश्यक है)

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती..... पद एवं पदस्थापन स्थान..... जो मेरे अधीन कार्यरत है। इनके पुत्र/पुत्री.....जो(महाविद्यालय /विद्यालय) का नाम..... में अध्ययनरत है एवं मेडिकल/इंजीनियरिंग/मैनेजमेन्ट/बीएड. /एस.टी.सी./नर्सिंग सत्र्.....में प्रवेश लिया है, को सहायता हेतु इनका प्रार्थना-पत्र अध्यक्ष, हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर को अनुशंषा सहित अग्रेषित किया जाता है।

जिला शिक्षा अधिकारी
हस्ताक्षर मय सील

संस्था प्रधान के हस्ताक्षर
(मोहर)

महाविद्यालय/विद्यालय का नाम.....

अध्ययनरत महाविद्यालय/विद्यालय का प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/सुश्री.....
पुत्र/पुत्री/श्रीमती.....
जो (महाविद्यालय का नाम)..... में अध्ययनरत है।
इनके पुत्र/पुत्री इस महाविद्यालय का नियमित छात्र/छात्रा है।

महाविद्यालय/विद्यालय में अध्ययनरत छात्र/छात्रा विषयक विवरण निम्नानुसार है :-

पाठ्यक्रम का नाम	पाठ्क्रम की अवधि (सेमेस्टर सहित)	प्रवेश तिथि	वर्तमान में किस वर्ष में अध्ययनरत है	उत्तीर्ण/ अनुत्तीर्ण	विशेष विवरण

संस्था प्रधान के हस्ताक्षर
मय मोहर

- हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर की दिनांक 06.08.18 को निदेशक, माध्यमिक शिक्षा एवं अध्यक्ष हितकारी निधि कि अध्यक्षता में हुई बैठक में निम्नलिखित मृतक आश्रितों को हितकारी निधि से सहायता राशि स्वीकृत की गई, स्वीकृति अनुसार सहायता राशि डिमाण्ड ड्राफ्ट/बैंकर चैक के माध्यम से भिजवा दी गई है।

क्र.सं.	मृतक कर्मचारी का नाम एवं पद	आश्रिता का नाम व स्थाई पता	निधन सामान्य/दुर्घटना	भुगतान राशि
1.	स्व. श्री ओम प्रकाश सिंगाडिया, प्र.अ., रा.उ.प्रा.वि. धांगडवास, तह. सोजत (पाली)	श्रीमती सावित्री देवी (पत्नी) जटियों का बास सोजत सिटी (पाली)	सामान्य निधन	50,000
2.	स्व. श्री सहीराम वर्मा, व्याख्याता, डाईट चुनावढ़ (श्रीगंगानगर)	श्रीमती उषा (पत्नी) 214 रामदेव कॉलोनी गली नं.4, श्रीगंगानगर	सामान्य निधन	50,000
3.	स्व. श्री अमरचन्द कोली, च.श्रे.क. रा.उ.मा.वि. सांगरिया (भीलवाड़ा)	श्रीमती दुर्गा देवी (पत्नी) मुकाम पोस्ट सांगरिया, तह. फुलियाकला, (भीलवाड़ा)	सामान्य निधन	50,000
4.	स्व. श्री नरेश कुमार सेहरा, प्रधानाध्यापक रा.मा.वि. जमालपुर, खेतड़ी (झुंझुनूं)	श्रीमती शशिबाला मीणा(पत्नी) ई 06 ।।। बी खेतड़ी नगर, झुंझुनूं	सामान्य निधन	50,000
5.	स्व. श्री जय प्रकाश शर्मा, अ., रा.आ.मा.वि. गणेश्वर (सीकर)	श्रीमती सावित्री देवी(पत्नी) मु.पो. गावडी, तह. नीम का थाना (सीकर)	सामान्य निधन	50,000
6.	स्व. श्री रतनाराम पटेल, शा.शि. रा.उ.मा.वि. जोजावर (पाली)	श्रीमती शान्ति देवी (पत्नी) ग्राम पो. लोटोती, तह. जैतारण (पाली)	सामान्य निधन	50,000
7.	स्व. श्री जुल्ले खाँ, प्राचार्य, रा.उ.मा.वि. नुवाँ (नागौर)	श्रीमती मुन्नी बानो (पत्नी) मु.पो. दीनदारपुरा, वाया-बेरी खुर्द, तह. डीडवाना (नागौर)	सामान्य निधन	50,000
8.	स्व. श्री अकबर अली, अ., रा.उ.मा.वि. 365 हैड, श्रीगंगानगर	श्रीमती हमीदा बानो (पत्नी) गाँव-रिड़मलसर, पो. उदासर, बीकानेर	सामान्य निधन	50,000
9.	स्व. श्री डूंगर राम, व.अ., रा.बा.मा.वि., बलून्दा (पाली)	श्रीमती लीला देवी(पत्नी) कणिचा राणावतान, जैतारण (पाली)	सड़क दुर्घटना में निधन	1,50,000
10.	स्व. श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा, व.अ., रा.आ.उ.मा.वि. जगतपुरा, शाहपुरा (जयपुर)	श्रीमती सन्तोष शर्मा (पत्नी) मु. पो. नयन, शाहपुरा (जयपुर)	सड़क दुर्घटना में निधन	1,50,000
11.	स्व. श्री किशन सिंह, क.लि. राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, बीकानेर	श्रीमती किरण (पत्नी) ए-27 बल्लभ गार्डन, बीकानेर	दुर्घटना में निधन	1,50,000

- **उप निदेशक (प्रशासन)** एवं सचिव हितकारी निधि माध्यमिक शिक्षा,राजस्थान,बीकानेर

माह : सितम्बर, 2018	विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम	प्रसारण समय : दोपहर 2.40 से 3.00 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ्क्रमांक	पाठ का नाम
1.9.2018	शनिवार	जोधपुर	गैरपाठ्यक्रम	जन्माष्टमी		
4.9.2018	मंगलवार	बीकानेर	9	हिन्दी प्रबोधिनी	पद्य 4	बिहारी-नीति, भक्ति के दोहे
5.9.2018	बुधवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम	शिक्षक दिवस (उत्सव)		
6.9.2018	गुरुवार	जयपुर	4	पर्यावरण अध्ययन	6	पेड़-पौधों की देखभाल
7.9.2018	शुक्रवार	जोधपुर	8	सामाजिक विज्ञान	4	भूमि संसाधन और कृषि
8.9.2018	शनिवार	बीकानेर	गैरपाठ्यक्रम	विश्व साक्षरता दिवस (उत्सव)		
10.9.2018	सोमवार	उदयपुर	11	हिन्दी अनि. कथा धारा	4	शरणदाता
11.9.2018	मंगलवार	जयपुर	4	हिन्दी	6	हमें जलाशय लगते प्यारे
12.9.2018	बुधवार	जोधपुर	9	विज्ञान	5	जीवन की अवधारणा
13.9.2018	गुरुवार	बीकानेर	7	हिन्दी	6	मित्रता
14.9.2018	शुक्रवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम	हिन्दी दिवस (उत्सव)		
15.9.2018	शनिवार	जयपुर	9	सामाजिक विज्ञान	7	राजस्थान के गौरव
17.9.2018	सोमवार	जोधपुर	3	पर्यावरण अध्ययन	5	हरी-हरी पत्तियाँ
18.9.2018	मंगलवार	बीकानेर	गैरपाठ्यक्रम	रामदेव जयंती/तेजा दशमी		
20.9.2018	गुरुवार	उदयपुर	10	हिन्दी क्षितिज	4	देव
22.9.2018	शनिवार	जयपुर	5	पर्यावरण अध्ययन	7	वृक्षों की महिमा
24.9.2018	सोमवार	जोधपुर	5	हिन्दी	5	अनोखी सूझ
25.9.2018	मंगलवार	बीकानेर	9	सामाजिक विज्ञान	10	स्थानीय स्वशासन
26.9.2018	बुधवार	उदयपुर	5	हिन्दी	4	त्योहारों का देश
27.9.2018	गुरुवार	जयपुर	11	हिन्दी अनि. कथा धारा	7	एटम बम

कार्य दिवस- 22, (प्रसारण-20, अन्य-2) **अवकाश-08** (रविवार-5, अन्य- 03) **उत्सव-05 ● निदेशक,** शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग राजस्थान, अजमेर।

शिविरा पञ्चाङ्ग

सितम्बर-2018					
रवि	30	2	9	16	23
सोम		3	10	17	24
मंगल		4	11	18	25
बुध		5	12	19	26
गुरु		6	13	20	27
शुक्र		7	14	21	28
शनि	1	8	15	22	29

सितम्बर 2018 ● कार्य दिवस-22, रविवार-05, अवकाश-03, उत्सव-05 ● 1 से 5 सितम्बर- प्रथम समूह की जिला स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन (अधिकतम 4 दिन), **1 से 7 सितम्बर-**ब्लॉक स्तरीय पं. दीन दयाल उपाध्याय विज्ञान,गणित एवं पर्यावरण प्रदर्शनी (दो दिवसीय) (SIERT), **3 सितम्बर-**जन्माष्टमी (अवकाश-उत्सव), **5 सितम्बर-**शिक्षक दिवस (उत्सव), राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन, राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान के अन्तर्गत शिक्षक दिवस पर झण्डियों की बिक्री का शुभारम्भ, **5 से 9 सितम्बर-**द्वितीय समूह की जिला स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन (अधिकतम 4 दिन), **10 सितम्बर-**'अध्यापिका मंच' की प्रथम बैठक-SSA, समुदाय जागृति दिवस-SSA, **8 सितम्बर-**वि श व साक्षरता दिवस (उत्सव), सत्र : 2018-19 हेतु प्रथम अभिभावक-अध्यापक बैठक (PTM) का आयोजन। **10 से 12 सितम्बर-** जिला स्तरीय पं. दीन दयाल उपाध्याय विज्ञान, गणित एवं पर्यावरण प्रदर्शनी (SIERT),**13 से 18 सितम्बर-**प्रथम समूह की राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन, **14 सितम्बर-** हिन्दी दिवस (उत्सव), **17 से 18 सितम्बर-**जिला स्तरीय रोल प्ले एवं फॉक डान्स प्रतियोगिता (SIERT), **19 सितम्बर-**रामदेव जयन्ती/तेजा दशमी (अवकाश-उत्सव), **21 सितम्बर-** मोहर्रम (अवकाश-चन्द्र दर्शनानुसार), **22 से 24 सितम्बर-**प्राथमिक विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता (ब्लॉक स्तरीय), **22 से 27 सितम्बर-**द्वितीय समूह की राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन, **23 सितम्बर-**किशोर जागृति दिवस (SIERT), **24 सितम्बर-**बालिका शिक्षा के अन्तर्गत समस्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों में 'मीना दिवस'-SSA, **25 से 27 सितम्बर-**प्राथमिक विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता (जिला स्तरीय), **28 से 29 सितम्बर-**जिला स्तरीय शैक्षिक सम्मेलन (शिक्षकों के लिए अवकाश), **30 सितम्बर-1.** राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान के अन्तर्गत झंडियों की बिक्री से प्राप्त राशि का बैंक ड्राट सचिव, राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के नाम से बनाकर प्रेषित करना एवं श्रेष्ठ राजकीय विद्यालय पुरस्कार-2018 के प्रस्तावों का मूल्यांकन कर जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-प्रथम) द्वारा मण्डल अधिकारी को प्रेषित करना। **2.** SDMC. की कार्यकारिणी समिति में अनुमोदित कार्ययोजना के अनुरूप विद्यार्थी कोष/विकास कोष के माध्यम से किए जाने वाले कार्य/क्रय कार्यवाही पूर्ण करना। **नोट- 1.** प्रथम योगात्मक आकलन का आयोजन - CCE /SIQE संचालित विद्यालयों में (माह के अन्तिम सप्ताह में)। **2. 24 सितम्बर-** राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस (जिन विद्यालयों में यह योजना संचालित है), **3.** माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतियोगिता का ब्लॉक स्तर पर आयोजन। **4.** डाईस व शाला दर्शन पर प्रविष्ट विद्यार्थी व शिक्षकों की सूचनाओं का मिलान कर अपडेशन करना। **5.** समस्त शिक्षकों के कार्मिक व्यक्तिगत विवरण प्रपत्र-10 का अपडेशन-SSA (सितम्बर से अक्टूबर-2018)

कहानी

मेजबान

❒ भंवरलाल इन्दोरिया

दिनेश अपने दोनों पुत्रों को खेत में बुवाई हेतु हलसोतिया (हळोतिया) करवा कर वापस अपने घर आ रहा था। गाँव के गुवाड़ में खेजड़ी की छाँह के नीचे एक अजनबी पुरुष खाट पर लेटा हुआ था। नजदीक आकर दिनेश ने उनसे राम-राम कहा और पूछा कि 'आप कहाँ के रहने वाले हैं? यहाँ क्यों लेटे हुए हैं?'

'मैं तो लधासर गाँव का रहने वाला हूँ। मेरी भैंस की पाडकी घर से निकलकर कहीं खो गई है। उसी को खोजते हुए इधर आ गया। घूमते-फिरते थक चुका हूँ, इसलिए दोपहर का समय काटने के लिए पास वाले घर से खाट माँग लाया और यहाँ विश्राम कर रहा हूँ।' उसने बताया।

'क्या नाम है आपका?' दिनेश ने फिर पूछा।

'नाम तो मेरा नारायण है।' उसने बताया।

'नारायणजी! आप किस जाति के हैं?'

'जाति से तो मैं स्वामी हूँ और गाँव के मन्दिर का पुजारी भी हूँ।'

'नारायणजी! आप नागर के बड़े भाई हैं क्या?' दिनेश ने आश्चर्य से पूछा।

'नहीं तो, नागर तो मेरा पुत्र है।'

'अच्छा! वह आपका पुत्र है! तो उठिए और मेरे साथ घर चलिए। वहीं आराम कीजिएगा। यों कहकर दिनेश ने वह खाट पड़ौसी के घर पहुँचाई और नारायणजी को अपने घर ले आया। उन्हें खाना खिलाया और अपनी बैठक के पलंग पर बैठा दिया। स्वयं भी उन्हीं के पास खाट पर बैठ गया। आपस में चर्चा-परिचर्चाएँ चल पड़ी।

दिनेश ने अपने पौत्र को खेत भिजवाकर दोनों पुत्रों को खेत से वापस घर बुला लिया। उनके बेटों ने सोचा कि ऐसा क्या काम हो गया कि अचानक हमें वापस घर पर बुला लिया गया है। वे तुरन्त घर को लौट आएँ।

'कहिए, पिताजी! हमें वापस क्यों बुला लिया गया।' बड़े बेटे ने पूछा।

'सुनो! ये नारायणजी, नागर मास्टरजी बींजासर वाले के पिताजी हैं। इनके भैंस की पाडकी खो गई है। उसे खोजना है अतः तुम्हें यहाँ बुलाया गया है। तुम उसकी खोज करके उसे यहाँ घर ले आओ। चाहे तुम्हें उसे खोजने में कितना ही समय लगे किन्तु खोजकर उसे अवश्य

यहाँ ले आएँ। खाना खाकर, खोज करने के लिए निकल चलो।' पिता ने उनसे कहा।

'अच्छा, पिताजी! हम शीघ्र ही खोजबीन करने को जा रहे हैं।' उन्होंने कहा और खाना खाकर खोजबीन करने को रवाना हो गए।

नारायणजी पलंग पर लेटे हुए विचार मग्न कुछ सोचने लगे कि 'क्या कारण हो सकता है कि दिनेश जी इतने हार्दिक स्नेह के साथ मदद करने पर उतारू हैं। नागर को ये कैसे जानते हैं। वह तो कभी इस गाँव में आया तक नहीं, फिर इनके साथ मेल-मिलाप और पहिचान कैसे हो गई। इस प्रकार मन में विचारों का मंथन चल रहा था।' 'दिनेशजी भी सोच रहे थे कि कुआँ से कुआँ तो कभी नहीं मिलता किन्तु आदमी से आदमी का मिलना तो कभी न कभी हो ही जाता है।' दोनों ही कुछ समय तक मौन वैचारिक चिन्तन-मनन के समुद्र में गोते लगाते रहे। कुछ समय उपरान्त दिनेश ने मौन तोड़ते हुए पूछ ही लिया कि 'आप किस सोच-विचार की गहराई में चले गए?'

'बस यही सोच रहा था कि आप की नागर के साथ कहाँ और कैसे मुलाकात-पहिचान हो गई? वह तो इस गाँव में कभी आया तक नहीं होगा।'

'हाँ, नारायणजी! जान-पहिचान तो संयोगवश ही हो गई थी, तभी तो मैं उन्हें जानता हूँ।'

'कब, कहाँ और कैसे?'

'सुनिए! जिस गाँव में नागरजी अध्यापक हैं, वह एक छोटा सा गाँव है। आम रास्ते पर बसा होने के कारण वहाँ लोगों का आवागमन होता ही रहता है। यदि दस-पन्द्रह लोग एक साथ वहाँ चले जाएँ तो उनके रहने और खान-पान की व्यवस्था किसी एक घर में नहीं हो पाती। लोगों को एक-एक, दो-दो के रूप में अलग-अलग घरों में रुकना-ठहरना पड़ता है। विद्यालय में रहने की खूब जगह है। इस वजह से अब आगन्तुक यात्री लोग प्रायः विद्यालय में ही आकर ठहरते हैं और विश्राम करते हैं। मास्टरजी उन सभी को छाछ-राबड़ी से सदा तृप्त करते रहते हैं। गाँव में भैंस-गायें खूब हैं। दूध-दही की कमी नहीं है। मास्टरजी प्रतिदिन आने-जाने वाले राहगीरों को छाछ-राबड़ी की मनुहार करते ही रहते हैं। मैंने भी न जाने कितनी बार उनके यहाँ छाछ-राबड़ी का सेवन किया है। वे प्रायः लोगों से छाछ-राबड़ी पीने और भोजन करने का आग्रह करते ही रहते हैं। चाय का प्रचलन तो आजतक गाँवों में हुआ नहीं है। अतः छाछ-राबड़ी ही यहाँ का अमृतमय रसपान-भोजन है। उसे पी कर सभी लोग तृप्ति का अनुभव करते हैं। इसी वजह से मेरी भी गुरुजी के प्रति जान-पहिचान हो गई और हृदय में उनके प्रति दृढ़ आस्था का भाव पनप गया है। आप की आव-भगत कर मैंने कोई विशेष एहसान नहीं किया है अपितु यह तो मैंने अपने कर्त्तव्य का निर्वहन किया है। आप से मिलकर आज मेरे मन में अति प्रसन्नता हो रही है।'

इस प्रकार वे बातें कर ही रहे थे कि दिनेशजी के बेटे नारायणजी की पाडकी को खोजकर घर ले आए। ये देखकर उन सभी के हृदय अति प्रसन्नता से खिल उठे। यह उस छाछ-राबड़ी की करामात ही है, जिससे कि गुरुजी की यशःपताका आज चतुर्दिक् फहरा रही है। उनकी यश-कीर्ति को कभी भुलाया नहीं जा सकता। वस्तुतः यहाँ नारायणजी को जो सम्मान मिला, वह तो उनके पुत्र की बदौलत ही मिल पाया। ऐसे गुरुजन तो लोग में प्रणम्य होते हैं। सच ही है-होनहार बिरवान के होत न चीकने पात।

सहायक प्रशासनिक अधिकारी
रा.उ.मा.वि. टीडियासर
रतनगढ़ (चूरू)

लघु-कथा

ईर्ष्या का अंत

❒ होतीलाल

एक समय की बात है, 'चम्पकमणि' गाँव में एक ब्राह्मण रहता था। वह कई प्रकार की बीमारियों के इलाज की औषधियाँ तैयार करता था। ग्रामीण बीमारी के इलाज हेतु उसके पास आते थे। जब वे दवा लेकर उसके बदले उस ब्राह्मण को दान-दक्षिणा देते तो वह उन्हें लेने से अस्वीकार कर देता था, वह कहता कि मैं इन्हें ग्रहण नहीं करूँगा, मुझे तो ईश-कृपा से प्राप्त हुई सम्पत्ति से संतुष्टि है। वह ब्राह्मण बहुत दयालु था। ग्रामीण, जो उसके पास इलाज के लिए जाते थे उन ग्रामीणों से अन्य लोग ईर्ष्या करते थे। वे उस ब्राह्मण की बुराई करते थे, परंतु ब्राह्मण को इन सभी बातों का पता था, फिर भी वह इन पर कोई ध्यान नहीं देता था।

एक दिन उन ईर्ष्यालु लोगों ने उस ब्राह्मण की हत्या करने का विचार बनाया। वे रात्रि में उसके घर पहुँच गए। उस वक्त बहुत अँधेरा था, अतएव सही ढंग से कुछ देखा नहीं जा सकता था, वे लगभग उस ब्राह्मण के घर पहुँच ही चुके थे। आकाश में घने बादल थे, अतः शीघ्र ही वर्षा प्रारम्भ हो गई, जिससे वहाँ कीचड़ जमा हो गया। इसी कारण वे ठीक से आगे नहीं बढ़ पा रहे थे। कीचड़ व मिट्टी होने से, उनमें से एक व्यक्ति का पैर फिसल गया। वह वहीं गिर पड़ा व उसका सिर एक पत्थर पर जा लगा। वह वहीं मूर्च्छित हो गया।

ब्राह्मण घर से बाहर आया। उसने देखा कि कुछ 10-12 लोग एक व्यक्ति के चारों ओर खड़े हैं, वह व्यक्ति नीचे मूर्च्छित पड़ा है। वह उनके पास गया तथा उसने उनसे कहा कि इस व्यक्ति को अंदर ले आओ। वे उसे अंदर ले आए व आश्चर्य करने लगे कि यह तो वही व्यक्ति है, जिसको हमने मारने का सोचा था। उन्हें स्वयं पर ग्लानि होने लगी। ब्राह्मण ने मूर्च्छित के घावों पर दवा लगाई। वे व्यक्ति ब्राह्मण के पैरों में गिर गए व क्षमा माँगने लगे-हे स्वामी! आप हमें क्षमा कर दीजिए। हमें तो आपकी चिकित्सा देखकर ईर्ष्या होने लगी थी, परन्तु आप तो हमारे लिए ईश्वर हैं।

उस ब्राह्मण ने सोचा, 'चलो इन्हें अपनी गलती का अहसास तो हो गया! उन्होंने (ब्राह्मण देव) कहा कि उठो वत्स! आपने कोई पाप नहीं किया है। जिसे अपनी गलती का अहसास हो जाए, वह तो एक महान व्यक्ति होता है। ब्राह्मण ने उन्हें उनकी गलती पर माफ कर दिया।

शिक्षाः- हमें किसी की सफलता व गुणों से ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए।

व.अ. (अग्रेजी)
रा.उ.मा.वि. खेरती (भरतपुर)
मोः 413415031

बेटियाँ

❒ सुरेश कुमार

एक दिन
आँगन की नर्म
मिट्टी से उखाड़कर
कच्ची पौध-सी
पराये आँगन में
रोप दी जाती है
बेटियाँ....।
ये...धरती की
कैसी भी
असर, अनजान, सख्त
चट्टानी तहों के नीचे भी
तलाश ही लेती हैं
अपने लिए
आँखभर नमी...;
मौसम की कैसी भी
शीत, ऊष्ण या दमघोंटू
उमसिया हवाओं के बीच
भी
खींच ही लेती हैं
अपने लिए
फेफड़ाभर हवा...;
कैसे भी
सघन घटाटोप
अन्धेरों और
संगीन कुहासों के
भीतर भी
जुगाड़ कर ही लेती हैं
अपने लिए
कटोरीभर धूप...और
जीवन के
कठिनतम से कठिनतम,
ना उम्मीद से ना उम्मीद
समय में भी
गँठियाए हुए रहती हैं
पल्लुभर उम्मीद...।
बेटियाँ
आहिस्ता-आहिस्ता
पैठ जाती हैं
धरती से भीतर
धरती से भी गहरी,
उठ जाती हैं
आसमान में
आसमान से भी ऊँची
पिता की
उँगली पकड़
ठुमक-ठुमक चलते हुए
देखते ही देखते
एक दिन
पिता से
बड़ी हो जाती हैं
बेटियाँ.....।

अध्यापक
रा.बा.उ.प्रा.विद्यालय, तिहावली, पं.स.- फतेहपुर शेखावाटी, जिला-सीकर (राज.) 332307
मोः 9414541743

राष्ट्र-ध्वज-वंदना

❒ जगदीश चन्द्र त्रिपाठी

स्वर्ग-सहोदर देव दुलारा।
झंडा ऊँचा रहे हमारा।।.....
देवों ने गुण जिसका गाया।
जग-गुरु का पद उसने पाया।।
कभी न किसी को सताया।
पाया त्राण अनाथ बिचारा।। झंडा.....
आज भी अहो! जगत-दुलारा।
सबसे न्यारा-सबसे प्यारा।।
ऐसा भारतवर्ष हमारा।
डूबों को भी जिसने तारा।। झंडा.....
तीन रंगो का केतु हमारा।
मध्य में चक्र इसने धारा।।
करे नाम भारत का न्यारा।
प्राण-समान तिरंगा प्यारा।। झंडा.....
मान न द्वय जाने पावे।
चाहे प्राण भले ही जावे।।
मिल कर हम गुण इनके गावें।
करें नाम जननी का प्यारा।। झंडा.....

शि.प्र.अ. (से.नि.)
'साधना सदन', हथाई मोहल्ला,
देवलिया कलाँ-305629, जिला-अजमेर

शैक्षिक अनुभव

और मैं गणित पढ़ाने लगा...

❒ विजय प्रकाश जैन

एक विद्यार्थी और शिक्षक के रूप में गणित मेरे लिए हमेशा से दुरूह विषय रहा है। गणित की पुस्तकें देखते ही मैं उन्हें अलग रख देता था। लेकिन इस बार कुछ ऐसा हुआ कि मुझे गणित पढ़ानी पड़ गई। लेकिन मैं खुश था कि ये काम मुझे पहली से तीसरी कक्षा में करना था। मैं सोच रहा था कि करना क्या है तीसरी कक्षा तक एक से सौ तक गिनती सीखनी है, छोटे-छोटे जोड़ बाकी सिखाने हैं। बस शुरू कर दिया मैंने गणित पढ़ाना। तीनों कक्षाएँ साथ ही बैठती थी। मैंने देखा दूसरी के कुछ बच्चे कम से कम तीस तक की गिनती जानते हैं। तीसरी के भी सौ तक बोल लेते हैं और लिख लेते हैं। मैं बड़ा खुश था कि मेरा अधिकांश काम हो चुका है। बस पहली और दूसरी कक्षा के साथ संख्याओं पर काम करना है और कुछ दूसरी और तीसरी बच्चों के साथ संख्याओं और संक्रियाओं पर काम करना है। शुरू के तीन दिन तक मैने ग्रीन बोर्ड पर 100 तक गिनतियाँ लिख दी बच्चों से बुलवाई और देखकर लिखवाई। बच्चे आसानी से लिख रहे थे और बोल भी रहे थे। पहली कक्षा के बच्चों को मैंने 10 तक गिनती से प्रारंभ किया।

लेकिन आज कुछ ऐसा हुआ कि मुझे लगा ये गणित पढ़ाना नहीं है। दो घटनाएँ हुईं पहली घटना तीसरी कक्षा के बच्चों के साथ जब मैं उनसे एक से सौ तक की गिनती में बीच-बीच में से संख्यांकों को लिखकर पूछ रहा था तो अधिकांश बच्चे उन्हें या तो नहीं बता पा रहे थे या बताने के लिए उन्हें एक से गिनना पड़ रहा था। मुझे लगा बच्चों ने गिनतियों को रटकर बोलना और क्रमबद्ध लिखना तो सीख लिया परंतु उन्हें पहिचान नहीं पा रहे हैं। दूसरा किस्सा कक्षा पहली कक्षा में हुआ मैने ग्रीनबोर्ड पर एक पतंग का चित्र बनाया बच्चों से पूछा कितनी पतंगें हैं बच्चे बोले एक। मैंने बोर्ड पर पतंग के सामने अंकों में एक लिख दिया। उसके बाद मैंने उसके नीचे दो पतंगों के चित्र बनाए बच्चों से पूछा कितनी पतंगें हैं मेरा सोचना था बच्चे बोलेंगे दो पतंगें, पर अपने प्रश्न पूछने की गलती का अहसास हुआ जब बच्चे बोले तीन पतंगें। मुझे लगा छोटे बच्चों को गणित पढ़ाना इतना आसान नहीं है जितना मैं समझ रहा था। परंतु मुझे समझ नहीं आ रहा था कि इन बच्चों के साथ गणित पढाने की शुरूआत कैसे की जाए ताकि अर्थ पूर्ण गणित पढ़ाई जा सके। समस्या का समाधान ढूँढ़ने की कोशिश पूरी हुई अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन के लर्निंग रिसोर्स सेंटर में। यह सेंटर शिक्षकों के साथ मिलकर विषयगत समस्याओं के समाधान ढूँढ़ने में मदद करता है। जब गणित के विषय विशेषज्ञ से मेरी इस संबंध में चर्चा हुई और गणित पढ़ाने के तरीकों में मैंने बदलाव शुरू किए तो मेरी कक्षा में भी मुझे बदलाव देखने को मिले। मेरे लिए और मेरी कक्षा के बच्चों के लिए गणित आनंद का विषय बनता जा रहा है।

मैंने शुरूआत की, मूर्त वस्तुओं से गणित पढ़ाने की। मेरे पास बहुत सारे कंकड़ हैं, जिन्हें मैंने कई रंगों से रंग रखा है। और बच्चों ने इन कंकड़ों का नाम रख रखा है टुमटुम। मैंने 1 से 5 तक की संख्याओं पर पहिले काम करना शुरू किया।

पहिले दिन- बच्चों को गोल घेरे में बैठाया और कंकड़ों को सामने रखा, बच्चों ने पूछा सर इनका क्या करोगे। मैंने कहा खेलेंगे इनसे। और फिर उन टुमटुमों के साथ गणित के खेल शुरू हुए।

कक्षा एक व दो के सारे बच्चों को अंदाज के अनुसार टुमटुम बाँट दिए। मैंने कहा पहले मैं इन टुमटुमों से कुछ करता हूँ आप सब देखना उसके बाद हम सब करेंगे। बच्चे बड़े उत्साहित थे कि क्या होने वाला है। मैंने अपने बाएँ हाथ को आगे किया और उस पर एक टुमटुम रखा और बोला एक टुमटुम। बच्चे दोहरान करते जा रहे थे। हथेली पर दूसरा टुमटुम रखकर कहा एक में मिलाया एक टुमटुम मिलकर हुए दो टुमटुम। इस प्रकार पाँच टुमटुमों को हथेली पर रखा। इस प्रक्रिया को मैंने तीन बार दोहराया और बच्चों से कहा कि अब वो भी ऐसे ही करें। इस बार हम सबने अपने हाथों पर टुमटुमों को रखते हुए बोला।

एक टुमटुम।
एक में मिलया एक टुमटुम मिलकर हुए दो टुमटुम
दो टुमटुम दो में मिलाया एक टुमटुम
मिलकर हुए तीन टुमटुम
तीन में मिलाया एक टुमटुम
मिलकर हुए चार टुमटुम
चार में मिलाया एक टुमटुम
मिलकर हुए पाँच टुमटुम

मैं बीच-बीच में देखता जा रहा था कि कक्षा एक के राजेश और सायना को छोड़कर सारे बच्चे सही कर रहे थे। उनको मैंने अपने पास बैठाया और इस प्रक्रिया को बच्चों के साथ एक बार और करवाया। मैं बड़ा उत्साहित था, बच्चों को और मुझे बड़ा आनंद आ रहा था। बार-बार पानी पीने और लघुशंका से निवृत्त होने की आज्ञा माँगने वाले बच्चों ने इस एक घंटे में एक भी बार मुझे इस बाबत् नहीं पूछा। अब मैंने एक-एक बच्चे को बुलाकर इस गतिविधि को करवाया। कक्षा एक के सबसे छोटे बच्चे राजेश को जब मैं यह गतिविधि करा रहा था तो मैंने ज़मीन पर एक टुमटुम रखकर पूछा कितने टुमटुम राजेश बोला एक। मैंने उस टुमटुम के साथ दूसरा टुमटुम रखकर पूछा एक में मिलाया एक तो वह बोला दो टुमटुम। इसी तरह मैंने तीन तक पूछा और उत्साह में आकर उन तीन टुमटुमों के साथ दो टुमटुम रखकर बोला तीन में मिलाए दो टुमटुम राजेश ने थोड़ी देर सोचा फिर बोला घणा टुमटुम। मुझे लगा यहाँ मैं गलत था इन बच्चों के साथ मैं एक के साथ एक कंकड़ मिलाने की बात कर रहा था मुझे अति उत्साह से बचना चाहिए था। आज इस प्रक्रिया को यहीं रोक दिया।

दूसरे दिन प्रार्थना के बाद जैसे ही कक्षा में घुसा बच्चे बोले सर टुमटुम वाला खेल खिलाओ। पहले दो कालांश हिन्दी के थे, तो बच्चों को समझाया पहले कहानी सुनेंगे उसके बाद टुमटुम वाला खेल खेलेंगे। आज कक्षा में बच्चों की संख्या ज़्यादा थी, कल गाँव में शादी होने के कारण जो बच्चे नहीं आए थे, वे आज आए थे। आज पहले कल वाली प्रक्रिया को बच्चों के सहयोग से तीन बार दोहराया और आज बच्चों को बुलाकर उनसे वही प्रक्रिया करवाई। आज टुमटुम निकालने की प्रक्रिया करवाई गई। पहले बच्चों के सहयोग से हथेली पर पाँच टुमटुम रखे, फिर टुमटुम निकालने की प्रक्रिया को करवाया-

पाँच में से निकाला एक टुमटुम बाकी बचे चार टुमटुम

इस तरह एक तक करवाया।

जब मेरी हथेली में एक टुमटुम रह गया तो मैंने बच्चों से पूछा एक में से निकाला एक टुमटुम बाकी बचे.....। दो तीन बच्चे बोले मेंडा टुमटुम। मेंडा यानि ज़ीरो। मतलब बच्चे ज़ीरो के बारे में जानते थे कि कुछ नहीं को ज़ीरो कहते हैं। बच्चों को मेंडा का मतलब ज़ीरो बताया। बच्चे परिवेश से अपनी भाषा में बहुत सारी जानकारियाँ लेकर आते हैं आवश्यकता है कि हम उसे समझकर, उसका उनके सीखने में उपयोग करें। इसके बाद बच्चों को पाँच-पाँच टुमटुम देकर इस प्रक्रिया को करवाया। तीसरी बार में सारे बच्चों ने ठीक से कर लिया। इसके बाद दो बच्चों को आमने-सामने बैठाकर टुमटुम मिलाने व निकालने की प्रक्रिया को करवाया।

बच्चों को और मुझे मज़ा आने लगा था। आज का काम समाप्त हुआ।

आज तीसरा दिन था। आज पुनः दोनों दिन के काम को करवाया। पहले बच्चों के साथ सामूहिक रूप से फिर व्यक्तिगत रूप से और उसके बाद जो बच्चे सीख चुके थे उनके साथ कम सीखने वाले बच्चों को बैठाकर काम किया। बच्चों को मेंडा के स्थान पर ज़ीरो बार-बार बुलवाया आज बच्चे ज़ीरो बोलने लगे।

चौथा दिन आज थोड़ा सा काम को विस्तार दिया। हाथ में टुमटुम लेकर एक स्थान पर दो या तीन टुमटुम मिलाने और निकालने पर काम किया, कुछ बच्चे गिन रहे थे और कुछ अंदाज़ से बता रहे थे। आज मज़ा आया जो बच्चे गलत बता रहे थे, उनको दूसरे बच्चे सही करके बता रहे थे। बच्चों को कुछ दिक्कतें भी आ रही थी लेकिन प्रत्येक बच्चा कोशिश कर रहा था। बच्चे टुमटुमों से भी गिन रहे थे, अंगुलियों से भी गिन रहे थे और मौखिक भी गिन रहे थे। कई प्रक्रियाएँ एक साथ चल रही थी। जो मैंने सिखाई भी नहीं थी। बच्चों के जबाब सही या सही के काफी करीब थे। आज इन प्रक्रियाओं को लकड़ी की आइसक्रीम खाने वाली चम्मचों के साथ भी करवाया।

पाँचवा दिन- आज सुबह स्कूल पहुँचा तो देखा कुछ बच्चे टुमटुम वाली लाइनों को गुनगुना रहे थे सुनकर अच्छा लगा। कक्षा में आज पहले पिछले दिनों वाली गतिविधियों को करवाया। बच्चे एक से पाँच तक गिनना, जोड़ना, घटाना ठीक तरह से सीख चुके थे। अब उन्हें संख्याओं से परिचय कराना था। मैंने संख्यावार टुमटुमों को बच्चों से गिनवाया जैसे एक टुमटुम निकलवाया और एक अंक के फ्लैश कार्ड से बच्चों का परिचय करवाया यह प्रक्रिया पाँच तक चली और इसे विभिन्न तरीकों से कई बार करवाया। आज बच्चे कुछ-कुछ पाँच तक अंकों को पहिचान पा रहे थे।

छठा दिन-गणित के कालांश में आज बच्चे बार-बार कह रहे थे, सर हमें लिखवाओ। बच्चे लिखने को ही सीखना मानते हैं और इसका कारण हम शिक्षक हैं जो बच्चों को कक्षा में आते ही बच्चों से लिखवाना प्रारंभ करवा देते हैं। बच्चों से कहा आज हम पहले कल वाला काम करेंगे उसके बाद लिखेंगे। एक से पाँच तक की संख्यांकों के पहिचान पर आज काम किया अधिकांश बच्चे सीख चुके थे। फ्लैश कार्डों के माध्यम से एक से पाँच को क्रमबद्ध जमाने पर भी काम किया और इसका भी अभ्यास कराया गया। आज मेरे पास समय ज्यादा था तो बच्चों से कुछ मौखिक बातचीत भी की। जैसे तुम्हारे पास पाँच रुपये हैं दो रुपये की टॉफी आई तो कितने पैसे बचेंगे। ऐसे प्रश्न जो बच्चों के रोजमर्रा के जीवन में काम आते हैं पर सारे बच्चों ने सही जबाब दिए।

सातवां दिन- गणित पढ़ाना अब आसान लग रहा था, मुझे भी मज़ा आ रहा था। यदि कोई समस्या आती तो इसकी चर्चा अजीम प्रेमजी के विषय विशेषज्ञों से करता। बच्चे सीख रहे थे और इस आनंद की कोई तुलना नहीं है। आज से बच्चों के साथ छः से दस की संख्याओं पर काम शुरू करना था। इससे पहले पुराने काम की पुनरावृत्ति की गई अब मुझे कुछ नहीं करना पड़ा, बच्चों ने क्रमबद्ध तरीके से अपने पास पहले टुमटुम मिलाना फिर निकालना फिर संख्याओं का काम, उन्हें क्रमबद्ध तरीके से जमाना बोलना। उसके बाद हमने वही तरीका काम में लिया जो एक से पाँच तक की संख्याओं के साथ लिया था। आज हथेली पर टुमटुम जमाने का काम शुरू किया। इस काम को एक से प्रारंभ किया बच्चे पाँच तक बोलते रहे और छह से दस तक हमने मिलकर किया। इस प्रक्रिया को तीन चार बार दोहराया और उसके बाद बच्चों से इस काम को करवाया गया। आज पता चला कि कक्षा एक के बच्चे दो या तीन तक के अंकों की ही समझ रखते हैं उससे आगे सिखाने के लिए उनके साथ धैर्य पूर्वक मूर्त वस्तुओं के साथ काम करना पड़ता है क्योंकि पाँच तक सिखाने के बाद मैं यह समझ रहा था कि अब दस तक सिखानें में ज्यादा समय और समस्या नहीं है परंतु मेरा यह मानना गलत साबित हुआ। बच्चों को सिखाने के लिए जल्दबाजी की नहीं अपितु धैर्य की आवश्यकता होती है। कई बार ऐसी भी स्थितियाँ आती है जब कक्षा के एक दो बच्चों के साथ कुछ अधिक समय देना पड़ता है और कुछ अन्य प्रक्रियाओं पर भी काम करना पडता है उस समय आई झुँझलाहट को यदि बच्चों पर प्रकट कर दिया जाए तो उनके प्रश्न पूछने और सीखने का क्रम रुक जाता है।

आठवाँ दिन- आज कल के काम का दोहरान किया, उसके बाद दस टुमटुमों में से एक-एक टुमटुम निकालने की प्रक्रिया प्रारंभ हुई। अब बच्चे ज़ीरो के बारे में अच्छी तरह से समझ चुके थे। आज गिनमाला से भी बच्चों को काम कराया गया। गिनमाला के मोतियों को गिनकर उन पर संख्यांकों के कार्डो को जमाने का काम किया।

दस तक गिनने की प्रक्रिया, मिलाने की प्रक्रिया और निकालने की प्रक्रिया को पाँच छह दिन तक लगातार करवाया गया, बीच-बीच में अनुपस्थित रहने वाले बच्चों को जो बच्चे सीख रहे थे उनके साथ बैठाया गया, यहाँ यह देखने को मिला कि बच्चे बच्चों के साथ ज्यादा बेहतर तरीके से सीख रहे थे।

बच्चे कई बार लिखने के बारे में आग्रह कर चुके थे परंतु एक काम और इस क्रम में रह गया था। मैंने बच्चों के साथ किया। संख्या के आगे और पीछे की संख्या की समझ पर काम। इसके लिए मैंने एक से दस तक की संख्याकों के कार्डों को जमीन पर रखा और बीच-बीच में से कुछ कार्डों को हटा दिया और बच्चों से बीच के खाली स्थानों में कार्डों को जमावाया। इसके बाद इस काम को मौखिक करवाया और फिर लिखने का काम बच्चों से करवाया, अधिकांश बच्चों ने पाँच को उल्टा लिखा लेकिन बार-बार अभ्यास करवाने पर बच्चे सही लिखने लगे।

अब आगे का काम ग्यारह से उन्नीस पर कराने का है। जो लगातार जारी है, लेकिन गणित पढ़ाने के डर से गणित पढ़ाना सीखने का यह सफर बहुत आनन्ददायी रहा बच्चों ने और मैंने सीखने की इस प्रक्रिया में बहुत मजे किए और कुछ बातें मेरी समझ में आई।

- प्रारम्भिक कक्षाओं में गणित सीखने की शुरूआत बच्चों के अनुभवों से जुड़ी और उन पर आधारित होनी चाहिए।
- बच्चों को गणित सिखाने की शुरूआत ठोस वस्तुओं के साथ क्रिया करके होनी चाहिए।
- बच्चों के परिवेश से जुड़ी हुई गणित की बातें बच्चों के साथ की जानी चाहिए।

प्रबोधक
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय,
मेंदिया डिंडोर, बाँसवाड़ा

कविता और कवि

❒ मोहित जांगिड़

कविता पूछ लेती है हर बात
क्यूं हो चुप कभी, धीर, गंभीर?
अहम् से भरे, अकेले, हे वीर!
बोलने से हल्का होता है तन-मन
हँसते हैं रिश्ते, खुलते हैं बंधन
बढ़ता है विश्वास, होती है जब बात
गाँव-पड़ौस की भी मिलती है खबर
फिर क्यूं बने रहते हो सबसे बेखबर?
बनाते नहीं किसी को हमसफ़र
गलत न समझ, सुन मेरा उत्तर
मौन हूँ मैं, नहीं हूँ बिना खबर।
जरूरी है कभी, खुद से संवाद
भीतर से आता उत्तर निर्विवाद।
शांत हो मन, कम हो चाह
तभी मिलती है जीवन को राह
आकर्षण से परे, अनंत उत्साह
मन में स्रोत, खुद लीजिए थाह।
विकसेगा भाव-पुंज, प्रश्न होंगे शांत
कविता। तुम भी तो चाहती हो एकांत।

व्याख्याता
रा.आ.उ.मा.वि. आलनियावास
तह. रियांबड़ी (नागौर)-341513
मो: 7976337977

रपट

मानव श्रृंखला : शहादत को सलाम

❒ विकासचन्द्र 'भारू'

शहीदों को कभी नहीं भूलें,
चलो ऐसी कसम खाते हैं।
आजादी का ऐसा पर्व मनाएँ,
विश्व में भारत का मान बढ़ाते हैं।।

दिनांक 14 अगस्त, मंगलवार, समय प्रात: 11:30 बजे, राजस्थान में सरहद से सटे चार जिलों की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर ऐसे ही गगनभेदी नारों से देशभक्ति एवं सद्भावना का जो ज्वार दिख रहा था, वह अद्वितीय, अकल्पनीय और अद्भुत था। मौका था, 72वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में राजस्थान की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर 'शहादत को सलाम' करने के लिए आयोजित मानव श्रृंखला निर्माण का। इसदिन राज्य सरकार द्वारा राजस्थान के श्रीगंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर और बाड़मेर की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर 'आओ हाथ मिलाएँ-देश के लिए' की भावना से भारतीय सीमाओं पर तैनात जांबाज सपूतों और देश की आन-बान और शान के लिए शहादत देने वाले शहीदों और सैनिकों के त्याग, तप और शहादत को सलाम करने के लिए एक अनूठी मानव श्रृंखला निर्माण की परिकल्पना को मूर्त रूप दिया गया।

इस श्रृंखला में राजस्थान की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर लगभग 700 किलोमीटर लम्बी एक मानव श्रंखला का निर्माण स्वतंत्रता दिवस के पूर्व एकदिन किया गया जिसमें लगभग एक लाख लोगों ने एक साथ हाथ पकड़ कर राष्ट्रप्रेम की भावना के साथ सम्पूर्ण राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोया। मुझे भी मेरे विद्यालय के स्काउट ट्रुप का नेतृत्व करते हुए इस ऐतिहासिक आयोजन में भागीदारी करने का अवसर प्राप्त हुआ। मेरे एवं विद्यार्थियों के लिए इस प्रकार के कार्यक्रम में सहभागिता करना एक अनदेखे सपने के सच होने के समान था। सहभागिता के लिए सुबह बीकानेर पहुँचने से ही हमें राष्ट्रभावना के एक अनोखे दरिया में गौते लगाने का अनुभव हुआ। निर्धारित स्थल तक पहुँचने के लिए बसों एवं वाहनों की समुचित व्यवस्था, रवानगी के समय ही भोजन एवं पानी की पर्याप्त व्यवस्था प्रत्येक प्रतिभागी के लिए सुनिश्चित थी।

ज्यों-ज्यों निर्धारित गंतव्य की ओर बढ़े सम्पूर्ण वातावरण भारत माता के जय जयकारे से

गुंजायमान नजर आ रहा था। मानव श्रृंखला के निर्माण में सेना, पुलिस, स्काउट्स एवं गाइड्स, एन.सी.सी. कैडिट्स, शिक्षा, चिकित्सा एवं अन्य विभागों के प्रतिभागियों ने भाग लेकर इसे ऐतिहासिक बनाने में अपनी भूमिका अदा की। इस आयोजन हेतु सड़क के किनारे विभिन्न विभागों एवं संगठन के अलावा स्कूली बच्चे, कॉलेज के छात्र, बड़े-बूढ़े, युवा एवं महिलाएँ हाथों में तिरंगा तथा सफेद, केसरिया और हरे गुब्बारे लहराते हुए 'वन्देमातरम् और इंकलाब-जिन्दाबाद' जैसे नारे लगाते हुए एक रस्सी के सहारे एक दूसरे का हाथ पकड़े कतार में खड़े होकर अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रहे थे। देशभक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियाँ देकर लोगों के उत्साह एवं जोश को बढ़ाया एवं नाचने-थिरकने पर मजबूर किया। विभिन्न स्थानों पर मानव श्रृंखला पर हेलिकॉपटर से पुष्पवर्षा भी की गई।

शहादत को सलाम मानव श्रृंखला का अवलोकन करने जैसलमेर के वारम्यूजियम में प्रदेश की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे भी हेलीकॉप्टर से पहुँची एवं मानव श्रृंखला का हवाई अवलोकन कर कार्यक्रम में भाग लिया तथा सेना की प्रदर्शनी का अवलोकन कर प्रदेश की जनता से इस भावना को हमेशा जगाए रखने का आह्वान किया। वाकई में इस प्रकार के आयोजन नागरिकों में देशप्रेम की भावना बढ़ाने और अपने सैनिकों के प्रतिकृतज्ञता जाहिर करने का अवसर प्रदान करते हैं। इस आयोजन में भाग लेने वाले प्रत्येक प्रतिभागी और विशेष रूप से बच्चों में यह एक अकल्पनीय अवसर था जो ताउम्र उनकी स्मृतियों में रहेगा एवं उन्हें गौरवान्वित महसूस कराएगा।

प्राध्यापक
रा.आ.उ.मा.वि. ऊपनी (बीकानेर)
मो. 9414540337

नीरजा और पौधा

❒ मनीषा शर्मा

एक पौधा छोटा-सा, नन्हा-सा, प्यारा-सा।
किसने लगाया?
माँ ने, और अब अंकुर फूट पड़ा था,
तभी तो कुछ पत्तियाँ थीं, छोटी-छोटी हरी-भरी
कोमल कोमल डरी-डरी।
'क्या मैं छू सकती हूँ तुम्हें!!' नीरजा ने पूछा।
'तुम कौन हो?' धीमी आवाज़ में पौधा बोला।
'मुझे नहीं जानते! मैं नीरजा,
मेरी माँ ने तुम्हें बोया था
और बड़े जतन से मैंने तुम्हें पाला है।
जानते हो तुम!!
कल मेरा भैया क्यों रोया था?'
पौधा सोचने लगा
पत्तियों को कुछ सिकोड़ने लगा
'नहीं जानता मैं, तुम बतलाओ,
क्यों रोया था, वो राज़ समझाओ'
बोली नीरजा-
'उसे प्यारी लगी पत्तियाँ तुम्हारी
कोमल कोमल न्यारी-न्यारी
पर मैंने उसे समझाया, गोद में ले लेकर दूर बिठाया।'
'ओह!! तो तुम मेरा माली हो
जो बाग की करता रखवाली हो।'
'यही सोचो यही जानो,
बस अपनी सच्ची सखी मानो।
मैं अभी छोटी हूँ।
तुम भी तो छोटे हो।
अंतर यह है कि मैं चलती हूँ,
और तुम यहीं खड़े हो।'
'अरे! तुम न छोटा मुझे समझना
बड़ा हो जाऊँ फिर न कहना!
तुम से भी बड़ा बन जाऊँगा,
फिर एक पेड़ कहलाऊँगा।'
कुछ सोच में बैठ गई नीरजा,
'देखना तुम भी मैं भी बड़ी हो जाऊँगी
और कुछ, अलग ही कर दिखलाऊँगी।
अपने घर की शान बनूँगी।
पढ़ लिखकर मैं आगे बढ़ूँगी।
खूब मेहनत में दिन-रात करूँगी।
माँ की आँखों का तारा बनूँगी।
पौधा कुछ, सोचने लगा।
लहरा के रंग बदलने लगा।
नीरजा बोली-'क्या हुआ? जो तुम बदलने लगे।।'
पौधा बोला -
'तुम लड़की होकर कैसे सपने बुनती हो।।
किसी की परवाह किए बिना,
अपने मन की करती हो।।'
मुस्कुरा कर, बोली नीरजा-'क्या तुम नहीं जानते?
अब जमाना बदल गया है।
वह भेद लड़का-लड़की कहीं दूर बह गया है।
एक दिन अपनी मेहनत से,
कामयाबी की राह चुन जाऊँगी
और दुनिया को दिखलाऊँगी।'
पौधा हँसकर बोला 'तुम तो बड़ी निराली हो
लगता है बड़ी हिम्मत वाली हो।'
बोली नीरजा-'तुम कहो! कहाँ अटके हो!
छोटे बनकर कब से खड़े हो!!'
पौधा टहनी हिलाते बोला-
'मैं भी तो बहुत काम आऊँगा,
सबको अपनी छाँव में बिठलाऊँगा,
गर्मी से राहत दिलवाऊँगा,
बन के फल की शक्ल, सब की भूख मिटाऊँगा
मुझ से होकर अग्नि निकलेगी,
मुझ से होकर बारिश होगी,
मैं बाढ़ में अडिग रह जाऊँ,
उड़ती मिट्टी को मैं रोक पाऊँ।
अलग-अलग रूप में इस धरा को
मैं हरा-भरा बनाऊँ,
तो कहीं बनके औषधि, सभी के मैं काम आऊँ।'
नीरजा पालथी मारे बैठ गई,
हाथ लगाए ठुड्डी पर, सोच में पड़ गई।
'तो तुम जल्दी बड़े क्यों नहीं हो जाते।।
इतने काम जो है करने, पूरे क्यों नहीं करते?'
पौधा प्यार से बोला-'सुनो नीरजा।
हर काम समय पर हुआ करता है,
मैं भी उसी का हिस्सा हूँ,
जिस तरह तुम समय को जीते हो,
मैं भी तो समय से बँधा हूँ, छोटे से ही तो
मैं बड़ा बनता हूँ।'
'अच्छा!! समय आने पर मैं भी कुछ कर दिखलाऊँगी,
अपने देश का मान बढ़ाऊँगी।'
पौधा खुश हो कर बोला-
'सदा याद रखना अपनी बात,
मुझे भी रखना अपने साथ।'
नीरजा हँस कर बोली-'तुम क्या साथ चलोगे!!
अपनी जगह से कैसे हिलोगे?'
बड़ा होने तक तो रहूँ मैं,
पानी खाद है देना मुझे,
रहे सदा अस्तित्व मेरा, ऐसा जतन है करना तुझे।'
'तेरी छाँव में रहना मुझे'
ऐसा कहकर नीरजा ने पौधे को सहलाया,
रक्षा का वचन दे उसे,
अपने गले से लगाया।

तिवारी क्लॉथ हाउस
गणेश चौक, पोस्ट-नोहर, जिला-हनुमानगढ़
मो: 9664431972

माँ

❒ डॉ. धाकड़ हरीश

वरिष्ठ अध्यापक
गाँव पोस्ट-स्वरूपगंज
तह.-छोटीसादड़ी,
जिला-प्रतापगढ़

हे माँ तूने क्या न दिया...
बदले में कुछ भी न लिया...
जब मुँह मैंने खोला था
पहला शब्द जो बोला था
तूने मुझे संभाल लिया था
हिंदी में कुछ बोला था...
आज तूने सब कुछ दिया...
पैरों पर अपने खड़ा किया...
आज मन कचोट रहा है बार बार...
तेरी इस दशा का कौन
जिम्मेदार...?
सबको है खबर
और है सब खबरदार...
हम सब इसके जिम्मेदार...
कुल्हाड़ी खुद के पैरों पर...
दोष मंडे हम अब गैरों पर...
दृढ़ निश्चय अब करना होगा...
प्राणों में दम भरना होगा...
अब बैठे कुछ काम चले ना...
माँ का आँचल अब जले ना...
सबके मन में प्यार जगाकर...
कठिनाई को दूर भगाकर...
फिर आओ शुरुआत करें...
माँ का आँचल लूट रहा है...
मिलकर आओ वार करें...
हम मस्तक पर इसे धरें और...
औरों से फिर बात करें...
समय बदलते देर न होगी...
गोद हरी फिर माँ की होगी...
फिर मस्तक पर बिंदी होगी...
चहुँ ओर फिर हिंदी होगी...
जय हिंदी जय हिंदुस्तान

मैं सीढ़ी का पत्थर हूँ

❒ हिम्मत राज शर्मा

ऊपर चढ़ने वाले मुझ पर
पग रख कर चढ़ जाते हैं।
करते मुझको पदाक्रान्त,
अपनी मंजिल पा जाते हैं।
मैं तो सीढ़ी का पत्थर हूँ,
मुझको सन्तोष इसी में है,
मैं बना सहारा उन सबका,
जो अपना भाग्य बनाते हैं।
सहता हूँ मैं नित पदाघात,
फिर भी हूँ निर्विकार, अविचल।
हूँ मान रहित, अभिमान रहित,
तत्पर हूँ सबके हित प्रतिपल।
मैं तो सीढ़ी का पत्थर हूँ,
मेरा बस लक्ष्य समर्पण है।
ईर्ष्या, अभिलाषा, द्वेष रहित,
सबका हूँ सेवक अटल, अचल।
है कौन याद रखता बोलो,
हम सीढ़ी के सोपानों को,
है कौन सँजोता स्मृतियों में,
किए गए अहसानों को?
मै तो सीढ़ी का पत्थर हूँ,
है धन्यवाद की चाह नहीं,
तुम दृढ़ संकल्पित हो बढ़े चलो,
पूरे करने अरमानों को।
यदि सफल हुए तुम चढ़ने में,
मुझको होगी खुशियाँ अपार।
सुख से झोली भर जाएगी,
उत्कर्ष तुम्हारा कर निहार।
मैं तो सीढ़ी का पत्थर हूँ,
बस मेरी यही कामना हैं,
नित ऊपर ही चढ़ते रहना,
अन्तर की सही भावना है।
मैं साक्षी हूँ उन लोगों का,
जो सफल रहे आरोहण में।
उनकी पीड़ा भी अनुभव की,
जो हार गए जीवन-रण में।
मैं तो सीढ़ी का पत्थर हूँ,
हूँ प्राण-हीन, लेकिन चेतन,
गिर जाओ फिर भी उठो, चढ़ो
मैं देता तुमको आमन्त्रण।

प्रधानाचार्य (से.नि.)
सोजत रोड, जिला-पाली (राजस्थान)
मो. 9929602057

शिक्षकत्व अनुभाव

❒ डॉ. मनीष चौरसिया

हम शिक्षक हैं, हम शिक्षक हैं।
नव आलोकन के उद्दीपक हैं
हम शिक्षक हैं, हम शिक्षक हैं।
नव चेतना का उन्माद लिये
भारत का स्वर्णिम भविष्य साथ लिये
उस तेज पुंज के संयोजक हैं
हम शिक्षक हैं, हम शिक्षक हैं।
ज्ञान वैभव का रसपान किये
गरिमा, गौरव, तेजस का भार लिये
नित होते नवाचार के गुम्बद हैं
हम शिक्षक हैं, हम शिक्षक हैं।
प्राचीन अर्वाचीन का प्रासाद लिये
साहित्य, संस्कार का मंगलमय गान किये
अज्ञान तमा में जलते कुल दीपक हैं
हम शिक्षक हैं, हम शिक्षक हैं।
नन्हीं-नन्हीं कोपल से हम वृक्ष बनाते
अभिमान का क्षण भर गान न गाते
वृक्ष, लता में जड़ हम कहलाते हैं
हम शिक्षक हैं, हम शिक्षक हैं।
स्वप्नदिवा में भी क्षणभर का न अभिमान रहा
महापुरुषों के अन्तरतम से गौरवगान कहा
करते उज्ज्वल ओजस्वी दीपक हैं
हम शिक्षक हैं, हम शिक्षक है।
परम वेदना की वाणी से
चेतनता का भार लिए
पलकों में करुण हृदय सा ज्ञान लिये
आत्म सम्मान से होते प्रेरित,
अन्तर्प्रेरणा के विश्लेषक हैं
हम शिक्षक हैं, हम शिक्षक हैं।
सृजनशीलता के गुण से आह्लाद किए
नव निर्माण की चौपड सार लिए
करते उज्ज्वल ओजस्वी दीपक हैं
हम शिक्षक हैं, हम शिक्षक हैं।
धन वैभव का मोह नहीं,
करते केवल सच्ची बात
अहंकार, अज्ञान विभा को देते मात
नव सृजित भावी पीढ़ी के प्रायोजक हैं
हम शिक्षक हैं, हम शिक्षक हैं।
कर्त्तव्यनिष्ठा से सीना तान खड़े
नव पौध का आत्मसम्मान बढ़े
अभिमान, अज्ञान तमा के आलोचक हैं
हम शिक्षक हैं, हम शिक्षक हैं।
मनुज संवेदना का प्रसाद बने
दुष्ठ राक्षसों में प्रहलाद बने
ईशकृपा और ज्ञान दिवा के
छोटे से उत्प्रेरक हैं
हम शिक्षक हैं, हम शिक्षक हैं।
मैंने कब अपना मान कहा
अंहकार के भावों से कब
अपना गुणगान कहा
हम तो नन्हीं बूंदों से मेघों के निर्माणक हैं
हम शिक्षक हैं, हम शिक्षक हैं।
करते करुण पुकार अन्तःमन से,
हे ईश व्यथा तुम सुन लेना
अभिमान की आँधी में न
मुझको अन्धा कर देना
भूत, वर्तमान, भविष्य के
हम छोटे से नायक हैं
हम शिक्षक हैं, हम शिक्षक हैं।
शासक हो प्रशासक हो,
नायक हो खलनायक हो
गुरु सीख से मिलता ज्ञान,
आर्यवृत्त के चाणक्य महान,
तब ही तो कहलाते अशोक महान
निर्माण, विनाश के होते हम आयोजक हैं
हम शिक्षक हैं, हम शिक्षक हैं।
नेता हो अभिनेता हो
चाहे कैसा भी अधिवक्ता हो
चिकित्सक हो, मनोविश्लेषक हो,
गुरुज्ञान सब गौण हैं,
आम आदमी-सा जीवन जीते रहते
नव कौशल के जो दीपक हैं
हम शिक्षक हैं, हम शिक्षक हैं।
कहता केवल इतनी बात
ज्ञानकोष से करता नित
नूतन कौशल की बरसात
स्वच्छ मनःस्थिति से प्रेरित होकर
हर युग के हम नायक हैं
हम शिक्षक हैं, हम शिक्षक हैं।

व्याख्याता
राज.उच्च माध्य. विद्यालय रंगतालाब, कोटा

प्रार्थना

❒ प्रतिभा भोजक

हे दयानिधि, हे पथ प्रदर्शक
सबको मार्ग प्रदान करो।
जो पीछे छूटे बंधु मेरे
उनकी राह आसान करो।
मैं नित माला फूलों की जोड़ूँ
काँटे पथ में छोड़ दूँ
जो शूल बिखेरे मैने पथ में
उन चरणों को पात दो।
उन चरणों....
डगर कठिन है सरल बना दो
द्वार अब तो खोल दो।
जो पीछे छूटे....
हे दयानिधि.....
मैं हर उलझन को चित्त से लगा लूँ
चिंता चित्त में धार लूँ
जो सलवटें अंतस में मेरे
उन गाँठों को खोल दो।
उन गाँठों....
कहीं ओर न कहीं छोर है
इस उलझन को सुलझन दो।
जो पीछे.....
हे दयानिधि.....
मैं हर वसन को तन से लगा लूँ
शृंगार मुख पे ओढ़ लूँ
जो वस्त्रहीन हो गली गली घूमे
उन तन को ढांक दो।
उन तन...
सर्द रात्रि में ठिठुरन सोती
अब तो दया का दान दो।
जो पीछे....
हे दयानिधि.....
मैं नित नव व्यंजन भोग लगा लूँ
तृप्ति उदर मैं धार लूँ
जो भूखे नटखट घर-घर घूमे
उन दीनों को धान दो।
उन दीनों को....
फिर से धान की कोठी भर दो
हरा भरा खलिहान दो।
जो पीछे....
हे दयानिधि.....
मैं मधु स्तुति से तुझको रिझा लूँ
तेरे चरणों की धूल हूँ
जो बीच राह में थक कर बैठे
उन हाथों को हाथ दो।
उन हाथों को...
जो निष्प्राण से औंधे लेटे
उन जीवों में प्राण दो।
जो पीछे....
हे दयानिधि हे पथ प्रदर्शन
सबको मार्ग प्रदान करो।
जो पीछे छूटे बंधु मेरे
उनकी राह आसान करो।

वरिष्ठ अध्यापिका
राबाउमावि. भीनमाल, जिला-जालोर (राज.)
मो: 9460833164

मेरा चित्तौड़...

❒ मुकेश कुमार स्वर्णकार

मेरा चित्तौड़ मुझे प्यारा लगता है।
पद्मनी की बात करुँ या
पन्ना के बलिदानों की
मीरा की बात करुँ या
जयमल पत्ता सरदारों की
अस्सी घाव खाकर भी,
रण में जौहर दिखलाने वाले
राणा सांगा का बलिदान,
हमें अच्छा लगता है
मेरा चित्तौड़ मुझे प्यारा लगता है।
सारथी की बात करुँ या
उड़ान के अभियानों की
भामाशाह की बात करुँ या
शिक्षा के चौपालों की
बाल विवाह और दहेज
की कुरीतियों के खिलाफ
हमारी बेटियों का बेबाक बोलना,
हमें अच्छा लगता है
मेरा चित्तौड़ मुझे प्यारा लगता है।

अध्यापक, रा.बा.उ.प्रा.वि. मरमी
पं.स. राशमी, जिला-चित्तौड़गढ़
मो: 9928854424

कविता

❒ मोहम्मद अकरम

तू चल तू चल, तू बढ़ तू बढ़।
मत कर परवाह दुनिया की
ये ना तेरी है, ना मेरी है
ना उनकी थी, ना अपनी है
तू चल तू चल, तू बढ़ तू बढ़।
तुझे बेफिक्रा तो होना होगा
तुझे लक्ष्य तो पाना होगा
हद से पार भी जाना होगा
मंजिल को तुझ तक आना होगा
तू चल तू चल, तू बढ़ तू बढ़।
तुझे औरों से क्या करना है
तुझे तो आगे बढ़ना है
तुझे औरों को हराना है
तुझे तो लक्ष्य पाना है
तू चल तू चल, तू बढ़ तू बढ़।
तू क्यों कतराता है मेहनत से
तू तो ज्ञान को जाना कर
तू औरों की कोशिशों को
देख के हार ना माना कर
तू चल तू चल, तू बढ़ तू बढ़।
तू कर मजबूत इरादों को
तू ताल मिला दे कदमों की
क्या है जो तुझको नहीं आता
तू इम्तिहां से क्यों घबराता
तू चल तू चल, तू बढ़ तू बढ़।
तू क्षण क्षण का उपयोग कर
ये दिन रात तू एक कर
तू शंकाओ को दूर कर
तू तजुर्बा से राह कर
तू चल तू चल, तू बढ़ तू बढ़।
लोगों को तुझे दिखाना है
इक समा-सा बनाना है
तू जिसके पीछे भाग रहा
उसको पीछे भगाना है
तू चल तू चल, तू बढ़ तू बढ़।
तू इक दिन जाना जाएगा
लोगों में पहचाना जाएगा
तू मदद का इक जरिया बन
राष्ट्र निर्माण में सहयोगी बन
तू चल तू चल, तू बढ़ तू बढ़।
तू चल तू चल, तू बढ़ तू बढ़।

व्याख्याता, रा.उ.मा.वि. सेतरावा
जिला-जोधपुर **मो: 9694736620**

आदर्श

❒ हनुमान सिंह गुर्जर

राष्ट्र मेरे लिए सर्वोपरि हो,
न्याय-नीति पर चला करूँ।
मेहनत पर विश्वास हो मेरा,
गलत मार्ग न कभी चुनूँ।।
जीवों पर करुणा आ जावे,
मैं सदाचार को अपनाऊँ।
दोष निवारण करके अपने,
सभ्य नागरिक बन जाऊँ।।
न तोड़ूँ मैं किसी नियम को,
कभी न विचलित हो पाऊँ।
सदा करूँ आदर्श का पालन,
कभी न मन में घबराऊँ।।
पढ़-लिख कर मैं योग्य बनूँ,
औरों के काम भी आ जाऊँ।
मैं बनूँ सहारा बेसहारों का,
कभी न पीछे हट पाऊँ।।
मात-पिता मेरे गुरुजन,
सदा प्रेरणा-स्रोत रहे।
आभारी हूँ, अभिलाषी हूँ,
सदा उनका आशीष रहे।।
वे आदर्श सदा से मेरे,
मेरी क्या तुलना उनसे।
मैं क्या हूँ? मैं कुछ भी नहीं,
जो पाया, पाया उनसे।।
पैर जमीं पर जमे हों मेरे,
हाथ काम में लगे रहें।
दृष्टि हो आदर्श पर मेरी,
कदम हमेशा बढ़ते रहें।।
भूल से भी मेरे मन में,
लक्ष्य कभी न धूमिल हो।
दिन-रात बैठते-उठते भी,
लक्ष्य सदा ही जहन में हो।।
लक्ष्य बड़ा है माना मेरा,
अब मैं उस अनुरूप बढ़ूँ।
सीख सीख कर कमियों से,
अब मैं आगे बढ़ता चलूँ।।
हे प्रभु ऐसी शक्ति देना,
सद् मार्ग पर चलता रहूँ।
हर बाधा मेरे पथ की,
पार करूँ, मैं बढ़ता चलूँ।।

अतिरिक्त जिला कलक्टर (RAS.)
ग्राम-शाहबाद, जिला बांरा (राज.)
मो: 9414570200

वन्य जीव की पीड़ा

❒ सुरेन्द्र माहेश्वरी

हम वन्यजीव
वन ही बसेरा हमारा
उजाड़ दिया तुमने अपने लिए
सड़कों की सफ़र का
सहारा लेकर अब तक
लाखों पेड़ों को धराशायी कर
आसरा छीन लिया हमारा
इसीलिए
तुमने भी छाया, फल, फूलों से
वंचित रह कर खोया जीवन
जीव धरा पर कितने भी हो
असहाय हुए बिन बसेरे के
पीपल, आंवला, बरगद, बीजों से
रिक्त हुए तुम पोषक चीजों से
बनते बादल इन पेड़ों से
बरसा होती धरती सरसती
बिन इनके अब
अकाल की काली छाया ने
लील लिया जीवन हम सब का
दया करो हम सब पर
जीव मात्र के रक्षक बनकर
आओ, फिर से पेड़ लगाएँ
बादल बरसे धरती सरसे
हम जीवों का बनें सहारा
कारखानों की रिसती गैसों ने
हर लिए प्राण हम सभी के
मिटती जाती जात हमारी
मुक्ति न मिली बदहाली से
जल को भी दूषित कर डाला
जहाँ मिलता है हमें सहारा
कुछ तो रहम करो हम पर
हम भी प्राणी है इस जग के
दया करो हम सब पर
आओ, फिर से पेड़ लगाएँ
बादल बरसे धरती सरसे
सुखमय हो जीवन सारा
हम जीवों का बनें सहारा।

प्रधानाचार्य,
राउमावि. तसवारिया जिला-भीलवाड़ा (राज.)
मो: 9829925909

श्रम का कुदाल

❒ चन्द्रभान सम्मौरिया

आलस्य त्याग हे नर-महान।
कर में ले श्रम का तू कुदाल;
दे काट जाल, बन्धन-विशाल।
तम की आँधी से उत्पीड़ित;
सदियों से हृदय रहा व्यथित।
नूतन प्रभात की बेला में;
कर स्वर्णिम-रश्मि का मधुर पान।।
मन की शक्ति का, कर संचय;
दे मिटा सभी, उपजे संशय।
है मार्ग कंटकाकीर्ण और निर्जन दुष्कर;
अद्भुत साहस से कर, निर्मित राहें हितकर।
प्रलयंकारी-दिवस और तूफानी रातों में,
आशा की उजली किरणों से
कर दे तम को देदीप्यमान।।
अल्प-समय, साधन-सीमित,
लम्बी है डगर;
स्वयं-विवेक, कौशल से बढ़ना,
न रुकना है मगर।
मर्म-चक्षुओं से, जो देखा सपना है;
पूर्ण-रूप उसको देना, ये कर्त्तव्य अपना है।
विश्व-मंच के उन्नति-पथ पर चलने में;
रहें अग्रसर हरदम, प्रथम पंक्ति में, हो सम्मान।।
सत्य, अहिंसा, प्यार, और ईमानदारी;
प्रगति-पथ पर बढ़ें, बनें मानव-हितकारी।
करें श्रम के बल पर मानवता का उपकार;
अगणित प्रयासों से छीनें,
स्वयं समता का अधिकार;
काल रात्रि का उन्मूलन,
हो चन्द्र-किरण का उज्ज्वल भान।।

प्रधानाचार्य, (से. नि.)
'गायत्री विला' 55 साकेत नगर,
रामगंज थाने के पीछे, अजमेर-305003
मो. 9928235765

बसंत

❒ सरोज जैन

हर डाल डाल पर यौवन
हर संधि पर अंगड़ाई कोंपल
तन हरा-भरा, रूप निखरा वन का
रंग हरा-पीत, कासनिया
लाल कोंपले पलाश की
त्रिदल वह नया पल्लवित
टूटी सूखी डाल पर निखर-निखर
कहता वन प्रदेश को
भोर हुई है, शोर कोयल का
हर पात-पात हरियाली मखमली आभा
संग जात, अंगजात को निरख-निरख
तन फूला कहीं मन फूला
खुद कहती सुखद हवाएँ
चलती है खुद-ब-खुद
चहक-चहक चिड़िया कह रही नीड़ में
चल दो दिशाओं को नापने मेरे साथ
छोर-छोर क्षितिज के उस पार
पंख फैलाये, तन विभोर भरते खग उड़ान
ऐसी क्या खूबी है तुममे बसंत
तुमसे ये गगन, कानन आल्हादित सब
अधुरिमा से मनस पुलकित जन सब
हिरण्य प्रभा फैलाता रवि जब
सांझ भी बन जाती सुरम्य
आमों के बौर नशीले
क्यों चुभते हैं बाण कामदेव के नुकीले
जन्नत सारी नज़र आती
धरा खुद पर इठलाती
चहुँ ओर शोर बसंत का
इत-उत गुंजार भँवरों का
मन ठहरता नहीं किसी का
ठहरा है पानी कमल दल सह
शीतल छाँव नीम की मधुरम लगती
झूलों पर पेंग भारती बाल टोलियाँ
हवाओं से बात करते ठहर जाती युवतियाँ
स्वभाव चंचल नटखट बंदर का
कोई अल्हड़ मस्त तो कोई मस्त कलंदर सा
क्यों गा लेता गीत कोई
कहीं बाँसुरी-सी बजती
भीत-भीत-से वन प्रदेश के प्राणी
निर्भय हो निकलते बसंत का गान करने
विचलित तपस्वी बाणों से कामदेव के
ललनाएँ पनघट पर चहकती सी
भँवरा तितली बतियाते से
बुझी पहेलियाँ सुलझाते से
फूलों के झाल में कामदेव की अगन विकराल में
उलझकर जलकर मर जाना है
चाहता है शलभ दिये की लौ में
अमरत्व प्रेम का पाकर दिव्यतत्व की खोज में
साधु तपस्वी शंभु-सी साधना में
देता सुखद आनन्द अध्यात्म में
पर्वतों की डगर पर दूरगामी अस्ताचल को
देख-देख भी मन रीझता है नखरालियों का
ऐसा होता बसन्त अन्तःपुरवालियों का
पर्ण कुटी शकुन्तला की-सी
दुष्यन्त संग आगमन भरत का भावी
सिंह शावकों संग क्रीडन आक्रन्दन
चकित भविजन वन-कानन
भावी का आनन्द अतिशय
समृद्ध वन, पर्ण, पुष्प उपहार
गतिमान जीवन भविष्य भारत आधार
करुण छाया मुनि की
पाया जीवन आधार
बसंत पर छाया दुर्वासा की
तभी तो सिंह शावकों की टोली में
निखर रहा दृढ़ अभिमान
निखर-निखर पुलकित भारत कोई
कपोल कल्पित नहीं किंवदन्ती-सी शकुन्तला
रह रही आश्रम वनवास
ये बसंत ही रंग लाया था
रंग दिया जीवन नायिका का
नायक का अभिमान भूल गया
नवयौवन में शूल चुभ गया
अभिमान भारत का ले गोद में
ऋषि का आशीर्वाद शीर्ष कर
पाल पोस भारत गौरव बढ़ा दिया
कविता-कहानी में इसकी, फिर से सौरभ
फैला दिया।

व्याख्याता
प्लेट नं. 604, ओर्बिट अपार्टमेन्ट, न्यूभूपालपुरा,
उदयपुर (राज.)
मो: 9929045563

लोकतंत्र में...

❒ राजेन्द्र कुमार टेलर

लोकतंत्र में राष्ट्र उसी का वंदन करता है।

दुनिया में उसका जीना इतिहास बनाता है
जिसके दिल में राष्ट्र प्रेम स्पन्दन करता है।
लोकतंत्र.....

भारत की श्री शोभा हैं अमद शहीद हमारे
जैसे द्विगुणित श्री माथे की चंदन करता है।
लोकतंत्र.....

परिवर्तन का भाव हिलोरें लेने लगता तब
शोषित और गरीबों का मन क्रन्दन करता है।
लोकतंत्र.....

दुर्योधन के संगी सब मैदान छोड़ने लगते हैं
बाणों का वर्षण जब कुन्तीनंदन करता है।।
लोकतंत्र.....

इसी देश में पला-बढ़ा, आभारी है अब
चुकता कैसे कर्ज देश का नन्दन करता है।।
लोकतंत्र.....

सेवा से सबके दिल में जो जगह बनाते है
जनमानस का रोम रोम अभिनंदन करता है।।
लोकतंत्र.....

प्रधानाचार्य
राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक
विद्यालय रायपुर पाटन
जिला-सीकर (राज.) 332718
मो: 9680183886

आरावल की गूँज

❒ कान्ता चाडा

मरुधरा की पावन चन्दन माटी
आजादी की तीर्थ स्थली
हल्दीघाटी
मेवाड़ की गौरव गाथा का
जन जन की भारत माता का
सच्चा सिपाही शूर वीर
नवयुग प्रवर्तक शौर्य पुँज
प्रातः स्मरणीय स्वनाम धन्य
आज के हिन्दुस्तान को
एक और प्रताप चाहिए।।
मुगलों से टक्कर लेने को
राजपूती मान बढ़ाने को
वह चला रौंदता मतवाला
हल्दीघाटी हुई रक्त रंजिता
खून की नदियाँ बहा रही
ऐसे बलिदानी शूर वीर में
युवा दरिया-दिल चाहिए।।
दुश्मन का मान मर्दन कर
अपनी लाज बचाने को
पद्मिनी वीराँगना ललनाएँ
जौहर की धधकती ज्वाला में
हँसते हँसते जो कूद पड़ी
ऐसी ही सच्ची खरी खरी
हिम्मतों से भरी भरी
दहेज-दानव को जो रौंद सके
वीर बालाएँ चाहिए।।
निज सम्पत्ति का त्याग किया
हीरे मोती अशरफियाँ भी
माटी से बढ़कर मौल नहीं
वह दानवीर भामाशाह था
राणा का वीर पहरूआ था
राजा के चरणों में नतमस्तक
सोने चाँदी के ढेर किए
निज मातृभूमि की रक्षा को
तन-मन-धन सर्व समर्पित है
यह मरुधरा आबाद रहे
ऐस भावों से भरे-भरे
यहाँ वहाँ जहाँ तहाँ भटकते
भूखे नंगे सिसकते बचपन को

बस एक और भामाशाह
चाहिए।।
सूर्यवंश के क्षात्र तेज से
सिंचित यह मेवाड़ धरा
अरावली के आँचल से
हिन्दवाणी सूरज उदय हुआ
शौर्य भक्ति की अनुपम गाथा
मीराँ-पन्ना की व्यथा कथा
कण कण में चाँदनी चमक रही
भरत खण्ड के भव्य धवल
उत्तंग शिखर पर दमक रही,
रूप रंग की चाँदणियाँ
ममता की छाँव में पालनियाँ
लोरी में वीररस सुना रही
यह वीर प्रसूता मरूधरा
सदियों से कोख में बह रही
शौर्य-भक्ति की पावन गंगा
इस त्राहि-त्राहि मानवता को
एक और सुवर्णा चाहिए।।
''मेवाड़ी आन-बान खातिर
रजपूती क्षात्र धर्म खातिर
केसरिया पगड़ी बंधी रहे
और मन में माँ की याद रहे
पावन मातृ-भूमि के चरणों में
दुश्मन का मस्तक झुका न दूँ
महलों का वास त्याग दूँगा
सोने चांदी के बर्तनों से
रेशम के मखमली गद्दों से
न मेरा कोई नाता होगा
घास बिछौना, घास ही खाना
यायावर जीवन जीना होगा
मैं भीष्म प्रतिज्ञा करता हूँ
मेवाड़ धरा आजाद रहे
प्रताप का गौरवमयी मस्तक
माँ! तेरे चरणों में झुका रहे।''
यह प्राण प्रतिज्ञा राणा की
आरावल में है गूँज रही
आज भी भारत माता को
शूरवीर प्रतिबद्ध जुझारू
ऐसे सपूत चाहिए, सच्चे
सिपाही चाहिये।
अलगाव बैर से भरे हुए
बन्दूकों से हथियारों से
जो देश में बलवा करते हैं
ऐसे घातक देशप्रेमियों को
मुँह तोड़ जवाब जो दे न सके
तो हमने आज क्या किया?
डरी-डरी सहमी-सहमी
हरी-भरी गूँजती वादियों में
आतंकी गोले जलवों को
हिंसा की आग बुझाने को
वीर प्रताप-से हाथ चाहिए
वो तलवारों की चमक-धमक
चेतक-सा जोश चाहिए
वो मातृभूमि का रखवाला
वो आजादी का दीवाना
एक और प्रताप चाहिए।
एक और प्रताप चाहिए।

वरिष्ठ अध्यापिका, नगर परिषद् के सामने, बीकानेर-334001 **मो: 9983047070**

शृंगार से अंगार तक रिश्ते

❒ पूरणमल तेली 'विदुष'

बैठा था शृंगार रस लिखने
लेकिन कलम से आँसू निकल पड़े।
मैं हुस्न के गीत कैसे गाऊँ
जब बेटियों पर बिजलियाँ कड़क पड़े।।
पूजी जाती बेटी के रूप में जहाँ नारी,
देवों का स्वागत करती वहाँ नारी।
पर अब जब दुष्टों का,
होने लगा बेटियों पर अत्याचार।
पूजा की तो बातें छोड़ो,
सम्मान को भी तरस रही यहाँ नारी।।
सुनकर ये हृदयविदारक घटनाएँ,
बार-बार करता हूँ ये विचार।
मेरे अन्तस् को झकझोर,
होने लगा यों हाहाकार।
क्यों ये बेटियाँ हर क्षण
सहती रहेगी जग का भार।।
माँ के रूप में, भीगी आँखों को,
मेरी जो पोंछती है।
मेरे अशान्त अन्तर्मन को,
जो धूप में छाँव दे।
चंचलता लिए मेरे तन को,
जो गोद में भर ले।।
पत्नी रूप में, गिरता हूँ तो,
थामती है मुझे।
थका हारा ये जानकर
नयनों में शीतल धारा जैसी।
मेरे अरमानों को प्रतिपल,
नई ऊर्जा से सींचती जैसे।।
बहिन रूप में, मेरे आँसुओं को,
आँचल में पिरोती आशाओं के।
संसार में सबसे अनमोल होती,
दो परिवार की आशाओं के।
कष्टों को भी हँसकर सहती,
अन्तर्मन से सम्बलन देती।।
माँ पत्नी बहिन बेटी,
विविधा संज्ञा युक्त बेटी।
आज के परिवेश में,
सर्व बन्धनों से मुक्त बेटी।
करनी होगी रक्षा हमें,
उसकी जो गगन में है उन्मुक्त बेटी।।

अध्यापक
सण्डियारड़ा-मुंगाना, भूपालसागर,
जिला-चित्तौड़गढ (राज.)-312204
मो: 9460910799

फिर चलने की सोच रहा हूँ

❒ सन्त कुमार दीक्षित

फिर चलने की सोच रहा हूँ,
फिर चलने की सोच रहा हूँ।
छोड़ सहारे दुनिया भर के,
भूल हादसे घर-बाहर के,
ले उम्मीदों की बैसाखी,
स्वप्नों का बनकर मैं पाखी,
शिखर-पार जाने की खातिर,
अब उड़ने की सोच रहा हूँ।
फिर चलने की सोच रहा हूँ।।
भटका हूँ सदियों तक भ्रम में,
धर्म-जाति के उलझे क्रम में,
छद्म जगत के बहकावों को,
दूर झटककर दिखलावों को,
खुद से सच कहने की खातिर,
सब कहने की सोच रहा हूँ।
फिर चलने की सोच रहा हूँ।।
घावों पर लेप लगाकर,
शुष्क कण्ठ तक जल पहुँचाकर,
सहलाकर व्याकुल हृदयों को,
देकर दीप्ति बुझे दीपों को,
तुष्टि प्राप्त करने की खातिर,
परकेन्द्रित हो सोच रहा हूँ।
फिर चलने की सोच रहा हूँ।।

प्रधानाध्यापक
मॉडल प्राथमिक विद्यालय रनियाँ द्वितीय,
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात (उ.प्र.)
मो: 7905691970

श्रम में आस्था बढ़े

❒ जगदीश चन्द्र नागर

काम की लगन दो, सत्य की अगन दो।
बिना रुके हम सभी, विकास पथ को चूम लें
विकास पथ को चूम लें।।
ऐसी हमें शक्ति दो, मनुष्यता की भक्ति दो।
आत्मा के अनवरत, पतन से हमको मुक्ति दो
पतन से हमको मुक्ति दो।।
साम्प्रदायिकता मिटे, भेदभाव सब हटे।
आलस्य की डगर को छोड़, श्रम में आस्था बढ़े।
श्रम में आस्था बढ़े।।
अन्याय को चुनौति दें, न्याय के पथ पर बढ़े।
इन्सानियत के रास्ते पर, चल सभी आगे बढ़ें।
चल सभी आगे बढ़ें।।
विवेक की मशाल से, ज्ञानदीप जल उठे।
मूर्खता की कालिमा, जड़ सहित सारी हटे।
जड़ सहित सारी हटे।।
दुर्गुणों से दूर हो, प्रेम से भरपूर हो।
सद्गुणों की राह पर, बिना रुके, बढ़े-चलें।
बिना रुके, बढ़े-चलें।।
आलस्य सब नष्ट हो, दूर सारे कष्ट हो।
हर गिरे इन्सान को, गले लगा, बढ़े-चलें।
गले लगा बढ़े-चलें।।
वेद का उत्थान हो, साहित्य का मान हो।
प्राचीन आर्यवासी के, समां सभी विद्वान हो
समां सभी विद्वान हो।।

शिक्षक (से. नि.)
ईदगाह रोड, वैशाली नगर के पास,
पो. रीजनल कॉलेज,अजमेर (राज.)-305001

आज का कवि

❒ अमर सिंह गोदारा

कठघरे में खड़ा है शब्दों का खिलाड़ी,
एक कवि....?
पैसा और उसका पेशा...
एक कवि का पेशा
साहित्य का राही अभी भी इंतजार में,
स्वाति नक्षत्र में सीप की नाईं
एक बूँद बरसात की....
मोती बनाने के लिए ....
क्या आज का कवि मोती उगलता है;
कबीर बनकर....?
या फिर पैशन का पेशा...
एक वतन का पैशन, मानवता का पैशन
कहीं बहुत पीछे छूट गया है।
और रह गया है चंद सिक्कों का फिक्रमंद...
वतन को गुप्त जी के गले में डाल कर निकल
पड़ा है; पैसे बनाने के लिए...
पैसे बनाने के लिए...
कमाता तो फिर भी मान लेते।
पर जब से बनाने लगा है...
मोती बनाने की क्षमता पर एक प्रश्न चिह्न
लग गया है।
बिल्कुल अपने मूल स्वरूप में,
थोड़ा-सा अकड़ा, थोड़ा-सा टेढ़ा,
और हमारी परम्पराओं के विपरीत नीचे बिंदी लगाए...
एक साथ हजारों सवालों का प्रतीक बनकर...?

प्रधानाचार्य
राउमावि. लांपला तला (बाड़मेर)

उन सपनों के गाँव में

❒ डॉ. विद्या रजनीकांत पालीवाल

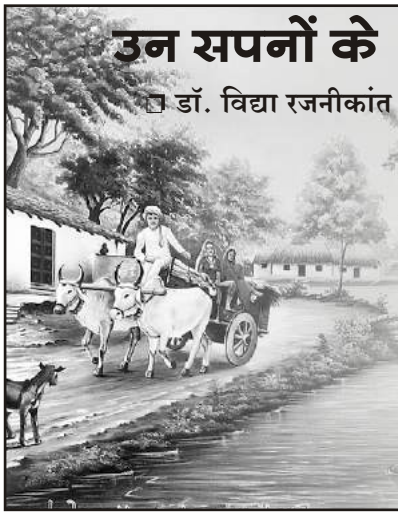

लौटा चल मुझे मेरी माँ
उन पेड़ों की छाँव में।
वे नन्हें-नन्हें-से झुरमुट,
वे प्रशान्त पेड़ों की टोली।
बाग-बाग डाली लहराती,
वह कोयल की मीठी बोली।।
याद घनी माँ! सहलाती है
उन सपनों के गाँव में।।.....
बालू के टीले नदी किनारे
क्या आनंद दिलाते थे।
कागज की नौका को हम
मन भर खूब चलाते थे।।
किसकी नौका कितनी आगे
उछलता मन उल्लास में।।....
राम-लखन से वीर रहे हम,
सदा अनुपम बात हमारी।
गिरते पड़ते उठ साथ-साथ
हमने पल-पल राह संवारी।।
क्या ही बचपन रहा जो
जिया हमने एक रस-राग में।।....
क्या हम इतने बड़े हुए माँ।
काम-काम से बौराए।
अपने से अपने को भले
बचपन को भी बिसराए।
ठिठक देखता रहा ओचक्का
इस कोलाहल के राज में।।....
रजस-तमस के रमझोले को
छाया एक जीवन देती।
आत्मसात कर हर पल को
सुंदर सपनों से भर देती।।
लौटा दे मेरे शैशव-सपने।
देखूँ दर्पण एकान्त में।।....

सहायक निदेशक (से. नि.)
22 बृज विहार, धायबाई जी की बाड़ी,
पुला, उदयपुर-313001
मो: 9351549041

संस्कार

❒ लक्ष्मीकान्त शर्मा 'कृष्णकली'

अध्यापक
42/27, शिव कॉलोनी,
चौमू, जिला-जयपुर-303702
मो: 9784132269

शिक्षा में संस्कार हो
चरित्र का विकास हो
बालमन में मानवता
का उद्गार हो
तभी शिक्षा का
सपना साकार हो।।
शिक्षा में परिवार हो
सामाजिक सरोकार हो
सभ्यता संस्कृति से
बुद्धि सराबोर हो
तभी शिक्षा का
सपना साकार हो।।
सत्य, अहिंसा, सद्भाव
का समाहार हो
सम्यक् दृष्टि, सम्यक् ज्ञान से
विवेक का विकास हो
तभी शिक्षा का
सपना साकार हो।।
बुराई का बबूल हो
अन्याय भी निर्मूल हो
मनोविकारों का मर्दन हो
ऐसे ज्ञान का अर्जन हो
तभी शिक्षा का
सपना साकार हो।।
मानवीय मूल्यों में
हिमालय-सा अटल
आत्म विश्वास हो
जीवन संघर्ष में
सागरों की लहरों-सा
अहसास हो
तभी शिक्षा का
सपना साकार हो।।
विद्या का दान हो
विनय का सम्मान हो
करुणा का ज्ञान हो
ऐसे हर धर्म का
शिक्षा में स्थान हो
तभी शिक्षा का
सपना साकार हो।।
बारिश की बूँदों-सा
परोपकार हो
प्यासी धरती-सा
सेवा-संस्कार मन में
अविराम हो
ऐसा शिक्षा-संस्कार हो
तभी शिक्षा का
सपना साकार हो।।
सच्चाई का तलबगार हो
इंसानियत का मददगार हो
जम्हूरियत का पैरोकार हो
ऐसा तालीम-ए-तहजीब हो
तभी तालीम का
ख्वाब साकार हो।।
देश भक्ति का ज्वार हो
बलिदान का खुमार हो
राष्ट्रवाद का चमत्कार हो
ऐसा नागरिक तैयार हो
जो भारतीयता का
संपूर्ण अवतार हो
तभी माँ भारती का
सपना साकार हो।
शिक्षा में संस्कार हो
चरित्र का विकास हो
तभी शिक्षा का
सपना साकार हो।।

पर्व अनोखा

❒ श्यामसुन्दर तिवाड़ी 'मधुप'

दीपमालिका के दीपों से,
दशों दिशा फैला उजियाला।
गहन तमस की आज अमा को,
लगा कि ज्यों पूनम कर डाला।
खील बताशो मिष्टानों की
घर-घर सजी हुई है थाली।
सरस्वती, लक्ष्मी, गणेश की,
है पूजा की बात निराली।
रंग-बिरंगी चमक रही हैं,
छत मुंडेर बल्बों की लड़ियाँ।
बम-पटाखे आतिशबाजी,
छूट रही अनगिन फुलझड़ियाँ।
बच्चों-बड़ों सभी में जैसे,
आज बड़ा उत्साह समाया।
भेद-भूल सब गले मिल रहे,
सचमुच पर्व अनोखा आया।

व्याख्याता (सेवानिवृत)
6 बी-26 आर.सी. व्यास कॉलोनी,
भीलवाड़ा-311001 **मो: 9413730276**

जीने का मकसद

❒ रेणुका गाँधी

तरुवर के सूखे पत्तों-सा जीवन
रुग्णता दयनीयता व मोह का बंधन
नश्वर तन में अलंकृत मन
साकार कैसे हो दुर्लभ प्रयोजन
गंतव्य पथ की है कठिन उगर
रस्साकशी-सी दौड़ फैली है चारों ओर
जीने की आस में कमंपाते विचार
मन की चमक से धुंधीलाती नज़र
हाथों के कर्मों से प्रभावित चेतन
राज कुछ तो बतलाओ गुरुवर
जीने का हो आखिर क्या मकसद
किकर्तव्यविमुढ़ क्यों बन गया जीवन
जग की जरूरत क्यों बन गया धन
यही कही बसी सी मेरी नन्ही मुस्कान
हो गयी आज वो मुझसे अन्जान

व्याख्याता
द्वारा श्री अनिल शाह
'धनश्री' कन्सलटेन्सी उदयपुर रोड, धरियावद
जिला-प्रतापगढ़-312625

स्वच्छता

❒ नवल सिंह नरूका

साफ सफाई, रख मेरे भाई।
घर की, तन की, हरेक जन की।
गली मौहल्ला, निर्मल मन की।
सब मिलकर के करो सुनाई
साफ सफाई, रख मेरे भाई।
बीमारी को दूर भगाएँ
हम सब बलशाली हो जाएँ
सुखी रहें और सुखी बनाएँ
खूब हँसें और खूब हँसाएँ
छूट जाए हर एक दवाई
साफ सफाई, रख मेरे भाई।
शौच सदा शौचालय जाएँ
अपनी सेहत खूब बनाएँ
ये बातें सबको समझाएँ
सही राह पर बढ़ते जाएँ
बड़े बड़ों से शिक्षा पाई
खूब सफाई, रख मेरे भाई।

व. अध्यापक (से. नि.)
ग्राम-नूनीया, पो. नाटौज, तह-कठूमर
जिला-अलवर

माँ भारती

❒ सीताराम व्यास 'राहगीर'

जय जय जय माँ भारती।
मिल कर उतारें हम आरती।।
गौरव गाथाएँ भरी पड़ी हैं
नारी शक्ति खूब लड़ी है
सीमाओं की चौकसी कर
दुश्मन को ललकारती
जय जय जय माँ भारती।
लेकर जान हथेली पर
चलती सीना तान कर
नज़र मिले जब भी दुश्मन से
मौत के घाट उतारती
जय जय जय माँ भारती।।
आन-बान और शान
शौर्य का है गुणगान
कण-कण में तेरी गुंजन
रणचंडी बन हुंकारती
जय जय जय माँ भारती।।
गगन भेदी लक्ष्य को
नमन करें तिरंगे को
हे! अमर शहीदों की जननी
नित उठ करते आरती
जय जय जय माँ भारती।।

पटवारियों की गली नं. 6
अम्बेडकर कॉलोनी,
बीकानेर- 334003
मो: 9413621407

संध्या

❒ हरिनारायण वर्मा

तपिश रवि के कारण,
न जाने कहाँ छुप जाती है।
गोधूली के काल में वह
थोड़ी सी मुस्काती है।।

जलद पछिम के भीतर से,
मंथर-मंथर वह आती है।
रतनारा चूनर ओढ़ वह,
स्वर्णिम देह सी लगती है।।

स्वागतातुर थाल सजा यामिनी,
इत्र अरगजा फैलाती है।
दीप जला तारों का वह,
संध्या वंदन करती है।।

शंख, नगारे झालर के मध्य,
झिलमिल-झिलमिल आती है।
मिलन निशा के कारण वह,
पुनः विलुप्त हो जाती है।।

व्याख्याता
रा.उ.मा.वि. चिताणु कलां (जयपुर)

बेटी को पढ़ने दो

❒ रामेश्वर लाल

बेटी को पढ़ने दो,
बेटी को खुला आसमान दो।
स्वतंत्र उड़ान के लिये पंख लगने दो,
स्वतंत्र उड़ान नीले अंबर में भरने दो।
स्वतंत्र विचरण जीवन में करने दो,
नव जीवन में स्वप्निल स्वप्न बुनने दो।
भेदभाव नहीं करो बेटा बेटी में,
हे मनुज! अच्छा जीवन जीने दो।
प्रगति की राह में बाधाएँ नहीं आने दो,
प्रगति पथ की राहें आसान होने दो।
बेटियों के पंखो को खुलने दो,
शिक्षा की ओर कदम बढ़ाने दो।
नारी शक्ति को आगे बढ़ने दो,
नव भारत का निर्माण होने दो।
खुश हाल जीवन जीने दो,
नव युग का निर्माण होने दो।
जीवन में नव ज्ञान की ज्योति जलने दो,
बेटी के जीवन में नया सवेरा आने दो।
हे मनुज! नव-नूतन वर्ष में,
नन्हीं सी कलियों को खिलने दो।

प्रधानाचार्य (से.नि.)
पुराना किला, सांभर लेक-303604 (जयपुर)
मो: 9929187985

ग़ज़ल

❒ डॉ. भँवर कसाना

उसने कसर न छोड़ी तोड़ने में।
हमने जी-जान लगा दी जोड़ने में।।
पीढ़ियाँ खपती है निर्माण करने में;
कितना वक्त लगता है फोड़ने में।।
जिसने फली भी न फोड़ी जमाने की;
अब पसीना तो आयेगा ही दौड़ने में।।
जो वक्त की पीठ पर सवार होते हैं;
वे ही सफल होते हैं उसे मोड़ने में।।
जब शराफ़त मन मसोस रह जाए;
तब भलाई है भँवर उसे छोड़ने में।।

प्रधानाचार्य रा.उ.मा.वि. नथावड़ा (नागौर) **मो: 982873595**

दादी माँ

❒ रामनारायण सैनी

जग से न्यारी दादी माँ,
सबसे प्यारी दादी माँ।
रोना रूठना जिसकी गोद में,
हँसना सिखाती दादी माँ।
हारी बाजी कैसे जीतें,
हमें सिखाती दादी माँ।
कहानी सुनाती परियों की,
और लोरी गाती दादी माँ।
जिसने हमें जीना सिखाया,
वो मूर्ति है दादी माँ।
परिवार की साकार प्रतिमा,
ज्ञान की भण्डार दादी माँ।
अनुभवों का खजाना देती,
प्यार दुलार में दादी माँ।
अनुपम अनुभव जिससे मिलता,
ऐसी हमारी दादी माँ।

व्याख्याता
राउमावि. श्रीमाधोपुर, सीकर (राज.)-332715
मो: 8949805882

अलगाई

❒ डॉ. मूलचन्द बोहरा

वह सुबकती है
सिसकती है
और तो और रो भी पड़ती है
कौन?
जवाब
मौन।
एक अंतराल बाद
कुछ बुदबुदाहट
सरसराहट
फुसफुसाहट
मद्धिम-सा स्वर
गौने की रीत पर
नेहर की अलगाई को
सुन, सोचकर
वह सुलगती है
बिलमाने पर भी
नहीं बिलमती है, वह केवल सुलगती है
वह सुबकती है...सिसकती है....
क्या कभी किसी आदमी को
इस बेला पर
रोते देखा है?
तो सहज जवाब होगा
'ना'
तो फिर क्यों है?
वह एक के लिए सुबसुबाहट का सबब
और दूसरे के लिए मुस्कुराहट का सबब
जवाब बहुतेरे हैं
पर है सभी दुःखदायी
वह उस संसार को छोड़ विदा होती है
जहाँ वह कई बसंती बहारों में थिरकी है
खिलखिलाई है
चहचहाई है
और अब उसे यह मालूम है
उसके ये सब क्रियापद
लगाम में कसे जाने वाले हैं
सो-सोच-सोचकर
वह सुबकती है.....सिसकती है.....
उसको डर है
अब कहाँ मिलेगी माँ की थपकी
बाप का सिरहानी हाथ
भाई के साथ
होड़म-होड़ की हाथा-पाई
दादा-दादी का दुलार
इसी आसन्न अकेलेपन को
भाँपकर-सोचकर
वह सुबकती है....सिसकती है.....
वह शंकित है,
अब देर सबेर निंदियाने की थपकी देकर
कौन सुलाएगा
हौले से मुलायम ओढ़न
कौन ओढ़ाएगा
निंदिया के मीठे आलम के में हौले से जगाकर
दूध कौन पिलाएगा
नेहर की ये मीठी-मीठी मस्ती
कहीं बिखर न जाए अंसुवन में
बस यही सोच-सोचकर, समझ-समझकर
वह सुबकती है.....सिसकती है....
और तो और रो भी पड़ती है....

उपनिदेशक (आरटीई)
2-ए 34, मुरलीधर व्यास नगर विस्तार
बीकानेर-334004 (राज.)
मो: 8003801094

दोहे

❒ लियायत अली खाँ 'भावुक'

हौंसलों से भरी मैंने ऊँची बहुत उड़ान।
अब चाहे जितना करो ऊँचा यह आसमान।।

सुख-दुख से भरे पड़े जीवन के दिन चार।
किंचित ये भी बाँट लो नैया होगी पार।।

कीड़ा एक पश्चिम का आया अपने देश।
घूँघट घाघरा ले गया, दिया स्कर्ट का भेष।।

राजनीति के खेल में व्यस्त सारा गाँव।
शराफ़त बेचारी को मिला कहीं न ठाँव।।

राजनीति के खेल में जो है ड्रामेबाज।
सही गलत देखे नहीं सफल है वो आज।।

राजनीति का गाँव में खुल गया जब स्कूल।
छोटी एक गलती को देते भारी तूल।।

जन्मी जब बेटी यहाँ मचा बहुत कोहराम।
नारी को नारी से हुई नफरत मेरे राम।।

हुई बेटी जब घर में बापू को नहीं चैन।
करे पूरी मजदूरी क्या दिन क्या रैन।।

सपने तो माँ-बाप के होंगे पूरे जरूर।
उड़ान भरेंगी बेटियाँ दिवस नहीं वह दूर।।

महंगाई की मार से पड़ी भयंकर गाज।
चूल्हा रोता जोर से निर्धन के घर आज।।

बुढ़ापा आया देखकर दुखी हुआ इंसान।
दूर-दूर सब भागते रिश्ते लहूलुहान।।

अब तो नौजवानों का रखवाला बस राम।
जी चुराए मेहनत से, फैशन सुबह शाम।।

जिला शिक्षा अधिकारी (से.नि.)
ग्राम पोस्ट-भीमसर (झुंझनूं) पिन-333001
मो: 9460784521

हिन्दी शान बढ़ाती है

❒ कृष्णानन्द सोनी

पुत्रश्री श्रीनाथ किशोर इन्द्रगढ़,
बूँदी-323613
मो: 9252006655

हिन्दी शान बढ़ाती है।
संस्कृत देव भाषा बनती,
अंग्रेजी पीछे रहती,
हिन्दी हमारी मातृभाषा,
भारत का मान बढ़ाती है।
हिन्दी शान बढ़ाती है।
बढ़ते युवा देश की पहचान,
कहते हिन्दी बने महान,
हिन्दी, हिन्दुस्तानी भाषा,
हिन्दुस्तान बनाती है।
हिन्दी शान बढ़ाती है।
मातृभाषा की रक्षा करना,
14 सितम्बर 'हिन्दी दिवस' मनाना,
अपने लक्ष्य को पाने में,
हिन्दी सर्वोच्च स्थान दिलाती है।।
हिन्दी शान बढ़ाती है।

एक शिक्षक पिता

❒ डॉ. अवन्तिका प्रजापति

अगर मैं चित्रकार होती तो तस्वीर बनाती आपकी
अगर मैं पत्रकार होती तो विशेषताएँ बताती आपकी।
लिखना तो बहुत कुछ चाहती हूँ इन पंक्तियों में, पापा
पर मैं लेखक नहीं, वरना जीवनी बना देती आपकी।।

हम बच्चों को अँगुली थामे चलना सिखाया आपने
छात्रों को भी स्वजीवन में बढ़ना सिखाया आपने।
जब छिपे हम बादलों में निकम्मे बनकर कभी, पापा
तब सफलता की सीढ़ी का मार्ग दिखाया आपने।।

माँ ने जन्म दिया है, पर पहचान दी है आपने
पेट के गाँठ लगाकर भी जिलाया, कुर्बानी दी है आपने।
हार मान हम बैठे जब-जब, पापा
तब-तब चलते रहने की राह दिखाई आपने।।

हाड़-माँस के पुतलों को, इंसान बनाया आपने
बेचैन होकर सोए हुए को, इक सपना दिखाया आपने।
सपने भी अपने होते है, सच में ही अपने होते है,
अग्निपथ स्पर्धा में, जीतना सिखाया आपने।।

न जाने कितनी बार मैंने दिल दुःखाया आपका
कभी तो कर दिया होगा, अपमान भी आपका।

आशीष बस एक और दे दो, पापा
दिन-ब-दिन बढ़ाती रहूँ मैं, मान सम्मान आपका।।

बेटियों की शिक्षा खातिर एक किए दिन रात,
पग-पग पर उजियारा करती छाया हो जैसे साथ।
जब-जब रोये हम तूफानी राहों में, पापा
तब-तब रखते आए सिर पर आशीर्वाद का हाथ।।

वृक्ष बनकर सहते रहे, गर्मी की धूप को आप
जड़ें बनकर देते रहे, खाद और पानी आप।
गुरु बनकर गुर सिखाए, जीतने वास्ते आप,
पिता रूप में सदा याद, आते रहोगे आप।।

मैंने खड़ा होना क्या सीखा, दौड़ना सिखा दिया आपने,
मैंने कलम क्या पकड़ी, लिखना सिखा दिया आपने।
दाद देनी पड़ेगी आपकी विजय की, पापा
मैनें पढ़ना क्या सीखा, मुझे शिक्षक बना दिया आपने।।

व्याख्याता
रा.आ.उ.मा.वि. शेखावास, भीम
राजसमन्द (राज.)
मो: 9001368022

माँ

❒ विश्वम्भर पाण्डेय 'व्यग्र'

माँ सुबह बनके
जगाती है
सबको चिड़िया-सी चहकती
फुलवारी-सी महकती
फिर दोपहर बन जाती
सबको भोजन खिलाती
फिर स्वयं खाती
ढलती दोपहरी की तरह
बिन ज़िरह बन जाती
सांझ करती स्वागत
अपने काम से
आने वालों का
केवल मुस्कराकर
सबको खिलाकर
फिर कुछ पाकर
बन जाती निशा
बुझ जाती दिये की भाँति
फिर बनने के लिए
अगली सुबह...
मेरी माँ, सबकी माँ

वरिष्ठ अध्यापक
कर्मचारी कालोनी, गंगापुर सिटी,
सवाई माधोपुर (राज.) 322201
मो: 9549165579

वृद्धाश्रम

❒ दिनेश विजयवर्गीय

स्नेह प्यार और आशीर्वाद से भरी
हमारी पारिवारिक संस्कृति में
वर्षों तक अपनों के बीच
जीवन जीने वाले बुजुर्ग
परिजनों से उपेक्षित व अपमानित हो
अपने आसरे के लिए
पहुँच जाते हैं वृद्धाश्रम।
जहाँ वह अपनी ही तरह
परिजनों से अपमानित होकर आए
बुजुर्गों के साथ कर लेते हैं बातें
एक दूसरे से सुख-दुःख की
वह बहला लेते हैं अपने रोते हुए मन को
जब मिलने लगते हैं लोगों के मन
वह पहिचान लेते हैं
एक दूसरे की पीड़ा को
और बढ़ने लगती है उनमें
सहानुभूति-सहयोग की भावना
एक दूसरे का सहारा बन जी लेते हैं
वह गुजार लेते हैं अपना दिन
सुबह योगा कर
कैरम, ताश, चौपड़ खेल
अखबार व धार्मिक पुस्तकें पढ़
दिन में घंटा-दो घंटा सोकर
भजन-कीर्तन व टीवी. देख
कर लेते हैं अपना मनोरंजन
उन्हें पता ही नहीं चलता
इन सबके बीच कैसे गुजर जाता है दिन।
जब कभी रातों में आती नहीं नींद
तो करवट बदल-बदलकर रह जाते हैं वे
बंद आँखों में याद आने लगते हैं
परिवार के लोग
जिन्होंने किया था प्रताड़ित और मजबूर
शेष जीवन वृद्धाश्रम में काटने के लिए।
और उन्हें आने लगते हैं याद,
सीमित आय में खुशहाली से
गृहस्थी चलाने के दिन
बेटे की पढ़ाई में दरियादिली से
किया गया खर्च
पोते-पोतियों के साथ
खेल जमाने के दिन
लंबा सिलसिला है यादों का
जिन्हें याद कर भर आती हैं आँखें
बस ऐसे ही कट जाती है बुजुर्गों की रातें
जब नींद नहीं आती।

215, मार्ग-4, रजत कॉलोनी,
बून्दी-323001
मो. 9413128514

आज लेखनी लिख डालो

❒ मनमोहन शर्मा

आज लेखनी लिख डालो
कुछ ऐसा वरदाई
जन-मन को आनन्दित कर दे
हो जाए फलदाई।
तुम शमशीर बनो,
उनको जो माँ को लज्जा दें
उनको भी मत माफ करो
जो पद को सज्जा दें
शकुनी, जाफ़र, जयचन्दों को
माफ नहीं करना
डरा हुआ जो निज कर्मों से
उससे क्या डरना
शब्द-शब्द पर कर प्रहार
बन रणचण्डी माई।
जननी जन्मभूमि के आदर में
पावन छंद लिखो
शापित, तापित, ज्ञापित पर
जल्दी प्रतिबंध लिखो
हिम आच्छादित रहा
देश की रक्षा में तत्पर
हनुमतथप्पा की हिम्मत पर
सुन्दर प्रबंध लिखो
लिखना चाहो अमर 'आरुणि'
लिख दो मनचाही।
ज्ञान, ध्यान, अभ्यास लिखो
पर सत् रज् तम् लिखना
दिख जाए जो सूरदास को
कान्हा-सा दिखना
तुलसी के मानस में घुसकर
ले ली बहुत लहर
पर कबिरा की कामर को
लिखना अद्भुत गहना
बन जाए निष्काम कर्म
जीवन में सुखदाई।
सत् चित में आनन्द बसा है
या वृन्दावन में
केहरी मृग की छाल पर
डनलप के आसन में
तारक, मारक, सम्मोहन
वरना उच्चाटन में
मैं मैं में, तू ही तू में
या फिर तू तू मैं मैं में
क्षण भर ले विश्राम
नाद ध्वनि अन्तर गहराई।
लिख डाले इतिहास, खगोल
भूगोल लिखे तूने
भौतिक, जीव, रसायन
गति के नियम लिखे तुमने
खण्ड, महा, चम्पू के
सुन्दर काव्य बहुत देखे
शून्य, शून्यतर गीता के
बहु भाष्य लिखे तुमने
पर भारत के भाग्य विधाता
लिख, क्यूँ सकुचाई।

व्याख्याता
'पाठक भवन', चौबे पाडा,
हिण्डौन सिटी (करौली)-322230
मो: 9828041506

उम्मीद

❒ भीम सिंह मीणा 'अमन'

सोचता हूँ
जीवन कहीं
रेगिस्तान में भटक गया है
लू की थपेड़ों में दुबका बैठा है
इस वीराने में
पानी की तलाश में तड़प उठता है
इस मृग-मरीचिका से
निकल भागने की सोचता है
पर बड़े बंधन हैं
जो जकड़े हैं इस मन को
निकलने को राहें बहुत हैं पर...
रेगिस्तान से धुंधली दिखती हैं वे
सोचता हूँ 'अमन' कभी आएगी बहार
खिल जाएँगे फूल हर तरफ
खुश्बू आएगी हर ओर से जीवन में
और खुश्बू लुटाता रहूँगा जीवन भर।

प्रधानाचार्य
राउमावि. हिम्मतगढ़, ब्लॉक-सज्जनगढ़,
जिला-बाँसवाड़ा (राज.)
मो: 9413857125

ओ रमजाना

❒ लक्ष्मी चौबीसा

(अपनी एक छात्रा के वॉल्व में छेद होने से असमय काल कलवित होने पर)

रोती बिसुरती माँ करे आर्त पुकार, ओ रमजाना।
रब के राज में यह दर्द की दास्तां, ओ रमजाना।
आस पास बैठे सहमे-सकुचे, छोटे भाई-बहन,
विस्मित! सोच में पड़े हुए, कहाँ गई रमजाना।
दैव यह कैसा विधान, अकाल काल का ग्रास,
खेलने-पढ़ने की उम्र और यों चल पड़ना महाप्रयाण।
माँ को कहने को ढाँढ़स के शब्द कहाँ,
साथी-सहपाठी सोच सहमे विकल कि उन्हें भी.....
नहीं-नहीं यह ना होना था अष्ठम वर्ग में ही,
मात्र 'तेरह-चौदह' में मौत से रूबरू होना।
हा! बड़ी त्रासद है अपनी छात्रा की शोकसभा में शिरकत,
शब्द नहीं सूझते, क्या कैसे कहें? मौन हो निस्तब्ध।
गहरी संवेदना शब्दों को खोकर आँसू बन,
बस करो यह शब्दावली, निःशब्द विरानी।
हा! फिर न करनी पड़े किसी छात्रा की शोकसभा,
एक रमजाना में रमती सब बालकों की आत्मा।

उपाचार्या (से. नि.)
31/73 राती-तलाई जिला-बाँसवाड़ा (राज.)

पुकार

❒ रामनिवास जांगिड़

मेरा हृदय करे पुकार....
बहुत बह चुका निर्मल पानी।
बहुत हो चुकी खिंचातानी।। मेरा हृदय करे पुकार.....
यह हृदय नहीं है काठ का।
यह हृदय है, स्पंदन का।। मेरा हृदय करे पुकार.....
समय-समय का फेर न समझे।
वो हो जाये कहीं गैर न हम से।। मेरा हृदय करे पुकार.....
अब न बनी तो फिर न बनेगी।
अब न जली तो फिर न चलेगी।। मेरा हृदय करे पुकार.....
अब समय है चिन्तन का।
अब समय है मंथन का।। मेरा हृदय करे पुकार.....
नादानी से नाता तोड़ें।
मानवता की कड़ियाँ जोड़ें।। मेरा हृदय करे पुकार.....

वरिष्ठ अध्यापक
रा.उ.मा.वि. बलाड़ा-पाली
मो: 9636853102

पर्यावरण की पुकार

❒ शिव नाम सिंह

पर्यावरण हमारा आवास हमारी सुरक्षा का कवच
हम पर्यावरण की रक्षा करेंगे तक वह हमारी रक्षा करेंगे।
हमारी आवश्यकता पर्यावरण की सुरक्षा व संरक्षा है
पर्यावरण के प्रति हम कब तक आँखें बंद किए रहेंगे।
पर्यावरण की सार सम्भाल बहुत कम हो रही है,
पर्यावरण को बिगाड़ने वाली ताकतें अधिक सक्रिय हो रही हैं।
हम प्राकृतिक पर्यावरण को अप्राकृतिक बना रहे हैं
भावी पीढ़ी के लिए दूषित जल, जहरीली गैसें
बंजर भूमि और मौसम की मनमानी दे रहे हैं।
पर्यावरण पर हमला कर हम वन और
वन्य जीवों को खत्म कर रहे हैं।
पर्यावरण की छेड़छाड़ बंद कर इसे बचाने की
चेतना जागृत की जानी चाहिए।
तब ही हम जान पाएँगे। धूल, धुआँ बढ़ता शोर,
धरती चली नाश की ओर
पर्यावरण की हलचल का सीधा प्रभाव पड़ता है हम सब पर
जीवन के लिए जहाँ हरियाली जरूरी है, वहीं
जल, थल, वायु, ध्वनि की पवित्रता जरूरी है।
यह तब ही सम्भव होगा जब हम पर्यावरण को
प्रदूषण से बचा पाएँगे
पर्यावरण के महत्त्व को जान पाएँगे।

रीडर (से. नि.)
114, अमरसिंहपुरा, बीकानेर
मो: 9414021234

अब हम अपनी बात कहेंगे

❒ मुन्नी शर्मा

कान खोलकर सुने ज़माना,
अब हम अपनी बात कहेंगे।।
अदना-से माटी के पुतले,
खुद को खुदा मान बैठे हैं
हम भी उस विधना की रचना,
हमको जुदा जान बैठे हैं
पगलाए हाथी नित रौंदे,
बालक सपने घुटनों चलते
फरियादों की सहमी कलमें,
शब्द निवेदन वाले निकले
देवी, दासी बहुत हुआ अब,
खुद को आदम जात कहेंगे।।
कान खोलकर सुने ज़माना.....
नन्ही-सी चिड़ियों की आँखों में,
सपने पलते अम्बर के
नित ही बौराए तूफान,
बिखेरे तिनके उसके घर के
तन्हाई में वही दशानन,
भरी भीड़ में राम बने ये
चेहरों पर हैं छद्म मुखौटे,
वहशी वाले काम करें ये
अगर दीप से जले आशियाँ,
उसे भटकती आग कहेंगे।।
कान खोलकर सुने ज़माना.....
दाग लिए फिर भी इठलाए,
चन्दा कितना बड़भागी है
शापित है पाषाण अहिल्या,
जनम-जनम से हतभागी है
मरने पर सतियाँ पुजती हैं,
गाथाओं का थोथा वन्दन
भस्मीभूत स्वर्णकायाएँ,
पौरुष के माथे का चन्दन
जगती चाहे विरुद बखाने,
हम तो इसको पाप कहेंगे।।
कान खोलकर सुने ज़माना.....
कानूनों का मालिक मुजरिम,
सुबक रहा इंसाफ बेचारा
उजला दूध सियाही उगले,
पावन रक्षाबंधन हारा
रूप बदलती दुर्घटनाएँ,
हत्याएँ जौहर बन जाती
ज़मींदोज़ पावन सीताएँ,
शोणित वाले अश्रु बहातीं
मूक तमाशा देख रहा है,
इसको ख़ाक समाज कहेंगे।।
कान खोलकर सुने ज़माना,
अब हम अपनी बात कहेंगे!!

वरिष्ठ व्याख्याता
24/11 'साकेत' आदर्श नगर, अजमेर-305001
मो: 9413949520

ढूँढ़ें खुशियाँ

❒ उषा रानी स्वामी

बच्चे होते हैं भोले-भाले
बात-बात में हँसी ढूँढ़ने वाले
अबोध, कोमल, सरलमन
आसपास से बेखबर
आता है उन्हें, बस
अपनी बात मनवाना
मचलकर जिद्दकर
और बन जाते हैं
अपनी दुनिया के
सरताज़ बादशाह।
कुलाचे भरते कलयुग में
हमें भी मिल जाते हैं
अनगिनत भौतिक सुख बड़ी सरलता से।
फिर भी विचारों के मकड़जाल में उलझे
तनावग्रस्त अवसाद में डूबे
एक पल सुकून के लिए
करते हैं लाखों जतन
पर, नहीं जी पाते बच्चों-सा जीवन।
आओ, हम भी बनें जटिल से सरल
कठोर से कोमल, बढ़ें बोध से
अबोध की ओर, और पा लें वह सब
जो बालक की दुनिया में हर पल विचरता हैं।

व. पुस्तकालयाध्यक्ष
द्वारा श्री पदमचन्द स्वामी
278, श्यामाप्रसाद मुखर्जी नगर, निवाई (टोंक)
मो: 9530004587

अंधेरे में

❒ सूर्य प्रकाश जीनगर

अकाल की विकराल
छाया देखकर
बूढ़ा गडरिया मुरझाया
कहाँ से आएगा
चारा .... पानी ....??
सूखे की चिन्ता में घबराया
मौन ..... स्तब्ध!
मरघट के बने चित्र-विचित्र
खूंटे से बंधे ढोर
रीते पड़े ठाण
निकल रहे प्राण
धन के भविष्य पर
लगा प्रश्नचिह्न
वर्तमान के अंधेरे में ....।

ठाण = चारा रखने की जगह
धन = जानवर

253-ए, 'हरि सदन',
इन्दिरा कॉलोनी,फलोदी, जिला-जोधपुर (राज.)-342301
मो: 9413966175

अभिलाषा

❒ बाबू खान शेख

खुदा करे लोगों के दिलो में एक ऐसा जलजला आ जाय।
नफ़रत, गुस्सा, अहम, गुरुर, सब पल भर में ही दूर हो जाय।।
प्यार, मोहब्बत, भाईचारे की फिर ऐसी एक चले बयार।
चोर, उचक्कों, दहशतगर्दों से सबको ही निज़ात मिल जाय।।
युवा देश का बढ़े आगे और सद्कृत्यों से नाम कमाय।
उत्पादन बढ़े कल कारखानों में और खेतों में फसल लहराय।।
श्रमिक देश के नव निर्माण में एकजुट हो काम लग जाय।
छात्र-छात्राएँ तन-मन-धन से ज्ञानार्जन में तन्मय हो जाय।।
जवान सरहद पर सजग रहें, दुश्मन इस ओर न नज़र उठाय।
हम आपस के झगड़े-टन्टे व्यापक हित में त्वरित विसराय।।
जन प्रतिनिधियों से करबद्ध निवेदन जन जन के वो कष्ट मिटाय।
सब मिल कर वे सवा सौ करोड़ जनता की सेवा में लग जाय।।
चहुँओर हरियाली होगी अगर हर एक जन पेड़ लगाय।
शुद्ध हवा का आनन्द लेंगे और भरपूर फिर बारिश आय।।
जीवन सबका सुखमय होगा फिर नहीं कोई संताप सताय।
तब फिर यह देश महान बनेगा आओ सब मिल करे उपाय।।
क्षुद्र स्वार्थ और संकुचित सोच की, न हम किन्हीं बातों में आय।
सब मिल कर हम एक ही स्वर में आनंदित हो जन-गण-मन गाय।।
मेरा मुल्क फिर अमन चैन और खुशहाली की बंशी बजाय।
सारे जगत का सिरमौर बने और यश कीर्ति चहुँओर फैलाय।।
मन के मेरे भाव कहीं कविता के जरिये कुछ असर दिखाय।
तो मन को मेरे संतोष मिलेगा, हृदय मेरा प्रफुल्लित हो जाय।।
फिर विश्व पटल पर हमारा तिरंगा गर्वित हो ऊँचा फहराय।
यह मनोकामना बाबूखान शेख की, मालिक करे पूरी हो जाय।।

जिला शिक्षा अधिकारी (से.नि.)
ग्राम पंचायत भवन के पास
सिरोडी (सिरोही)
मो: 9414242553

बेटी मृदुल महक तू

❒ भगवती प्रसाद गौतम

पल-छिन चपल चहक तू,
बेटी मृदुल महक तू,
आन-बान घर भर की,
देश धरा की शान।
गुमसुम-सी क्यों बैठी?
उठ खुद को पहचान।
खोल ज्ञान-पट अब तू,
बोल, न केवल सुन भी।
भीड़-भरी दुनिया को
निज अनुभव से गुन भी।
साहस जरा जुटाले,
मुक्त डगर पर चल दे।
पिटी लकीरों वाली
हर रफ्तार बदल दे।
अधरों पर हो तेरे
अक्षर का गुण-गान।
गुमगुम-सी क्यों बैठी....
जल-थल-नभ की हों या
बातें जग-जीवन की।
स्वप्न सँजोकर सुंदर
बन मालिनी चमन की।
हाथ थामले पोथी
फेंक कपट के खंजर।
धड़क उठें हर दिल में
उत्सव जैसे मंज़र
मंज़िल नहीं असंभव,
यदि कोई ले ठान
गुमसुम-सी क्यों बैठी....
अब कमजोर नहीं तू
नहीं रही तू अबला।
नवयुग के साए में
हर नारी है सबला।
सबकी उठें निगाहें,
ऐसे उगा उजाले।
नई हवा के संग-संग
अपने पाँव बढ़ाले।
'नर से भारी नारी'
जन-जन को हो भान।
गुमसुम-सी क्यों बैठी,
उठ खुद को पहचान।

1-त-8 अंजलि, दादाबाड़ी, कोटा-324009 **मो: 09461182571**

जगमग-जगमग दीप जले

❒ उर्मिला नागर

जगमग-जगमग दीप जले।
रोशन घर का हर कोना हो।।
प्रकाश जैसा उज्ज्वल तन हो।
जन-स्वजन का, निर्मल मन हो।।
रोशनी का, आगाज़ जहाँ हो।
तुम वहाँ हो, हम वहाँ हों।।
दूर मन के, अँधकार हों।
मीठे सुर हों, मीठी ताल हो।।
शुभकामना है, यही हमारी।
सतरंगी, हर दिवाली हो।।

वरिष्ठ अध्यापिका
ईदगाह रोड,
वैशाली नगर के पास
पोस्ट-रीजनल कॉलेज,
अजमेर (राज.)-305001

मूक साधक : पेड़

❒ उम्मेद सिंह भाटी

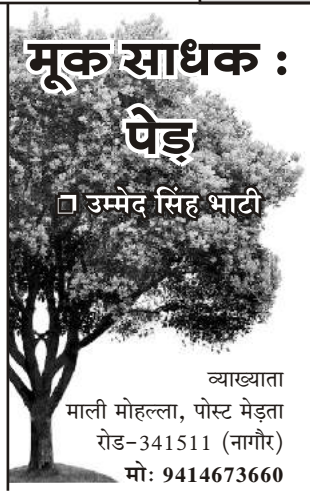

जिंदगी इम्तिहान लेती है;
दुःख संघर्ष के थपेड़ों से।
मैंने बहुत कुछ सीखा है;
इन मूक खड़े पेड़ों से।।
सर्वस्व लुटाकर अपना,
इन्हें सुकून मिलता है।
अडिग रहकर त्याग,
सहनशीलता से;
इनका मन कमल खिलता है।
पत्थर मारने वाले को भी;
देते हैं फल रसीले सदा।
लुटाकर सब कुछ अपना;
खुशी से लहलहाते सर्वदा।।
बदले में न कोई चाहत
किसी से,
न कोई अपेक्षा रखते।
रहकर अडिग हर हाल में;
गर्मी-सर्दी सब संताप सहते।।
दर्द सहकर भी न करते;
कभी फरियाद किसी से।
मौन रहकर अनवरत साधना में;
रत किसी 'ऋषि'-से।।
जिन्दगी इम्तिहान लेती है;
दुःख संघर्ष के थपेड़ों से।
मैंने बहुत कुछ सीखा है;
इन मूक खड़े पेड़ों से।।

व्याख्याता
माली मोहल्ला, पोस्ट मेड़ता
रोड-341511 (नागौर)
मो: 9414673660

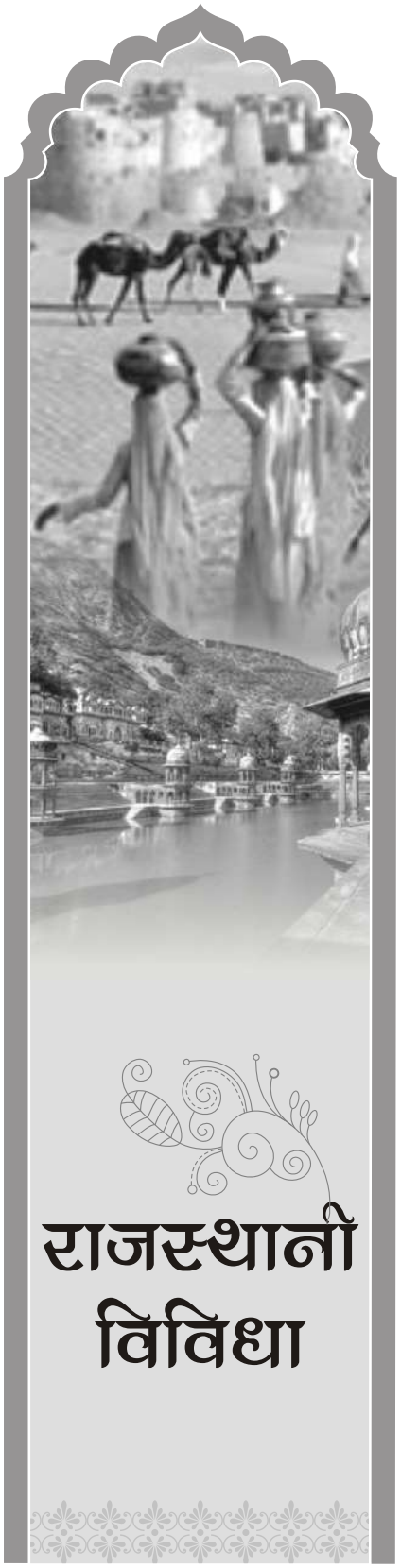

आलेख

सम्पत रो भारौ

❒ नरसिंह सोढा

घर जातां धरम पळटतां, तिरिया पड़ता ताव।
औ तीनूं दिन मरण रा, कहां रंक कहां राव।।

आद अनाद जुगां सूं भारत रै जीवट रा मूल्यां नै सैरूप सर-जीत राखणियौ औ इज मंतर संजीवणी रौ संचार करातौ रैयो जिण सूं भारत री लाखीणी संस्कृति अजूं तांई थिर रैयी, सिरमौर रैयी, जिका आज पण आखै जग नै जिन्दगाणी जीणै रा जाझा जतन करावै। इण भांत री जुगां जूनी सरगा सरीखी, अणखीला अदबा आळी संस्कृति, जठै जन्म लेवण खातर देवतावां मांय पण होड लागी रैवै। अेहड़ी ऊजळी संस्कृति रा सिरजण अर सीचणहारा भारतरवरस रै कूणै कूणै रा रंक सूं लेर राजा ता ई रैया। उण रै पाछै पण बराबर समाज रै सगळा वरगा रौ जप-तप, त्याग-बलिदान, सेवा-भगति, करम-ग्यान, भैलप-भाइपौ, स्नेह-समरस आद साची सम्पत रै सागै संस्कृति रौ पौषण करतौ रैयौ, उण सूं लगोलग समाज रै मुहंगा मूल्यां रौ संरक्षण अर संवरधण होवतौ रैयौ।

आपणा देश भारत माथै काळ रै कुचक्कर रा कितरा ई भतौळिया आया अर गया पण अपांरा समाज री साची सम्पती अर संस्कृति री कंचन काया नै जनमानस ऊनौ बायरौ इ नी लागण दियौ। सगळा वरगां आपसरी सम्पति अर समरसता राख बैरीया बूटा बाळिया, खुद घणा डोरा अबखा वखत काड्या पण समाज मांय कदै ई दरार तोई नी आवण दी अर आवण आळी पीढ़ीयां नै अखण्ड समाज सौपता रैया।

दुनिया मांय भांत भांत री घणी मोकळी सभ्यतावां, संस्कृतियां पनपी, पसरी अर बखत परियाण आपरौ नामो निसाण ई मिटा गयी पण आपांरी भारत री संस्कृति, समाज रचणा, व्यवस्था आपरौ अस्तित्व बचावण मांय सफळ रैयी है उण रै लारै अेक ईज कारण रैयो बो है आपांरी सबळ सामाजिक समरसता अर सम्पती। भारत री संस्कृति रै मूळ माय तो आखै भूमण्डल नै आपरौ कुटुम्ब मान्यौ है 'वसुधैव कुटुम्बकम्' रौ उद्घोस करयौ है। सगळै संसार नै सम्पती सूं जीणै री मंगळ कामना करीजी है जिण री आ श्लोक साख भरै ज्यां-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग्भवेत।।

इण भाँत भारत रै आदि समाज मांय सामाजिक समरसता री आदर्श स्थिति रैयी कठैई कोइ इ सो दाखलो नी मिळै जिका जाति, वर्ग, भेद कर नफरत जतावै सर्वत्र समभाव रैयौ। अठै तांई सबूत है कै सृष्टि रा आद ग्रन्थ ऋग्वेद जिका भारत री संस्कृति रा प्राण है उणां रै सूक्त मांय सर्वसमाज, वर्ग रै कल्याण, समभाव री प्रार्थना करीजी है ज्यां-

सङ्गच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानानांउपासते।।

इण भांत सरुपोत सूं ले'र लारला केई सईकड़ा पैलां तां ई अपांरा समाज रा चारों वरणां मां सरमसता अर सम्पत सांगोपांग रैयौ। सगळा समाजां रा छत्तीस कौम रा पटवार अेक गाँव माय बाङ सू बाङ, आंगण सूं आंगण टकरा'र पीढ़ीयां गुजारी कदेई दो दांत नी होया। अेक दूजै रै सहयोग बिना आपरौ जीवण अधूरौ मानता। अेक दूजै रै अबखाईयां में कांधौ लगा'र खड़ा रैवता, कारज सारता, मरणै, परणै री प्रीत पाळता, वार तेवार रामा श्यामा नीं होता तो उड़ीक राखता, खोळ-धरमेळा जिसौ पावन रिस्तो सुरगाा नै भी सरमावौ, जठै जिण रौ सामी सगां रिसता पाणी भरै, अेडी समरसता अर सम्पती आळा सगळा वरगां रा लोग आपसरी मायं दादा, ताऊ, काका, भाउ, बा जी, बाईसा आद रिस्ता सूं सम्बोधन करता। कठैई नफरत-घृणा भेद री बूं तक नीं आती, पण जद सूं बाहरला बैरीयां भारत माथै आक्रमण सरु करया, देस माय घुस'र आज की कुरलाई सूं समाज मांय कलह री लाय लगाई, उण रै बाद भाई-भाई नै दुसमण समझण लाग्यो।

भोळो भारत रो वासी गैरां री गेली बांता मायं आर समाज रौ हर वरग अेक दूजै सूं दूर होवण लागग्यौ बीं दिनां सूं समाज रै टूटणै रा खोटा दिन सरु हौ ग्या वेरी आपरी कुटलाई माय सफळ होया 'फूट डालो अर राज करो'। आजादी जिण रौ जीता जागतो दाखलो है कै

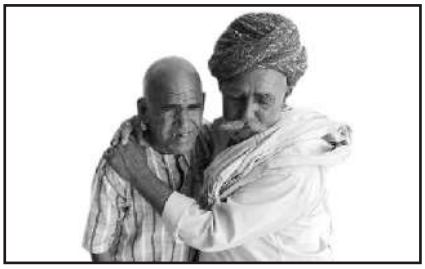

आजादी मिळी पण दो फाड़ होया ईग्या, ओ किणी दुरभाग्य सूं कमती नी हो।

आजाद भारत मांय आधुनिकता आई, विकास रा गीत गाइजै पण भारत रै समाज मायं परस्पर स्नेह कमती होयो। सामाजिक, नैतिक मरजादा टूटी है, समरसता फीकी पड़ी, सम्पत सिमट गी। कारण कै गैरां ने समाज तोड़बौ रो मायंनै सूं थोथो करणै रौ घरां मायं छोबो घाळणै रौ मौको, मिळगौ इण सब रा जिमेवार आपां खुद हाँ। जिका भायां सू दूरी बणा र बैरीयां री बातां मांय आय घर मायं राड़ घाला हां, दूजा कदैई निहाल नी करै। भाई-भाई होया करै है केवताणौ है कै-''साळा घणा सपूत पण भायां भीड़ भाजै।'' आज अपारां समाज नै तोड़णै सारू आखी दुनिया री बारळी ताकतां अठेरी की ठाण नासै है, कदास मौके मिलै अर भारतीय समाज नै तार-तार करां, इण रौ थोड़ो सो'क नंगो नाच लारला दिना देख्यो ग्यो है वै अपारां समाज संस्कृति अर देश माथै कलंक है। अबै सगळा समाज नै सावचेत करणै री दरकार है।

भूलोड़ां नै मारग बतावणियौ कोई है तो बो है उण देश, समाज, कौम रो इतिहास। इतिहास वर्तमान रा सवाळां पडूतर घणां चतराई सूं सांभ र राखै, फकत उण रै अध्ययन री जरूरत है। जिण देश अर समाज रौ इतिहास ऊजळौ रह्यौ बो कदेई मिट नी सकै। आपारां देश भारत रौ इतिहास सदा मिनखाचारै रै आदरशांना रौ सिरमौर रैयौ, मानवता रै मूल्यां री परकास्ठा आळौ रैयौ। आ सगळा कीरतीमान जद ही थरपीज्या होवेला, जद सगळा समाज मांय समरसता, अर सम्पति रैयी होवेला, कलह अर घर माय गोधम घालण वाली जगह कदेई, हरगिज उन्नति नी होवेला। आ बात अदनो मिनख पण समझौ जिका दुनियां नै आपारै समाज री समरसता अर सम्पति रौ ढोखलो है।

आपां नै आपौ नी खोणो, समाज तोड़णीया गैरां रै बरगलावै मायं नी आवणौ, आपां सगळा सहोदर हां, बडेरां री पीढ़ीयां री पीढ़ीयां अपणायत सूं गुजर गी' आज दुसमण कैवे थै बैरी हो अर आपां बांरी बात मानग्या, आपांरी अकल धोरे चढ़गी। कितरी बड़ी भूल करां। हां, बुद्धिजीवियां नै ठावस राख'र सोचणौ पड़ेला। भेद की बात हळाहळ झूठ है, सगळा ई भारत माता रा सपूत हैं। माता री सेवा करणी औळाद रा फ़र्ज होया करै आ बात समझ किणी अेक वरग नै अणूत नी करणी कै म्हारै सागै घणो भेदभाव होयौ अैड़ी बात नी है, बीमारी आवै जद सगळा शरीर नै परभावित करै कोई अंग बेअसर नहीं रैवे, उणी भांत भारत रै समाज जै कमियां आदि तो सगळा वरग परभावित होया है अर बै दुसमणा री कुचालां सूं होया हैं उण मांय आपारां वडेरा नै, पुरखा नै कोसणो आपां नै ओपै कानी। बौ सरासर गळत है, भारत माता रौ अपमान है। सगळी बुराईयां नै सगळा वरगा नै रळ मिळ'र हेत सूं दूर करणी चाइजै, अर करी है अर समूळ मिटाई जा सकै। फकत जरूरत है तो नेड़े रहणै री, गळै सू गळै मिळणै री न कि आंतरौ राखणै री। आज पराया विचारां नै छोड़ स्वसंस्कृति निज विचारां नै अपणा'र उण पर काठा अर करड़ा रहण सूं समरसता अर समानता रहणै सूं कदेई आपांरौ सम्पत रौ भारो नी टूटेला अर सम्पत रा सहस भाग मिलेगा।

जरूरत मुजब कवेसरां आपरी कविता सूं निज धरम नै चेतावण रौ परयास सतत राख्यौ, ज्यां-

हिळ मिळ राखौ हेत, रैयत छापां राज सूं।
चित में राखौ चेत लाज धरम रख देवला।।

जद कदेई समाज नै नुकसान होयौ उण वखत आपांरो सम्पत (एकता) रौ भारौ टूट्यौ है समरसता री जेवड़ी ढीळी हुई है, सम्पत रौ भारौ समरसता सूं बंध्योड़ो है, समरसता टूट्या सम्पत रौ भारौ तिण-तिण हो जावै उण तिणकै नै काळ रौ बायरौ उड़ा आकाश पटकै, नामो निशान मिट जावै, पण उणी तिणका रा भारा नै कुंजर पण कीं नी कर सकै। उण रै लारै है आपसरो समरस स्नेह अर सम्पति।

सम्पत रौ भारौ, सांभ'र राखौ काळजै।
हिळ मिळ रैवो भाइड़ा, आ अरज है म्हारी।।

खेतसिंहपुरा, माल्हणसर
त. बज्जू जि. बीकानेर-334305
मो: 9799634344

मेवाड़ी-पाग

❒ रामजीवण सारस्वत 'जीवण'

पग-पग वीर-वीरापै रा परचम
रण-रण सूर-सूरापै रा धाम
धीर-वीर ऐड़ी धरम-धरा नैं
नित उठ नमण-खमण प्रणाम.....।।
कण-कण जिंणरौ करमठ करमी
जण-जण जिंणरौ जबर जोधाय
जंण-जंण कूख मेवाड़ी जणियाँ
कमधजिया इतियास रै माँय
चम-चम चमक्यौ सूर-सूरापौ
बध-बध बधियौ नाम-सुनाम
धीर-वीर ऐड़ी धरम-धरा नैं.....।।
तपौधरा मरुधर री अरावळ
जठै तप्यौ रै मुनि हारित महान
धोक-ध्यान एकलिंग री करतौ
गऊ भगत जबरौ विधवाँन
इछवाँकु कुळ कूख सूराँळी
धिन-धिन हुई ऐड़ी भौम सुजांम
धीर-वीर ऐड़ी धरम-धरा नैं.....।।
हठी हमीर वीर खेतौ-लाखौ
मोकळ-कुँभौ-साँगौ-समर सुजाय
रतन-सरूप-अमर बाघौ-रावत
भामौ-बिरभाण-सुखराय
रणबँका धरमी-दानी-मानी
अमर हुयौ रै जिंणरौ सुनाम
धीर-वीर ऐड़ी धरम-धरा नैं.....।।
नँईं पदमणी जैड़ी कोई महाराणी
नँईं पन्ना जैड़ी हुई कोई धाय
तीन-तीन जौहर रचबाळी दूजी
नँईं धरा कोई इण जग माँय
घर-घर मीराँ री भगती रा दरसण
मरूधर री ऐड़ी भौम सुधाम
धीर-वीर ऐड़ी धरम-धरा नैं.....।।
तेज रेयौ प्रताप तणौं रै
गढ़ चितौड़ चमकियौ खास
गढ़ कुँभळ-गौगुँदौ-चाँवड़
हळदीघाटी रचियौ इतियास
पगाँ पड़ी नँईं पाग मेवाड़ी
धिन-धिन मरूधरा सूर सुजांम
धीर-वीर ऐड़ी धरम-धरा नैं.....।।

कार्यालय अधीक्षक (से.नि.)
एफ-93, मुरलीधर व्यास नगर,
बीकानेर-334004(राज.) **मो. 9460078624**

कहाणी

अड़वौ

❒ भीखालाल व्यास

ग्वाड़ी री जाळ री गैरी छिंया में म्हैं खाट माथै बैठौ हौ। आंख्यां आगै पूरी जिन्दगी रा चितरांम फिरता हा। हाथ री आंगळियां में फंस्यौड़ी बीड़ी बुझगी ही...पण म्हनैं कोई ध्यांन नीं हौ। जाळ रै माथै चिड़कल्यां चीं-चीं कर री ही अर, अठी-उठी उड़ती ही। इतराक में तो अेक पीलू आय'र म्हारै हाथ माथै पड़्यौ। पीलू पाकोड़ौ हौ...म्हारै हाथ माथै पड़तां पांण फूटग्यौ....उण रौ रस बारै निकळग्यौ। म्हैं आंगळी सूं पीलू आगौ उछाळयौ अर रस पौंछ्यौ। इतराक में फेर अेक पीलू पड़्यौ.... म्हैं ऊंचौ देख्यौ...जाळ माथै चिड़कल्यां आपस में लड़ री ही। अेक चिड़कली नै सगळी चिड़कल्यां मिळ'र उड़ावणी चावती ही। व्है उण माथै झपटती ही....चांच सूं धकेलती ही। व्हा चिड़कली ई अेक डाळी सूं उड़'र दूजी माथै बैठ जावती... लारली सगळी उणनै वठै सूं ई उड़ावण वास्तै लारै उड़ती। चिड़कली जाळ रै माथै इज अेक डाळी सूं दूजी माथै उड़ती ही...पण जाळ नी छोड़ती ही....।

म्हैं घणी ताळ तांई चिड़कल्यां रौ औ रासौ देखतौ रहयौ। म्हनैं लाग्यौ के म्हारी हालत ई उण चिड़कली री गळाई हुयग्यी है...लारली चिड़कल्यां म्हनैं उड़ावणी चावै- पण म्हैं जाळ नी छोड़णी चावूं..।

म्हनैं याद आयौ- बाणवौ में म्हैं जलम्यौ हौ.. म्हारै जलम रै च्यार बरसों पछै छिनुवौ काळ पड़्यौ हौ। म्हारा भाबा केवता हा...छिनुवा काळ में औ थारौ भाई जलम्यौ है....उण सूं दोय बरस पैंली मोवन अर उण सूं दोय बरस पै'ली यूं...इण तरै सूं थारौ जलम बांणवौ में हुवणौ चाहिजै। बांणुवौ... कितरा बरस हुयग्या...हमें बासठौ चालै.. इण तरै सूं तौ सीत्तर बरस हुयग्या... सीत्तर बरस... दिन जावतां कांई टैम लागै।

म्हनैं याद आयौ... छग्गा में म्हारी मां मरगी ही...उण टैम रा म्हैं चवदै बरस रौ हौ.. पोसाळ में पढ़तौ हौ। च्यार भायां अर तीन बैना रौ परिवार छोड़नै म्हारी मां मरगी ही। म्हारी मां चावती ही के म्हैं पढ़ूं..पण उण टैम रा इसकोलां तो ही कोनी....गांव में पौसाळ ही.. गुरांसा री..। पोसाळ में म्हैं थोड़ा दिन तांई पढ़ण नै गयौ, पण म्हारौ मन नीं लागतौ। म्हारा भाबा ई म्हनैं कणेई रुखाळी करण सारु....कणेई निदांण सारु अर कणेई भातौ पुगावण सारू केवता... अर म्हारी पौसाळ छूटगी!

जिण दिन म्हारी मां मरी, म्हैं बौत रौयौ हौ। यूं तो पूरा घर में इज कुळराम मांचग्यौ हौ। बैनां तो नैनी ही... तीजौड़ी तो गुडाळ्यां चालती ही... उण नै कांई ठा के मां रै कांई हुयौ है। म्हारी भुआ तीनूं छोर्‌यां नै लैय'र ग्वाड़ी में बैठगी ही...अर रमावती ही।

मां मर्‌यां पछै म्हारै भाबै म्हनैं कह्यौ..देख रामा... हमें तो बेटा थूं इज है... इण घर रौ करता-धरता... हमें आ टाबरां री फौज... और घर रौ कांम। थारी मां तो म्हारा गोडा भांग दिया..अर डोकरौ गळगळौ हुयग्यौ हौ।

म्हारी ई आंख्यां भरीजगी ही... म्हैं कांई जवाब देवतौ। पण उण दिन पछै म्हनैं लाग्यौ के म्हारी जिम्मेदारियां बढ़गी है। लारला भाई-बैनां रो ध्यांन राखणौ..घर री व्यवस्था संभाळणी... सब म्हनैं इज करणा पड़ैला..। अर म्हारौ टाबर पणौ मोट्यार हुवण सूं पै'ली इज खतम हुयग्यौ।

म्हारा भाबा सुबै वैगा उठ'र खेत जावता, म्हैं लारलौ सगळौ कांम संभाळतौ। म्हारी विधुवा भुआ नै ई डोकरै रुकण रौ कह्यौ हौ पण उणै कह्यौ...ठीक है भाया... च्यार-छ महीना तो रुक जावूंला...पण आखिर मेह नै पांवणा... कितरा दिन...।

पण हमार तौ बारै महीना ठैर जा...अर पछै संभला रौ मुकळावौ करायां तो बींदणी आय जावैला...तो व्हा ई थोड़ो-घणौ घर संभाळ लेसी। म्हारै भाबै कह्यौ। ब्याव म्हारौ बाळपण मांय इज हुयग्यौ हौ..उण टैम रा म्हैं तो पांच बरस रौ हौ अर म्हारी लुगाई ही आठ महिनां री...थाली में बिठाय'र परणाई ही।

पण भाया, टाबर तो हाल नैनौ है...नव-दस बरस रौ...हाल तौ व्हा खुद नै ई नीं संभाळ सकै है...पछै नणदां-देवरां नै कांई संभाळैला..। भुआ कह्यौ हौ।

-देखां...पण दूजौ कोई उपाय ई कोनी..। डोकरै निसांसौ नांख्यौ हौ। जाळ माथै सूं चिड़कल्यां चीं-चीं करनै उड़गी ही। जिण चिड़कली ने व्है उड़ावणी चावती ही, व्हा हाल अेक डाळी माथै आंख्यां मींच अर बैठी ही.. थाक्यौड़ी...मून...। म्हैं उणरै सांमी देख्यौ.. चिड़कल्यां हुवौ नै भलांई मिनख... जिण जगै सूं मोह हुय जावै...उण नै व्हौ नहीं छोड़णी चावै...। म्हैं सोच्यौ।

सात भायां-बैनां रै परिवार नै डोकरा साथै पूरौ सहयोग करनै म्हैं चलावण लाग्यौ। म्हारी लुगाई ई उण में पूरौ सहयोग कर्‌यौ। धीरै-धीरै सब मोटा हुवण लागग्या। म्हारै गाँव में ई ईसकोल खुलगी ही अर म्हारा सब सूं छोटा भाई नै म्हैं इसकोल भेजणौ सरू कर दियौ हौ। छोरौ हुंसियार हौ... पांचवी पास हुयग्यौ। पछै गाँव रा छोरां साथै सैर री इसकोल में जावण लागग्यौ अर आठवीं पास करनै व्हौ मास्टर बणग्यौ।

टैम आयां सगळा भायां नै ई परणाया अर बैनां रा ई हाथ पीळा कर्‌या...। तीनूं भाई डोकरा साथै खेती संभाळता अर चौथौड़ौ मास्टर दूजा गाँव में रैवतौ। सब सूं छोटौड़ी बैन रै ब्याव री टैम म्हैं उण नै कह्यौ- देख सुरेश! आज दिन तांई म्हां थारै खनै कीं नीं मांग्यौ.. थूं थारै कमावै अर खावै। घर रा सगळा खरच म्हैं तीन्यूं भाई खेती माथै काढ़ां हां... पण हमें नैनकोड़ी नै परणावणी है... सो थोड़ौ सियारौ थूं ई राखै तो ठीक रेवै। इण साल तौ पच्चीसौ काळ है... जोरदार...भयंकर काळ...खेत में दांणौ ई नीं नींपज्यौ है। पण बैन रा हाथ पीळा तो करावणा इज पड़सी। व्हा उगणीस बारै पूगगी है...।

सुरेश थोड़ी ताळ तौ सुण तौ रह्यौ। पछै बोल्यौ-अेक वात केवूं..भाया...

-हाँ बोल....

-नौकरी में कीं नीं धर्‌यौ है... गिणमा गोळा आवै। जरै इज तो केवै-उत्तम खेती, मध्यम बैपार, नींच नौकरी करै गंवार...। थै तो खेती करौ हौ...जरै सौरा हौ... गाँव में की खरचौ ई कोनी... खावौ जेहड़ौ तो नींपजै इज है...पण म्हारै...म्हारै तो सब मोल लेवणौ पड़े...तणखा तो बीस दिन ई नीं चालै...।

-पण बेटी रा बाप... बैन तो थारै ई म्हारै बराबर इज लागै...आज दिन तांई म्हैं थारै पासै कीं नीं मांग्यौ... यूं कांई बोलै। म्हनैं दुःख हुयौ।

-बैन तो है इज... सो किसी पाणी धोयी उतरै... पण सियारा री बात छोड़ दो। उणै कह्यौ।

–पण भला आदमी, आज दिन तांई सगळा खरचा म्हैं तीनूं भाई इज उठाया हाँ....उल्टौ थारै वठै घी–धांन पूगावता इज रह्या हाँ। आंपां रै घरै घीणा है...धान ई नीपजै है...पछै थूं मोल क्यूं लावै? इण वास्तै थनै सियारौ इज दियौ है.. पण पइसा रौ कांम तो पइसौ इज करै। म्हैं समझायौ।

थै सियारौ दियौ है तो म्हैं पण किसौ नुगरौ हौ। आवतौ जितरी वेळा इ कीं न कीं सामान तो लेय नै इज आवतौ..पण हमें म्हारौ हाथ तंगाई में है...अेक जिणौ कमावणा–हाळौ..अर पांच खावण हाळ...पछै छोरां री पढ़ाई रा ई खरचा...फीसां...पण तो ई कीं कोनी...म्हैं म्हारौ धकावूंला...पण म्हैं जितरौ हुय सकै उतरौ इज देवूंला....। उणै हाथ झाटक्या।

–पण कितरौ? म्हैं बूझयौ।

–लौ थे तो आंगळी पकड़तां पूणछौ पकड़ण लागग्या...म्हैं तो साफ केवूं के म्हारै भरोसै तो रेवजौ इज मती। व्हैला तो देवूंला... नींतर रांम–रांम...।

आगा बैठा म्हारा भाबा औ सगळौ वार्तालाप सुणता हा। डोकरा सूं नीं रेवीज्यौ। बोल्या– थारै खनै सूं कांई नीं चाहिजै... सुरेश.. यूं आसीरवाद देवणा नै तो आय जाइजै....हाथ फेरण नै तो आवजै....नै व्हौ ई थारै जंचै तो आइजै भाई... अै घोड़ा अर अै मैदान! डोकरो गळगळा हुयग्या। म्हारै भाबै री पीड़ नै म्हैं समझग्यौ। पण बोल्यौ–छोड़ौ नीं भाबा... खुद री खाज तो खुद रै खिणियां सूं इज भागैला....पण औ ई ठा तो पड़ियौ के इण तिलां में तेल कितरौ है। भीनौ सामंटण सूं कांई फायदौ। अर बात वठै इज खतम हुयगी। म्हारा भाबा ई उठ'र बारै गया परा...।

पण सुरेश रै मन में उथळ–पाथळ माच्यौड़ी ही...कांई के वै अर कांई नीं केवै। पण छेवट उणै कह्यौ–अेक बात केवूं भाया....

–अेक कांई... दोय केवै नीं....। म्हैं कह्यौ। म्हारौ पडूतर सुण'र व्हौ पाछौ चुप हुयग्यौ।

–हाँ बोल.....कांई केवतौ हौ नीं...म्हैं बूझ्यौ।

उणै झिझकते–झिझकते। कह्यौ–हमें आप तो जांणौ इज हौ भाया, के म्हारा सूं खेती तो हुवै कोनी...नीं थांरा भतीजा या बींदणी ई कर सकै... इण वास्तै खेत में सहयोग करण री तो थै आस ई मती राखौ...।

–कोनी राखां...बोल...

–जद खेत म्हारै खड़णा इज कोनी तो खेत रौ हिस्सौ ई म्हारे लेय नै कांई करणौ....

–ठीक है...

–तो हमें यूँ है...के थै रीसै नीं बळता हुवौ तो अेक बात केवूं....। व्हौ पाछौ झिझक्यौ।

–हाँ बोल....थारै माथै म्हैं केणरौ रीसै बळूं रै गैला...

–पण....

–पण कांई? बोल तो सही...

–आप रिस्यां मती बळजौ...

–नीं बळूं....थू बोल तो खरौ...

–म्हैं चावूं हूं के आ खेती... औ घर अर सगळी गिरस्ती थारै तीन भायां मांय इज बांट लौ...

–क्यूं?...

–म्हारै इण मांय सूं कीं नीं चाहिजै...बस आप तो म्हनैं जिम्मेदारी सूं मुक्त कर दिरावौ...। व्हौ बोल्यौ।

–थूं तो यूं ई जिम्मेदारी सूं मुक्त इज है रे गै'ला...म्हैं उणरा खवा माथै हाथ राखतां कह्यौ– थूं म्हारौ सबसूं नैनौ भाई है...लाडकौ है...। बेन–बेटियाँ आवै तो ई म्हारै अठै इज आवै..कांचळी देवणी पड़ै तो ई म्हैं इज देवा...कठैई औसर–मौसर जावणौ पड़े तौ ई म्हैं इज जावां...थूं तो यूं ई मुक्त इज है नीं....

–आ बात कोनी...

–तो.....

–बात आ है के थै हमें घर–खरच सारू म्हारै सूं कीं नीं मांगौला अर म्हैं म्हारै खनै सूं कीं नीं देवूंला....। डोकरा री सेवा... उणां रै सौ–बरस पूग्यां हुवण–हाळौ खरचौ...बैनां रा मांहैरा–तीज–तैवार रा खरचा...सगळा थांनै निभावणा है...अर म्हारै नीं तो घर में बंट चाहिजै नीं खेत में..। व्हौ नीची घुण कियां बोलतौ रह्यौ। म्हैं उण री बात चुपचाप सुणतौ रह्यौ। म्हारौ छोटोड़ौ भाई कीं बोलणी चावतौ हौ पण म्हैं उणनै आंगळी सूं चुप कराय दियौ।

–फेर....

–बस...

आ इज बात ही के..अै गैला... आछौ सोच करियौ रै...थूं तो चिन्ता ई मती कर... म्हां सगळा खरचा निभावसां अर थनै बंट ई देवसां...।

–नीं...नीं....बंट नीं....व्हौ गळगळौ हुयग्यौ।

उण दिन म्हनैं लाग्यो..आज इण रूंखड़ा री अेक डाळ टूट री है....टूट इज नीं री है... टूटगी है, टूटी इज कोनी...भच्च् करतोड़ी टूटी है। जांणै किणै ई तीखी धार रौ कवाड़ियौ मचकायौ हुवै... भच्च् करतोड़ौ...।

छोटोड़ै भाई रा दोय टाबर अेक पोथी लेय'र म्हारै खनै आया अर बोल्या–बा.. देखौ तो म्हारै नुंवी किताब आई है...

म्हारी तन्द्रा टूटी...

म्हैं किताब हाथ में लीव...देखी... बोल्यौ–बौत बढ़िया लाई... हमें भणजौ..। उण किताब माथै अड़वा रौ फोटू हौ...अड़वौ लहलहाती फसल रै बिचाळै ऊभौड़ो...।

–औ कांई है...बा....अेक बच्चे पूछ्यौ।

–औ...औ तो अड़वौ है बेटा...म्हैं किताब देखतां कह्यौ।

'अड़वौ..अड़वौ कांई हुवै?

–अड़वौ...अड़वौ खेत में ऊभौ करीजै.. आंपां रा खेत मांय ई ऊभौ है नीं...। म्हैं कह्यौ।

–पण इण नै खेत मांय ऊभौ क्यूं करां? टाबरां पूछ्यौ।

–देखो, खेत में धांन बावां नीं...जरै धान उग जावै तो जिनावर खावण आवै... धांन रै पूंख अर फळिया लागै जरै जिनावर चिड़कल्यां अर दूजा पंखेरू खावण आवै... जरै औं अड़वौ खेत री रूखाळी करै। पंखेरू देखै के कोई आदमी ऊभौ है.. जिनावर ई जांणै के कोई मिनख रूखाळी राखै है...इण वास्ते व्है नैड़ा ई नीं आवै...धांन नीं खावै..उड़ जावै...।

–अर पछै....?

–पछै कांई। धांन पाकै जरै झाळां भर'र धानं खळां मांय लेय आवां...धानं निकाळां अर घरै लावां...। म्हैं कह्यौ।

–अर औ अड़वौ...?

–अड़वौ...अड़वौ बापड़ौ ऊभौ देखतौ रे वै। जिण खेत री उणै रात–दिन रुखाळी करी ही..। पंखेरू जिनावरां सूं रूखाळी करी ही... आँधी–बरसात–तूफान–रात–दिन पौह रौ दियौ हो...उण नै कोई पूछै इज कोनी। खेत रौ मालिक सगळी फसल काटै ने लेय जावै। अड़वौ ऊभौ देखतौ रै वै...आंख्यां सूं आंसू ढळकावतौ रै वै। वाह रे दुनिया....म्हैं थारै वास्तै मर्‌यौ–खप्यौ ...रात–दिन ऊभौ रह्यौ....रूखाळी करी...

अर आज जावती वेळा म्हनैं वाहवाही ई नीं दीवी। वाह रे वाह...मांनखौ इतरौ स्वारथी हुवैला...औ तो म्हैं सोच्यौ ई नीं हौ। आज सूना खेत मांय म्हैं अेकलौ इज ऊभौ हूँ। कोई जातरु आवैला अर म्हनैं आड़ौ पटक देवैला... तोड़ देवैला...। कोई लकड़ियाँ चुगण हाळी आवैला अर म्हनैं भारी मांय बांध'र लेय जावैला..घरै बाळण सारू...अर म्हैं भावना में बोलतौ रह्यौ.. बोलतौ रह्यौ। आंख्यां सूं आँसू पड़ता रह्या। टाबर ठा नीं किण टैम वठै सूं उठ'र गया परा हा।

म्हनैं लाग्यौ के म्हैं ई इण घर में अेक अंड़वा री गळाई इज हूँ... खाली रूखाळी करण हाळौ। सैंग भाई आपौ-आप री फसल लेय'र वहीर हुयग्या है... खळां मांय धांन री बोर्‌यां भर रह्या है... अर म्हैं...म्हैं खेत में ऊभौ हूँ। इण ग्वाड़ी री जाळ नीचे बैठौ..म्हैं ई अड़वौ इज तो हूँ... घर री रूखाळी राखण हाळौ-पौहरौ देवण हाळौ...। आधी-आधी रात तांई जाग'र देखूं के फळसौ बंद तो है...ढोरां रै चारौ तो नांख्यौड़ौ है... किणै ई रस्सी छुड़ाई तो कोनी...कोई सांमान बारै तो कोनी पड्यौ...कठै ई कुत्ता मुंडौ तो नीं घालै है...। अर घराळा सगळा सुता है... आरांम सूं नींद लेय रह्या है। घोरां खांच रह्या है... म्हैं जो ऊभौ हूं... अड़वौ ज्यू ऊभौ है...।

म्हनैं याद आयौ... रिटायर्ड हुयां सुरेश पाछौ आयौ हौ.. खेत रौ अर घर रौ बंट लेवण नै। म्हैं कह्यौ..थूं तो ना देवतौ हौ नीं....

-आपरौ बंट कुण छोड़ै?

-पण थैं तो खुद इज कह्यौ हौ...

-उण टैम रा कह्यौ हौ..पण हमें म्हारै ई तीन छोरा है...नौकरियां तो मिळै कोनी...अेक छोरौ दुकान करै है.. लारला दोयां रै ई माथौ घालण नै तो जगे चाहिजै नीं। जमीं रौ चौथौ बंट तो म्हारो हक है...।

म्हैं तो फेर देवण नै त्यार हुय जावतौ पण म्हारौ तीजौड़ौ भाई बोल्यौ-हक...हमें हक लेवण नै पधार्‌या हौ....हमें तो कीं नीं देवांला...इतरा बरस कठै पधार्‌या हा... डोकरा रै लकवौ हुयौ हौ...तीन बरस मांचा में रह्या जणै सेवा म्हां करी ही...आप कोनी पधार्‌या हा.. दवा-दारु रौ खरचौ ई म्हां कर्‌यौ...बैनां रा मांहेरा ई म्हां भर्‌या हां...कठैई टांणा-टपका माथै हाजर ई म्हां हुया हां... थारै ज्यूं नागा हुय'र कोनी नाच्या हां.. वैवार राख्यौ है...नाक माथै माखी ई कोनी बैठण दीवी....नै हमें पधार्‌या है...बंट लेवण नै, हक री बातां करण नै...।

लुगाया मांय ई जोरदार खटर-पटर हुई...आ कागली अठै कांई मांगै। पैला तो आपै इज न्यारौ माळौ घालियौ ने हमें आई है हींग लेवण नै कागा आज की चितार...काल की चितार....हींग दीदी थी...ना रे भाई ना....।

सुरेश तो तोई लचकांणौ पड़नै पाछौ जावतो पण उण रा बेटा तो महा रुळियार... कीकर नहीं देवै बंट, कोर्ट-कचेरी करांला..यूं किसा सांमियां रा सुनारां बिंधिया है...बंट तो लेय नै इज छोडांला.. खावांला नीं तो ढुळावांला इज सही..।

म्हारी जोड़ायत बोलण लागी तो म्हैं उण नै कह्यौ-यूं क्यूं खारी पड़ै रै बेटी री बाप.. थारै कांई साथै लेय'र जावणौ है? थारै तो अेक इज बेटी है अर व्हा ई लांण कदै ई आपरै घरै गई..। तो कांई हुयौ....यूं भीनौ सांमटियौ है जरै इज तो घर रो घसखोलियौ हुयग्यौ है...। व्हा बोली।

पण इण झगड़ा रौ कोई अन्त नहीं हौ। गाँव रा च्यार मिनखां नै ई भेळा कर्‌या पण मिनखां रै कांई...परायौ झगड़ौ ब्याव जिसौ। उण रा दोय बेटा अर व्हौ खुद गाँव में अेक भाडै रौ मकान लेय'र रैवण नै आयग्या....। हमें तो नित रौ झगड़ौ। दिन उगतांई तकरार सुरु। ठा नीं आ तकरार कदै मिटैला..। उणां कोर्ट में दावौ कर्‌यौ... पटवारीजी रा नित पग दबावै... देखौ...हमें कांई हुवैला...।

म्हारी जोड़ायत अर म्हैं तीजौड़ा भाई रै साथै रै वां हाँ.. उण रै अेक इज बेटौ है अर व्हौ ई दिसावर में दुकान माथै रेवै है...सो घर में म्हां च्यार मिनख। लारली साल म्हारी जोड़ायत ई साथ छोड़ दियौ। डोकरी मरती वेळा कह्यौ हौ-भाई राखै तो ठीक...नींतर बेटी नै केवजौ... संभाळती रेवैला...।

-कुण किण नै संभाळै...म्हैं निसांसौ नांख्यौ। डोकरी लारै खरच करण सारु म्हैं कह्यौ-

-मोवन, थूं थारी भाभी रा फूल हरिद्वार घालनै आयौ है... लारै थोड़ौ खरचौई करां तो ठीक रेवै...।

-खरचौ...थै ई कांई बात करौ भाया... हरिद्वार आवण-जावण मांय ई पांच हजार रिपिया खरच हुयग्या-पाँच सौ तो पंडा नै इज देवणा पड्या... नै टापा-टीपौ न्यारौ... भाड़ा-भत्ता ई खूब बधग्या है। अेक जिणा रै आवण-जावण रा हजार रिपिया तो भाडौ इज लाग जावै... नै खावण-पीवण रौ न्यारौ... ठीक है...भाई-गिनात आवैला जरै अेक टांणौ कर देवांला...।

-पण मोवन, नांणौ तो फेर हाथ में आय जावै पण टांणौ नीं आवै। आंपां री मां मरी जरै आंपां नैना हा... नै डोकरा लारै ई कोई चौथाळौ तो कर्‌यौ कोनी...कोई वाडियै घी तो वापरियौ कोनी....। म्हैं कह्यौ।

-इतरौ ई घणो भाया-मिनख तो इतरौ ई आजकाल कोनी करै।

-थारै पासै पइसा नहीं हुवै तो म्हारै बंट रौ खेत बेच दे भाई...। म्हैं समझायौ।

-खेत...अरे भाया.. जमी मिळै ई कठै है? नै थै खेत बेचण री बात करौ। आज जमीं रा भाव कांई है? नै ठा नीं हाल थैं कितरा जीवौला... घड़ी-पळ री ई ठा नीं पड़ै है...इण तूंबड़ी रा तेरै भाव है।

-हाँ भाई, तूंबड़ी रा तो तेरै भाव तो है इज' जिणा भायां नै मोटा करण में, धंधौ लगावण में म्हैं म्हारी उमर खपाय दीनी है...व्हैं आज म्हनैं इज समझाय रह्या है। खैर...म्हैं निसांसौ नांख्यौ।

-बा....अड़वौ.....थै बा जो पोतियौ बांधौ नी तो थै ई अड़वा जैड़ा इज दिखौ। टाबर पाछा आयग्या हा।

-हाँ बेटा, बिना पोतिया बांध्यां ई, अड़वौ इज तो हूँ... चवदै बरस री अवस्था मांय इज अड़वौ बणग्यौ है...घर री रूखाळी सारू....। भायां अर बैनां री रुखाळी सारू...। सगळा नै मोटा कर्‌या... परणाया-पोजाया... बैनां रा ब्याव कर्‌या... घर संभाळयौ... खेती संभाळी अर आज जद सगळाई... आपौ-आप रौ फाड़ण-सीवण लागग्या तो म्हारौ कोई कांम नीं रह्यौ। बारै जाळ री छिंया में आखौं दिन मांचा माथै पडियौ रेवूं। आया-गिया नै देखतौ रेवूं...सूना खेत में ऊभा अड़वा री गळाई। फसल तो मालिक लेयग्या है... हमें वाट उड़ीकूँ के कोई जातरु आवतौ-जावतौ नीचौ पटक देवैला या कोई लकड़ियाँ चुगण हाळी भारा में घाल'र लेय जावैला... चूल्हा में बाळण सारू... अर म्हारी आंख्यां सूं टपटप आँसू पड़ण लाग्या।

जिला शिक्षा अधिकारी (से.नि.)
खण्डप, बाड़मेर (राज.)
मो: 9460087837

कहाणी

अेक भगतसिंघ भळै

❒ डॉ. मदन गोपाल लढ़ा

खड़कै सूं अंदाज लागै हो कै गाड़ी इण बगत सौ सूं बेसी स्पीड सूं चालै ही। जनरल डब्बे री ऊपरली सीट पर बेग रो सिराणो बणा'र सूत्यै अखिल रै मन री गाड़ी तो उण सूं ई कीं बेसी उंतावळी भाजै ही। रेलगाडी तो अेक दिस में चालै पण मन री गाड़ी रो तो कोई ठौड़-ठिकाणो ई कोनी। कदी सौ पांवडा आगै तो कदी दो सौ लारै। कद उठे कित्ती ताळ अटक जावै, कीं ठाह कोनी पड़ै। बियां तो गाड़ी रो ई घणो ई खड़को हुवै, ऊपर सूं सवारियां रो रोळो-रप्पो न्यारो। कीं कोनी सुणीजै। भीड़ रो छैड़ो ई कोनी। आड़ै दिन हुवो चावै तीज-तिंवार। कदी देखल्यो। गाड़ियाँ में मिनख मावै ई कोनी। चार उतरै, चवदै चढ़ै। छुट्टियाँ में हाल औरूँ माड़ा हुय जावै। अमूमन लाम्बी दिसावरी करणियां आगूंच सीट बुक करवा'र ई जातरा करै। जनरल डब्बै में पेस पड़णी ओखी। कोई पग चींथ देवै का कोई सामान माथै हाथ फेर देवै। चोर तो तक्या ई बैठ्या रैवै। अखिल ई रिजरवेसन री सोची पण गूंजै में हाथ घाल्यो तद पग पाछा पड़ग्या। भाड़ै में आधो-आध रो फरक हो। बण मन में करी। रात-रात री तो बात है। दिन में तो सै बियां ई बैठ्या रैवै। अेक रात अर अेक दिन रो ई तो आंतरो है गाँव सूं सूरत रो। बण छाती करड़ी करी अर साधारण टिकट लेय'र डब्बै में बड़ग्यो। जोग सूं ऊपरली सीट ताबै आगी। बण बेग सिराणै लगा'र कमर सीधी कर ली। गाड़ी रै हलकै सूं नींद बड़ी सोरी आवै। बो ई सदां जातरा में सोवणै रा ठाठ लिया करै। पण आज नींद लोवै-लवास ई कोनी। अखिल आंख्यां मींच'र कई ताळ पसवाड़ा फोर्‌या पण नींद कोनी आई। छेकड़ धाप'र बो ओळूं-डायरी रा पानां फिरोळण लागग्यो। मंदै च्यानणै में जको पानी खुल्यो उण माथै अेक-सवा बरस जूनी तारीख मंडयोड़ी ही। अै बै दिन हो जद अखिल कॉलेज री गैलरी में ऊभो क्रांति रा सपनां देख्या करतो। शहीद अे आजम भगतसिंघ उणरा आइडल। उणरै कमरै में कैदी भेस में भगतसिंघ रो अेक पोस्टर लागेड़ो हो जको फगत भींत माथै ई नीं, उणरै अंतस में ई मौजूद हो। सरदार भगतसिंघ रे जीवण-गाथा री सांगोपांग पोथी बण दसूं बार बाँच लीवी। अजै ई जद-कद बो उणरा पानां फिरोळतो रैवै। भगतसिंघ री लिख्योड़ी कई ओळयां उणरै कंठै हुयगी जकी बो जद-कद दुसरावतो रैवतो। भगतसिंघ रै शहादत दिवस माथै कॉलेज में छात्र संघ कांनी सूं अेक सभा राखीजी। सभा में खास वक्ता रै रूप में बोलतां बण कैयो-'भगतसिंघ कदी मर कोनी सकै। क्रांतिकारी तो अमर हुवै। डील रूप में नीं रैयां बो भाव रूप में जीवै।' आ बात कोई पोथी में बांच'र नीं आपरै अनुभव सूं कैयी। उणनैं केई बार लागतो कै भगतसिंघ उणरै भीतर बसै। बसै ई कोनी, लाय लगा रखी है उणरै काळजै में। दिन हुवो चावै रात। भगतसिंघ रा हरफ उणरै अंतस गूंजबो करै। सांची तो आ है कै भगतसिंघ बावळो कर राख्यो है उणनैं। जद बो आपरै ओळै-दोळै जार-जुलम री बानगी देखै-सुणै तो उणरो रूं-रूं जगण लाग जावै। भीतर बैठ्यो भगतसिंघ उणनैं मजबूर कर देवै अर बो अन्याव साम्हीं पग रोप लेवै। इण कारण रोज उणरै घरवाळा तांई ओळमा पूगै। पण बो डटै कोनी। रोज कोई न कोई नवो मोरचो मांड लेवै।

डायरी रो पानो कद पळटीजग्यो ठाह ई नीं पड्यो। इण पानै माथै अेक चितराम मंड्योड़ो हो घर रो। घर, हाँ घर जिसो घर। बीसेक पांवडा लाम्बी बाखळ, पछै अेक पक्को कमरो अर बरामदो। बिचाळै खुलो आंगण जिणरै डावै पासै लोह रै टीणां वाळी रसोई। डावै पासै कच्ची साळ। साळ ऊपर माळियो भळै। आंगणै में अेक आळो हो जिण में देवता रो थान हो। बो मनां-गनां तो भगतसिंघ दांई नास्तिक हो पण मा दोवूं बगत नेम सूं धूप-बत्ती करती। रोज सिंझ्या उणरी बैन घर रै आगै जळ री कार देवती। घर रो डोळ बतावै हो कै बरसां सूं उणरै रंग-रोगन कोनी हुयो। भींतां रो पलस्तर झड़ण लागग्यो तो आंगणो ई जगै-जगै सूं फूटग्यो।

घर में ही मा। असल में मा सूं ई घर, घर हो। भाकपाटै सूं लेय'र रात नैं मोड़ै तांई बा घर नैं संवारण में लागी रैवती। सरदी हुवै चावै गरमी, घर रो खोरसो निवड़तो ई कोनी। तीन टाबरां री गवाड़ी सांभणो मा सारू इत्तो ओखो कोनी हो जित्तो बडेर सांभणो। न्यारा हुयां पछै दादो-दादी जित्तै जीया, मा सागै ई रैया। इयां तो दादी रै मा जैड़ी तीन बहुवां औरूं ही पण बै मा सूं ई पतीजता। मा दादै अर दादी रो पूरो काण-कायदो राखती। बडेरां नै रोटी सूं जरूरी हुवै मान-मनवार। आ बात मा सावळ समझती। तंगी थकां ई मा तीज-तिंवार चारूं नणदां सारू धोती-कबजै रो जुगाड़ बिठा लेवती, तो माइतां रो काळजो ठरणो लाजमी हो। कडूंबै में इण रो जस जीसा नै मिलतो पण बां नै अैड़ी बातां सू राई भर ई मतळब कोनी हो। आ अवस ही कै बां मा नैं अैड़ी रीतां निभावण सूं कदी बरजी कोनी।

अबै बात जीसा री। जीसा रै व्यक्तित्व नै अखिल अजै लग कोनी समझ सक्यो। बै अेक ई घड़ी में दो न्यारी बांता में अैड़ो वौवार करता कै मगज घूम जावतो। जीसा कदी टिक'र काम कोनी कर्‌यो। कमाई सूं जे बां री कूंत करी जावै तो बै नाकाम ई मान्या जावैला। बां कोई धंधा फोर लिया। कदी नौकरी तो कदी दुकानदारी। मिंदर-देवरा अर पूजा-पाठ बां नैं कदी कोनी सद्या। पांती में करजो मिल्यो तो ई बां बडेर रो भार लेवण में अेक पल संको नीं कर कर्‌यो। भाइयां नैं बां कदी होठ रो फटकारो ई कोनी दियो। बीं नैं चेतै कोनी क कदी बां मा नैं सुगन री कोई धोती ल्या'र दी हुवै। मा बतावै कै बालपणै में बो रो-रो'र आधा हुय जावता पण मजाल है कै बां कदी गोदी में लेय'र रमाया हुवै। मा अेक हाथ सूं उणनैं राखती अर दूजै सूं साग-रोटी बणावती। सै सूं छोटकी बाई हुयां पछै बां रो ओ नेम अवस तूट्यो है। उणनैं आंगळी झाल'र बै गवाड़ में लेय जावै अर कुरकुरा-चाकलेट ई दिरावै। ऑइल मिल में काम करतां बां नै आथण घूंट री बाण पड़गी पण पी'र कदी ऊत-फेल बकतां कणी कोनी देख्या। बां नैं रीस तो आय जावती पण मा सागै ऊँचै सुर में लड़ता कोनी सुण्या। बै अमूमन कम बोलै अर आपरी धुन में ई रैवै। घर री फिकर मा रै जिम्मै ही। मांदगी सूं मिल री मुनीमी छूटगी तद बां घर रै बारलै पासै ही पान-बीड़ी रो खोखो लगा लियो।

दो छोटी बैनां घर रो च्यानणो है। मोटी निरमा इग्यारहवीं में भणै तो छोटकी गुंजन नवीं में। दोनूं अेक-दूजै री पक्की भायली। दोवां री बातां निवड़ै ई कोनी। मेहंदी, सिलाई, कढ़ाई,

गाणो, नाचणो, रसोइ, सै कामां में सिरै। मा रै सागै सारै दिन लागी रैवै। असल में तो बांरी ई रुणक है घर में।

कच्चो पक्को जैड़ो ई हो, ओ घर है उणरो। उणरै सपनां रो सागड़दी। इण में बसतो उणरो जीव।

पण घर में रैयां ई तो सरै कोनी। ओळूं-डायरी रो पानो पळटणो ई पड़सी। घर सूं बारै निकळणो ई पड़सी। बो ई निकळयो। जियां सगळा मोट्यार निकळै। उणरी उमर रा बीजा छोरां डिगरी पछै अेम. अे. रै नांव माथै कॉलेज में जम्या रैया पण उणनैं घर रो हेलो सुणनो पड़यो। घर तो भळै ई डांग कोनी लगावतो पण काया तो भाड़ो माँगै। मा अेकली कित्ताक दिन राखती टेवकी। तीन टाबरां री भणाई, रासन, बिजळी, पाणी, दवाई, स्सौ की तो चाइजै घर म। कतरणी लगावै तो ई कठै? जीसा रै पव्वे टाळ फालतू रो खरचो किसो ई कोनी। मूंघीवाड़ो तो लंक लेग्यो। साल में पचासूं तो बान भरावणी पड़ै। खोखै भरौसे बिजळी पाणी अर दूध रो बिल ई का चूकै नीं। कमाई रो बीजा कोई साझन कोनी। छोर्‌या रो जाम। चिंता सूं मा सूकती जावै। बो जाणतो कै अबै तो उण माथै है सगळै घर री निजरां। पण उणरी निजरां तो आभै में क्रांति रो सूरज सोधै ही। बरामदै में लकड़ी रै किवाड़ां वाळी अेक आलमारी ही जिण में उणरी निजू लाइब्रेरी ही। पोथ्या बाचणो जुनून हो उणरो। लारलै बरसां में बण पचासूं पोथ्यां बांच लीवी जिणमें मार्क्स अर गांधी सूं लेय'र लोहिया रो साहित्य सामल हो। भगतसिंघ रा दस्तावेज तो सोध-सोध'र बांच्या है बण। आं पोथ्या में बांच्योड़ी बातां उणरै काळजै गूंजती रैवती अर जद-कद बो भायलां भेळो बां नैं दुसरावतो रैवतो। जद बो लिखतो तो सबद खीरा दांई आग उगळता। कोई सभा में मौको मिल जावतो तो माइक माथै सागीड़ा बट काढ़ लेवतो। भासण माथै ताळियां उणरै खातर विटामिन रो काम करती। पण बो बोळण सारू कोनी बोलतो। अै बातां उणरै हियै सूं निकळती।

पण भासणां अर ताळिया सूं जूण कोनी कढ़ै, इण बात रो ठाह अखिल नैं डायरी रो पानो फोरतां ई पड़ग्यो। केई बातां किताबां में चोखी लागै। जीयाजूण री जमीन इत्ती खुड़दड़ी है कै पगथळी म छाला पड़ जावै भळै ई मारग कोनी लाधै। उणरै भासण अर लेखनी नै ओळख'र अेक-दो नेता आपरी राजनीति चमकावणै सारू उणनैं बरतणो चायो। पण बां रां कळाप बण बेगा ई ओळख लिया। इण बिचाळै जीसा बीमार पड़ग्या। अेल्कोहल सूं बां रै डील में सत तो बियां ही माड़ो हो, बच्योड़ी कसर गुरदै री खराबी सूं पूरी हुयगो। सरकारू अस्पताळ में दस दिनां तांई पड़्या रैयां, ई सुणवाई कोनी हुई तद मजबूरी में बां नै निजू अस्पताळ लेय'र जावणो पड़्यो। निजू अस्पताळां में मरीज सूं पैली उणरो गूंजो संभाळीजै। खंनै हुवै चावै करजो करीजै, बीमारी में तो बंदोबस्त करणो ई पड़ै। जद बाकी सगळी जगैं सूं उत्तर मिलग्यो तद मा आपरै पीरला सूं ब्याज माथै रिपिया उठाया। पांच दिन भरती राख्यां पछै डॉक्टर जीसा नैं छुट्टी तो दे दीवी पण रोजीनैं री तीस रिपिया री दवाई रो खरचो बांध दियो। महीणै रै महीणै जांच भळै करावणी बताई। जीसा री मांदगी सूं घर री हालत औरूं बिगड़गी। मा अळोच में आधी रैयगी। इयां कींकर पार पड़सी। मा ई माचो झाल लियो तो रोट्यां रो फोड़ो हुय जासी। इण चिंता सूं उणरै होठां माथै ई फेफी आयगी।

गाड़ी रै हलकै सूं अगलो पानो खुलग्यो। इण पानै माथै अेक स्केच मंडयोड़ो हो। बण सावळ तकायो तो आड़ी-टेढ़ी लीका सूं अेक गुलाबी रंग रो उणियारो निजरां साम्हीं आग्यो। इणरै सागै ई अेक फिलम-सी चाल पड़ी।

'थूं सांचाणी जा रैयो है दिसावर?'

'हाँ, जावणो तो पड़सी। मजबूरी है।'

'मजबूरी कैड़ी?'

'म्हारे घर री हालत तो थूंण जाण ई है। अबै मा कद तांई धिकासी धाको। ओ भार म्हनैं ई सांभणो पड़सी।'

'अठै कोई काम कोनी मिल सकै?'

'मिल तो सकै पण पगार सावळ कोनी मिलै।'

'भळै ई कोसीस तो करीज सकै।'

'म्हैं तीन महीणां में दसूं ठौड़ गयो हूँ काम सारू। बेटा इंटरव्यू तो आई.अे.अेस. दांई लेवै पण पगार वाळी बगत मूंडै में मूंग घाल लेवै।'

'म्हैं बात करूँ म्हारै मामोजी सूं। बै सरपंच रा बेली है...।'

'काई फायदो कोनी। म्हैं परख लिया सै नैं। चोर है सगळा। घर भरणै में लाग्योड़ा है आपरो।'

'पाछो कद आसी?'

'पैलां जाऊं तो सरी। काम सावळ जच जावै। आवणो-जावणो तो चालसी ई।'

'म्हारै बाबत कांई सोच्यो है?'

'थूं सदीव म्हारै सागै रैसी। म्हैं घर रो जाचो जचा लेवूं फेर आगै री विध बिठासूं।'

'म्हैं उडीक करसूं..।'

इणसूं आगै बोल कोनी निसर्‌या। कंठ रुकग्या। सबद गळगळा हुयग्या। बो ई अणमनो हुय'र ऊभो हुयग्यो। बिना बोल्यां। काळजै री चुगली आंख्यां कर देवै। पण अेक क्रांतिकारी री आंख्यां में आंसू ओपै कोनी। भगतसिंघ तो फांसी रै बगत ई कोनी रोयो। मा री आंख्यां में आंसू देख'र मिलणै रो बगत पूरो हुवण सूं पैला ई पाछो बैरक में बड़ग्यो।

गाड़ी स्यात पट्‌रयाँ बदळी ही जिणसूं बोहळा हलका लागै हा। बण आंख्यां मींच'र गमछो मूंडै माथै रेड़ लियो। उण नैं डर हो कै कोई उणरी सीली आंख्यां नीं देख लेवै।

प्रधानाचार्य
मु.पो. महाजन, लूनकरणसर, बीकानेर-334604
मो. 9982502969

बाळक

❒ **ओम प्रकाश सैनी**

म्हें बाळक छोटो सो
पढ़बा लिखबा जाऊँ
सबसो आज्ञा पालक
म्हें रोज दिनुगै नहाऊँ
पूजा पाठ करूँ रोजाना
खाणो पीणो खाऊँ
ध्यान लगा'र पढ़ूँ म्हे
गुरुआँ रा गुण गाऊँ
म्हें बाळक छोटो सो.....
खेल-खेल में करूँ पढ़ाई
मन ही मन हरसाऊँ
गीत कविता कहानी गाऊँ
अपणो ज्ञान बढ़ाऊँ
म्हें बालक छोटो सो
म्हारो जीवन सफल बनाऊँ।
म्हें बाळक छोटो सो....

270, ग्रीन पार्क पथ नं.-2
बैनाड़ रोड झोटवाड़ा, जयपुर-302040

कहाणी

होनहार बेटी

❒ रामजीलाल घोड़ेला

ललिता आपरै माँ बाप री लाड़ली बेटी। बापू दिहाड़ी, मजदूरी कर'र घर रो गाडो गुड़कावै। धीणै रै नाम पर अेक गाय, जिण सूं घर री गाड़ी गुड़काणै मांय सैयोग मिलै। तीन चारेक किलो दूध बेच दैवे। बाकी बच्चौड़ो दूध घरै ही सरै। ललिता रा बापू अर मां चावै के उणां री लाडली पढ़ै। ललिता पढ़णै मांय हुंसियार। जमात मांय उणरो पैलो स्थान आवै। बा जद आठवीं जमात मांय आयी तो उण बगत ही गाँव रो स्कूल अपग्रेड हुय'र दसवीं रो बणग्यो। नूंवा मास्टरजी तो कोनी आया, पण हैडमास्टर सा'ब जरुर आयग्या। स्कूल पुराणी परिपाटी सूं चालै। अगलै बरस नौंवी जमात मांय दाखला सरु हुया तो ललिता भी दाखिलो ले लियो। गणित, अंग्रेजी, अर विज्ञान जैड़ा अबखा विसै दूजै विस्यां सूं कीं घणा परेशान करण वाळा हुवै। विसै अध्यापक ही चोखी तर्‌या पढ़ा सकै। हरेक रै बस री बात कोनी हुवै। अै विसे पढ़ावण वाळा रो तो टोटो ही रैवे। अबखा विसै रो कोई अध्यापक स्कूल मांय नीं आयो। हैडमास्टरजी जरुर अंग्रेजी पढ़ावता। स्कूल मांय आठवीं तक पढ़ावण वाळा ही विज्ञान अर गणित री तैयारी करावता। ईयां कैय सकां कै स्कूल रो गाडो ठीक ही गुड़कै-हो।

ललिता विज्ञान अर गणित जैड़ा विसै मांय रुचि राखती। ईयां ललिता दसवीं जमात मांय आयगी। नौंवी जमात मांय उणरौ पैलो स्थान आयो। ललिता घर में आपरी मां रै काम काज मायं अर गाय नै पाणी-चारो देवण मांय सायता करती। बा कपड़ा सीवणा भी सीख लिया हा। पास पड़ोस रै टाबरां रा कपड़ा सीव देती। उण मा नै कदैई परेशान नीं कर्‌यो। ललिता कदैई स्कूल सूं कोई ओळमो नीं ल्यायी। बा आपरै काम सूं काम राखती। स्कूल रा सगळा मास्टरजी उणरै व्यवहार सूं राजी हा। बै उण पर घणो मान करता। ललिता स्कूल री सगळी गतिविधियाँ मांय भाग लेवती। इण बार दसवीं री बोर्ड परीक्षा तैयारी जोरदार तरीके सूं करणी ही। ललिता पढ़णै रो टैम टेबल बणा लियो। स्कूल सूं आय'र पढ़णै बैठ जावती अर रात नै देर तक पढ़ती। दिनूगै बा बैगी जाग जावती। कदैई तो रात नै दो बज्यां जाग जावती तो पढ़णै बैठ जावती।

गाँव रो स्कूल दसवीं जमात तक रो ही हो। दसवीं पछै ललिता कठै पढ़ैगी, कुण सौ विसै लैवणो है, उणनै कीं ठाह कोनी हो। बा दूणी चिन्ता मांय रेवती। उणनै ओ भी ठाह कोनी हो कै पढ़ाई कर'र कै बणनो है। इण बार भी हरमेस री तर्‌यां स्कूल मांय समाजोपयोगी कैम्प लाग्यो अर कस्बै रै सीनियर स्कूल रा प्रिंसिपल श्री शिवनाथ जी खास पावणा हा। उणा आपरै भाशण मांय समाज सेवा साथै अपणै करियर री बात करी। उणा दसवीं रै टाबरां नै सावचेती सूं पढ़ाई करणै अर दसवीं पछै उणारै स्कूल मांय दाखलो लैय'र विज्ञान, कला अर वाणिज्य विसै लेय'र आप रो करियर बणावणै री बात कैयी। उण कुण सो विसै लेय'र डॉक्टर, इंजीनियर, सी.अे. आद मांय करियर बणावणै री बात समझायी। ललिता ने उणा री बात चौखी लागी। उण रात बा घणी देर तक सोचती रैयी। उण निस्‌चै कर्‌यो कै बा डॉक्टर बणैगी। उण आ बात मा नै बतायी। मा कैयो-बेटी, अेक गरीब घर री बेटी कदैई डॉक्टर बण सकै है कै? बेटी, चादर देख'र पग पसारणा चाईजै। पण ललिता आपरी धुन री पक्की ही। उण आपरी पढ़ाई री रफ्तार तेज कर दीनीं।

ललिता री दसवीं री बोर्ड परीक्षा ठीक हुयगी। विज्ञान अर गणित विस्यां री पढ़ाई ठीक ठाक ही हुयड़ी ही। इण विस्यां रा मास्टर भी नीं हा। पैलां वाळा मास्टरजी ही प्रयास कर्‌या हा। पण जद रिजल्ट आयो तो ललिता रा पैंसठ सैंकड़ा नम्बर बण्या। बा स्कूल मांय टॉपर रैयी। मा-बापू अर सगळा मास्टरजी घणा राजी हा। बठै प्रिंसिपल सर रै ऑफिस मांय गई अर उणा सर नै बतायो कै बा उणा री प्रेरणा सूं विज्ञान वर्ग मांय दाखलो लैवणो चावै। उणरी डॉक्टर बणनै री इच्छा है। ललिता ओ भी पूछ्‌यो कै उणरा नम्बर तो पैंसठ सैंकड़ा है, कै बा डॉक्टर बण सकै है? प्रिंसिपल सर उथळो देवता थकां कैयो कै ललिता जै तूं डॉक्टर बणनै री ठाण ली है तो तनै डॉक्टर बणनै सूं कुण रोक सकै है। तूं अपणै आपने डॉक्टर ही समझ अर मैनत सूं पढ़ाई कर। ईयां ललिता विज्ञान विसै लैय'र पढ़ाई सरु कर दीनीं। उणनै पढ़ावण वाळा मास्टरजी उणरी सायता करता। बारहवीं मांय पढ़ता थकां उण पीअेमटी रो फॉर्म भी भर दीनों हो। उणरै साथै केई दूजा टाबरां भी फॉर्म भर्‌या। प्रिंसिपल सर ललिता मांय छिपयोड़ी प्रतिभा नै पिछाण लियो हो। उणा ललिता रै बापू सूं बात कर'र उणनै सैहर री अेक नामी गिरामी कोचिंग मांय दाखलो करवा दीनो। पीअेमटी री परीक्षा मांय दो महीना सूं भी कमती बगत हो। ललिता मन लगा'र तैयारी करी। ललिता परीक्षा दैय'र आप रै गाँव आयगी। केई दिनां पछै बारहवीं रो रिजल्ट आयग्यो अर ललिता रा पिचहतर सैंकड़ा सूं बधती नम्बर बण्या। इण बार स्कूल मांय दूजै नम्बर ही आयो। पण बा घणी राजी ही। उणरा मा-बापू नै भी आपरी लाडली पर घणो गुमेज हो।

थोड़ा ही'ज दिनां पछै पी.अेम.टी. रो रिजल्ट आग्यो। ललिता रै गाँव मांय फोन या इंटरनेट नी हो। इण वास्तै ललिता नै रिजल्ट रो हाथों हाथ ठाह नी लाग्यो। ललिता पास हुयगी ही। आथणै री बगत अेक जीप ललिता रै घर सामी आय'र रुकी। इण जीप सूं ललिता रै स्कूल रा प्रिंसिपल अर सैहर री कोचिंग रा डायरेक्टर नीचै उतरया। ललिता बारनै मांय राख्योड़ी आगळ अेक पासै करी। प्रिंसिपल सर अर डायरेक्टर सर नै प्रणाम कर'र पगां लागी। प्रिंसिपल सर ललिता नै गळै लगा ली अर कैयो-बेटा थारो पीअेमटी मांय सलैक्शन हुयग्यो है। अब तो तूं डॉक्टर बणगी समझ। उणा ललिता रै मा-बाप नै बधाई दीनी अर कैयो कै अैड़ा मा-बाप पर गर्व करणो चाईजै, जका आपरी लाडली रा सुपना पूरा कर्‌या। इतै मांय गाँव रा सरपंच अर मौजीज आदमी भी भैळा हुयग्या। सगळै गाँव वाळा नै हरख अर गर्व हो कै उणां रै गाँव री बेटी डॉक्टर बणैगी। सरपंच सा'ब ललिता नै गाँव री तरफ सूं सनमान दैवण री घोशणा करी। ललिता रा प्रिंसिपल सर कैयो के कोई भी मिनख आपरो लक्ष्य लैय-र मैनत करै तो मंजिल तक पूगणो कोई अबखो काम नीं हुवै।

C/o राज क्लोथ स्टोर
लूणकरणसर-334603 जिला-बीकानेर
मो: 9414273575

कहाणी

समधा

❒ रूपाराम नामा

वकत वकम री बात, वकत री रीति नीति नै कुण जाणै। जिणनै वकत री मार पड़ै वा कदैई पांतर नी सके। आ बात घणा बरसा पैला री हैं, कै समधा ने सासरै आयां कोई दो बरस होया हा। उण नै सासरियो घणौ प्यारौ लागतो। बरसात होयगी ही समधा अर उणरौ घरवालौ खेत जांवता, आवता हा। इण बरस बिरखा मौकली होई। समधा रौ घरवालौ सुखदेवो ऊंट ले खेत मांय हळ खड़तो, वा दिन माय भातो लै अर लारै जावती, भातौ औडी मांय राख साथै पांणी री भुड़की, ऊंट रौ चारो लै मिज माथै दिन पूगती। आपरे सायबै नै देख घणी हरखावती, मुलकती अर मस्करी रै साथै हैलो देवती और सुगणी बाई सारा बीरा हल छौड़ दिरावो सा... आवौरा, भातौ जीम लिरावो सा। हेलो सुणतां ही हळ हैठो मैल ऊंट री मौरी ले अर खेजड़ी री छांय मांय सुखदेवो आ जावतो, पसीने सूं झम भीनोड़ो, वो सुसकारी करतों, फुंकारो लेतो, समधा ऊंट ने चारो देवती। दोनूं बात बंतल करता हंसी ठिठोली रै साथै रोटी जीमता। समधा चूरमो लावती जिण रा दो तीन निवाला सुखदेवो माडाणी देतो। सिंझिया री समधा लकड़ी रौ भारौ ले घरां आवती। घणा अंधारै सुखदेवों ऊंट पर चढ़ घरा आवतौ। कदैक मोड़ो होवतों, घर री भींत चढ़ जौर सू हैलो देती ''सुखदेवा वैगो आवजै रैं....।

एक दिन सिंजिया री तपत मांय घणै अंधारै हळ छौड़ घरां बयीर जांवतों हो कैं परड़ (सांप) डस लीनौ। एकलौ मिनख करै तो कांई करै, झट ऊंट ने झैक ऊपर बैठ रवाना होयो। ऊंट एड़ौ जिनावर कदैई मारग नी पांतरै। मोड़ो होवण सूं घरवाला हैलो दीनो सुखदेवा...सुखदेवा...., पण कोई जवाब नी, थौड़ी दैर मांय ऊंट घरां आगै आय ऊभौ, घरवाला दौड़ नीचे उतारियो, बेहोश, झट पाणी छिड़कायौ, हवा दीनी थोड़ी देर पछै हौश आयौ, कैवण लागो, म्हारै तो गोगेजी मैर कर दीनी, परड़ ही। सब चिन्ता मांय पड़ गिया, दौड़ अर भोमजी भोपा नै लाया, झाड़ा दीना, पण कांई काम नहीं आया, परभात होतां सुखदेवा रै हंसलो चढ़ावो कर दीनो। घर मांय मातम, कूंका बरलौ, समधा रौ संसार कालै रंग मांय रंगीजियो।

दुःख रा पडू दिन हौवे, वकत आतै जातै छः महिना पछै समधा खेत गयी। हळ जठै छौड़ियौ हो बठैई पड़ियौ हो, सुखदेवा री पगरखी एक पड़ी है, तो ऊंट री झैकाण, पति रा पग मंडियोड़ा पड़िया है। पगां री मंडण देख रौवणी लागी, खेजड़ी रै बाथ घाल रड़ा कीनी है ''है रामजी म्है कांई थारा काला तिल री चोरी कीनी ही...।'' तीज तिंवार जावण पछै सगळा काम करणै लागा, पण समधा नै आछौ कांई लागै। थौड़ा दिनां पछै आ ठा पड़ी, समधा रै आशा हैं, माँ बणन वाली हैं। उण री सास ससुर घणा राजी होया, है भगवान लाज राखजै। थोड़ा महिना पछै समधा गीगले ने जलम दीनौ। घर मायं घणी उदासी कम होयगी। दादा-दादी कैवता 'औ तो कालै मोटो हो जावेला, दुख रा दिन किताक दिन रैसी। इण पोता मायं बेटा रा नूर निजर आवै।'' नाम दीनो गेमरो।

दुनिया उम्मीद रै आसरै जीवै हैं, समधा घणा सपना देखती। गेमरा ने घणौ लाड़ प्यार माँ-दादा-दादी रौ मिलै पण बाप री कमी तो रैवेज है, आ बात समधा रैं मन मांय आवतै हिवड़ौ भरीज जावतौ, करां तो करां काई, आंख माय आसूंड़ा झरता।

यू वक्त बीततौ गयौ दिन आड़ा पड़िया, एक रात दो मिनख ऊंट ले रात मांय आया, कैवण लागा-''समधा री माँ बीमार हैं, लेवण आया हाँ।'' माँ, का माँ रौ जायो, दूजौ लोक परायो', माँ री बात सुणता समधा गेमरा ने दादी सागै सूतोड़ो छोड़ रवाना हौय गी।

पण घरा पूगतां सब राजी खुशी हैं। चार मिनख औतारां मांय ऊंट ले बैठा हैं, आज शनिवार हो। समिचार पूछिया, माँ रौ हाल चाल तबीयत पूछी तो माँ कैवण लागी -''बेटा म्हारै कांई कौनी हौवे, थारे यूं ऊमर पूरी कौनी होवे, सेर आटे रौ औलौ लैणौ पड़सी, आ नाते जावण री, घर बसावणरी आपांरी रीत हैं बेटा।'' समधा सुणता ही दौड़ी बाड़ ऊपर कर, पण पकड़ पाछी लाया। उणीज वक्त एक आदमी अर्जुन आयौ, गांठजोड़ो बंधाय, माडाणी ऊंट माथै बिठाय रात मांय बयीर कीनी। रौवती समधा कैवती...''म्है कांई गुनाह कीनौ... म्हारै गैमरियो बचियो, छोटो हैं...।'' बात आई गई, समधा री मजबूरी अर उदासी देख अर्जुन कयौ-''म्हारै टाबर मोटा हैं, दौ छौरा एक छौरी, थारै मन बिना बंतलावा कौनी, शरीर तक रै हाथ नी लगाऊंला, थै मन शांत रखौ। निश्चित होय अर रैवो, थारै म्हारै बीच भगवान हैं।'' आ बाता सुण समधा अर्जुन ने मन मांय धिनवाद दिनौ। तीन चार महीना पछै वा घर रौ काम करती, टाबरा ने जीव देवण लागी, पण कुदरत कांई करै आ अजब बात हैं।

आज अर्जुन शहर गयौ घरेलु सामान कपड़ा लता लावण नै। शहर मायं नशबंदी अभियान चालै हौ अर्जुन ने पकड़ गाड़ी मांय बैठाय अस्पताल मांय जबरदस्ती नशबंदी कर दीनी। नशबंदी करता एक नाड़ अलग सूं कटगी ही, अर्जुन छः महिना खाट पर पड़ियो रयौ, समधा, टाबरियाँ सेवा कीनी। थोड़ा दिनां पछै आ बात आयीक अर्जुन रै ऑपरेशन गलत होवण सूं नामर्द होय गियौ है। इण बात रौ समधा ने घणौ पिछतावो हौयौ।

दो-तीन बरस पछै अर्जुन रै मन मांय आयौ, समधा नै पीहर मिलाय आवौं। समधा घणी राजी होयी पण उण रा पगला पाछा पड़ता। हिम्मत कर दोनूं घर सूं रवाना होया। चालतां बीच मांच रात पड़गी, आषाढ़ रा दिन हा आंधी अर बरसात आयी, रात मांय मारग नी सूजे। ऊंट ने आपरै आसरै छोड़ चालता रिया, थोड़ी दूर एक ढाणी आयी। वे उतरियां हैलो दिनो तो गुडाल सूं एक डौकरौ आयो, समिचार पूछिया, ''कयौ म्है काश्मीर रा हां, मारग भूल गिया हाँ, रातीपासौ लैवणो है।'' डोकरा घरवाली ने हैलौ दीनौ ''गेमरियां री दादी बारै आवौ, मैमान आया हैं, इण लुगाई ने घरां ले जावौ।'' समधा आंगणै गयी, डोकरी री आवाज सुण घर जाणियों पिछिणौ लागण लागौ। पण उण रै ज्ञान होवते देर कौनी लागी, ओ घर तो वा हीज हैं, पैला वालौ सासरौ। अबै समधा रौ शरीर सूनो, करै तो कांई उण रै आंखाँ आगै सगळी बीती घटनावां, आछौड़ा दिन, जद वा बिंदणी बण'र आयी,

ढोल बाज्या हता, उण रौ हिंयौ भरीज गियौ। परभात होतां वा गुड़ाल गयी, घणै अंधारै, अर्जुन नै बुलाय सगली बात कै दीनी। ऊठीनै डोकरड़ी पिछाण कर डोकरा ने बतायौ ''आ आंपणी सुखदेवा री घरवाली है।'' दोनू री आंखा भर आयी, कैवण लागा। ''इण बिचारी अभागण रौ कांइ दोष, आपांरी किस्मत फूटोड़ी ही, खैर ईश्वर मिलाया, आपां कांई कर सका हाँ।'' थौड़ी देर डौकरौ पीलो औढणौ लायौ, औढाय हाथ फैरियों ''बेटा थूं म्हारी.....।'' हिवड़ौ भर आयौ डोकरा-डोकरी रौ, तो गेमरियो जाग रोवण लागो माँ....माँ.....माँ..... इतरौ सुणतां समधा रै मन जवाब छौड़ दीनो दौड़ गेमरा ने छाती सू लगायो, दोनूं हाथों फेर चेहरो निरखण लागी, उणनै सुखदेवो निजर आवण लागो, म्हारौ बचियो, जोर सू रड़ कीनी।

समधा गेमरा नै कांधै उठाय अर्जुन नै कैवण लागी ''म्हनै माफ करो...म्है अबै कांई करूं।'' अर्जुन ईश्वर ज्यूं आज निजर आवै। अर्जुन बौल्यौ-''समधा आ कुदरत री बात हैं म्हारै जितरो सुख हो मिल गियो हैं, म्हारै टाबर मौटा हैं, सब सुख होसी, पण इण बच्चे अर बूढ़ा डोकरा-डोकरी रौ कुण धणी, आं रौ कांई होसी। समधा थै चावौ तो राजी खुशी अठै पाछा रैवो, सेवा करो दुनिया री बांता पर ध्यान कौनी देवणौ।'' समधा अर्जुन रा पग पकड़ लीना, हाथ जोड़ धिनबाद कीनौ। वा घरां जाय घर सूं कालौ औढण लाई ओढण लागी तो डोकरा, डोकरी झट छीन लीनों। कयौ ''अब थारै पीलो हीज ठीक रैसी, अर्जुन म्हारौ बेटो हैं सुखदेवा ज्यूं। बेटा अर्जुन जद मिलन री इच्छा होवे आता रिजौ, समधा आपरी हैं, म्हारी तो बेटी है।'' अर्जुन आपरो ऊंट ले गाँव गयौ।

समधा आपरै घरां पाछी आय सास ससुर री सेवा कीनी, बेटे ने पढ़ाय अफसर बणायौ। समधा रौ संसार वक्त रै साथै गुजरतो गयौ। आ बकत री करामात है।

गामड़ियो गाम फिरी, अर प्रीत पाली ऊमदा।
सावरियै री रीत थूं, समझ गयी समधा।।

व्याख्याता (से.नि.)
जिप्सम हॉल्ट, आदर्श ढूंढ़ा
मु.पो. वाया-कवास
जिला-बाड़मेर (राज.)-344035
मो: 9414532949

आलेख

राजस्थानी भासा रा मुंशी प्रेमचन्द

विजयदान देथा 'बिज्जी'

❒ शंभुदान बारहठ

सत ऊजल संदेस उदेराज उजल अखै
दीपै वारा देस, ज्यारा साहित जगमगै।

मरुधरा राजस्थान री मायड़ भाषा रा प्रेमचन्द कहलावणिया विजयदान देथा आज रा राजस्थानी गद्य रा आगीवाण साहित्यकार अर राजस्थानी गद्य रा पितामह कह्या जाय सकै। जन-जन री जुबान री भाषा में थाती, वारी सहेज्योड़ी लोककथावां नै उणी मायड़भाषा राजस्थानी में जीवन्त कर लेवण री बागनगी लोकशैली रा परम पारखी 'बिज्जी' ई पार पटक सकै, किणी दूजा रै बस री बात कोनी। 'बिज्जी' आदर जोग विजयदान जी देथा रौ बोलतो नाम, विणां री ओलखाण घर-घर ढाणी-ढाणी, गाँव-गाँव, रो पण पाला पूगनै ई चौपालां री होका हथाई अर बूढ़ली दादियाँ, नानियाँ सूं लोकानुरंजन री बातां, कथावां, कहावणियां सुण-सुण नै एकठ करणी अर उणा नै कथासूत्र में परोवण रौ हुनर कोई 'बिज्जी' सूं सीखै। बातां री फुलवारी रा पच्चीस सूं ई बेसी खण्ड (भाग) इण बानगी रौ लूठो प्रमाण।

देथाजी कलम री कोरणी रा लूंठा जादूगरा हा। वां आपरी लेखनी में लोक परम्परावां री अबखी बातां नै उकेरी पण लोक धारणावां नै ठबकौ ई नी लागण दियौ। हँसणा में ठिठोली कर देवणी वारै व्यंग्य विनोद री बानगी 'बिज्जी' रै सिरजण री टेम पण औरुं न्यारी। परभात री पौर तीन बज्यां रै लगै टगे ऊठणो अर लिखणो। इदकाई आके आपरा लिखयौड़ा नै दुबारा देखण री टेम नी देखीजी।

रचनाधर्मी रा दीठ सूं देथाजी रा तीन रूप- संग्राहक, सर्जक अर संपादक बातां री फुलवारी रा सगळा खण्डां में वे मरुधरा री माटी री ओलखाण करावती कथावां कहाणियाँ ने मूर्त मौलिक मठोठ वाळो सरूप देय राजस्थानी गद्य री फलापत करतां एक हेतालू संरक्षक रौ काम कियौ। राजस्थानी गद्य साहित्य नै समर्पित आपरी जिनगानी रै छेहले टेम वां राजस्थानी हिन्दी कहावत कोष रौ काम लगाय मायड़ भाषा रा इण सिणगार स्वरूप नै भी जबरौ सिणगार्‌यौ। व्यांरी निरवाली मठोठ वाली वारी संस्मरणात्मक पोथी 'अलेखूं हिटलर' नै 'शाइर शीन काफ निजाम' नै समर्पित करणो देथाजी री सर्वधर्म सदाशयता री सांप्रता मिसाल है।

एक समीक्षक देथाजी नै मरुधरा 'राजस्थान रा प्रेमचंद' कैवता लिख पण दियौ- ''ये हिंदी का दुर्भाग्य है कि उसके पास विजयदान देथा जैसा लेखक नहीं है।'' देथाजी आपरी लेखनी में स्त्री-पुरुष रा मनोवैज्ञानिक संबंधां नै सबलता देवतां लोककथावां नै आपरी मंशा मुजल तब्दीली भी करी है 'माँ रौ बदलौ' री काली मारी अर 'रूपवान गूजरी'में या बात सांप्रता देखीजै।

विजयदान जी देथा जिण ठेठ राजस्थानी सांस्कृतिक परिवेश में जिया, उणी अनुरूप आपरौ लेखन भी बणायां राख्यौ। पण आधुनिक बोध भी वांरी रचनावां सूं अछूतो नी रह्यौ। कठै ई जावणो हुवतो तो वात वंतल करता पाळा ई चाल पड़ता। वां री इण अनूठी जीवन शैली अर लेखन रौ सामंजस्य अनूठौ।

अंग्रेजी मानसिकता, मान्यतावां री हेठी पटकाणी वां री इण एक बात सूं ई सुभट समझी जाय सकै-देथाजी कथा करता कै आपरौ जन्मदिन याद ई करणो है तो उपवास रख नै भी कर्‌यौ जाय सकै है, मिनख जमा रौ मिलयौ है तो उण रौ सांवठो उपयोग करौ। चिट्ठी पत्री लिखण रौ वां नै टेम जोग शौक। डॉ. नृसिंह राजपुरोहित जी भी या ई बाण रयी। सरल बाता में गंभीर विचार गागर में सागर। एक पोथी रै विमोचन मौके देथाजी पोथी ने भेंटरूप नहीं लेय साफ कह दियौ-''अरे पैलड़ी पोथी तो खरीदणी चाहीजै। यूं टैगोर अर शरतजी वांरा पसंदीदा साहित्यकार हा, आ बात न्यारी के राजस्थानी नै संवैधानिक मान्यता नहीं मिलण पाण ई देथाजी केई साहित्यिक पुरस्कारां सू सम्मानित हुवता रिया। 1974 रा 'साहित्य अकादमी पुरस्कारा' सू लैय नै 2012 तक रौ 'राजस्थान रत्न पुरस्कार' उण पुरोधा गद्य साहित्यकार रो सम्मान एक लंबी प्रगति यात्रा है। मायड़भाषा राजस्थानी सारू वां

रौ लगाव इतरौ सांवठो के आपरा लोगां में हिन्दी में वात वंतल करण नै वांरौ मन हामळ नी भरतो- दड़ी छंट राजस्थानी में ही वात वंतल करता रैंवता।

एक रचनाधर्मी सिरजण री सीर नै महत्व देवणियै साहित्यकार री मानसिकता 'तीन लोक सूं मथुरा न्यांरी' ज्यूं ई हुया करै। यूं भी एक साहित्यसेवी आखै समाज री सौचे। साहित्य सिरजण में घर-परिवार री लवना घणी लारै छूट सकै। एक पिता रै रूप में देथाजी आपरी पांचू सन्ताना पे कम ई ध्यान देय सक्यां। वांरौ सगळौ टेम पोथियां री एकाग्रता में ई लाग्यो रैंवतो। आप अचूंभो कर सको के कुण किसी क्लास में पढ़ रह्यो है इण तक सूं भी वै अणजाण साई रैवता। पण वा सगळा भाई बहिनां नै सगळी सुविधावां भरपूर बणायी राखी।

लिछमी अर सरस्वती मैं यूं तो 'सौतिया डाह' मानीजे, पण कठै कठै ई ऐ एकण छिया ई बैठी निगे आय जावै। आदर जोग देथाजी अर मानीता डॉ. नृसिंह जी री अमर रै छेहले धड़ै औ संयोग सजतो सुभट दीसे। यांरी शुरूआत जिनगाणी भलांई अबखायां झेली हुवै, पण लारै जातां ऐ सुरसत रा सपूत अर लिछमी रा लाडेसर ई रह्या।

बिज्जी रौ जीवण मायड़ भाषा नै समर्पित रह्यौ। वै राजस्थानी रा पक्षधर हा। वै आपरी भाषा, संस्कृति, लोक-परंपरावां सूं सदा जुड़्या रह्या। राजस्थानी भाषा री मान्यता सारू दर्जन साहित्यकारां नै लेय वे प्रधानमंत्री इंदिरा जी सूं भी मिल नै इणी हूस री माँग राखी के-

माँ अर मायड़ भोम ज्यूं मायड़भाषा मान।
राजस्थानी राखिसी तो रहसी राजस्थान।।

मायड़भाषा राजस्थानी नै उणरौ सांगोपांग सम्मान दिरावणिया देथाजी सिरूकंवर पिताश्री सबलदान देथा रै आंगणै जोधपुर रा बोरुन्दा गाँव में एक सितंबर 1926 ई.सन् नै जलम्या। राजस्थानी री सेवना वांरी सबसूँ लूठी डिग्री। यूं 'बिज्जी' एम.ए. हिंदी में करी ही। 'मरणहार संसार अमर तो आखर है'-इण भांत राजस्थानी गद्य साहित्य रौ और सबल स्तंभ दस नवम्बर 2013 नै आप री जूण पूरी कर सुरग री सोय करली।

'बिज्जी' रौ रचना संसार निरालौ। सरल शब्दां में गूढ़ बातां कह देवणी वांरी कारीगरी। समाज रा हर पक्ष नै वां एकनुवी ओलखाण दी तो वा भी सहजभाव सूं। मार्मिकता री मठोठ सागे इण भांत के टाबरा री कल्पना संसार रा सागर में गोता लगाय वे रोचक कहाणियाँ रा ताना बाना बुण लेवण में घणा पारंगत अर बेजोड़ बण्या रह्या। मिनख रा मन री सांयत संतोष रा उण जमाना में ऐ घर तोड़ावता टी.वी. सीरियल नी हुवता-टाबरियाँ नै बूढ़ा बडेरा नींद आवण सूं पैली इण भांत बातां सुणाय मनोरंजन कर मठोठ वाली जिनगाणी रौ समचौ देवती इण वात शैली रौ सहारौ लेय आपरा झूंपा, चौपालां, चौतरां अर होका हथाई री वेला नुवी पीढ़ी नै संस्कारवान जीवट सूं जोड़ता। टी.वी. जुग सूं पैलारी इणी वातशैली नै देथाजी 'बातां री फुलवारी' रा पच्चीस खण्डा में एक स्थायी स्वरूप प्रदान करने मायड़ भाषा अर संस्कृति दौन्यू नै सबलता दीनी। कमल री कोरणी री परझलती मशाल लेय देथाजी विश्व पटल पे समाज री सामन्ती सोच नै प्रगतिशीलता री सुवास सूं सौचन्नण करी। गाँव ढाणी रा आँचल सूं जुड़्या। 'बिज्जी' अन्त तांई मायड़ भाषा री मान्यता सारू जूझता रह्या। घणा रंग है वारी इण जीवट भरी जूणनै-

कोट धुड़ै देवल डिगै ब्रिख ईधण हुय जाय।
जस रा आखर जेहिया, जातां जुगां न जाय।।

व्याख्याता
रा.बा.उ.मा.वि. गुड़ामालानी,
जिला-बाड़मेर-344031
मो: 9413507922

आज सुणाऊँ थानै बातां

❒ **ओमदत्त जोशी**

आज सुणाऊँ थानै बातां, भारत देस महान री,
आंण-बांण अर सान अनोखी, म्हारे हिन्दुस्तान री,
जय भारत री बोल-जय भारत री बोल, जय भारत री बोल...।

उत्तरादे है मुकुट हिमालै, धौळा बरफ री घाटियां,
भाँत-भाँत रा फूलाँ सूं फबी है, घणी सुहावणी वादियाँ।।
गंगा-जमुना नदियां बैहवे जो मान है हिन्दुस्तान री,
आज सुणांऊ थानै बातां, भारत देस महान री,
आण-बाण अर सान अनोखी, म्हारा हिन्दुस्तान री,
जय भारत री बोल, जय भारत री बोल, जय भारत री बोल....।

तरै-तरै रो पहरावो है, अर भाँत-भाँत रो खाण है,
अनेकता में एकता री आखा जग पहचाण है।
आ ही गजब पिछाण है, म्हारा हिन्दुस्तान री,
आण-बाण अर सान अनोखी म्हारा हिन्दुस्तान री।।
जय भारत री बोल, जय भारत री बोल, जय भारत री बोल....।

हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, इसाई, रेवां सगळा भाई ज्यांन,
एक-दूजा री करां भलाई, राखां उणां रो पूरो धियान।
आ ही अणूती बाण है, म्हारा हिन्दुस्तान री,
आज सुणाऊं थानै बातां, भारत देस महान री,
आण-बाण अर सान अनोखी, म्हारा हिन्दुस्तान री,
जय भारत री बोल, जय भारत री बोल, जय भारत री बोल....।

गाँधी-नेहरु रा सपना ने, आज उणां ने साकार करां,
साँच-अहिंसा अपणावण रो, आज सगळा संकळप करां।
वो तिरंगो पियारो, जान है हिन्दुस्तान री,
आज सुणांऊ थांनै बातां, भारत देस महान री,
आण-बाण अर सान अनोखी, म्हारा हिन्दुस्तान री,
जय भारत री बोल, जय भारत री बोल, जय भारत री बोल....।

रिसवतखोरी, आतंकवाद ने मूल सूं मिटावणो है,
वसुधैव कुटुम्ब रो भाव, सगळा मांये जगावणो है,
रासट्र गीत री तान है मीठी, म्हारा हिन्दुस्तान री,
आज सुणांऊ थानै बातां, भारत देस महान री,
आण-बाणं अर सान अनोखी, म्हारा हिन्दुस्तान री।
जय भारत री बोल, जय भारत री बोल, जय भारत री बोल....।

व्याख्याता (से.नि.), 'साहित्य सदन', वर्धमान कॉलेज के पास, ब्यावर, जिला-अजमेर- 305901, **मो: 9309353637**

मारवाड़ इतिहास रौ वीर पानौ

शेरां री धर शेरगढ़

❒ मनोहर सिंह सोढ़ा

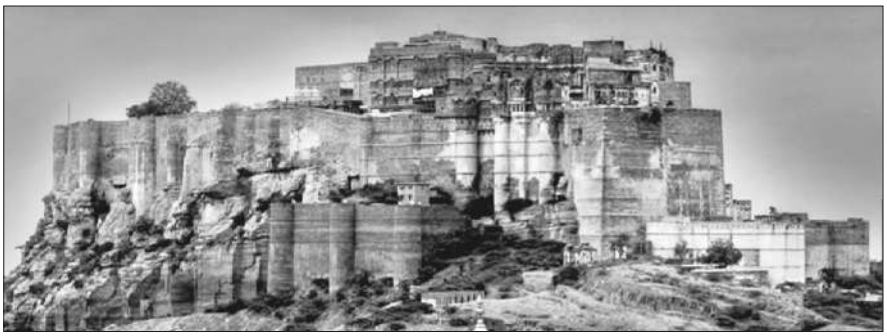

नवकूंटी मारवाड़ री, रणबंका राठौड़ां री धरती जोधपुर। मेहरानगढ़ दुर्ग जठै थरपीज्यौ उणी परगना री धौराली धरती शेरगढ़ डूंगरां सूं डीगा सोनल रेत रा धोरा री रजवट थली अपर बली जूझारां री ठावी ठौड़ शेरां री धरती शेरगढ़।

नाथासिद्ध चिड़िया (नाथजी चिड़िया) टूंक भाखरी पे आपरा धूणा सूं जग-जगता खीरा चादर में बाँध वहीर हुयग्या तो राव जोधा जोगीसर नै पलासनी पूग्यां नीठ मनाया। इणी चिड़िया टूंक भाखरी पे माता चामुण्डा रौ मंदिर थरपीज्यौ-

चावण्ड थारी गोद में, रम्म रह्यो जोधाण।
थूं हिज निग्गे राखजे, थारा टाबर जाण।।

भारत री संस्कृति सदा सूं वीरां री अर्चना करती आयी है। ऋषि ग्रंथां में कथीज्यो है-'वीर भोग्या वसुन्धरा।' सोनल रेत री धोराळी धरती री चमक अठै घर-घर अर ढाणी-ढाणी जलम्या वीरपणो ई तो दीसै।

सती-जती, देव-दातार, सिद्ध-साधक, जोगीसर, कवि इत्याद इण वीर प्रसूती धरती रा विरद गावता आया है। गाँव गुवाड़ अर ढाणी-ढाणी नाडी री पाळ के गोचर री साळ-सगळी भांय थरप्योड़ी पुतलियां नै छतरियां, चौतरा नै औरण सगळा सिंघ सपूतां रै सूरापै री स्मृति शेष है-

शेरां री धर शेरगढ़ रही आद लग रीत।
रगत देय राखी रसा, पुरख पटाधर जीत।।

शेरगढ़ री रत्नगर्भा वीर धरती री फकत एक ही पुरख पटाधर ही पल्या अर रम्या।

मिनखा जूण रा सगळा सुखां ने ना कुछ मान मायड़ भौम सारू सरवस समर्पण इण शेर धरा री मठोठ रगत रंग्योड़ी इण री सोनल बालू रेत हल्दीघाटी री रगत तलाई सूं किणी भांत कम नीं आंकी जी। पूरी जिनगाणी जूझतां ही नीसरती रयी- एक रणभेरी भळै सुणीजै तो जूण सुकारथ। आ ही काण अर बाण बणी रही। शेरगढ़ री जमकुण्डली में राशि रौ स्वामी यमराज लिखीजग्यौ। मृत्यु इण सारू पर्व है अर मायड़ रा हालरिया में एक ही टेर सुणीजै-'मरण बड़ाई माय।' स्वाभिमान री रंगत में शेरधरा रेत किणी अपर बली री मुट्ठी में कदे ई दबायोड़ी नीं दबी। सदा संग्राम सारू दरकीजती रयी, नीसरती रही। कस्तूरी नीं, जूंझारां री सोरम घुलयोड़ी इण वीरधरा इज शेर धरा री आबोहवा में बलिदानां री गरज धकै मेह भर्‌या बादला बिन गरज्या बरस्यां ऊपर वाड़ै ई नीसर जावै।

किण किणरी गिनरत करीजै- गिणतां गिणतां घिस जावै आंगालिया री रेख। पग-पग जूंझार अर पड़वै वीरांगनावां। राव चूंडा अठै गोपाल बण्या तो आलोजी आपरी राजपूती निभायी। राव गोगादेव, सताईस गांवांरा क्षत्रप थरपीजिया। आज री टेम आतंकियां सूं लोहो लेवतां परमवीर शहीद प्रभू सिंह री जलम भोम सूं इणी री पीढ़ी में पूर्वज अजीत सिंह प्रथम विश्व युद्ध में पराक्रमी कहाया। इदकी बात आके शहीद प्रभुसिंह री पांच पीढ़ियाँ में तीन जणां शहादत रौ केसरिया बांध शेर भोम री साख सवायी करी। राव धीरा मल्लीनाथ जी री जालरी डाल इण धरती रोप नै, वीर धरती में भक्ति रस री गंगा खळकायी। जोधाणा री थरपणा री टेम इणी शेरगढ़ एक सौ चालीस घोड़ा देय आपरौ सामधरम निभायौ। इणी शेरगढ़ री धरती रा दूदा जी आशिया ई राव कल्ला नै सिवाणा दुर्ग री साख उजालण बिरद जोग त्यार कर्‌या। मझ थलवण्ट्ट में बस्यौ औ शेरगढ़ परगळौ आज ई थळी नाम सूं जाणीजै-

सूर कला री सुरसरि लहरां सागै लै'र।
दीपै थलवट देस में शेर परगनौं शेर।।

झड़ रुखालण झूंपड़ा, भिड़या सुणी रणभेर।
मान राखियौ मरदलां शेर परगनो शेर।।
मरण तिंवार मनावतां घमसाणां री घेर।
गाँव गुवाड़ी गोरवै सती जती चहुँ मेर।।

भोजा का बास अर तिबणा में थापित देवलियां अर पूतलियां शेरधरा रा सिंघ शावकां रै शहादत री साख भरै-

एक एक सूं आगला जबर हुआ जूंझार। अर-
खाली पण लागसी धरा खिर जांण री।
कलपसी जामणी, घरे निज कामणी।।

रजवट रूखालणी इज शेर थली में सिंघण रा जाया सींव रूखाळी मायड़ रौ दूध ऊजलो ई राखता आया है। रंग प्रभुसिंह री रजवट नै, रंग खिर जारी री थलवट नै, रंग चंद्रसिंह राजपूत नै, रंग भटियाणी रा दूध नै, रंग आमकंवर रा पीव नै, रंग गोगादे री रीत नै अर रंग इण ऊजल क्रीतनै।

उतराद रा भड़ किवाड़ सींव रूखाला ऐ भुरजाला भारत भोम री गोद में तिरंगो ओढ़ चिर निंद्रा सूं पे'ला आपरा इष्ट सूं एक ही अरदास करै के ''भारत माता! काला केसां में गजरो गूंथ्या म्हारी बाट जोवती म्हारी जोड़ायत, म्हारे घर आंगण में चहकती चिड़कली म्हारी लाडल, धीबड़, अर जूनी आंख्यां सूं म्हनै एकण निहारण नै उतावली म्हारी बूढ़ली मायड़ सगलां री भुलावण थनै सूंप नै सीख ले र्‌यो हूँ-जय हिंद।''

रजवट घर रजथान रौ जिलौ जोधाणो जोर।
भल आथूणी भोम में शेरगढ़ सिरमौर।।

प्रधानाचार्य
शहीद श्री भैरुसिंह रा.आ.उ.मा. विद्यालय तेना,
तह.-शेरगढ़, जिला-जोधपुर (राज.)
मो: 9461529484

लोककथा

टमरकटूँ

❒ भावना

जुगां जूनी बात दिन पूरौ खेत में आथमण आयौ। गोमाल री टेम हुयां दुआरी ब्यालु करिज्या जिते तो सोपो पड़ग्यो। राली गुदड़ा करतां पाण टाबरियां री तो एकई बाण। बूढ़ली दादी कोई बात मांडै तो जाणे ऊँघ पल्ले बाँध्योड़ी। सेवट जूनी आंख्यां नुवो जुग देखण वाली बूढ़ली दादी नै टाबरां सारू एक बात मांडणी ई पड़ी। बात ई हाथी, घोड़ा, राजा, राणी की नीं। दादी बात मांडी एक कुरज री। सात समंदर पार सीयाळा री अबखी रुत पार करण कुरज ई दादी रा देस में आय डेरा दिया। समंदर रै कांठै एक भाखर रा खुड़का में आपरो वासौ कियौ। दिनां परवांण वा मां बणी।

''अरे टाबरियां सुणो हौ के सोयग्या?'' टाबरिया अजेज बोल्या-'तो दादी पछै?'

बूढ़ली टाबरां नै पोटावतां बात धकै बधाई- भाखर री खुड़क में कुरज आयर ईण्डा मेल्या। एक नीं, दोय नीं, पूरा सतरै। अर रूखाळी ई पूरी कीनी, सतरै दिन टेम पूरो हुयां ईण्डां सूं बिचिया बारै आया, कंवला धौला कबड़ाला। पूरा सतरै सूरज री किरण पाण मावड़ नै आपरा जायोडां में चुगै सारू जुगत विचारणी पड़ी।

भाखर री ढाल में एक खेत आयोड़ौ सूबरा री पांख रै उनमान लीलो चम्म। कुरज उण खेत सूं ज्वार रा दूध पड़्या काचा दाणा लावण आपरा बिचियां ने चुग्गो करावण ऊंची अकासां उडगी। बिचियां नै थावस दियौ- अबार ल्याऊं थारै अंजल पण विधना रा लेख थोड़ा खोटा। कुरजड़ी नै यूं काची ज्वार ले जावतां देख खेत रौ हाली रीस में कीं बीजी ई तेवड़ली। आवा दौ अबकालै रांड कुरजड़ी नै। यूं तो म्हारौ खेत रौ पूरो पौ खालौ हुय जासी।

अर ज्यूं ही कुरज आवती दी सी, हाली तो आव देखी नीं ताव गीलो गुड़ ज्वार पे नीं लिपटाय दै? उठी नै कुरज रौ दाणा सारू बैसणो हुयो अर अठी उणरी पांख्यां गीला गुड़ में इसी चैंटी के वा कुरलावती रयी अर जोर की झिलती रयी। अब करैं तो कांई?

खेत रौ हाली हे हे हँसतौ पग पटकतो अदीठ हुयग्यो। मायड़ रौ मन घणो कलप्यौ-अरे म्हारा बिचिया तो बिना मौत मर जासी-अबे?

इतरा में तो एवड़ रौ एक एवालियो आपरी एवड़ उछोरतो उठी आवतो दीस्यौ। गीला गुड़ में पांख्यां भिल्योड़ी बापड़ी कुरजड़ी यूं कुर लायी-ऐवड़ रा एवालिया ए म्हारा वीर-टमरकटूं।

बांधी कुरज छुड़ाई म्हारा वीर-टमरकटूं।
भाखर खुड़के ब्याई म्हारा वीर-टमरकटूं।
सतरै बिचिया ल्यायी म्हारा वीर- टमरकटूं।
आंधी में उड़ ज्याई म्हारा वीर- टमरकटूं।
भूखाई मर जाई म्हारा वीर-टमरकटूं।

टमरक टूं-राली में सूता टाबरिया बिचालै ई बोल पड़्या तो पछै दादी? बूढ़ली दादी टाबरां रा माथा पे हाथ फैरती बात ने धकै वधायी-पछै कांई/कुरज री कुरलाटी सुण एवालियो दया दरसावतां छावट हाली नै थोरो कर्‌यो। एक लरड़ी लेयलौ अर लारौ छोड़ो बापड़ी रौ। बिचिया मरण रौ पाप लागसी-समझ्यौ? पण हाली तो पक्को लालची, पडूतर दियौ, सगली ऐवड़ दैवै तो कुरजड़ी छूटी। एवालियो लचकाणो पड़ धकै वधग्यो-बाई थारा करम। कीं ताल पछै उठी कर एक गोमाल नीसरी। बिचियां री चिंता में आंसू ढळकावती कुरज फेरूं कुरलायी- गायां रा ग्वालिया रे म्हार वीर-टमरक टूं।

बांधी कुरज छुड़ाई म्हारा वीर-टमरक टूं।

गायां रा ग्वालिया रौ हियौ पसीजग्यो। खेतरा रुखाळा नै थोरौ कर्‌यो- अरे भला मिनख एक गाय म्हारी गोमाल सूं लेय बापड़ा जीव नै फिटौ कर। पण हाळी तो खंडा रौ खाऊ। पूरी गोमाल लियां ही कुरजड़ी नै छोड़े। बापड़ौ ग्वालियो लचकाणो होय धकै वधग्यो। कुरज अबे करै तो कांई। मायड़ रौ मन कलपै अर नैणां सूं आंसूड़ा झरै-टप्प! टप्प!! कीं ताल पछै फेरुं आसरी उम्मीद कुरज नै मऊरौ एक टोलो उठी कर नीसरतो दीस्यौ-सांसा जद लग आसा। कुरलावती कुरज जोर की कूकी सांड्यां रा एवालिया रे म्हारा वीर-टमरक टूं।

मऊ रौ मालिक ई दयावान मिनख हौ। थोरो नोरो करतां एक सांड रै बदलै कुरज नै छोड़ देवण री घणी लटायो-रियां करी। पण खेत मालिक तो जिदरौ ई ठूंठौ। हार खाय सांड्या रौ टोलो हाक धकै वध्यो। इतरा में तो एक अजोगती हुयगी। ज्वार रा बूंठा क नैई एक ऊंदरा रौ बिल ऊणरौ बारै आवणौ हुयौ। छेकड़ली वेला इण ऊंदरिया नै ही आपरी अबखी इण भांत सुणाय दी।

पयांल देस रा राजा रे वीर-टमरक टूं।

बांधी कुरज छुड़ाई म्हारा वीर-टमरक टूं।
सतरै बिचिया ल्याई म्हारा वीर-टमरक टूं।
भूखाई मर जाई म्हारा वीर-टमरक टूं।

बूढ़ली री बात सुणतां टाबरिया बोल्या म्हांनै ज्वार रा खेत रौ रूखवालियो परो मिले तो थांरी ई डांग सूं माथो बिखेर द्‌यां अणूता रौ।

बूढी दादी टाबरियां ने ढाबती बोली नीं-नीं। रामजी जाणे ऊंदरा नै कुरज री मदत में मेल ई दियौ। कियां दादी? टाबरिया बोल पड़्या। अरे सैर ने सवा सेर कोई तो मिले ई मिलै। अर पछै ऊंदरो ई कदे मीनकी नै ई रमाय दै, है के नीं? हाँ तो कुरज री कुरलाटी ऊंदरो नीं झेल सक्यो। फटकारे आप मतलबी खेत रा मलिक नै काच में धन बतावण री जुगत विचार ई ली। हुयौ इयां के ऊंदरौ आपरा बिल सूं सोना री एक माळा बारै लाय खेतं रा हाळी सू बोल्यो-देखो सोना री माळा 'मोत्यां पोयोड़ी। नवलखा हार सूं ई बेसी कीमती। या ले ल्यो अर बापड़ी कुरजड़ी नै जावण द्‌यौ। औलाद तो थारै ई होसी ज्वार रा च्यार दाणां रै सारे सोना मोत्यां री आ माळा घणी मूंघी-अनमोल।।

अर इसी चमचमाती माला देखतां पाण हाली री तो आंख्यां ई चुंधीजगी। फटकारै-बोल पड़्यो-तो ल्या माळा।

पण ऊंदरियो ई खंडां रो खाऊ हौ। चाटक अर पाटक। अजेज बोल्यो-तो करौ कौल वाचा। छोड़ द्‌यो बापड़ा जीव नै मायड़ रौ मन कितरी आसीसां दैवैला। अठी खेत वालै कुरजड़ी री पांख्यां खोली अर उठी कुरज तो एक ही सांस में ऊंची-ऊंची अकासां जाय अदीठ हुयगी-बिचिया संभाळण।

हे ऊंदरिया म्हारा वीर! थारो भव-भव भलो हुवजो। अर ज्वार रै खेत वाले हलफलावते कह्‌यौ ल्या म्हारी सोनल माळा। ऊंदरै तो माळा मूंडा में लेय बिलरी सोयकरी। सुण्यो सावल इतरी बात, नीं सुणी वारै डावा पसवाड़ै लात। टाबरिया कदका ही ऊंगीजग्या हा। दादी ई पसवाड़ौ फेर नींदरी जुगत करी।

अध्यापिका
गायत्री विद्या मन्दिर उ.प्रा.वि. भीनमाल,
जिला-जालौर
मो: 9461213099

लोककथा

कह रै चकवा बात

❒ हेमा

चवदस रौ चंदरमा आभै रै आयग्यौ है। पण आंबा री कोटर में बैठ्या चकवा री आंख्यां में अजे कस नीं पड्यौ। यूं ई गताधम में अलूझयोड़ो अलक बलक बोल पड्यो तो पसवाड़ै बैठी चकवी री नींद टूटी। उणनै सुणीज्यौ-बात री बात। कुलापात री कुलापात। खेजड़ी रौ कांटौ साढ़ी सेलि हाथ। अरे यूं कांई बिलली बातां करौ म्हारा सायब? चकवै पडूतर दियौ- राज जंजाल रा खिलका देख'र नींद तो जाणै कोसां जाय पूगी।

''तो इणरी औखद तो एक ई है''-चकवी फटकारै बोल पड़ी। ''फौज में नगारौ अर बात में हुंकारौ। म्हारी नानी सूं सूणी इसी बात मांडू के थारै मन थावस सांयत वापर जासी।'' अर चकवी सीयाला री नागण सी लांबी रात काटण यूं बात मांडी।

एक गाँव में च्यार भायला रैवता। एक हौ ब्राह्मण रौ बेटो तो दूजा वणाक (सुथार) रौ। तीजो मिंत्र चूड़ीगर तो चौथो दर्जी। ज्यांरी एकै दांत रोटी टूटती। दिन लाग्यां मोट्यार हुया तो घर वालां कीं कमाई कर ल्यावण री मंशा जताई। एक दिन च्यारूं साईना रोटी रा जुगाड़ सारू वहीर हुया। आप आप रा पीढ़ियां रा धंधा रा कीं रासपीट औजार ई सागे ले लिया।

रात एक रिंधरोही में बितावणी पड़ी। बीहड़ जंगल में शेर चीता रौ पूरौ डर। सांझ पड्यां आप आप रै सांग ल्यायौ अंजल (ब्यालू) कर्‌यौ। ब्राह्मण देवता बोल्या- भायला! जे जीवणौ चावौ तो च्यारूं जणा एक-एक पहर पहरौ देवता रै वौ। सगळां नै आ बात जचगी। च्यारूं में सूं एक-एक जणै रौ इण भांत पहरौ सूंप्यौ। सगळा सूं पैला विश्वकर्मा जी जागता रवैला। अर ता पछै कारीगर किरतार दर्जी भायलो पौहरे चढ़ेला। चूड़ीगर रात रा तीजा पौ'र में चौकीदारी करसी तो ब्राह्मण देवता परभात री पौ'र पहरौ देवैला। सगळा या तेवड़ा आड़ा हुयग्या। ''अरे तो धकै तो वध बड़भागण! यूं माठ कांई झेलली?'' ''तो सुणो सायब जी! जद बात मांडण री बारी म्हारी ई है तो थे भी थांरी सायधण री बात सरावोला।'' तो हुयौ यूं के तीनूं

साथी तो खर्राटा भरै अर सुथार रौ बेटो पौहरौ देवे। चंदरमा री चांदणी में उण सूखी लकड़ी रौ बूंठको देख लियौ। नैड़ौ जाय न जोवै तो निगोट चंदण। रात री टैम काटण आपरा रासपीट बारै काढ्या अर एक ओपती पूतली घड़ी। जितै तो रात रौ पहलो प्रहर पूरौ हुयौ। झटकै खुद सूवण सारू दर्जी रा बेटा नै चौकीदारी करण जगाय आप तो ऊंघ रै खोलै जाय पौढ्यौ। दर्जी रे बेटे कनै पड़ी लकड़ी री सोवणी पूतली देख आपरा सुथार भायला री सरावणा कीनी, पण सोना री थाली में लोखण री मेख। बिना गाभा कोई ऊघाड़ी देह ओपे?अर रात री आ वेला दर्जी रे बेटे आपरी थेलकड़ी/थैली सूं कीं कपड़ा रा टुकड़ा अर सूई डोरो लेय ढूको तो पूतली नै पूरौ वेस पैराय नै ई नैहछो कियौ। टेम ई कटगी अर पोहरौ ई पूरौ हुयौ। फटकारै चूड़ीगर रा बेटा नै अपौढ़ कर आप आड़ा मो'र कर लिया। चूड़ीगर रौ बेटो पौहरौ देवतां पगल्या कीं धकै भर्‌या तो चांदणी रा चानणा में चिळकता नुवागाभा पहर्‌याँ एक पूतली पे निजर जाय टिकी। अरे म्हारा साथीड़ा तो गजब रा कारीगर। पण तो ई एक कमी तो दीसै ई है। अर वा कमी म्हारा हुनर सू ई पूरी होसी। चकवौ उतावळौ होय बोल पड्यो- ''तो चूड़ीगर कांई इदकाई जताई-बोल बड़भागण!'' चकवी आपरौ गळौ खंखारती बात नै धकै बधाई, हुयौ यूं के चूड़ीगर रौ बेटो ई कमती नीं रह्यौ। अठी-उठी निजर नख्यां हाथी रौ एक दांत उणनै लाध ई ग्यौ। आपरा औजारां अर ओपते चमकता चूड़ा में लकड़ी री वा पूतली साख्यात जाणै गवर। वे माता प्राण ई पांतरगी। परगाल री वेला हुवतां लखारै ब्राह्मण देवता नै जगाया। ऊठो महाराज! परभात हुवण में है, जितरै आप रा नित नेम सारलौ। ब्राह्मण रौ बेटौ ऊठ बैठ्यो तो पहलड़ी निजर उण पूतली पे ई पड़ी। चूड़ीगर तो आंख्यां री औखट ऊंध री सोय करी। हे विधाता! म्हारा मिंत्र इसड़ा कारीगर! हुनर रा हमीर!! पण विधाता! एक खामी तो, तो ई रैयगी, जे आ पूतली संजीवण हुय जावै तो सिरे देखूं। कदास म्हारा दादोसा रा माला मंतर कीं अजोगती कर ई दै। अर ब्राह्मण शुरू कर्‌या आपरा कण्ठस्थ श्लोक। 'धन अंटे अर विद्या कण्ठे।' इसी अजोगती हुयी के अठी तो भाण किरण काढ़ी अर उठी वा पूतली संजीवण होयगी। ऊभी-जाणै नुवी लाडी ''तो पछै?'' चकवौ आखतौ पड़ बोल्यौ। ''पछै फेरु कांई-च्यारूं साथीड़ा झट जागग्या उण गवरजानै देख भिड़ पड्या। हर एक कैवे-करामात म्हारी तो परणेतर ई म्हारी।'' अरे आ तो जबरी हुयी? तो साहब! राजा आज तांई लड़ाई तीन-चीजां तांई ई करी है-जर, जोरू नै जमीन। अबे आपरी अक्कल री पारख हुवैला। बतावौ, वा बीनणी किणरी? ''चकवौ पैला तो चम गूंगौ ज्यूं होयग्यौ। पछै अटकतौ सो पडूतर दियौ''-बीनणी? बीनणी तो सुथार री। जे वो पूतली घड़तो ई नीं तो इतरी रामायण हुवती ई क्यूं? चकवी हँसती बात संभाली-''बोला रौ। थां री अक्कल री औकारियां आयगी। अरे, सुथार तो पूतली री देह घड़ी अर ब्राह्मण उणमें प्राण सांचर्‌या; तो दोन्यूं ई उणरा बाप बरोबर हुआ के नीं?'' ''अरे हाँ!'' चकवौ तो अधबावलौ सो होय धकै बोल्यौ-''तौ उणरी मर जाद ढकी दर्जी जिको उण रौ भरतार।'' चकवी जोर सूं हँसती दोवड़ी होय बोल ई'गी-''अरे म्हारा भरतार! अबे थानै तो पांतरौ ई घणौ पड़ै। अरे, म्हनै परणीजण आया जद म्हैं चूड़ौ किणरै नाम रौ पहर्‌यो-थारै नाम रौ। तो पछै चूड़ीगर रा बेटा रै हाथां हुयौ के नीं? अबे ठा पड़ी- बीनणी किणरी? चूड़ीगर री। कदे तो मगज ठिकाणै राख्या करौ। छोड़ो अबे। परभात हुवण में है, कीं सांयत करल्यौ। चकवै में जबरी हुयी। लचकाणो होय पसवाड़ौ फेर लिया। इतरी बात, नीं सुणी वारै डावै पसवाड़ै लात।

शारीरिक शिक्षिका
राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय जालोर
मो: 9460174152

क्हाणी

दादी री जीत

❒ सुशीला शर्मा

धापू आज जीतगी छी। जमाना की बेड़्यां नै खोलर फैंकदी छी। पण फेर भी बीत्यां बकत की टीस बीं की छाती मैं सूं न तो निकली छी और न ही निकळैली। रह-रहर वे बातां याद आरी छी, ज्यो वा आपकी जिन्दगी मैं पाई छी, पण वा ही जिन्दगानी वा आपकी पोत्यां नै कोनी देबो चाव छी। धापू जाणे छी, आज जमानो बदलगो अर लुगायां को जोर-संघरस करबा को तरीको भी बदलगो। जैंया वा अनपड़ रहर आपका भाग सूं लड़ी छी, वैंया ही आज री छोर्‌या पढ़-लिखर आपको भाग बणारी छः।

बीनैं निकां याद छः जद उनै भला बुरा की पीछाण हुई छी, जद तक तो बींके दो टाबर होगा छा। वा गाँव की पहली लुगाई छी ज्यो टाबर न होबा को अपरेसन करार आयी छी। मगनू अर बींकी सासू पूरा घर नै माथै ले लियो छो, दो दिन तक फलका कोनी जीमबा दिया छा।

मगनू धापू को बींद! कोई आगला जनम को कुम्भकरण छो। कमाता-धमाता तो जीने आतो जोर, घर में पड़्यो-पड़्यो कल्हेस करतो बेजां (घणो)। रोजीना अंधेरै धापू फलका पोर कलेवो बांध देती मगनू क तांई, पण रोतो-रोतो सात बज्यां तक घरा सूं निकळतो, नौ बज्यां तक तो ओठो आ जातो चोखटी मालै जार।

बिच्यारी धापू! आठ बजता-बजता तो घर को काम निपटार खेत में चली जाती। आपका दोनूं टाबरां न लेर। दिनात्यां आर बलम सूं दिहाड़ी माँगती तो आगलो कह देतो, ''कांई करूँ? काम-धन्धो ही कोनै मिल्यो जेब सूं किरायो और लागगो।'' लाण धापू कांई करती अस्या आलसी बलम को, मन मसोसर रह जाती। लावणी अर ननाणी का दिनां में खुद का खेत को काम करती। अर, पालत्या को भी करती, ज्यो कमाई होती वीं सूं आगली फसल तक को जुगाड़ चाल जातो। टाबरा नै स्कूल खिंदाई तो फाट्या कपड़ा मैं टाबरा नै सरम आती, दोन्यू का दोन्यू गाँव में डोल'र आ जाता पण स्कूल कोनी जाता। घणी मर-पचली पण टाबर फाट्या गाबला जाता ही कोनी।

टाबर थोड़ा सा बड़ा हुया तो चोखटी मालै जाबै लागगा। घर'क कनै स्कूल पण, धापू का दोन्यू बेटा अनपढ़ रहगा, कांई करती गरीबी सबसूं बड़ी मजबूरी? टाबर बड़ा होता गया। दोन्यूं ठेकादार बणगा। सोवणी-सोवणी बीनण्या आगी। धापू का दिन बदलगा। अठी नै जमीं का भाव आकास में जा लाग्या। धापू तो मालामाल होगी, पण फेर भी धापू आपका हिसाब सूं ही रहती।

पोता की चाहना में दोन्यू बेटा कै सात पोत्यां होगी, अन्त में जार धापू तो तसल्ली ही लेली क ''म्हारी पोत्या ही म्हारा पोता छः, यानै ही पढ़ा-लिखार पगा मालै खड़ी करूंली।'' रोजीना छोर्‌या नै स्कूल में छोड़बा जाती, लेबा जाती, मास्टर जी सूं बात करती, पढ़बा की कमी-बेसी की तो पोत्यां पढ़बा में हुश्यार होगी।

सबसूं बड़ी पोती दीपू। आज बींको सीनियर को रिजल्ट आयो छो पेपर में। फस्ट डिविजन सूं पास हुई छी दीपू। सारा गाँव में जार-जार मिठाई खुआरी छी धापू सबनै। आज तो बींका पग मैं घूघरा बाँध देता तो वा घणी नाचती। धापू तो राजी होर गाँव नै बतारी छी अर, मगनू अठी नै बीनण्या का कान भर रह्यो छो ''दीपू नै अब आगे मत पढ़ाज्यो जमानो खराब छः फेर बेटी की जात छः, कुण चौकसी राखै लो बींकी?''

दिनात्यां सगळा ब्याळू करबा बैठ्या तो धापू हरकी-हरकी बोली ''बेटा! मनै थोड़ा सा रूप्या दे दिज्यो, दीपू केबेई नया-नया लत्ता कपड़ा लाऊंली।'' कांई करैली माँ नया लत्ता को? 'बेटा! दीपू नै अब शहर में पढ़ावां ला, तो यां पुराणा कपड़ा सूं ही थोड़ी जावैली थांकी सी नियां शरमा कोनी मरबा द्यू भाया! म्हारी दीपू नै।'

बेटो उदास होर अणमणो सोक बोल्यो। ''माँ रुप्या तो थे लेल्यो पण दीपू न अब आगै कोनी पढ़ावा, ई साल ही दीपू को ब्याह करालां। मैं लड़को देख लियो छः, थानै भी दिखा द्यूंला।'' धापू का माथा में हथोड़ा की सी लागी। एक बार तो वा सोच ही कोन पाई की वा कांई करै पण, बेगी ही समझगी कि या आग कुण लगाई छः।

बरसां पुराणी टीस बींका काळजा में आज तो लपटा बणगी, काळजो धधक्यायो, रोबै लागगी ''अरे म्हारी पूरी जिंदगी को फल म्हारी पोत्यां छः। इतरी हुश्यार पोत्यां की जिन्दगानी बरबाद होती मैं कोनी देख सकूँ।''

बेटा-बहू अर मगनू घणी दलीला दी, जमाना को डर बतायो पण, आज धापू कोई की भी कोनै सुणी, उल्टी अन्न-जल छोड़बा की धमकी दे दी। आखर मैं धापू का फैसला के आगै सगळा ढळगा। सबनै धापू की बात मानणी पड़ी। तय या हुयो कि दादी-पोती शहर मैं रह वैली। आगै की पढ़ाई भी करैली दीपू अर नौकर्‌यां का फारम भरर वांकी तैयारी भी करैली।

शहर में गई दोन्यू दादी-पोती बठा को रहन-सहन पैराण उड़ाण सब न्यारो। जद कॉलेज सूं देर सूं पहुँचती दीपू तो धापू को काळजो धड़धड़ातो। देवी-देवता मनाता-मनाता दो साल बीतगा। दीपू अचाणाचूक भागी-भागी आर दादी ने गोदी म उठाली ''दादी! म्हारी पुलिस की लिखित परीक्षा में म्हें पास होगी, दादी! मैं पास होगी। कहता-कहतां दीपू की आंख्यां में सूँ आंसूड़ा री धार बहगी। दोनूं दादी-पोती शारीरिक परीक्षा की तैयारी की खातर गाँव आयग्या।

अब मगनू भी दीपू क लैर-लैर मैदान में जातो। सारो घर बीनै खूब खुआतो, हँसातो, दौड़ातो। वा दिन भी आगो जद दीपू नै शारीरिक परीक्षा में आपको लोहो मनवाणो छो, दीपू आपका बापू अर दादी ने लैर परीक्षा मैदान में आयगी। लाम्बी पूरी कद-काठी आळी दीपू और छोर्‌या नै तो जाणे कोड़ै ही छोड़्याई। पाँच किलोमीटर की दौड़ में दीपू ने सबसूं आगै आती देख धापू आप नै ही जीत्योड़ी मानगी। घणी दोरी ही जीती, पण आज धापू जीतगी। बींकी दीपू की नौकरी लागगी।

72, शिवनगर, घोडेला बाथ कलेक्शन के पीछे,
मुरलीपुरा स्कीम रोड नं. 2,
विश्वकर्मा, जयपुर (राज.)-302039

कहाणी

बंगू री बकरी

❒ डॉ. गोविन्द नारायण कुमावत

मांगू बाबो भौत समझातो बेटा पढ़बा म ही सार छै, आ बकर्‌याँ म कांई ही कौनै धर्‌यो, पढ़लै। बकर्‌याँ नै तो सुबह श्याम कोई भी ठालो आदमी चरा सकै छै। घरां नै चारो ल्यार भी घाल सकां छां। तू स्कूल म पढ़बा जा। पण बंगू के बकर्‌याँ चराबा की ही धुन सवार छी। गाड़ी हाळी जीजी की साथ म बकर्‌याँ ही चराबा जातो। गाड़ी हाळो दादो श्याम नै बीकै ताणी चीजां ल्यातो। गाड़ी हाळी जीजी को बंगू एक सहारो छो बा पटेलण की जियां सारे दिन पेड़ की छाया म बैठी रहती, बंगू से बकर्‌या चरवाती। बंगू बीं की चरबाळी सारी बकर्‌याँ को ध्यान राखतो। कोई बकरी चरती-चरती दूर चली जाती तो भाग्यो-भाग्यो जार बी नै पाछी ल्यातो। बकर्‌याँ की गैल-गैल जा'र बीनै पाछी ल्यातो। बकर्‌याँ की गैल-गैल दिनभर फिरतो रहतो। बकर्‌याँ पर बीको पूरो कन्ट्रोल रहतो। कोई भी बकरी चरती-चरती आँख्यां सै ओझल कौनै हो सकै छी।

बकर्‌याँ म एक भूरी बकरी छी ज्यो ज्यादा उछल-कूद करै छी। बीको सुभाव छो बा सारी बकर्‌याँ सैं अलग जा'र न्यारी चरती। नई नई जगहाँ जा'र चारो हेरती अर चरती। बंगू लकड़ी लैर बी कै पाछै भागतो। बीनै पाछी ल्यार सब बकर्‌या के बीच में छोड़तो पण बा न्यारी ही चरती। जिद्दी बकरी छी।

गाड़ी हाळी जीजी बोली बंगू तनै या भूरी बकरी भौत ओदूगारी छै, ई कै लाठी की देबो कर। अपणे आप ही ई की अकल ठीकाणै आ जायली। बो दिन भर लकड़ी ले'र सब बकर्‌या की लैर रहतो।

एक दिन बंगू घणो दुखी होगो। भूरी बकरी डर ही कौनै रही छी, भाग्यां ही जा रही छी। बो बी कै टांग माळै जोर सै लकड़ी की देपाड्यो। बकरी की टांग टूटगी। बकरी तीन टांगा से भागती-भागती सीधी घरां आगी। मानो घरां आर शिकायत करै ली। आज घरां नै बंगू की खैर कौने। पों-पों करती रही। बंगू को बाप मांगू बाबो बंगू नै समझायो घर मे ओ कांई घोर कर ल्यायो, सब बकर्‌यां म सबसै ज्यादा दूध देवै छी। ई की टांग तोड़ ल्यायो म तनै पहली ही खैवे छो बकरी चराबो थारा बस की बात कोनै।

गाड़ी हाळी जीजी भूरी बकरी नै बंगू की बकरी खैवै छी, आज वा भी बदलगी। आज वा भी आपका देवर मांगू बाबा नै खैबा लागी बंगू तो बकर्‌या की गैल-गैल ही भागतो फिरै छै। बकर्‌या नै जरा भी चरबा कौनै देवै। कोई बकरी जरा सी भी उंळी-सूळी हो जाये तो बीनै उल्टी ल्याबा भागै लौ। दिन म पेड़ की छाया म न तो खुद बैठे न बकर्‌यां नै बढ़बा देवै। इमै तो चंचळाई भोत छै। अगणगारो छोरो छै। इनै स्कूल भैजो ज्यो लखण आवै। बा अयान की बातां बोल्यां ही गई। बीनै ओ भी पतो कौनै रह्यो की बंगू आपणी कतरी सहायता करै छै। ये सारी बातां बंगू सुण रह्यो छो। पहली बार बो कोई समझ की बातां सुणी। बो आपका मन म संकल्प लियो कि ये लखण कांई होवै छे अर कौडै मिलै छै। बस म अब स्कूल म ही जाऊँला। जी दिन बो चुपचाप सारी बातां सुण तो रह्यो। जणा-जणा सै ओळमो मिल्यो, रूसगो। दन्त्यां रोटी कौनै खायो।

बंगू की मा बीनै राजी करी रोटी खुवाई। बो अब गैरी सोच म पड़गो। कई दिनां तक भूरी बकरी को इलाज चाल्यो बांस की खपच्चियाँ फिटकड़ी, तेल, बाळ'र कई तरै की दवायां लगाया पैर नै सीधो राख्या। बीका पैर की हड्डी जुड़गी। पण जदां पाछै बंगू बकर्‌या चराबा कौनै गयो। पहली तो खै छो म स्कूल कौनै जाऊँ बकर्‌याँ चराबा जाऊँला। अब खैबा लाग्यो बकर्‌या कौनै चराऊँ पढ़बा जाऊँला। बंगू की मा का जीव नै घोर होगो। बो आपकी मा की लैर पड़गो मनै सरकारी स्कूल म भरती करा र आ। म तो बस अब स्कूल ही जाऊँला। मांगू बाबो तो पहली ही त्यार छो बीका मन म खुशी हुई आपणो बेटो पढ़बा नै तो त्यार हुयो चाहे बकरी की टांग तोड़र ही हुयो, पण पढ़बा की हामळ तो भरी।

आखती होर एक दिन बंगू की मा बीनै स्कूल लेर गई। सरकारी स्कूल श्याम जी माड साहब से बोली म्हारा छोरा को थे नाम लिखो। म पढ़ाबो चाहूँ छूँ। माड साहब बोल्या अब तो भरती करबा की तारीख ही निकळगी। ई की तो उमर भी ज्यादा होगी। अब तो आगली साल आज्यो। बंगू की मा बोली यो बकर्‌याँ चरावै छो। पण एक बकरी का पग माळै लकड़ी की दे पाड्यो ज्यो ई नै इको बाप लड्यो। अब यो जिद कर मेल्यो छै बकर्‌याँ चराबा कौनै जाऊँ, पढ़बा जाऊँला। बैंया म्हारै खने पढ़ाबा ताणी पीसा भी कौनै छा अर बकर्‌या चरावै छो, तो घर को सहारो भी छो, पण अब ई को कांई करां।

ये सारी बातां सकुन्तला मेडम सुण रही छी बा श्याम जी माडसाहब जिका हेडमाडसाहब भी था, बानै केबा लागी। गुरुजी म एक उपाय बताऊँ छूँ। इनै स्कूल म तो बैठा ल्या छां आगली साल नाम लिखल्या ला। बंगू की मा खीई, खियां भी करो पण इनै स्कूल बुलाल्यो। हेडमाडसाहब बात मानगा अर बंगू नै दूसरा दिन सै स्कूल म बिठा लिया। आगली साल नाम लिख लिया।

अब बंगू कै आनन्द होगा। किलास म सब बच्चां रौ बड़ो छौ। मेडम मॉनिटर भी बी नै ही बणा दी। गुरु जी किलास म रहता। जतरै तो बंगू बैठ्यो रहतो पण किलास म जद गुरुजी या दीदी न होती तो बोर्ड पर चौक लेर खुद पढ़ाबा लाग जातो स्कूल का सब कामां म आगै रहतो। सब विषयां म हुशियार होगो। दसवीं म मेरिट का नम्बर आया। सारा गुरुजी राजी होगा। मांगू बाबा नै स्कूल म बुलाया, थारो छोरो हुशियार छै। भगवान छै इनै पढ़ा जै। मांगू बाबो बोल्यो गरीब आदमी छूँ, अब आगे पढ़ाबा की म्हारी बस की बात कौनै। सारा मास्टर मिलर बंगू नै पढ़ाया ग्यारहवीं बारहवीं म जीव विज्ञान विषय दिलाया। कोई भगवान की कृपा, बारवीं म भी चोखा नम्बर ल्यायो, सरकारी स्कूल पढ़ता हुयो ही बीको डॉक्टर की ट्रेनिंग एमबीबीएस. म नम्बर आगो। बंगू कै राम जी राजी होगा। डॉक्टर बणर विदेश म नौकरी करबा गयो। गरीब माँ-बाप के वारा न्यारा होगा। पढ़ाई बंगू की किश्मत बदल दी। गरीबी भी दूर होगी। अब गाँव में मांगू बाबा को अर बंगू को नाम छै। बी नै देख र गाँव का सारा छोरा-छोरी पढ़बा लागगा। बंगू सबकै ताणी प्रेरणा को पुँज बण्यो। बीनै जद स्कूल म सम्मानित करबा बुलाया तो भूरी बकरी की बचपन की कहाणी वो आप का मुण्डा सैं सुणाई। बंगू की भूरी बकरी किश्मत चमकाबाळी सिद्ध हुई।

प्रधानाचार्य, श्री सर्वेश्वर भवन,
नाँगल जैसा बोहरा, जयपुर-302040
मो: 8946838583

बाळकथा

जिनावरां रो जमगट

❒ महेन्द्र सिंह सैनी

अेक घणो जंगल थो। उण मांय भाँत-भाँत रा जीव-जिनावर खरा सनेव सूँ रैवता हा। नार, गादड़ा, लूंगटी, सुसल्या अर हाथी आद सैंग जीया जूण री चैल पैल देखण जोग ही। अेकर अेक चतर लूंगटी रै मन में कोई अंणूता सवाल उगण लाग्या- 'आदमी स्रिस्टी रो सिरमौर क्यूं मान्यो जावै? देख्यो जावै तो सोवणूं, खावणूं, बंस बधैपो, अै सगळा काम मानव करै, तो बीजा जीव जिनावर ई करै। पछै बो मिनख रौ बच्चो खुद नै पिसुवाँ सूँ स्रेस्ठ क्यूँ मानै? जे वो आप री स्याणप री दुहाई देवै, म्हूँ आदमी सूँ बेसी चतर हूँ।' इणी सवालां रा ताना-बाना माँय उलझेड़ी लूंगटी बीं दिन सूँ आप रै माँयली झाळ री लौ सैंग बनवासी पिसुवाँ में सुलगाणी सरू कर दी। नतीजतन रोही रा सैंग पिराणी इण घोर अन्याय रै साम्ही आप री बात कैवण वास्ते अेकमत होया। बै इण मुजब अेक विसाल सभा रो आयोजन कर्‌यो। सभा रो नाँव राखीजो-'पशु समाज कल्याण गोस्ठी।' 'इण सभा रो खास मुद्दो हो-पिसुवाँ नै मिनख सूँ न्याव कींकर मांग्यौ जावै? इब जिनावरां रै साम्ही सै सूं मोटी मुसकल आ ही क सभापति कुण बणै? इसो कुण सो जीव है जिको सभा रा सदस्यां रा विचार सुण नै निपख निरणै कर सकै। सगळा सोच में पड़गा। उण बगत लूंगटी बोली- 'इसा तो रूँखड़ा री ओटै बण्योड़ी गुफा माँय बैठ्या बाबाजी हो सकै। वां नै म्हूँ पंखी-पिसु अर मिनख जात सै सूँ अेकसार सनेव करतां देख्या है।' सगळा जिनावर लूँगटी रै इण सुझाव रौ समरथन कर्‌यो। जंगल रा बडेरा जिनावर जाय र उण बाबाजी नै महासभा रो न्यूतो बी दे आया। घणी उडीक रै पछै आखर सभा हुवण रो सावळ दिन आयग्यो। उण दिन जंगल री छटा निराळी निरखण जोग ही। नैना-मोटा सैंग जिनावर इण सांतरी सभा मांय सामिल हुवण सारूं लालायित हा। सै जिनावर आप-आप रां कुटम रै साथै ढुलरा बणार झील रै नेड़ै चावड़-धावड़ बंजड़ कानी जार्‌या हा। झील री जगां खास तौर सूं चुणी गई ताकि जळचर बी इण सभा मांय भाग ले सकै। चारूकूंट अेक ई नारो गुँजाय मान हो-'मिनख जिनावर अेक समान, ओ पिसुवां रो सुवाभिमान।' इण जिनावरिया जोस खरोस रै साथै सभा रो स्रीगणेश करयो। सरूपोत मांय सभा सचिव लूंगटी रा संजोरा सबद इण भांत सुण्या गया-''आदर जोग सभापति जी, मानीजता बनराज सिंग जी, अर म्हारा लाडेसर भाई-बैण। निस्तैई आज रो ओ दिन पिसु इतियास रा पानड़ा माळै सोनै री स्याई सूँ मांडी जैगो। आप रो बेसकीमती टैम न लैर, इब म्हूं इण सभा मांय बोलण सारूँ बनराजजी नै बुलावण चावूं।'' जोरदार गर्जना-तर्जना रै साथ बनराजसिंगजी उभा होया। पैलीपोत बै मंच रै चारूमेर आप री ताकत रो तुर्रो दिखांवता घूम्या। फेर बोल्या-''पिरिय पिरजाजनों, थे सगळा म्हारै पिराकरम नै तो जाणो। अतरो ई नीं आ म्हारी उदारता है, क बन रो राजा हुवता थकां बी म्हां कदै म्हारा पद अर मद रो गळत परयोग कोनी कीनो। अजैताई म्हूँ किणी बी जीव नै फगत म्हारो पेट पालण वास्तै सिकार बणायौ है; मिनख री दाई मन भोळावण वास्तै नी। देखो म्हारा आदर्श, म्हारो सदाचार अर अणकूत साहस। आज रा मिनख में अै गुण दूर-दूर तांई निजर को आवै नी। तो फेर किण पेंदा रा पाण बो आपरी श्रेष्ठता रो सेवरो सजायां फिरै।'' सिंगजी रै थमता पाण सगळा जिनावर जोरदार ताळयां बजां'र उणा री बड़ाई करी। सभापति स्वामी जी बी सांत भाव सूँ सगळी चरचा सुणर्‌या हा। इब हाथी जी नै आदर साथै मंच माळै बुलाया गया। अेक जबरी चिंगाड़ करतां थकां बै आप रो भारी-भरकम डील डोले'र मंच माळै पधार्‌या अर बोलण लाग्या, ''प्रिय साथियों, आप सै म्हारी यादास्त तो जाणो। किणी बी चीज, क ठाण, जिको अेकर देखल्यूं उण नै आखै जीवण नी भूलूं। मिनख रै खन्नै इसी यादास्त व्है कांई? फगत इतरो इ नी आप म्हारा अेक बीजा परसन रो पडूतर दिराओ। जिको मिनख म्हारा खंबा सिरसा पगरी ऊँचाई रै आधी टै नी पूग सकै, बो म्हारे सूँ चोखो किया हो सकै?'' हाथी रो ओ तातो तर्क सुणर सै जीव आप रौ जोर जतावै लागा। जोस'र जुवार री लै'रां उछाल रै समचै नाना-नाना जीव बी आगै बढ़नै आप-आप रा गुणां रो बखाण करण लाग्या। इण बीचाळै अेक गंडक आगै आय'र कैबा लागो, ''भाईड़ो! बियां तो म्हूँ थांसू बेजां छोटो हूँ। पण बी अेक गुण म्हां में इसो है जिण रै बलबूते आपां मिनख रै माळै आपणी स्रेष्ठता सिद कर सकां। म्हूँ म्हारी सुवामीभगती खातर आखै जुग में जाण्यो जावूं। जिके रो अेकर अन खाल्यूँ, म्हारी जान जोखम में झोंक'र बी मिनख री अर उणा रै धन री रिच्छा करणूं चावूं। म्हारी इण चौकस चाकरी में चिणेक सी चूक हुज्यावै मजाल कांई? पण म्हाँ तो मिनखां नै आपरा सुवारथ सिद करण वास्तै आपरी जात बिरादरी, सगा समन्दी रै साथै धोखा-पट्टी करतां देखां। इब आप ई बताओ स्वामी जी! इस्या लालची लोबी जीव नै परमातमा री सिरै सिरजणा कैवणूं सोवै कांई?'' सुवान री इण सांतरी दलील सूं तो सगळा पिसु समाज नै आप री साव जीत लागै लागी। पण स्यात अब बी कोई कि कैणो चावौ थो। अेक कार्डिनल मिछली रो जोड़ो जिको घणी बार सूं झील री पाळ पर बैठ्यो सो किं देखर्‌यो थो। इब उण सूं बी कोनी रैयो गयो। सैंग रो ध्यान आप रै कानी खेंच'र नर मिछली बोली, ''म्हे सुणां क मिनख आप री औलाद सूँ घणो हेत अर हेज राखै? पण कांई मिनख आ जाणै क इण झील रै माँय नै बी ममता री अेक न्यारी निरवाळी बिरादरी बसै? जद मादा मिछली दोय हजार सूँ बेसी अण्डा दिरीजै तद म्हूँ उण नै सेवण सारू तीन-च्यार हफतां दांई मुँडा मांय राखूँ। फेरू लगभग अेक मईना तोड़ी पाणी री अेक घूंट बी कोनी गिटूं। मरद रै पितृत्व मांय इस्यो त्याग अर समरपण है कांई? बो आप री टाबरी रो पालण-पोखण इण भाव सूँ करै; क आगळै दिनां बै उण री बुढ़ापै री लाठी बणैला। कांई इण लिहाज सूँ म्हारो निसवारथ प्रेम सिरै नी?'' चारू मेर अेक ई सुर गूँजै लागौ-''हाँ! हाँ! स्वामी जी! इब आप ई निरणै करो। कुण सिरै, पिसु क मानव?'' सगळा रै मूक अर परगट भावां नैं भली-भाँत समझतां थकां इब स्वामी जी विनम्र अर निरणायक सुर में कैवण लाग्या-'पिरिय पिसुओं! आप सैंग रा विचार अर तर्कां सूं म्हाँ

पूरी तरै सैमत हाँ। निसन्देह पिसु जगत रा अै स्मै गुण लूँठा अर सरावण जोग है। आज आदमी रा आचार-विचार-ब्योवार माँय बदती बद्दी री तुलना में तो पिसुआँ रा गुणां रो पालड़ो भारी दीसै।'' आ सुणतां पाँण सगळो पशु समुदाय बीजै री गर्जन-तर्जन बीचाळै स्वामी जी री जै जै कार करण लागो। स्वामी जी सै नै सांत करतां थकां ओजूं बोल्या-''म्हैं अजैतांई म्हारो फैसलो नीं सुणायो है। इब मैं अठै अेक मैताउ बात च्यानण में लाणूं चावूं, मनुज में अेक इस्यो खास गुण है जिण री बदोलत उण नै परभु री सिरै रचना कही जै। प्रभु श्रीराम बतायो-'सब मम प्रिय सब मम उपजाए, सब ते अधिक मनुज मोहि भाए।' अरथात् आखी जगती रो छेवट म्है ई रचेता हूँ। बियां तो म्हारी हरेक रचना म्हानै चोखी लागै, पण सै सूँ बेसी म्हारी प्यारी मिनख जात है। कांई आप जाणो क इसी कुण सी खासियत है जिकी मानव नै परमातमा-परेम रो पैलो दावैदार बणा दियो? मानखो ई अेकूँअेक पिराणी है जिको आपरा रचेता सूँ रूबरू होणूं चावै। फगत, मिनखा जूण माँयई परमातमा नै देख्यो जा सकै। शास्तरां मांय कथीज्यो है-'साधन धाम मोच्छ कर द्वारा।' अरथात् मानव तन भगती-मुगती रो बारणो है। न्याउ सूं न्याउ मिनख बी संत-सतगुरु री किरपा सूं आतमग्यान पाय'र भगवान रा दरसण आप रा घट मांय कर सकै। उणा रै पाछै ध्यान-साधना अर पुरसारथ रै पाण बड़ो बण सकै। विवेकपूरण करम कर नै देव तुल्य बण्यो जा सकै। आ विसेसता बीजा जीव-जिनावरां में कोनी लाधै। ओपता अणूता गुणां आळो पिसु बी पिरभु परापति नीं कर सकै। रोही मांय पैली पोत इस्यो सोरो सरणाटो पसरगो। स्वामी जी रा परवचना री धार बैती जा री ही। इतराक मायं अचाणचक लूँगटी बोली-''स्वामी जी! आपां मानां क छेवट मिनखा जूण ईश्वर आराधण अर आतम बिगसाव रो अेकूं अेक साधन है। पण जे कोई मिनख इण अणमोला अर घणमोला तन नै पाय'र परमातमा नै भुला दे। मन-करू दै, चालतां बाद अर बद्दी बोळी कर नै सगळी सींव लाँघ जावै, तद बी कांई बो सिरै गिण्यौ जावै?'' ''इस्या मिनख रै माजणै में धूड़। बी नै पिसुआ सूं बेसी गयो गुजर्‌यो कैयो जासी।'' स्वामी जी रा अै सबद सगळा सास्तरां रो सार हो। सारभाव ओ है- धर्मेण हीनाः पशुभि समाना। धरमहीण करमहीण मिनख पिसु बरोबर गिणीजै। बो पिसुआं सूं कदै बी आछ्यो नी मान्यो जावै। जिको सरवस्रेष्ठ तन पाय री आप रा मन मिंदर मांय ईश्वर रूपी धन नै नी धार्‌यो बी नै आपां हतभागी कैय सकां इस्या मूढ़ मिनख नै ओजूं चौरासी लाख री चाकी मांय चकरघिनी होणूं पड़ै। तद ई मोह मद री नींद मांय सूता मिनख नै चेतावतां आपणा वेद बोलै-'मनुर्भवः मनुर्भवः।' मुतलब मिनख बणो! मिनख बणो!

म्हारा पियारा पिसु-पक्षियों! म्हारो आप सैंग रै वास्तै अेक सनेस है। स्रिस्टी नै नेमसारू जे पिशु जूण मांय बी आतमा साँची भावना सूं ईश्वर नै पुकारै, पिराथना करै तो ईश्वर किरपा सूं बी नै बी आगलै जलम मांय मानव तन मिलै। फैरूं इण तन नै पाय'र बो जीव बी आपरो कल्याण कर सकै।'' सगळा हाजर पिसुआँ रै मूंडै माळै संतोख रा सैनाण देख'र स्वामी जी पिसु समाज कल्याण सभा रो अठै ई बिसरजन कर गया परा।

अध्यापक
'श्रीराम वाटिका', मु.पो.-कारी,
जिला-झुंझुनू (राज.)-333305
मो: 9462888404

दस डुक

❒ दीनदयाल शर्मा

डुक-एक
जिण घर दारू वास है,
उण घर रो है नाश।
रैवै सदा अंधारौ अठै,
हुवै कदी न उजास।।

डुक-दो
दारू पी'र पागल हुयौ,
घणी गमावै पत।
मिनख बण थूं भायला,
छोड़ आ'माड़ी लत।।

डुक-तीन
काम धाम किं करणौ नीं
करै नशौ थूं रोज।
घरियो किंयां चालसी,
म्हानै लागै बोझ।।

डुक-च्यार
नां कर नशौ थूं बावळा,
म्हूं देवूं तनै सीख।
नौबत इसड़ी आ सकै,
पड़ै मांगणी भीख।।

डुक-पांच
नशौ गंवावै देह नै,
कंचन काया देख।
मिनख जूणी संवारले,
माथै ठोक नां मेख।।

डूक-छैह्
जिन्दड़ी है अनार ज्यूं,
चाल ज्यैगी सुर्र....।
लोग करेगा बातड़ी,
हंस उडैगो फुर्र....।

डुक-सात
दिवळै ज्यूं कर रोशनी,
अंधारै नै मेट।
मिनख घणौ अनमोल थूं,
बधसी थारा रेट।।

डुक-आठ
नशौ जे चोखो हुंवतौ,
घर में सगळा पीव।
उळटो रस्तो छोड़ थूं,
बण थूं चोखो जीव।।

डुक-नौ
खाली नां कर खौरसौ,
करम सुधारै काज।
भायां में भारी पड़ै,
रोज करैलौ राज।।

डुक-दस
जीभ चटोरी जोरगी,
लपरावै क्यूं लार।
रूखी खा ले रोटड़ी,
जिन्दड़ी रा दिन च्यार।।

पुस्तकालयाध्यक्ष (से.नि.) 10/22, आर.एच.बी. कॉलोनी, हनुमानगढ़-335512, **मो: 9414514666**

बाळकथा

हूंस रौ अन्त

❒ कल्पना गिरि

चवदस रौ चंदरमा आथमण आयग्यौ हो। सगळै दिन रोई मांय उणरौ निरमल उजास अजेज छायौड़ौ। पण आज वघेरै री आंख्यां कस नीं पड्यौ। सगळी रात वौ राजा बणण री विगत विचारतौ रयौ हौ। लारलै दिनां सिंयाल अर जरख सिर फिर्या वनराज रै विरोध में नुवौ राजा थरपण रौ लालच दियां जाय रह्या हा। भाख फूटतां पांण वघेरौ पूंछ रौ फटकारौ देय ऊभौ हुयौ। उण री जोड़ायत परगाल री मुधरी पूंन में अलसायोड़ी सूती ही। दोय बिचिया मां रै खोलै मांय नेगम रम रया। वघेरौ आपरी घरवाली नै जगावता कह्यौ-''बड़भागण आज रौ दिन सरावण जोग। आज म्हैं जंगल रौ नुवौ राजा बणस्यूं। घणकला जीव जिनावर म्हारी हामळ भरणनै त्यार है। बूढ़ौ वनराज घड़ी पल रौ राजा। म्हैने इण फेरबदल सारु सीख दिराव।'' वघेरी रै हियै धणी री बात नी बैठी। सूती सूती ई बोली-''म्हारा सायब राज री चावना रो नसौ सै सूं खोटो। क्यूं सूता बैठा भारीगरा नै सुळतौ करौ हौ?'' पण वघेरै रौ मन तो मंसूबा रा घोड़ा वगड़ावतौ उण री बात अणसुणी कर गुफा सूं वहीर हियौ तौ पासल ई नीं फोरी।

भाख फूटी जितरै तौ वौ मलापतौ वनराज री थै जाय पूग्यौ। सिंघ नै वकारतौ थकौ दहाड़्यो-''ऐ ना कुछ सिंघ! बारै आव अर जंगल रा नुवा राजा नै बधाव।'' ऐड़ी बाड़ी बोली सिंघवी आज पैली वेला ईज सुणी। आप रै धणी ने जगावती बोली-''वनराज, आ किसी अजोगती बात। आप रै बिराज्यां थकां औ नुवौ राजा कुण?'' सिंघ ई आपौ बीसर रीस खाय बारै आय ऊभौ हियौ। वघेरौ तो छूटतौ ई बोल्यौ-''आज रात रो चंदरमा म्हारै राजा बणण रौ बधावौ ल्यासी, घणौ पीलौ अर सुरंगौ ऊगसी। ऐ सिंघ थारा पीढ़ियाँ पाण राज रा दिन पूरा हुया।'' वनराज रै इतरी जेज पण कठै। हौकारा पाण डकरेलां भरतौ वघेरै सूं जाय भिड्यौ। दोन्यूं ई अपर बली अर हूंस रा खरा। बायरै रै सागै जंगल री चौकूंट हाकौ फूटग्यौ-वनराज अर वघेरौ जाय थुड्या। जंगल में फेरबदल आय रैसी। वनराज री गादी रौ फैसलौ होय रैसी। जिण किणी जिनावर सुणी, वौ औ खिलकौ देखण वनराज री थै सांमी टुरग्यौ। आवै जकौ ई देखै-वनराज अर वघेरौ लोई झाण हुयौड़ा अर अणूंता ई थुड्योड़ा। कोई किणी सूं कम पण नीं। देखतां देखतां जीव जिनावरां रा टोला आय पूग्या। कोई सिंघ सांमी तौ कोई वघेरै रै ई वल। जंगल रा जीवां में पारटिया पण पड़ती सुभट लखाई। किणी नै राज मुगट नै राखण री फिकर तौ दूजोड़ौ कदास फेरबदल रौ हामी। जितरा मूंडा उतरा मता। लड़तां-भिड़तां सूरज कद आथूण जाय डूब्यौ, कीं ठा नीं पड़ी। जंगल रा जिनावरां में धड़ा सुभट दीसता हा। गजराज सू लेय नै जंगल रौ बिलाव धुराधुर लड़ण नै त्यार। कोई वनराज रौ मुगट राखण री फिकर में लड़ता हा तौ कोई नुवौ राजा नुवी परजा रौ अवसर देखण नै आखता पड़ता हा। पण गजब री बात आ ई ही कै कोई कोई नै तौ ठा नीं कै वै क्यूं लड़ रिया है, जान जोखम में नांखनै क्यूं अमोलक जूंण मेटणी चावै ई। सिंयालिया सा कोई औसरवादी ई भेळा। जठीनै पलड़ौ भारी देखै उठीनै ई बळ जावै-पूरा मुरादाबादी।

लड़ण री इण धकमपेल में किणी समझूं जिनावर चीतरा नै पूछ पण लियौ-''आपां क्यूं लड़ रिया हा?'' ''राजमुगट री रूखाळी सारू''- पड़ूतर आयौ। ''क्यूं आंपां जीव सूं छेटी पड़ रिया हां?'' विचारै खरगै हिम्मत कर पूछ लियौ। ''बदलाव ई जिनगाणी है''-इण खातर लकड़ी लपर कौ भर्यौ।

अर इण भांत नीं जाणै लड़ाई री खातर लड़ाई री चकरी में लगै टगै सगळा जीव जिनावरां रौ ढिगलौ पण वधतौ ईज दीसतौ जावतौ हौ। अर जदै चंदरमा ऊग्यौ तो जंगल सफा वीरान बणग्यौ हौ। बड़ले री खोगाल में कदास एक घूघू घणौ ओपरौ अर बिरंगौ बोलतौ सुणीजतौ हौ। वनराज आपरी मरजाद खातर मिरतू रौ वरण कर्यौ। बच्यो तौ सेवट वघेरौ ई'ज पण उण रौ अपरबली सरीर जाय थाक्यौ। लोई रिस रिस नै उणनै मौत रै मूंडै मेलण वालौई ज हौ। वौ सांचौ हौ। आज रौ चंदरमा फकत वौ ई ज देख सक्यौ। चौफेर परजा रा ढिगला ई ढिगला-आपरै हाथां परजा नै मेटणियौ राजा वघेरौ कितरौ आपेरो अर वौ राज ई कितरौ अणखावणौ लखायौ-इण रौ पड़ूतर तौ फकत हूंस रौ भूखौ वौ वघेरौ इज देय सकै- बापड़ा घूघू में इतर अकल कठै?

बिन परजा राजा किसौ, क्यूं परजा पर कोप?
पांनां रूंख सराइजै, चंदै तारां ओप।।

अध्यापिका
द्वारा शिवगिरि जी, 70, मरुधर केसरी नगर,
शोभावतों की ढाणी, जोधपुर, **मो: 8696042491**

वेदना

❒ महेन्द्र कुमार शर्मा

बखत आधी रात रो हो, चाँदणी रात मांय चांद आपरी शीथलता लुटारियो हो। सगळा जणा नींद री गोद मांय समायोड़ा हा। नी मालूम आज नींद क्यूं नी आयरी है। म्हें घणा प्रयास कर्या पण नींद नी आई, बिस्तरां मांय करवटा बदलतो रह्यो। मन में विचारां री बरसात होबां लागी। विचारां ने कागज पर लिखबा री इच्छा हुई। मन मांय यो डर हो कि या बरसात थोड़ा समय रीज है।

म्हें कागज और कलम लेर बैठ्यो। अर लिखबा लाग्यो कि कागज री आवाज म्हारा काना सूं टकराई-''थांका लिखबा सूं म्हनै पीड़ा हो रही है। थे बड़ा निर्दयी हो। म्हारी चीख री आवाज भी थारा पत्थर सा कलेजा नी भेद सकी।''

कागज रा शब्द म्हारै दिल मांय तीर-सा लाग्या। थोडीक देर वास्तै म्हैं सोच मांय पड़ग्यो। म्हैं सोचबा लाग्यो कि कांई सांच्यां ही म्हांरा लिखबा सूं कागज ने पीड़ा पौंच रही है? जे आ सांची है तो हूं निर्दयी अर अपराधी हूँ। हूं अब इस्यो काम नी करूँला।

अगळै पळ विचार बदलग्या। सोच्यो क म्हांरो कागज री पीड़ा स्यूं कांई लेणो-देणो है। म्हैं बेकार ही टैम बर्बाद कर रह्यो हूँ। म्हारो नाम तो लिखबा स्यूं ही अमर होसी। म्हैं कागज पर फेर स्यूं लिखबो शुरू कर दियो। वेदनां रै बावजूद जन-जन ताई विचार पुगावण नै।

जिला शिक्षा अधिकारी (से.नि.)
4167-68, खाटा ओली, नसीराबाद (अजमेर) राज.
दूरभाष : 01491-222471

अेकांकी

पाणी रै पाणी

❒ भोगीलाल पाटीदार

(पात्र–रुपेंग, गुलाबी, नारण, रमण, महेस, धनजी)

पैलो दरसाव

अेक कोठा वारु घर। मोटा बाण्णा कने रुपेंग खाटला माथै बैठो है। बे दिन पेल स्हैर थकी आव्यो है।

रुपेंग– अजी सुधी हुं करती अती?

गुलाबी– (बेडू उतारती थकी) कोय न्हें।

रुपेंग– कुंणेक वातं वारी मली गई औगा।

गुलाबी– (रीस करीनै) तमारी दादी कुंण नवरी बैठी है?

रुपेंग– बईरा ने वातं वारु मली जाय तौ माथा माथै भार है ई अे भुली जाय।

गुलाबी– अैयं वातं वारी न्हें बाथै पड़वा वारी अती।

रुपेंग– आपड़े पाणी भरीनै आवातु रै'वु। कैनेये लफरा मांय न्हें पड़वु।

गुलाबी– पाणी भरवा नो वारौ भले तारै भरु के।

रुपेंग– वारौ कैम न्हें मलतो है?

गुलाबी– तमैं बाहर रौ हो। पाणी लेवा ग्या नती अेटले हुं जाणो?

रुपेंग– तू तौ अमरत लावती ओय अैम पाड़ करे है।

गुलाबी– अमरत तौ देख्यु नती पण अबार अमरत थकी पाणी कम न्हें है।

रुपेंग– आड़ा अवरी वातै छोड़। पादरी वात कर।

गुलाबी– पाणी भरतै बबली नै रामुड़ी झगड़ाई गई।

रुपेंग– कैम? अैणं ने हुं वांटवु अतु?

गुलाबी– बबली वेच मांय पाणी भरवा लागी तौ रामुड़ी अैने माथै पड़ी।

रुपेंग– अैने हैनी उतावर अती। पछे तौ बोलवा नुं थाय।

गुलाबी– बोलवा नुं न्हें। धको मार्‌यो ते नेंचे पड़ी गई। माटलु फुटी ग्यु। पछे बथम बथा थई गई। टेंकर वारे पाणी बंद करी दीधु तौ मनखे चालु करीनै ठांमड़ भरी लीधं।

रुपेंग– (मुंडु वगाड़तो थको) आम ने आम रोज पाणी सारु राहड़ो थाय है?

गुलाबी– टेंकर तौ च्यार दन थकी आवे है। पेल तौ पीवा सारु पाणी नदी थकी बेडू भरीनै लई आवतं। वापरवां नुं कुआ के हेंडपम्प थकी लावतं अतं।

रुपेंग– आंय खोटी थाय अेटला मांय तौ नदी जाई ने पाछु अवाय। कोय माथाकुट तौ न्हें।

गुलाबी– नदी मांय अे कैयं पाणी है? अेक बियाड़ो है। अैणा मांय चोखु पाणी आवे है।

रुपेंग– तारै पछै आंय कैम माथु मारे है? वेली उठीनै लई आव।

गुलाबी– बईरं नो साथ ओय तौ जवाय पण अवे कुंणे न्हें जातु है।

रुपेंग– तू अेकली जा। तारै माथै हुं वाध पड़े है?

गुलाबी– (रीस करीनै) हौव। वाध पड़े है। आठ दन पेल बईरं हवार मांय भौ भाखरे पाणी लेवा जतं अतं। बावोर नै बौरं नं बौझं ओठे चितरो देखी ग्यं। पाणी ने बेडूं नाखी ने टाटी–पाड़ी ने गांम भेंग थई ग्यं।

रुपेंग– गांम वारै कोय कर्‌यु न्हें।

गुलाबी– जंगलाती आव्यां अता। बे ठेंकणे गायरं नं आटकं मल्यं। चितरा नुं कोय पतु न्हें लाग्यु। पगरवा जौवा मल्यो। तेनदाड़े थकी पाणी नुं टेंकर आवे है।

रुपेंग– ले हेंड काम कर। गांम वारा करै अैम आपड़े भी करवानुं।

(परदौ पड़ी जाय)

बीजौ दरसाव

घर मांय कोठीयं कने खाटला माथै रुपेंग नी आई हुती है। रुपेंग नै नारण बाण्णा कने बैठा है। गुलाबी आई ने पाणी आलती थकी जरकु करे है।

रुपेंग– (खाटला कने जाईनै) ताव चढ़ी गयो है। ताव नी गोळी आल।

गुलाबी– ई'ज तौ करूं हूं पण चौखु पाणी मांगै हैं। चौखु पाणी खुटी ग्यु है।

रुपेंग– काका ने घर थकी लई आव।

नारण– कैम चौखु पाणी न्हें है? हेंडपम्प नै कुआ तौ घणां हैं।

रुपेंग– तण हेंडपम्प नाबुद थई ग्या। आमली वाळो है। अैना मांय डोरु पानी आवे है। पीवा लायक नती। कुआ हुकाई ग्या। अेकतरे टेंकर आवे है पण बेडू पाणी मले है।

नारण– पाणी मांय लगार फटकरी नाखीनै अेक दन रै'वा दो। बीजे दन पीओ।

रुपेंग– ई भी कर्‌यु पण पोमरे है नै खारू लागे। खाली नावा घोवा ने जांजरु ना काम मांय आवे है। बे हेंडपम्प खराब पड्या हैं।

नारण– (भाभणीयं मसमसावीनै) कुआ ने ऊंडो करावो। घणु पाणी आवे।

रुपेंग– ऊंडो कराव्यो नै आड़ा अवरी बोर कराव्या तोय ऊंनारा मांय तरीयु देखाय है। अेकी आड़े खाड़ा मांय पाणी आवे है पण घड़ो डूबतो न्हें है। राहड़ी थकी कुआ मांय उतरी ने घड़ा ने वाटकी थकी भरवो पड़े। अठवाड़ीया पेल कुआ मांय उतरते अेक छोरो पड़ी ग्यो तौ हाथ भागी ग्यो। अवे कुआ नुं पाणी अे बंद है।

नारण– सब वना चाले पण पाणी वना न्हें चाले। जळ ही जीवन है। सासतर मांय पाणी नी महीमा वतावी है। ताजा बोदा ओसर पाणी ना घाटे थयं। पाणी नी वैवसथा करो।

रुपेंग– (माथु अलावतौ थको) हाची वात है। नवा घर मांय पेल पाणी नो घड़ो मेलाय है। अमारै पाणी नी तंगाई तौ ऊंनारा मांय थाय है। हियारो नै चौमासा मांय घणु पाणी।

नारण– ऊंनारा मांय पाणी नो वपरास वधी जाय। फेर घर–घर बोर कुआ थई ग्या। धरती मांय पाणी कम थवा

लागु। वरसाती पाणी धरती मांय कम उतरे है। फैर पाणी थकी विजरी बणावै। कारखानं मांय लयं। खेती मांय वपराय।

रुपेंग– जल स्वावलंबन सारु मगरं माथै खाड़ा कर्‌या हैं नै खाईयै खुतरी हैं। ई हुं है?

नारण– मेडबन्दी, अेनीकट, मगरा ना खाड़ा पाणी रोकवा सारु हैं। अैने जल संगरह कयं हैं। गांम नुं पाणी गांम मांय। खेतर नुं पाणी खेतर मांय। अवे घर नुं पाणी घर मांय थई ग्यु है। स्हैर मायं पेल मनख पाणी नी परवड़ी बैहाड़तं ई भी बंद थई ग्यं।

रुपेंग– (मुडु ठाबु राखीनै) अवे बोतल नै पाउच वेचयं हैं। घर नुं पाणी घर मांय। ई हरतै?

नारण– घर पाहे टांको बणावी वरसात मांय छत नुं पाणी भरी लो घर बैठे कुओ। अवे तौ घर बणावतं पेल पाणी नुं टांकु बणावै हैं।

(रमन आवे)

रमन– अले बे जणा हुं गुणतालं करो हो?

रुपेंग– कोय न्हें आवो। खाटला माथै बैहो।

रमण– (बैहतो थको) काकी ने पोंग मांय हरतै है?

रुपेंग– कोय फरक न्हें है। ताव अे विताड़े है।

रमण– तमारै आंय पाणी मांय खोट है। अेटले ढेचणं नो दुखावो नै बीजी घणी बीमारीये थयं हैं। प्लोराइट ने बीजं ततव थकी गुड़ा नै केड़े दुखै, झाड़ा नै अलटी थाय। तरै-तरै ना ताव नै बीजी घणी बीमारीये थयं। तमारै गांम नेंचे तराव नुं पाणी गांम कनै थईनै स्हैर जाय है। तमैं हुं ध्यान राख्यु?

रुपेंग– गांम वारे वात करी अती पण केणेय कानं माथै न्हें लीधु।

रमण– (विचार करीनै) काले दवाखाना ना उद्‌घाटन मांय महेस भाई सेठ आब्बा ना हैं। अैणंने गांम वारा वात करो। आ काम ई करी सकै। आ नारण भाई अैणं ना मलवा वारा हैं। ई दाब दई ने वात करी सकै।

नारण– हौव। म्हूं पराया गांम नो हूँ पण भलाई नुं काम है। वात करवा मांय हुं जाय है?

(परदौ पड़ी जाय)

तीजौ दरसाव

दवाखाना ना कमरा मांय आदमीयं ने वेचे महेस भाई बैठा हैं। गांम वारं ने साथै वातै करतै अैणं नी निगै नारण माथै पड़ी।

महेस– हरतै है नारण? खेरीयत है के।

नारण– सब ठीक है पण अेक वात नुं दुख है। तमारै गांम मांय चौखा पाणी ना वांदा हैं। मेलु पाणी पीने मनखं मदवाड़ भुगवै हैं। हेंडपंप हुकाई ग्या। पीवा लायक पाणी नो कुओ अतो ई पेला पाणी नुं पुर आव्यु तारै घरबाई ग्यो। अैने होजार्‌यो पण पाणी नी आव बंद थई गई। पाणी वना मनख तरास करै हैं।

महेस– म्हैं गांम नं घणं काम कर्‌यं हैं। दवाखानु भी बणावी आल्यु। तराव ना पाणी नी पाईप लाईन गई तारै केयु ओत तो काम बणी जातु। अवे तौ टेंम चुक्या ने टाड़े मरो।

नारण– पाईप नाखते वात करी अती पण काम न्हें थ्यु। गांम ने आहे पाहे ऊंनारा मांय पीवा लायक पाणी न्हें है। धनजी भाई नो कुओ है पण छेटी पड़े है। अैयं थकी माथै हाईनै पाणी हरतै लवाय?

महेस– (विचार करानै) धनजी भाई पाणी आलै तो खेती हरतै करेंगा?

नारण– ई तौ पॉली हाउस नै फेन हाउस थकी खेती करै हैं। सिंचाई भी बुंद-बुंद करै। अैणा थकी पाणी कम वपराय है। कुआ मांय पाणी नी आव भी जबरी है।

महेस– (धनजी सांमु जौईनै) धनजी भाई सांभर्‌यु। तमारो हुं विचार है? कुआ थकी गांम सुधी भोगरं (पाईप) म्हूं नाखी आलुं।

धनजी– (लगार गंभीर थईनै) तमारु वचन हरतै टारु? पण विजरी बरै अैना रुपिया कुंण आले।

नारण– बरतर ना रुपिया गांम वारा आलेंगा। (सब आदमीये रुपिया आलवा नो हुंकारो भर्‌यो)

महेस– लौ तमारु काम थई ग्यु। अेक बीजा नी मदद करवा नुं हिको। भलाई नै पुन नुं काम करो। ई'ज कारेक उगी आवेगा।

नारण– गांम नी दुआ तमनै मलेंगा। (दांम आदमी उभा थईनै बोल्या। भगवान तमारु भलु करै। महेस भाई नी जय)

(परदौ पड़ी जाय)

प्रधानाचार्य (से.नि.)
किशनपुरा रोड, सीमलवाड़ा,
जिला-डूँगरपुर-314403
मो: 9783371267

हिम्मत री कीमत

❒ मईनुदीन कोहरी

हिम्मत हारयां नीं सरै
मन नैं मारयां नीं सरै
जै जीणों चावै तूं बावळा
हौसलो राख्यां ही सरै।

सगळी मुसीबतां हुवै पार
सामी छाती ताण्यां सरै
उतावळो सो हुवै बावळो
ताती नैं ठंडी कर्‌यां सरै।

धीरज राख्यां सुख मिलै
धरम-करम सूं काम सरै
आगे बढ़तो जाई भाईड़ा
हियै विश्वास राख्यां सरै।

ऊपर चढ़णो घणो दोरो पण
आपरी गरजतो चढ़याँ सरै
हिम्मत री कीमत जद हुवै
हिम्मत राख्यां हर काज सरै।

मोहल्ला कोहरियान, बीकानेर
पिन कोड-334001
मो: 9680868028

अेकांकी

ममता रौ होम

❒ आशुतोष

(सोलहवीं सदी री बात। मेवाड़ महाराणा सांगा रै देवलोक पछै कुंवर उदयसिंह अजे अवयस्क महाराजा चित्तौड़ रा भाई पृथ्वीराज रौ दासी पुत्र बनवीर री सत्ता हथियावण री साजिश में। कुँवर उदय री धाय माँ पन्ना रा निज रौ टाबर बनवीर सूं मरवाय साम धरम पे ममता कुरबान करण री अमर अनूठी मिसाल- औ एकांकी)

समय-सोलहवीं सदी, स्थान-मेवाड़ धरती रौ चित्तौड़ दुर्ग

पात्र

1. पन्ना- (धाय माँ) कुंवर उदय इण रै संरक्षण में।
2. बनवीर- महाराणा सांगा रै भाई रौ दासी पुत्र-क्रूर, विलासी।
3. कुंवर उदय- स्व. महाराणा सांगा रौ पुत्र- मेवाड़ राज्य रौ उत्तराधिकारी।
4. सोनल- कुंवर उदय री साईं जी (साथण) रावल सरूप सिंह री धीवड़।
5. चंदन- पन्ना धाय रौ एकाएक बेटो- सनेव री मिसाल।
6. कीरत- महल री झूठी पत्तलां भेली करणियौ नौकर।

पहलो दरसाव

(परदो उठै)-परदा री पूठ (नेपथ्य) में

नारी कण्ठ रौ समवेत स्वर उगेरीजै)-

इला ने देणी आपणी, हालरियै हुलराय।
पूत सिखावै पालणै मरण बड़ाई माय।।
कंकण बंधण रण चढ़ण, पूत बधाई चाव।
ऐ तीन्यूं दिन त्याग रा, कांई रंक कंई राव।।

(कुँवर उदय सिंह रौ आवणौ)

उदय सिंह-धाय माँ? धाय माँ!

पन्ना- (मांय सू आवती थकी)-कांई बात है कुंवर जी? अरे दिन आथमग्यो अर थैं थांरी तलवार अजे म्यान में नीं घाली।

उदय- धाय माँ, दिन हुवौ के रात, वीर तो आपरी दुधारी म्यान सूं बारै ई राख्या करै है। किणनै ठा, कद दोय-दोय हाथ करण रौ अवसर आय जावै- समझ्या धाय माँ!

धाय माँ- हाँ उदय, थारी बात साव सांची। थूं

तो चित्तौड़ रौ सूरज है अर सिसोदिया वंश रौ दीवौ ई।

उदय- (पन्ना सूं गलबाथ घालतां थकौ) धाय माँ! म्हारै सागै चालो नीं। राज बाग में घणा सोवणा नाच गाणा हुय रह्या है। एक सूं एक रूपाली गवरजावां आप आप रा नाच दिखाय रही है।

पन्ना- नहीं, राजकुंवर नहीं- म्हैं कोनी चाल सकूंला।

उदय- तो पछै ठीक है, म्हारी थांरी इण बात पे कट्टी। पक्को रूसणो मान जो।

पन्ना- (समझावता थकां)- बेटा राजकुंवर! रूठण सूं कदे ई राज मिलयौ है? जा, थोड़ी ताल फूंकारो खायलौ। थनै सावचेत कर दूं के थूं कदे ई रात विरात अेकलो इण महल सूं बारै नीं जावै ला- समझ्यौ।

(कुंवर रौ पगपटकतां रीसणो कर कक्ष सूं बारै जावणौ। कुंवर री एक डावड़ी/साईनी सोना रौ कक्ष में आवणो।)

सोना- धाय माँ! कुंवर जी कठै है?

पन्ना- कुंवर जी अबार विसराम करे है- उणनै थोड़ी ताल सोवण दै।

सोना- एक बात केवूं धाय माँ! थै तो कुंवर जी री पालगेट में निज रा लाडेसर चंदन ने विसराम हीं दियौ है।

पन्ना- बस, बस। घणा बखाण मत कर। ध्यान कोनी तनै के बनवीर रो राज है।

सोना- ओह महाराणा बनवीर! काल तो सुण्यौ हो के कुंवर रा महलां कानी पन्ना तो आडावल बणी बैठी है-औ क्यूं कह्यौ?

पन्ना- बावली बेटी थूं से जाणे है।

सोना- बावळा तो सगळा ही हुय रह्या है। धाय माँ! खैर, कुँवर जी सूं काले मिल लेसूं-जावूं। (प्रस्थान)

दरसाव दूजो

(पन्ना धाय माँ रे बेटे चन्दन रौ आवणौ)

चन्दन- माँ, माँ'

पन्ना- कांई बात है म्हारा लाडेसर!

चन्दन- खासा दिन हुयग्या कुंवर जी नै मिल्यां, आजकाल बे म्हारा सागे रम्मण ने कोनी आवै। क्यूं कठे ई कुंवर जी म्हारा सूं रूसणो तो नीं कर लियौ?

पन्ना- नहीं चन्दन नहीं। इसी कोई बात कोनी बेटा। आजा पैला रोटी तो जीमलै।

चन्दन- माँ कुँवर जी बिना अेकलो ही भोजन करणौ म्हनै चोखो कोनी लागे।

पन्ना- अरे म्हारा चन्दन! कुंवर जी नै म्हैं थोड़ी जेज पछै जगाय ने जीमाय दूंला।
आ, थूं तो सावल जीम नै सोय जा।

अरे सुणै, थने म्हैं आज वेगी ही नींद आवण सारू मीठो सो हालरियो ई पण अवस सुणा दूंला-बस!

(चन्दन भोजन करण रो अभिनल कर्यां पछै)- तो ठीक है- म्हैं थारी बात ने ओठो नी देवूं म्हारी मायड़। (चन्दन पलंग पे सोवतो दी से)

(पन्ना भारी मन सूं) बाल्यो पांखां बाहर आयो, माता बैण सुणावे यूं। म्हारी कूख सराइजे रे बाला, म्हैं थने सखरी घूंटी दूंयूं।।

(पन्ना रो पुत्र चन्दन नेगम नींद सूतोड़ो देखी जै)

(हाथ ऊंचा करती थकी)

पन्ना- हे मां तुलजा भवानी, यो सै कांई होय रयो है? कांई मेवाड़ नै इसड़ा माड़ा दिन ही देखणा हा? मेवाड़ रा कुलदीपक म्हारा कुंवर जी री

रूखाळी राखजो।

(नेठाव करती रूकती थकी)- कीं तो उपाव करणो ई पड़सी कुंवर जी सारु।

कुंवर ने बचावण री कोई तो जुगत सोच लेवणी वत्ती।

(थोड़ी फेरूं रूकता थकां)- सोच विचार में पड़ियोड़ी कक्ष में चकारो देवती) हाँ आ एक तजवीज ही पार पटक सकै है।

(एकाएक पर्दा लारै दोन्यूं टाबरां री पोशाक पलटावती देखीजे)

परदौ ऊठै

(पोशाक पलटायोड़ा दोन्यूं टाबरां (उदय अर चन्दन) ने एक दूजा रा पलंगा पे फोरती सुलावण रो अभिनय करीजै)

दरसाव तीसरौ

(महल रा सेवक कीरत रौ आवणौ)

कीरत– धोक द्यूं धाय माँ! औ तो म्हैं कीरत हाजरियौ।
कुंवर जी जीम लिया हुवै तो पत्तलां उठावण आयो हूँ।

पन्ना– (अचाण चक)- थूं आयग्यौ कीरत? सही वेला आयो रे! (रुकती थकी) बारणे कोई है तो कोनी?

कीरत– घणी खम्मा धाय माँ, बारै तो सिपाहियां रौ पहरौ है। भीड़ सी लाग्योड़ी दीसे है। आधी रात में आ सगळी रम्मत म्हारी समझ सूं तो बारै है। (रुकतो थको) एक बात अरज करूं धाय माँ? जदसूं कुंवर जी बूंदी सूं अठे पधार्‌या है पूरौ महल जाणै से, चन्नण हुयग्यो है। (पन्ना कीरत रै कान में की कैवे)
यौ भी कांई पूछ लियो धाय माँ! उदय जी सारू तो म्हारो जीवण ही निछावर कर सकूं हूँ।

पन्ना– तो पछै कीरत, वो ओसाण अबे आयग्यो, जाण ले।

कीरत– किसो औसाण धाय माँ?

पन्ना– (खरावती थकी)- कुँवर उदय नै बचावण रौ बोल, कर लेसी यो सब?

कीरत– धाय माँ रौ हुकम म्हारी सिर आंख्यां।

पन्ना– तो एक जुगत है कीरत। थूं कुँवर जी ने थारी पत्तलां री छाबड़ी में सुवाण लुकाय अठा सूं अजेज नीसरजा। थनै ऐंठी पत्तला उठावणियो हाजरियो जाण किणी ने कोई वहम नहीं होवैला।

कीरत– अन्नदाता, आ कैय आप तो म्हारी छाबड़ी नै राजमान बख्श दियो। रंग है आपरी सूझबूझ नै अर बड़भागण है म्हारी ऐंठी पत्तला री छाबड़ी।

म्हैं तो आपरै सामधरम रौ ना कुछ सेवक हूँ, धाय माँ

(पर्दा लारै कुँवर उदय छाबड़ी में सुवाणीजता देखाइजे अर माथा पे छाबड़ी उखण्यां कीरत जावतौ दीसे)

दरसाव चोथौ

(क्रोध अर नशा में धुत बनवीर रौ हाथ में नागी तरवार लियां मंच पे पन्ना धाय रै कक्ष में आवणौ)

बनवीर– (डिगतो थको)- पन्ना! पन्ना!

पन्ना– कुण, महाराजा बनवीर?

बनवीर– पूरा मेवाड़ में एक ही तो धाय माँ है अर वा है पन्ना। म्हैं थांने खम्मा घणी करण आयो हूँ। (रुकतो थको) यो कांई? धाय माँ रा नैण जळजळा क्यूं?

पन्ना– (ओढ़णी रा पल्ला सूं आंख्यां पौंछती थकी) नीं, नीं, इसी कोई बात कोनी। बस, कुँवर जी अंजल लियां बिना ई पौढग्या।

बनवीर– अरे! आज तो महल में उच्छब हौ। सगळा नाचै गावै हा। इसी उच्छबरी घड़ी में कुँवर जी भोजन क्यूँ नीं कर्‌यौ, बतावौ।

पन्ना– कीं कोनी। रूसायग्या अर जाय पौढग्या।

बनवीर– धाय माँ! म्हैं इणी खास उच्छबरै मौके थानै एक जागीर बख्शीश करणी चाबू हूँ- इण सारू थानै आगत पीढ़ियाँ देवी तुलजा भवानी बरोबर धोक देवैला।

पन्ना– (उतावली थकी) बनवीर! थूं म्हारी ममता री धार नै जागीर री पाल सूं नीं बांध सकै, समझ्यो?

बनवीर– (रीस खाय)-दूर हट दासी। औ ठागो घणो देख लियौ। कुँवर री हत्या ही तो म्हारा राज सिंघासण री सीढ़ी है। थूं म्हारा सामी सूं हटै है, के नी? (एक कानी थड्डो देवै)
(पन्ना कटार रौ वार बनवीर पे करै पण अकारथ जावै।)

पन्ना– अळगो बळ कुळघाती-लै झेल म्हारी कटार रौ वार।

बनवीर– (जोर सूं हंसतां थकौ)- बताय री थारी अपर बली सै लीला? पण म्हैं, महाराणा बनवीर अबला पे हाथ नीं उठाऊँला। (हाथ में नंगी तरवार लियां बनवीर कुँवर जी रा पलंग सामी धकै बधै)

औ रयौ म्हारा मारग रौ कांटौ। आज म्हारे राजसिंघासण पावण रै उच्छब में नगर री नारियां दीपदान कर्‌या। म्हैं यौ राजदीप यमराज नै दान करूंला।

(तरवार रौ वार करतौ देखीजै)

पन्ना– (बिचालै ई बनवीर नै रोकती थकी)- सुतोड़ा अबोध टाबर पे वार करतां थने थोड़ी हया दया ई नीं आवै दुष्टी?

बनवीर– (ठहाका भरतौ हँस तो रेवै)- हा, हा, हा!!! होयगी म्हारा मन री मंसा पूरी। म्हैं, आज सूं बनवीर-मेवाड़ रौ महाराणा। कुण रोक सकै म्हने?

(पर्दा लारै बनवीर उदयसिंह रा धोखा में पन्ना धाय रै सूतोड़ै बेटे चन्दन पे तरवार सूं जोर को बार करतो देखीजै। लोही री धार रौ फव्वारौ निगे आवै।)

(पन्ना धाय यौ सगळौ देख वज्र हिये सूं सहन करती अचेत होय हेटी पड़ जावै, पन्ना धाय रै कक्ष रा दीवा री जोत भप्प करती बुझती देखीजै)

पन्ना-(हेटे पड़ती थकी-चीराली सी करै) चन्द....न, म्हारा....लाडेसर.. र (इणी सागे पर्दो पड़ जावै- विरुदावली गावतो एक ढाढ़ी (राजगायक) मंच माथै प्रवेश करै)

राज गायक- (राग उगेरतो)-

ममता होमण साम धरम पूरण करणी होड़।
इसी अजोगी एकली, ख्यातां जस चित्तौड़।।
पूत आपरो होम दियो राजकुँवर री ठौड़।
बिरली बलि आ बिरद री, कुल ऊजळ चित्तौड़।।

भाषा अध्यापक
शारदा उ.मा.वि. मन्दिर समदड़ी स्टेशन,
जिला-बाड़मेर

(बादशाह अकबर रै पछै री टेम, उदयपुर में महाराणा मेवाड़ राज करै। अचाणचक मेवाड़ पे मुगल बादशाह रौ साकौ सुणीजै उगी आण री काण सारू महाराणा मेवाड़ सगळा सामन्तां नै आप आपरी फौजां त्यार कर ल्यावण रौ हुकम मेल्यौ। कोसीथळ मेवाड़ री नैनी सी'क जागीर। चुण्डावतां रै सूरापै री ओलखाण। हाडोळ री रीत राखण री इदक मिसाल यौ एकांकी।)

पात्र : कोसीथल राजकुँवर (बाल ठाकुर) महाराणा मेवाड़, ठकुराइन (बाल ठाकुर री माँ) मनसबदार अर फौजदार, कामदार डावड़ियाँ-हरकारौ/सैनिक, ढाढी (विरद् गावणियौ)....

दरसाव पहलौ

(महाराणा मेवाड़ रौ दरबार, महाराणा रौ सिंघासण कानी आवणौ, सगळा सामन्त आदर सूं ऊभा होय खम्मा घणी करै।)

गावता ढाढी री विरद सुणीजै-
आडाबल ऊभो मेवाड़ां
बण ढाल कुदरती लीला री।
पण लिखी भाग में मेवाड़ी
माथां केसरिया बांधण री।
आरगत रंग्योड़ी वीर धरा
माथा भेंट चढ़ावण री।
पुरख पटाघर तो आगै पग
पाछै नीं नार्‌यां आंगण री।।

(महाराणा सगळां नै बैसण रौ संकेत करै)

महाराणा-तो, सुणाऔ मंत्री जी, सब कुछ कुशल मंगल?

मंत्री-आजादी रा आगीबाण मेवाड़ नै आडी आँख देखण री कोगत कुण कर सकै भलां।

महाराणा-अर हरावल में हरदम आगूच कूच करै। वा चूण्डावतां रौ आज ही बड़कौ पड़ै।

सामन्त सरदार-(समवेत स्वर में)-जय महाराणा! जय मेवाड़! (अचाणचक सैनिक वेश में गुप्तचर रौ प्रवेश। सगळा सामन्त हाकबाक हुय आपरा हाथ तरवांरा री मूठ पै पटकता देखीजे)

गुप्तचर-महाराणा री जय हो!

महाराणा-बोलो गुप्तचर, कांई अजोगती बात कैवणी चावौ हौ।

गुप्तचर-महाराणा-मुगल बादशाह री फौजां बनास कांठै पड़ाव करती निगे आयी है। कदास किणी साकै री कुचमाद के कोगत करण रौ अंदेसौ लागै।

अेकांकी

हरावल री आण

❒ जेठनाथ गोस्वामी

महाराणा-तो आ बात है। मुगल फौजां हल्दी घाटी में तीन-तीन वेला मूंडा री खाय नै फेरूं किण मूंडा सूं या तेवड़ सकै है।

(सामन्तां मांय सूं एक)- माफी महाराणा-ज्यांरा पड्या स्वभाव जासी जीव सूं। अब कालै परड़ रौ मूंडो किचर्‌यांई निरांत हुसी।

महाराणा-सगळा सामन्तां री या ई राय है तो करो त्यारी। एकण फेरूं बाजण द्‌यो रणभेरी। अर सेनापति जी मेवाड़ रा सगळा परगनां रा सरदार आपो आपरी लश्कर लेय खुदोखुद हाजिर हुवै। सस्तर पाटी से त्यार करै।

अर, हाँ परगना रौ सरदार जे खुदोखुद लश्कर भेळो नीं पूगै उण री जागीर जब्त।

मनसबदार-बड़ो हुकम महाराणा! यौ समचौ से ठौड़ अजेज पूगतौ हो जासी।

(महाराणा रौ दरबार सूं जावणौ)

दरसाव दूजौ

ठौड़-कोसीथल जागीर री कोटड़ी। सिंघासण पे बाल ठाकुर बैठ्या दीसै।

(परदा री ओट में बेवा (विधवा) राजमाता (कोसीथल ठकुराइन सा) ई बिराज्या थका आपरा मनसबदारां सूं वात वंतल करता देखीजै)

एक मनसबदार-घणी खम्मा माजीसा, क्यूं बिलखा पड़ौ? छोटा ठाकुर सा तो सवारे मोट्‌यार हुय जासी। तिल वधता ज्यूं वध रह्या है।

(अचाणचक हरकारै रौ आवणौ। सागळां री निजरां उणी कानी ऊठ जावै।)

हरकारौ-घणी खम्मा ठकुराइन सा। महाराणा मेवाड़ रौ खास समचौ लेय हाजिर हुयौ हूँ।

कोसीथल मनसबदार-ल्यावौ, समचौ म्हनै सूंपौ।

ठकुराणी जी-मनसबदार जी, इसी कांई बात हुयगी? झटकै बाँच सुणावौ।

मनसबदार-मेवाड़ राज रा सगळा परगनां नै ताकीद की जावै के बनास कांठै मुगल फौजां साका सारू ताखड़ा तोड़ती देखी जी। इण मौके सगळा परगनां आप आपरी हरावळ लेय खुदो खुद हाजिर हुवै।

ध्यान राखजो-मायड़ भोम री विपद री वेला खुदो खुद हाजिर नहीं हेणो, तो हेठी मानतां वांरी जागीर जब्त हुय जावैला।

-महाराणा मेवाड़-

(समचौ सुण पूरी कोटड़ी में सन्नाटौ (सून्यापो) पसरीज जावै)

हरकारौ-तो कांई हुकम है, ठकराणी सा?

(परदारी ओट सूं नारी स्वर सुणीजे)-कोसीथल बेवा ठुकराणी जी-थैं निरांत सूं पधारौ। कोसीथल री जमीत टेमसर हरावळ में आय ऊभसी।

मनसबदार-पण ठकराणी सा, कीं आगै पाछै रो विचार तो कर लेवता!

ठकराणी सा-(ऊभाहुंवता थका)- माँ तुलजा सदा सहाय करै। थोड़ी ताल पछै भेळा होवांला। (कोटड़ी री बैठक सूं सगळा प्रस्थान करै।)

दरसाव तीजौ

(कोसीथल बेवा ठकुराणी जी रौ अंतःपुर। ठकुराणी सा कीं गहरा सोच फिकर में अठी उठी चकारा निकालता देखीजै) बांरी खास डावड़ी रौ आवणौ)

डावड़ी-यूं किण गताधम में अलूझ्या माजीसा? म्हांनै भी तो कीं ठा पड़ै। छोटे मूडै मोटी बात। कदास म्हारी सेवना ई आप रै काम आय जावै।

ठकुराणी जी-घणी अबखी आय पड़ी है, डावड़ी। झेलूं तो खावै अर छोडूं तो जावै।

डावड़ी-सावळ समझावण री अरदास करूं ठुकराणी सा।

ठुकराणी जी-महाराणा मेवाड़ सगळा परगनां सूं सस्तर पाटी समेत जमीत मंगाई है। अर बा ई परगना रा सरदार सागे! नीं आवणो जागीर जावणो जाणीजै।

डावड़ी-आ, बात है तो विचारण जोग। कोसीथल कुँवर जी रा तो दूध रा दाँत ई अजे नीं पड्या। तुलजा भवानी ई इण नैनप नै मेट सकै।

ठकुराणी जी-(कीं विचारता थका)-

एक तजवीज है डावड़ी।

डावड़ी–किसी तजवीज राजमाता?

ठकुराणी जी–कोसीथल री फौज सागे म्हनै ही खुदोखुद प्रस्थान करणो पड़सी।

डावड़ी–यो कियां हुय सकै, भलां!

ठुकराणी जी–धणी ऊपर धणी कुण? एक तो कुँवर जी री नैनप अर ऊपर सूं म्हारै सुहाग री जागीर री रूखाळी भी तो म्हनै ई करणी है। समझी? यूं झटकै जा अर सगळा मनसबदारां नै कोटड़ी मैं बुलाय ला।

डावड़ी–जो हुकम माजीसा।

(प्रस्थान)

दरसाव चौथो

(कोसीथल कोटड़ी में सगळा मनसबदार हाजिर हुयोड़ा। ठकुराणी सा रौ पधारणो। सगळा सरदार आदर सूं ऊभा होय खम्मा घणी करै)

ठकुराणी जी–सगला सरदार बिराजौ। एक जरूरी सलाह सारू आपनै अबार बुलाया है।

एक मनसबदार–तो हुकम फरमाऔ मांजीसा।

ठकुराणी जी–(परदौ आगौ लेय सामोसाम आवता थका)– तो थोड़ौ ध्यान देय सांबलौ। महाराणा मेवाड़ रा हुकम मुजब आपणी फौज नै धणी समेती कूच कराणीं है।

दूजौ मनसबदार–पण ठकुराणी सा, बाल ठाकुर तो फकत पाँच बरसां रा हरावळ में कियां ले जाया जाय सकै भलां?

ठकुराणी जी–आ बात विचारण जोग है। जदेई तो थांनै सलाह सारूं एकठ कर्‌या है।

तीजो मनसबदार–एक बात औरूं ठकुराणी सा। कोसीथल चूंडावतां री जागीर। हरावळ में हाडोल री परंपरा सदा सूं ई।

फौज में आगीवाण पंगत में दोय दोय हाथ करता आया हा। पण धणी बिना फौज किसी?

ठकुराणी जी–(खरी मीट सूं) क्यूं, म्हूं हूँ के धणी! म्हूँ जाऊंला फौज सागे!!

सगला मनसबदार (अचंभा सूं)–ठकुराणी सा...आप...?

ठकुराणी जी–हाँ मैं, म्हारा वंश पे दाग नीं लागै?–अरे इणी'ज खानदान (कुल) में पत्ताजी चूण्डावत री ठकुराणी अकबर री फौज सामी लड़ रीठ नीं बजाय दी?

सगला सरदार (एकण सागे)–हाँ ठकुराणी सा, बात तो राज री साव साची।

ठकुराणी जी (मनसबदारां नै जोश बधावती)–हरावल में धणी बिना फौज देख दुनिया खिकरां नीं करैला? अर पछै म्हारा जीवता जीव या अजोगती नीं हुवण दूयूं। म्हारै जीवतां, बेटा री जागीर जब्त हुवै तो धिरकार है म्हनै अर म्हारी मायड़ नै।

मनसबदार–(दोय मनसबदार ऊभा होय एकण सागे)–तो पछै आपणी हरावळ रा फौजदार कोसीथल ठकराणी सा। बोलो–जय मेवाड़! जय मेवाड़!!

ठकुराणी सा–आप बिराजौ। म्हनै मान दिया, इण सारू घणा रंग।

(सगला सरदार ऊभा होय तरवारां री मूठ पे हाथ धरता एकण सागे) (समवेत स्वर)–तो धणियां रौ हुकम माथा पे! जमीत री त्यारी करौ।

(प्रस्थान– सगलां रौ सिधावणौ)

दरसाव पाँचवौ

(परदा माथे अरावली पर्वत माला अर हाथी घोड़ा देखी जै। मंच पर कोसीथल अर मुगल सेना रा सिपाही तरवारां बजावता निगे आवै। कोसीथल ठकुराणी जी रौ मर्दाना वेश में सस्तर पाटी कवच कोठी पहर्‌यां मंच पे आवणौ। बाल ठाकुर अर दो चार सैनिक साथ देखीजे।)

बाल ठाकुर (अचंभा सूं)– यौ कांई राजमाता! उणियारौ तो सागे आपरौ पण वेश एक मरद रौ?

ठकुराणी जी (लाड लडावती)–थारा सारू म्हारी नैण जोत, थनै पछै समझ में आय जासी।

(इतरा में दोय मुगल सैनिक आय पुरुष वेश में ठकुराणी नै वकारै। ठकुराणी मुगल सैनिकां सूं दोय दोय हाथ करती दीसै)

ठकुराणी जी–क्यूं टाबरां सूं छेटी पड़ौ हौ। करल्यौ मंसा पूरी।

घमासाण में एक मुगल सैनिक लारै सूं ठकुराणी जी री पीठ पे वार करै। ठकुराणी जी अचेत होय हेठा पड़ै। दिन आथमण माथै। युद्ध रोकण रौ शंख पूरी जै। घायलां री साल संभाल शुरू हुवै।

एक मेवाड़ी सैनिक–अरे अरे देखो तो! मिनख रा वेश में इण सैनिक रा गला नीचे रा काला केस लांबा नागण सा!

दूजौ सैनिक–अरे हाँ! यौ कांई? मिनख रा केस अर इतरा लांबा?

पहलौ सैनिक–महाराणा ने फटकारै तेड़ावौ। जरूर कोई वीरांगना है। पण या हरावल में क्यूं?

(दूजो सैनिक महाराणा मेवाड़ नै तेड़ायल्यावै)

महाराणा मेवाड़ (नीचे झुकता थका)–या तो अचूंभा री बात अरे इण में अजे तो सांसा है। पूछो, पूछो–इसी अजोगती क्यूं करली?

ठकुराणी जी (थोड़ा दोरा दोरा अर थमता थमता थोड़ो आपौ लेवता थका बोलै)–घणी खम्मा महाराणा!

महाराणा–सांची सांची बात बतावौ, आपरी इण हिम्मत री।

ठकुराणी जी (टीसता थका बोलै)–म्है...कोसीथल ठकुराणी राजरा... हुकम मुजब म्हारी फौज सागे... खुदो खुद हाजिर।... बाल ठाकुर तो अजे नादान है। मेवाड़....री साख अर.... फरज...निभायौ....।

महाराणा–पण ठुकराणी सा! आज जोखिम क्यूं मोल लो?

ठकुराणी जी–(थमता रुकता सा) जे कोसीथल...फौज...बिना धणी पूगती...तो... आप सागे...कोगताई हुवती अर...

महाराणा–घणा रंग है आपरी वीरता नै, अर सामधरम नै! म्हैं, महाराणा मेवाड़ कौल वाचा करूँ के आज सूं कोसीथल जागीर हरमेस बणी रहसी। अर कोसीथल ठाकुर नै महाराणा सिरे पैंच बख्शीश करै। (रुकता थका) सामन्त सरदारां री सभा में यौं सिरे पैंच कोसीथल री नारी वीरता अर सामधरमरी साख उजाळतो चमकैला।

ठकुराणी जी–अबे म्हारी सांसा.....

निरांत सूं छूटैला....तुलजा भवानी.... चूंडावतां नै सदा आगीवाण.... बण्या राखै।... जय...मे...वाड़।

(घायल ठकुराणी जी री आंख्यां मूंदीज जावै) महाराणा मेवाड़ सन्मान सूं सिर झुकाय लै)

ढाढ़ी रौ आवणौ अर गावणौ–

मेवाड़ी फौजां में ऊभा पैली पंगत में चुंडावत।
कोसीथल ठकुराणी हाड़ीई, तोड़ै कियां या रंगत।।
धार मरद रौ वेस आप, ऊभी जा पहली पंगत में।
मान राखियो रजवट रौ, पौढ़ी सुरगां री संगत में।।

(परदो पड़ै)

प्रधानाचार्य (से.नि.)
बालोतरा, जिला–बाड़मेर
मो: 9828926826

सबसूँ प्यारो राजस्थान

❒ डॉ. बद्री प्रसाद शर्मा

प्यारो राजस्थान है जी म्हारो राजस्थान है
सबसूँ प्यारो, सबसूँ न्यारो, म्हारो राजस्थान है।
पूरब में है मेवाती, पश्चिम में मारवाड़ी जी।
ढूँढ़ाड़ी उत्तर में बसियख दक्षिण वागड़शाली जी।
चित्तौड़ा मेवाड़ी सूं, प्यारो राजस्थान है।
प्यारो.....
अठे हुया मेवाड़ी राणा, जैसलमेर रा भाटी जी।
हम्मीर हठीला सूरजमल, कुंभा प्रताप सांगा जी।
रानी कर्मावती मीरा सूं, प्यारो राजस्थान है।
प्यारो.....
गुलाबी रंग रो जेपुरियो, हिरदा बसे अजमेर है
माथा पे सीकर चाँद जस्यो, धौरा रौ जैसलमेर है।
कोटा, डूँगर अर भरतपुर, गंगानगर खलिहान है
झीलां री नगरी उदैपुर सूं, प्यारो राजस्थान है।
प्यारो.....
दक्षिण बेवै चर्मण्वती, उत्तर में सरस्वती जी
नाग पहाड़ सूं निकली लूणी, धोरां आनंद करती जी।
बनास वन री आशा रे, प्यारो राजस्थान है।
प्यारो.....
अंग्रेजां कीनी मनमानी, जद बानैं भगा'ण री ठानी।
बिस्सा गोपा बारहठ पथिक रो कोई नहीं है सानी
सेठी कुशाल तेजावत, हुया अठे बलिदान है।
दामोदर दास राठी सूं, प्यारो राजस्थान है।
प्यारो.....
कई मिशन जद चली योजना, तद घणो आयो निखार है।
पाणी बिजळी घर-घर पहुँचग्या, निशुल्क दवा भरमार है।
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, यूं मिले अठे सम्मान है।
विकास गंगा लहरावै, वो प्यारो राजस्थान है।
प्यारो.....
घणा हेतु सूं करूँ मनुहारां, सगला ने दर्शन पाणो है।
प्रेम भाव अर मेळजोळ सूं, ई धरा पे सुरग बणाणो है।
यो बद्री करे गुणगान जी म्हारो राजस्थान है
चहुँ ओर यश फैलावे जी, प्यारो राजस्थान है।
प्यारो.....

वरिष्ठ अध्यापक
64, महावीर कॉलोनी, जालिया रोड ब्यावर,
जिला-अजमेर (राजस्थान)
मो: 8104535392

मारवाड़ री सीख

❒ नाथू सिंह राजपुरोहित

चोखो तो भर पेट खाइजो, कड़वा नै भी चाखजो।
वडेरां री लीक हालजो, उणनै मत ना डाकजो ।।1।।

हर पीळो सोनो नी होवे, लाळच में मत आवजो।
ऊतावळ सूं उंदा पड़ोला, पगां थामनै हालजो।।2।।

दूजां री पंचायत तज नै, खुदी रो ध्यान राखजो।
सब री बात सुणनै भायों, मन री मरजी हालजो।।3।।

पगों बळती देख लैवजो, डूंगर पर मत भाळजो।
लपलप नै तज दीजो भायों, काम लापी उं राखजो।।4।।

लाडा री भूआ मत बणजो, चइजै जितरो बोलजो।
आटा माहे लूण खटैला, लूण माय मत ओलजो।।5।।

रस्ते रस्ते आजो भायों, रस्ते रस्ते जावजो।
बाबोजी रो शंख सदा थै, बाजै ज्यूं हीं बजावजो।।6।।

हजे कोनी हरिजन बिनाई, किणुई मती हजावजो।
पूछे ज्यांनै गैलो बताइजो, किनेई मती पजावजो।।7।।

दुश्मण कम बणाणा व्है तो, काम ऊं काम राखजो।
खुल्ला हॉण करैला भायों, भजन भोजन नै ढाकजो।।8।।

दूधारू री लातां सेहजो, कड़वो किनेई मत बोलजो।
मारवाड़ री मीठी बोली, इणमें इमरत घोळजो।।9।।

राग द्वेष तो व्हैता रैवै, राज़ किनोई मत खोलजो।
कम सूं कम ही बोलजो भायों, बोल्या पैली तौलजो।।10।।

जिणरी गाड्यां बैठो भायों, गीत उणी रा गावजो।
रात नै सुख नींद चाहो तो, पचै जितोई खावजो।।11।।

नाथू अरज करे है थांसूं , सबसूं हिळमिळ रैवजो।
मारवाड़ री सीख समझ आ, औरां नै भी कैवजो।।12।।

चोखो तो भरपेट खावजो, कड़वा नै भी चाखजो।
वडेरां री लीक हालजो, उणनै मत ना डाकजो।।13।।

64, राजपुरोहितों का बास, नीबली उड़ा,
वाया-मारवाड़ जंक्शन-306401 (पाली)
मो. 9982609723

रे मोट्यार

❒ रहीम खाँ हसनिया

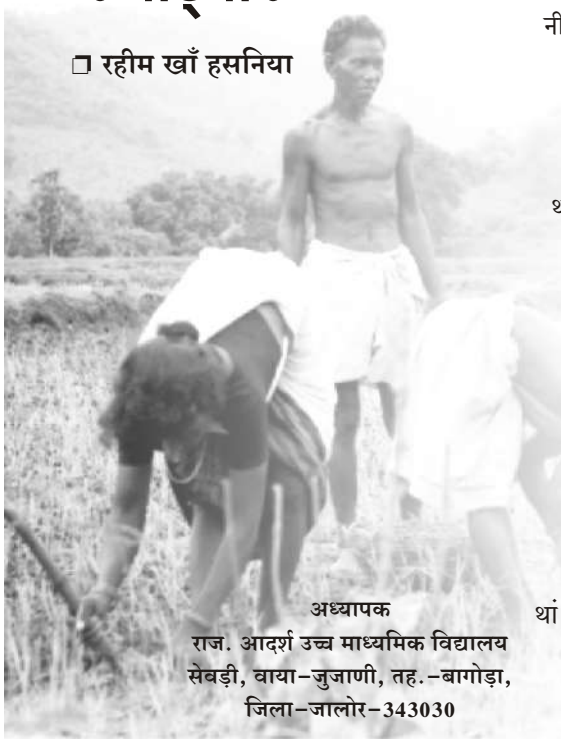

अध्यापक
राज. आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय
सेबड़ी, वाया-जुजाणी, तह.-बागोड़ा,
जिला-जालोर-343030

रे मोट्यार,
चहक रह्यी, घर आँगण चिड़कियों रे
नीड़ रो निरमाण, थां बीना कुंण करसी।

रे मोट्यार,
थूं जो अटक गयौ बाधावां सूं,
जो भटक गयौ पथ सूं तो पछे,
थां बिना देश रौ निरमाण कुंण करसी।

रे मोट्यार,
लठबाजों, रसूखदारों रै समय मं,
संतप्त, निबला अर गरीबों रो,
थां बिना परित्राण कुंण करसी।

रे मोट्यार,
जो मिलावै मिनख-मिनख नै
ऊँच नीच रा भेद छोड़,
भाईचारै रो नातो जोड़,
थां बिना बी पुल रो निरमाण कुंण करसी।

रे मोट्यार

मैलो होय रह्यो धरती रो आंचळ
मैलो होय रह्यो गंगा जमना रो नीर
बीनें थां बिना निरमल कुंण करसी।

रे मोट्यार,
होय रह्यी देख, विचारों, चिंतण री
जाह्नवी मैली,
तोड़ रह्यी वहम री कटार
विश्वास री लड़ी
बीनें था बिना मजबूत कुंण करसी।

रे मोट्यार,
बिखर रह्यी टूट' र परेम री माला,
कुमळा रह्या, आदर अर सरधा रा फूल,
सूख रह्या हेत रा रूंख
बीनें थां बिना हरिया कुंण करसी।

रे मोट्यार,
देश रै निरमाण रै मारग वीच,
बिछ्योड़ा आतंकवाद अर अलगाव रा कांटा,
थां बिना साफ कुंण करसी।

रुंखड़ा लगा सूं

❒ बालकृष्ण शर्मा

चड़ी चुड़कला तुणकल्या ल्याया
रात-दन घर बणाया
अे थाके कोनी
थोड़ो विचार करे कोनी
अे हाथ धोबा की ठोड़ है
अठै घोंसला की जुगत कियां होसी
घड़ी-घड़ी म तुणकल्या ल्याया
घोचा अर तार को टुकड़ा ल्याया
वाने म्हू घड़ी-घड़ी हटाऊं
फेरूं वे लाग जावे काम पे
एक दिन म्हूं जात्रा में गयो
पाछे सूं हाथ धोबा की ठौड़ (वाशबेसिन) माथे
आपणो घोंसलो बणाय दीन्हों
वां में दो रूपाला इण्डा हा
मन नी मान्यों अब म्हूं याने नी उड़ाऊँ
बगत माथे इण्डा सूं रूपाला पंखेरू नीसर्‌या

पोता-पोती निरख-निरख नजीक सूं हरख्या
म्हारो मनड़ो भी राजी होयी
हे विधाता! थारी माया अजब है
नी चावता तका भी म्हूं वाने चाहबा लाग्यो
फेंरू वाशबेसिन सूं कदे ही

पखेरूआं न नी उड़ावण रो मतो पनपियो
एक र सोचूं हूं
थां की कोई मजबूरी री होगी
पखेरू इण भांत घरा म घुसग्या
लागे है मिनख ही यां का घरा में घुस्या है
रूंखड़ा कट ग्या,
वां की रहबा री ठौड़ कठै
सरंग सूं होड़ करता
कांकर सीमट रा जंगल उभग्या
जदे ही वाशबेसिन माथे
घरा रा कूणा कचाला माथे
पंखेरूआ न इण्डा देबा री जुगत करणी पड़े
या समझ में आवे है
सगती सारूं रुंखड़ा लगास्यूं
अणबोल्या इण संता ने
फेरूं वांकी ठौड़ देबा री जुगत कर स्यूं।

जिला शिक्षा अधिकारी (से.नि.)
'प्रकाश दीप' शिक्षक कॉलोनी, कलिंजरी गेट, मु.पो. शाहपुरा (भीलवाड़ा)-311404, **मो: 9414615821**

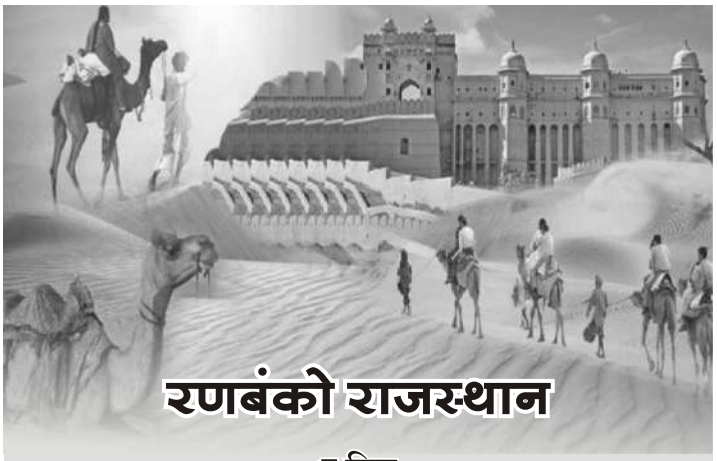

रणबंको राजस्थान

❒ बिन्दु

रह्यो जो रणबंका री खांण ऊमठै इंदर जद असमान
जिणरौ रह्यो सवायौ मान बरसै नेह अणूंतौ नीर
जगत में सूरापौ सिरमौर देवता सुरगां सू झट आय
म्हारो रंग रूड़ौ राजस्थान।। चखण नै मीठा पूंख मतीर।।

जिणरी चमकै बालू रेत गोरियां कर सोलै सिणगार
सोनै चांदी रै उनमान बणै जद पिणघट री पणिहार
चंदौ चढ़ चमकै असमान तिमणियौ नथड़ी टीको बोर
के जद तपै अणूंतौ भाण।। देवता ऊभा रै मन मार।।

कूमटां खेजड़लां री डाल पोतियौ आंटालौ घण रंग
गटूकै हुड़कलियां अणजाण अंगरखी फंबती खांधे डांग
तालरा तीतरिया कुरलाय जनमियौ किसन राईकै जूण
मोरिया मगरां रा मिजमान।। टोळतौ ऊंटा लरड़ी छांग।।

पाणी ऊंडो धरती हेठ शूरवीरां री ठावी ठौड़
मिनख रौ पाणी ठेट पयांल चाकरी मिजमानी रौ देस
सूकड़ी लूणी नदियां नाम कीमती खनिज गरभ में झाल
सांवरै जबर रचायौ जाल।। लखावै इदकाई हरमेस।।

अडावल अवतरियौ परताप आई आज खळकती नेहूर
चंबल दियौ प्रगत रौ धाम ठेलियौ पाणी औ अणथग
दुरगा अमरा जिसड़ा वीर वृंदावन बणजासी मरु देश
उण घर कायरता किण काम।। जागियौ मरुवास्यां रौ भाग।।

अध्यापिका
रा.आ.उ.मा.वि. मेवानगर, बालोतरा, जिला-बाड़मेर-344022
मो: 9413636824

बेटी

❒ कृष्णा आचार्य

बेटी है अनमोल रतन, देवै सुख अपार।
जिण आँगण आ ना खेलै, वो घर है बेकार।।
बेटी बण थारी कोख में आई कांई कर्‌यो कसूर जी।
लोक-लाजरी शरम सूं देखो मारण चाल्या बाबूजी।।

मायड़ म्हारी भोळी ढाळी, आँसूड़ा ढलकावै है
बेटी नैं जद मरतां देखूं, हियो कळपतो जावै है
तनै बचालूं म्हारी लाडो, ईशर सूं अरदास जी....

बापू थारों नाम करूँली, जद दुनिया में आऊँली
पढ़ लिख कै म्हैं आगे बढ़ूँली, थारो माण बढ़ाऊँगी
आज बचालै म्हनै बापू, काल आऊँली कामजी.....

जीवण म्हारो अधर झूल में, सांस चाल रैयी उधारी जी
मौत रै भय सूं डर्‌योड़ी म्हैं, अंतिम सांसा गिण रैयी जी
सांस अटक रैयी म्हारी बापू, सांसा नै बचालो जी....

कहणो थारो मानसूं बापू, लूखी-सूखी खाऊँली
घर आँगण में करूँ चांदणो, घोर-अंधेर भगाऊँली
म्हनै बणालै थारी लाड़ली, सेवा घणी करूँली जी....

बेटी रो जद दुखड़ो देख्यो, आंख्यां भर लाया बाबूजी
पछतावै री आग में बळता, रोवण लाग्या बाबूजी
तूं चिड़कली म्हारै अंस री, काळजिये री कोर जी.....

बेटी जन्मी जद आंगणियै, थाळ बजायो दादी जी
घर-घर फेर्‌या लाडू-खोपरा, जीमण खूब जिमाया जी
आज बधाई म्हांसू ले लो, कैवण लाग्या बाबूजी....

मारोला जद म्हनै बापू, बहू कठै सूं लावोला
दुनिया री आधी आबादी, पछै किया पुरावोला!
नर-नारी रे मेळां सूं स्रिस्टी, बणाई रामजी.....

शारीरिक शिक्षिका
रा.बा.उ.मा. वि. लक्ष्मीनाथ की घाटी, बीकानेर-334005
मो: 9461036201

हिन्द देश रौ सबसूं ऊँचो

❒ मोहम्मद अमीन छींपा

हिन्द देश रौ सबसूं ऊँचौ सारे जग में नाम।
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई,
सगळा करै बखाण।।
भारत माता रै वीरां नै बच्चो-बच्चो जाणै है।
दुनियां आं रौ लोहो मानै, दुश्मण देश पिछाणै है।
आं वीरां री ताकत सूं, सगळा हो ज्यावै हैरान।
हिन्द देश रौ सबसूं ऊँचो....
प्रतिभाशाली टाबर म्हारा, टोप टेन मांय आवै है।
दुनिया आं री प्रतिभा सूं, देख-देख घबरावै है।
तकनीकि अर मेडिकल मांय, उभरै आं रौ नाम।
हिन्द देश रौ सबसूं ऊँचो....
गबरु लाल जवान देश रा, सीमा पर करै रुखाळी रै।
मायड़ भौम री रक्षा खातिर, कमती कोनी नारी रै।
एक ईंच बी ज्यान खपादे, फौजी वीर जवान।
हिन्द देश रौ सबसूं ऊँचो....

मरुधरा री मायां जन्मे, वीर सूरमा तेज अठै,
दाकल मारां दुश्मण कांपै, जन्मा वीर प्रताप जठै।
छत्तीस कौमा रौ औ गुलदस्तो, खुशबू री भरमार।
हिन्द देश रौ सबसूं ऊँचो....
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सगळा करै बखाण।।

व्याख्याता
ग्राम पोस्ट-मलसीसर
तह.-भादरा, जिला-हनुमानगढ़-335502
मो: 9828697696

तकतां पीळ जोत परयांण

❒ हनुमान सिंह भाटी

सोनल सिंझ्या घूंघट ताण
अवतरै आथूणै आकाश
रात सपनै रा पिव अैलाण
हियै में भरै सलावा खास।।

छौहलौ परसै भाण प्रकाश
कूमटां खेजड़लां री टूंक
आंखियां पिव मारग पथराय
हियै में उठै अणूंती हूक।।

खंख ऊँची आभै चढ़ जाय
घिरै घर कानी जद गोमाळ
आज तो अवस आवसी पीव
सोच आ मनमथ तोड़ै पाळ।।

पंखेरु कीनी मालां सोय
गौरवै पूगौ धण ई आय
बिलमियौ मन मूरख बेकाज
पीव पूगा नह ओजूं आय।।

गाँव मिंदर में बाज्यौ शंख
नगारा बाज्या भरु थान
गौरवै पूगी मोटर आय
शेहर सूं भर मूंघा मिजमान।।

जोयौ खरी मीट सूं पंथ
हियै में लियां अणूंती आस
चास्यो दिवलो पड़वै जाय
नैणां हुयौ नीर रौ वास।।

पड़वै पील जोत रै जास
निरखलूं वरी-जरी रा वेस
बीड़मौ गेहणां रोई खोल
देखनैं रख देवूं हरमेस।।

तकता पीळ जोत परयाण
लागी कदै जायनै आंख
सुरंगै सपनै साजन जोय
विणसगी पीव विजोगण झांख।।

सुंरगौ सावण आसी और
दीवाली लिछमी पूजन फेर
लाखीणौ जोवनियो दिन च्यार
बावड़ै नहीं अणूंतौ हेर।।

व. अध्यापक (से.नि.)
मोहन बाल निकेतन आहोर,
जिला-जालोर (राज.)-307029
मो: 9414544673

नान्यो

❒ गोपाल लाल वर्मा

छोटो सो नान्यो खेले खेले लो
हीरा लाल
नान्यो बोल्यो म्है भी पढ़स्यूं ऐ
म्हारी माय
म स्कूलां म जाऊँ ये म्हारी माय
स्कूलां म जाकर
पढ़बो लिखबो सीखूँला जी
हीरालाल
हीरालाल तो यो कहे
म्हारी मैडम जी कनै जाऊँ ये
म्हारी माय
मेडम जी सै खेल सिखूँगा
म्हारी माय
हीरालाल तो यो कहे म
बड़ो बणूँला ये म्हारी माय
बड़ो बणकर
देश री सेवा करूँला ये
म्हारी माय।

प्रतापपुरा, जोबनेर (जयपुर)-303328
मो:9828432125

अे धोळी कबूतरियां

❒ सुरेन्द्र 'अंचल'

गुट निरपेख, पंचसील
अर विस्वसांति री
अे धोळी कबूतरियां
अद्घायल क्यूं?
पांखड़ा फड़फड़ा'र
तड़पड़ावै, कुरळावै क्यूं?
गुटर घूं.... गुटर घूं।
क घावां छक्योड़ै जटायू ज्यूं।
हां इणां रा पांखड़ा
लोई सूं भींज'र
लतापत उळझ रैया
झूपड़ियां रा छाण छापरा
धकधक धूँ धूँ सुळग रैया
लालकिला रा कोट कांगरा
उचक उचक'र निरख रैया
क कुण न्हाकी आ
धोबा भरभर धूड़
मिनखपणै री आंख्यां माय
धूड़ रा कणूका
किरर किरर किरकिरै
क नैण हुया राता चट्ट
डब-डब भरियोड़ा कोया
च्यांरूमेर फिरै।
हित्या, बलात्कार, लूंटखसोट
बिन माग्या, ठोड़ ठोड़ मिळै।
गूंगी जनता री
लाज हया भूख तिरस सैं
बरफ ज्यूं गळै
मेंगाई री कुलाड़ी सूं
कट रैया लोग
कुरसी मायड़ रै चढ़ा रैया
रोजीना छप्पन भोग।
सोसण री बलिवेदी पै
मुरगी बण'र हलाल हुवती
दुनियां री आ भोळी जनता
कित्ती महान!
जान तक दे रैयी दान
हां, कित्ती महान!
रूस अर अमेरिका री
कांटा री बाड़ां सूं बंद्योड़ी
इण दुनिया माय
कित्ती शांति
कित्ती मोटी भ्रान्ति
जीवेला कठां तांई ओ मानखो
घिरणा सूं घिरियोड़ो यूं?
क धावा छक्योड़ा जटायू ज्यूं?
गुट-निरपेख, पंचशील
अर विस्वसांति री
अे धोळी कबूतरियां
अद्घायल क्यूं?
तड़पड़ावै कुरळावै क्यूं?
गुटर घूं.... गुटर घूं

2/152, साकेत नगर,
ब्यावर (अजमेर)
मो. 9460178511

बाल साहित्य

कहानी

पुस्तक की गवाही

❒ गोविन्द भारद्वाज

वैशाली नगर स्कूल के प्रधानाचार्य जी बहुत ही योग्य और बुद्धिमान व्यक्ति है। उनका न्याय सारे स्कूल में प्रसिद्ध है। चाहे कितनी भी कठिन समस्या क्यों न हो, प्रधानाचार्य जी जब भी अपना फैसला सुनाते तो सभी विद्यार्थी और स्टाफ सदस्य संतुष्ट नजर आते।

एक दिन प्रधानाचार्य जी अपने स्टाफ सदस्यों के साथ अपने कार्यालय में बैठे हुए थे। तभी दो छात्र आपस में लड़ते-झगड़ते वहाँ आए। प्रधानाचार्य जी के पूछने पर एक छात्र ने बताया-''मेरा नाम अशोक है सर! मैं सातवीं कक्षा में पढ़ता हूँ, मेरी हिन्दी की पुस्तक इस मुकेश ने चुरा ली और मेरे पहचानने पर भी यह पुस्तक को अपनी बता रहा है।''

''यह झूठ बोल रहा है सर! पुस्तक मेरी है और मेरे पास इस बात का गवाह भी है।'' मुकेश ने कहा।

''एक गवाह तो मेरे पास भी है जो आपको बताएगा कि यह पुस्तक मेरी है।'' अशोक बोला।

''वे दोनों गवाह और पुस्तक कहाँ है?'' प्रधानाचार्य जी ने पूछा।

''आपके कक्ष के बाहर खड़े है और पुस्तक.....।'' मुकेश बोला।

प्रधानाचार्य जी अपने कमरे से बाहर निकले। उन्होंने दोनों गवाह से काफी पुछताछ की, लेकिन किसी निर्णय पर नहीं पहुँचे। पुस्तक को उन्होंने अपने पास रख लिया।

प्रधानाचार्य ने पुस्तक को बड़ी सावधानी पूर्वक देखा। उसका एक-एक पृष्ठ पलटा, फिर गम्भीर स्वर से बोले-''मुझे किसी गवाह की आवश्यकता नहीं है। यह पुस्तक ही अपनी गवाही देगी।''

''पुस्तक की गवाही?'' उपस्थित स्टाफ सदस्य और विद्यार्थी चौंक पड़े।''हाँ...हाँ.... पुस्तक की गवाही। वही बताएगी कि उसका असली मालिक कौन है।'' प्रधानाचार्य जी ने शांत स्वर में कहा।

''पुस्तक गवाही कैसे दे सकती है सर?'' एक साथी अध्यापक ने आश्चर्य से पूछा।

''अवश्य देगी। बस पूछने या पता लगाने का ढंग आना चाहिए।'' प्रधानाचार्य जी ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया।

फिर उन्होंने स्टाफ सदस्यों और विद्यार्थियों को स्कूल के हॉल में एकत्र होने का आदेश दिया। अशोक और मुकेश को उनकी बातें अजीब-सी लग रही थी। पुस्तक गवाह कैसे बन सकती है?

सभागार में अच्छी खासी भीड़ थी। प्रधानाचार्य जी ने दोनों छात्रों के बस्तों को अपने पास मंगवाया। बस्ते में रखी अन्य पुस्तकों की जाँच स्वयं प्रधानाचार्य जी करने लगे। लगभग बीस-पच्चीस मिनट बाद उन्होंने घोषणा की-''यह पुस्तक मुकेश की है।''

''यह झूठ है सर! इस पुस्तक ने कुछ कहा तो नहीं, फिर आप निर्णय कैसे सुना सकते है?'' अशोक ने रूआंसा होकर कहा।

''पुस्तक ने सबकुछ कह दिया है! और इसी पुस्तक ने ही नहीं बल्कि मुकेश की हर पुस्तक उसके पक्ष में बोल रही है।'' प्रधानाचार्य जी ने हँसते हुए कहा।

''कब कहा और कैसे कहा?'' अशोक ने आश्चर्यपूर्वक पूछा। तभी एक अध्यापक ने पूछा, ''श्रीमान् जी कृपा करके पुस्तक की गवाही का खुलासा कीजिए ताकि सबकी उत्सुकता शांत हो।''

''सीधी-सी बात है कि प्रत्येक बच्चा अपनी कॉपी-किताबों में पेन-पेंसिल से कुछ न कुछ ऐसी शरारत करता है जो उसकी निशानी बन जाती है। मुकेश की सारी पुस्तकों को देखने से पता चलता है कि उसकी शरारत में कलाकार की कला छिपी है। इसने सारी किताबों में कार्टून्स बना रखे हैं। ये तो बहुत अच्छा कार्टूनिस्ट है। हिन्दी की पुस्तक में इसने मेरा ही कार्टून बना रखा हैं। इस प्रकार पुस्तक बेजुबान होते हुए भी सब कुछ बोल गयी।'' प्रधानाचार्य ने सभी की उत्सुकता को शांत करते हुए बताया।

प्रधानाचार्य की बात सुनते ही अशोक का चेहरा उतर गया। सभी प्रधानाचार्य के निर्णय की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे। मुकेश को अपनी पुस्तक मिलने की बड़ी खुशी थी।

'पितृकृपा' पीलीखान, नई बस्ती,
पुलिस लाईन, अजमेर 305001 (राज.)
मो: 9461020491

बाल कथा

सच्चा मित्र

❒ विमला नागला

अवि शहर के एक नामी निजी विद्यालय में पढ़ता था। उसके विद्यालय में शहर के नामी घरानों के रईसों के बच्चे पढ़ते थे। वह एक साधारण परिवार का गरीब बच्चा था। उसके पिताजी उस विद्यालय में माली थे। उसे सरकार के आरटीई. नियम के अंतर्गत उस विद्यालय में प्रवेश मिला था। वह 'माली काका' का बेटा होने के कारण साधारण-सा ही विद्यालय जाता। उनकी आर्थिक स्थिति बहुत ज्यादा अच्छी नहीं थी। वह अपने पिताजी के साथ विद्यालय के बगीचे में काम भी करता था। कभी-कभी तो पिताजी के साथ पौधों को पानी देते-देते वह भाग कर विद्यालय पहुँचता। उसकी इस तरह अस्त-व्यस्त हालत देखकर सभी बच्चे ताली बजा-बजा कर उस पर हँसने लगते।

वह बहुत ही अच्छा बच्चा था। किसी के हँसने की परवाह नहीं करता। उसका उपहास उड़ाने पर भी वह कुछ नहीं बोलता। रईस बच्चों के दंभ के आगे वह हमेशा मौन ही रहता। वह मध्याह्न भोजन के अवकाश में भी अपने सहपाठियों के साथ बैठने की बजाय बगीचे में जाकर पक्षियों के साथ खेलता, उनको उड़ता देख खुश होता, तितलियों के साथ पकड़म पकड़ाई खेलता। उसे अकेले ही खेल खेलने में तथा प्रकृति के सुंदर उपवन में रहना बहुत ही अच्छा लगता है और उसे इसी में खुशी और आनंद मिलता।

वह कभी किसी से शिकायत नहीं करता। अपने पिताजी से भी नहीं, क्योंकि वह जानता था कि पिताजी और माँ यह सब सुनकर दुखी होंगे तथा इन सबका उनके पास भी कोई हल नहीं है। वह अच्छे स्कूल में पढ़ रहा है यही उसके लिए जीवन में बहुत सुखद क्षण है। पढ़ने में वह बहुत होशियार था, अपनी मेहनत और लगन से वह आगे बढ़ना चाहता था। अपनी माँ बाबूजी के लिए हमेशा वह अच्छे सपने देखा करता था। वह हमेशा सोचा करता एक दिन मैं बड़ा आदमी बनूँगा। अपने माँ बाबूजी को बहुत खुश रखूँगा।

एक दिन विद्यालय में उसकी कक्षा में एक नए बच्चे दक्ष ने प्रवेश लिया। वह शहर के मुख्य न्यायाधीश का बेटा था। परंतु वह जितने अच्छे परिवार का बेटा था उतना ही नम्र व नेकदिल था। उसे जल्दी ही आभास हो गया था कि कोई भी अवि का दोस्त नहीं है, सब उसके साथ बदसलूकी का व्यवहार करते हैं। उसने अवि से कहा ''दोस्त! तुम मुझसे दोस्ती करोगे?'' अवि यह सुनकर सकपका गया। क्योंकि पहली बार जीवन मे किसी ने उससे दोस्ती करनी चाही। उसे अपने कानों पर एक बार तो विश्वास ही नहीं हुआ परंतु दक्ष के हाथ का स्पर्श पा वह आश्चर्यचकित उसे देखता रह गया। दक्ष ने उसका हाथ अपने हाथ में लिया ऐसा प्यारा स्नेह स्पर्श पाकर वह पिघल-सा गया। दोनों के हाथ दोस्ती से जुड़ गए। आज पहली बार अवि जीवन में इतना खुश हुआ, मारे खुशी के उसके पैर जमीन पर ही नहीं पड़ रहे थे। वह दौड़ कर घर पहुँचा और अपने माँ बाबूजी को इस बारे में बताया। उसकी माँ बाबूजी बहुत खुश हुए कि आज पहली बार उनका बच्चा इतना खुश लग रहा था।

दक्ष ने घर जाकर अपने मम्मी पापा को भी यह बात बताई। उसके मम्मी पापा नाराज हुए, उन्होंने दक्ष को समझाया कि बेटा दोस्ती हमेशा बराबर वालों से ही की जाती है। अपने से छोटे लोगों से नहीं, क्योंकि असभ्य गंदे लोगों से दोस्ती करना अच्छी बात नहीं है। दक्ष ने-मम्मी पापा से पूछा.....''आप बताइए कि अवि कैसे असभ्य है?'' मम्मी पापा ने बिना जवाब दिए उसे डाँट कर चुप कर दिया। उसने किसी की परवाह न करते हुए अवि से दोस्ती कर ली। दोनों की दोस्ती का वट वृक्ष धीरे धीरे फलने-फूलने लगा, दोनों प्रगाढ़ दोस्त बन गए।

अब अवि भी बहुत प्रसन्न रहने लगा। दोनों साथ-साथ रहते पढ़ते, खेलते, तितलियों के पीछे भागते, मोरों का नृत्य देखते, बगीचे में बहारों के संग भंवरों की गुनगुन सुनते और कक्षा में भी अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होते।

एक दिन घर जाते समय दक्ष सड़क पार कर रहा था। पीछे से तेज गति से आ रही एक कार का उसे जरा भी भान न था। वह अपनी ही मस्ती में चल रहा था। अचानक पीछे चलते अवि की नज़र उस पर गयीं और वह बिजली की फुर्ती-सा पहुँचा और उसने दक्ष को जोर से धक्का देकर दूर कर दिया किंतु अचानक स्वयं असंतुलित होकर कार से टकराकर दुर्घटनाग्रस्त हो गया। उसको गहरी चोट लगी, वह बेहोश हो गया। उसे जब होश आया वह अस्पताल में भर्ती था, उसके माता-पिता के साथ दक्ष के मम्मी पापा तथा विद्यालय के प्राचार्य जी उस के समीप खड़े थे। सभी की आँखों में आँसू थे। सभी उसके शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना कर रहे थे। अपने दोस्त को सही देखकर दक्ष बहुत खुश हुआ।

दक्ष के मम्मी पापा को अपनी गलती का अहसास हुआ, उन्होंने प्यार से अवि के सिर पर हाथ फेरा और बोले ''बेटा! हमें माफ कर दो। तुमने अपनी जान की परवाह न करते हुए हमारे बेटे की जान बचाई। तुम बहुत ही बहादुर बच्चे हो, प्लीज, बेटा हमें माफ कर देना।'' अवि बोला ''नहीं अंकल-आंटी यह सिर्फ आपका ही बेटा नहीं है, मेरा भी सच्चा दोस्त है, इसने मुझे जीवन में सच्ची दोस्ती की सौगात दी है।'' उसकी आँखों से आँसू छलक पड़े। दोनों मित्र गले मिल गए, दोनों के साथ वहाँ खड़े सभी के नेत्र सजल हो उठे।

दक्ष के पिता जी ने अच्छे अस्पताल में इलाज करवाया जिससे अवि जल्दी ही स्वस्थ हो गए। कक्षा में जाने पर सभी आश्चर्यचकित रह गए क्योंकि वहाँ सभी कुछ बदला-बदला था, उसके सभी सहपाठियों ने उसके स्वागत के लिए कक्ष को अच्छे से सजा रखा था और अपने दुर्व्यवहार पर सभी ने उससे माफी माँगी, सभी सहपाठी उसके अच्छे मित्र बन गए। प्राचार्य जी भी पहले ही कक्षा में बता चुके थे कि ''कोई भी व्यक्ति छोटा बड़ा नहीं होता, व्यक्ति अपने कर्मों से महान होता है, अवि ने अपनी जान की परवाह न करते हुए अपने मित्र दक्ष की जान बचाई। इस नेक कार्य के कारण इस वर्ष उसे स्वतंत्रता दिवस पर भी बहादुर बच्चे का अवार्ड दिया जाएगा।'' सभी सहपाठियों ने अपने भद्दे व्यवहार के कारण अवि से माफी माँगी। अवि ने भी सभी के गले मिलकर अपनी खुशी व्यक्त की। आज मध्याह्न के अवकाश में सभी बच्चे आपस में प्रेम के साथ बैठे भोजन कर रहे थे तथा बाद में सभी बगीचे में तितलियों के संग खेल रहे थे। पक्षियों के साथ नाच रहे थे, भौंरों के साथ गुनगुना रहे थे और सभी मस्ती में मस्त होकर झूम रहे थे। आज उपवन की हर कली कली महक रही थी।

15, दिव्यांशालय, सुन्दर कालोनी,
राजपुरा रोड केकड़ी, जिला-अजमेर-305404
मो: 9214960689

कहानी

मुझे माफ कर दो

❒ महेश कुमार चतुर्वेदी

निखिल अपने पिता की इकलौती संतान था। उसके पिता की गिनती शहर के अमीर लोगों में की जाती थी। पिता की ओर से निखिल की हर सुख-सुविधा का ध्यान रखा जाता था। यही वजह थी कि वह जरूरत से ज्यादा ही कुछ रूखा और घमंडी हो चला था।

स्कूल में किसी से सीधे मुँह बात न करना, दूसरे छात्रों पर अपनी रईसी का रौब झाड़ना, हर किसी को नीचा दिखाने की कोशिश करना; ये सब उसके रोज के कार्य थे।

निखिल सातवीं कक्षा का छात्र था। उसी कक्षा में धीरज भी पढ़ता था। वह गरीब जरूर था, पर पढ़ने में होशियार था। स्वभाव से सरल एवं मृदुभाषी था। अपने साथियों की हर समय मदद करता था। यही वजह थी कि धीरज कक्षा में ही नहीं अपितु पूरे स्कूल में सबका चहेता था। लोकप्रिय था।

उसकी बढ़ती लोकप्रियता और शोहरत को देख निखिल जल-भुन कर रह जाता। बस इसी जलन और कुढ़न को लेकर वह धीरज के पीछे हाथ धोकर पड़ा रहता। जब जी चाहे उसे भला-बुरा कहता। रास्ते चलते उसके धौल जमा देता। पर धीरज का विशाल हृदय उसे हर वक्त माफ कर देता।

जुलाई का महीना। स्कूल खुल चुके थे। नया सत्र, नए दोस्त, नई कक्षा, नए कपड़े-जूते और नई किताबें पाकर सभी छात्रों में अजीब-सा उत्साह-उमंग था। ऊपर से बरसात के दिन। बादलों की मनोरम छटा, ठंडी-ठंडी हवा और रिमझिम बारिश से बालमन के चेहरे खिले-खिले थे। पन्द्रह अगस्त स्वतंत्रता दिवस मनाने के पश्चात् छात्रों ने प्र.अ. जी को वन-भ्रमण पर जाने का प्रस्ताव रखा। मौसम की अनुकूलता को देखते हुए प्र.अ.जी ने इसकी स्वीकृती भी दे दी। तीस अगस्त शनिवार को वन भ्रमण पर जाने की घोषणा की गई। इससे पहले निकट के दर्शनीय एवं प्राकृतिक स्थल 'रेवड़ा-महादेव' का चयन किया गया। वन भ्रमण के एक दिन पूर्व सभी छात्रों एवं अध्यापकों की उपस्थिति में प्र.अ.जी ने एक आवश्यक बैठक ली। वन भ्रमण का समय, भोजन, उपस्थिति, अनुशासन आदि विषयों पर गहन चर्चा एवं आवश्यक निर्देश दिए गए।

दूसरे दिन सभी छात्र नियत समय पर स्कूल में उपस्थित हुए। निर्धारित बस में सभी बैठे। घंटे भर की यात्रा में उनका गन्तव्य स्थान रेवड़ा-महादेव आ चुका था। क्या मनोरम दृश्य था-'रेवड़ा-महादेव' के चारों तरफ सघन हरियाली, कल-कल करती बहती नदी और ऊँचे पहाड़ों से गिरते झरने वातावरण को और भी मोहक बना रहे थे।

वहाँ के पुजारी ने बताया कि यहाँ दो तरफ नदियाँ बह रही है। बायीं तरफ की नदी कम गहरी है, उथली है। जहाँ सिर्फ घुटनों तक पानी है। बच्चे चाहे तो वहाँ स्नान कर सकते है। दायीं ओर की नदी ज्यादा गहरी है। उसका वेग तेज है। जो सीधे पहाड़ों से सैकड़ों फीट नीचे झरनों के रूप में गिरती है। किसी का भी उधर जाना बिल्कुल निषेध है।

वन भ्रमण में बच्चों का शोर-शराबा और झरनों का कोलाहल था। ऐसे में निखिल का पूरा ध्यान धीरज की तरफ था। वह तो घर से सोच कर ही आया था कि धीरज को नदी में धक्का देकर उससे बदला लिया जा सकता है, जबकि धीरज निखिल की हर गतिविधि से सतर्क था।

शिक्षकों की देखरेख में बच्चे बायीं ओर उथले पानी में नहाने का आनंद ले रहे थे। पता नहीं कब निखिल धीरज को बहला-फुसलाकर सबकी नज़र चुरा दायीं ओर तेज गति से बहती नदी की ओर ले गया। पहले तो उसने उसे कुछ खाने की चीजें दी। निखिल नदी किनारे पानी में पैर पसार कर बैठ गया। वह पानी में कंकड़ फेंकने लगा। थोड़ी देर बाद उसने इशारे से धीरज को पास बैठने को कहा। धीरज बैठा नहीं। वह तो खड़ा-खड़ा ही निखिल की हर गतिविधि को परख रहा था।

कहते हैं, जो दूसरों का बुरा सोचते हैं, उसी का बुरा होता है। हुआ भी यही। अचानक निखिल का पैर फिसल गया। वह नदी की तेज धारा के साथ बहने लगा। मौत उसके सामने थी। वह चिल्लाया ''बचाओ-बचाओ।'' धीरज ने आनन-फानन में अपनी जान जोखिम में डालकर तुरंत चीते की मानिंद बहती नदी में छलांग लगाई। वह तैरने में माहिर था। लपक कर उसने निखिल को पकड़ लिया। उसे लेकर वह किनारे की ओर बढ़ चला। निखिल के पेट में पानी भर चुका था। वह निढ़ाल हो अचेत हो गया था।

धीरज ने निखिल को किनारे पर ला उल्टा किया तथा उसके पेट में भरे पानी को निकालने की कोशिश की। तब तक स्कूल के छात्र और शिक्षक वहाँ एकत्रित हो चुके थे। शिक्षकों ने भी निखिल को होश में लाने एवं पेट में भरे पानी को निकालने की पूरी कोशिश की। थोड़ी ही देर में निखिल को होश आ गया। सभी ने राहत की साँस ली। अब निखिल अपने आप में शर्मिन्दा था। उसका सारा घमंड टूट चुका था।

वन भ्रमण से लौटने के बाद पूरे शहर में निखिल के पानी में डूबने और धीरज के साहस और बहादुरी के चर्चे थे। दूसरे दिन ये समाचार अखबारों की सुर्खियों में थे। सभी ने धीरज के साहस और बहादुरी की प्रशंसा की और उसकी पीठ थपथपायी।

प्रार्थना सभा में प्र.अ.जी ने धीरज की तारीफ की और उसे अपनी ओर से सम्मानित किया। तभी प्रार्थना सभा से निखिल बाहर आया और धीरज की ओर मुखातिब होकर फूट-फूट कर रोने लगा और सिसकते-सिसकते हुए बोला-''धीरज! मैं बहुत ही बुरा ही हूँ। मैं तो घर से तुम्हें नदी में धक्का देकर तुमसे बदला लेने की सोच कर आया था। किन्तु तुमने मेरी जान बचाकर मुझ पर बहुत बड़ा उपकार किया। मैंने समझने में बहुत बड़ी भूल की धीरज। बहुत बड़ी भूल की। मुझे माफ कर दो धीरज। मुझे माफ कर दो।''

धीरज ने निखिल के आँसू पोंछते हुए कहा-''रो मत पगले। मैंने तुम्हें बचाकर तुम पर कोई एहसान नहीं किया। यह तो मेरा फर्ज था।''

निखिल के पश्चाताप के आँसू से धीरज द्रवित हो उठा। उसने लपक कर निखिल को गले से लगा लिया।

प्रधानाध्यापक (से.नि.)
देवेन्द्र टॉकीज के पीछे छोटीसादड़ी
जि.प्रतापगढ़, राज.-312604
मो: 9460607990

बालकथा

चार ठग और रामू

❒ झांवटा राम बामणिया

एक बार रामपुरा नामक गाँव में दो भाई रहते थे। दोनों के एक-एक लड़की की शादी करनी थी। रामू के पास धन की कमी थी। उसने अपने बड़े भाई वीरा को कहा कि पशु मेला नागौर में जाकर बैलों की जोड़ी बेच कर आता हूँ। छोटा भाई बैलों को लेकर रात के समय रवाना हुआ, तो चौराहे पर चार ठग खड़े थे। ठग बोले ''भाई मेले जाकर क्या करोगे। बैल तो हम खरीद लेंगे।'' कुछ दूर पर उन ठगों की ढाणी थी। वहाँ एक बूढ़ा बाबा बैठा था, उन ठगों ने कहा ''कीमत वह बाबा बताएँगे, पैसे हम देंगे। वह बाबा मोल-तोल सही करता है। बैलों की किस्मों का जानकार है। चलो सामने वाली हवेली पर।'' वहाँ गए तो बूढ़ा बाबा बोला ''भैया बैलों की कीमत मैं करूँगा। वह तेरे को मंजूर है या नहीं। उससे पहले मुझे सफेद कागज पर लिखकर दे कि जो बाबा करता है, वह मुझे मंजूर है।'' रामू ने लिखकर दे दिया और कहा ''जो भी रकम बाबा देंगे मैं लेकर चुपचाप रवाना हो जाऊँगा।''

बूढ़ा बाबा जो ठगों का बाप था, उसने मात्र एक लाल पाई निकालकर दे दी रामू बोला ''अरे! बूढ़ा तेरे को शर्म आनी चाहिए, क्या मेरा बैल मात्र एक लाल पाई का है? मेरे गाँव में बीस हजार रुपये में सौदा तय किया था। मैं नहीं दूँगा।'' इतने में चारों ठगों ने शस्त्र उठाकर कहा ''चला जा नहीं तो मार डालेंगे।'' रामू बेचारा डर के मारे भागा। रोता हुआ जा रहा था कि गाँव का एक सज्जन मिला।

''अरे भाई! रो क्यों रहा है?'' तब रामू बोला-''पीछे वाली हवेली में जो बूढ़ा बाबा रहता है। उसने मेरे बैल ले लिए। कृपया मुझे दिलावें।'' उस सज्जन ने कहा ''भैया वह ठगों की हवेली है। वहाँ गया आदमी वापस जीवित नहीं आता। तेरी किस्मत अच्छी है कि तुम जीवित आए हो।''

रामू जब घर पहुँचा तो पत्नी के आगे रोने लगा। ''अब बड़े भाई को क्या कहूँगा।'' उसकी पत्नी ने कहा कि बड़े भाई को कहना कि ''कल पैसे देंगे। बैल बीच मार्ग में चौधरी को बेच दिए है। फिर कल मैं तुम्हे तरकीब बताऊँगी।'' उसने वैसा ही किया। जब भाई ने पूछा तो जो पत्नी ने कहा, वही कह दिया। दूसरे दिन उसकी पत्नी ने कहा ''कल औरत का वेश बनाकर उसी रास्ते पर जाना। वे तुम्हें महिला समझ घर ले जाएँगे। सुबह जल्दी उठकर काम तमाम करना।'' पत्नी के बताए अनुसार उसने वैसा ही किया, वह रवाना हुआ, ठगों ने महिला को आती देखकर पूछा ''तुम कौन हो? क्यो आई हो?''

तब वह रामू जो महिला के वेश में था, बोला ''क्या करूँ मेरे पति ने मुझे निकाल दिया है, जो भी रोटी देंगे। उसी के रह जाऊँगी।'' ठग बोले ''चल, हमारी हवेली में हम रख लेंगे।'' वहाँ जाकर ठगों ने कहा कि ''ये मेरे पिताजी है। हमारे चारों के पत्नियाँ नहीं है, माँ थी वह भी स्वर्ग सिधार गई है क्योंकि हम महाठग है। कोई आदमी हमें लड़की देते नहीं है।''

तुम बूढ़े बाबा की सेवा करना, सुबह जल्दी उठकर स्नान करवाना तथा चाय-नाश्ता देना। हम वापस चार रास्ते ठगी करने जाते है। ठगों के जाने के बाद वह बाबा से बोली ''बाबा बाहर आओ स्नान करवाती हूँ।'' बाबा चारपाई से उठकर बाहर स्नानघर में गया। वह रामू (महिला) बोला ''मैं तो बैलों वाला रामू हूँ'' और लकड़ी लेकर मारने लगा। बाबा बोला ''अरे मारो मत, ये लो सन्दूक की चाबी उसमें रखा, मेरा सारा खजाना ले जाओ।'' धन लेकर रवाना होने से पहले बाबा को खूब पीटा और कहा ''मैं कल वापस आऊँगा। तेरे बेटों (ठगों) को कह देना।'' घर जाकर पत्नी के चरणों में धन रखकर बोला ''धन्य हैं तेरी बुद्धिमता को, जो इतना धन हासिल करवाया।'' जब वे ठग वापस घर आए। ''भाभी! भाभी!'' जोर से आवाज लगाई। वह नहीं बोली तो ''पिताजी-पिताजी'' की टेर लगाई। बाबा खाट पर रोता-रोता बोला ''अरे वह औरत नहीं थी। बैलों वाला रामू था। मुझे खूब पीटा और धन ले गया उसने इतना भी कहा था कि ''कल वापस आऊँगा। जो हो वो उपाय कर लेना।'' ठग बोले ''हम कल से ठगी करने नहीं जाएँगे। वो रामू बैलों वाला कुछ भी बनकर आएगा तो हम पीट-पीटकर कचुमर निकाल देंगे।'' रामू ने भाई को बीस हजार रुपये देकर बोला ''ले भैया, कल सेठजी को देकर सामान खरीद लाना। लड़कियों की शादी की तैयारी करना।'' तब जाकर भाई को राहत मिली। उसके बाद दूसरे दिन रामू पत्नी से पूछता है ''आज क्या बनूं?'' पत्नी बोली ''आज तुम वैद्य बनकर जाना। उस हवेली के आगे से गुजरना, बोलना काशी से वैद्य आया हूँ। इलाज करवाना हो तो बोलो रे भैया!'' उसने वैसा ही किया। इतने में बूढ़ा बाबा ने सुना और अपने ठग बेटों से कहा ''अरे बेटा वैद्य (डॉक्टर) को बुलाओ, मेरा शरीर बहुत दर्द कर रहा है।'' ठग बेटों ने कहा ''अरे! वैद्यजी आइए, अन्दर मेरे बूढ़े पिताजी को बहुत दर्द हो रहा है।'' वैद्यजी अन्दर गए। तो उन चारों ठगों ने एकबारगी उसकी तरफ नज़र गड़ाकर देखा कि कहीं वह बैलों वाला रामू तो नहीं है। जो वेश बदलकर आया है। इतने में वैद्य (रामू) ने कहा ''क्या देखते हो? मैं वैद्य हूँ। कोई सन्देह है तो पुलिस बुला लो।'' तब ठग बोले ''नहीं, आप जल्दी कीजिए मेरे पिताजी का इलाज शुरू करें।''

इतना सुनते ही वैद्य ने रक्तचाप यंत्र द्वारा रक्तसंचार देखा। ''अरे बाबा की बी.पी. उच्च है। जल्दी कीजिए रक्तचाप के नियंत्रण वाली गोली मेरे पास नहीं है। बाजार से लानी होगी।'' बड़ा बेटा बोला ''मैं लेकर आ जाऊँगा। आप कागज पर टिकिया का नाम लिखकर दे।'' वैद्य (रामू) ने यूं ही कोई नाम लिखकर कागज पकड़ा दिया। बड़ा बेटा जब स्टेशन से बस में चढ़ा, उसके बाद वैद्य बोला ''अरे भैया! गर्म पट्टी नहीं है। वह भी मेडीकल स्टोर से लानी होगी।'' छोटा बोला ''मैं लेकर आ जाऊँगा, चिट्ठी-पत्री लिखकर दे।'' वैद्य ने यूं ही खाली लकीरें खींच कर दे दी। वह जब बस चढ़ा तो वैद्य जी (रामू) फिर बोला ''अरे मेरे पास ग्लुकोज की बोतल नहीं है। वह भी बाजार से मेडीकल स्टोर से लानी होगी।'' तीसरा बोला ''मैं ले आऊँगा। जल्दी चिट्ठी पर नाम लिखकर दे दें।'' कुछ देर बाद वैद्य ने बोला ''अरे! मेरे पास टॉनिक नहीं है। मैं भूल गया।'' चौथा ठग बेटा बोला ''मैं लेकर आ जाऊँगा। जल्दी पर्ची बनाकर दे दीजिए'' जब वह भी चला गया तब जाकर वैद्य जी बोले ''तेरा इलाज अभी करता हूँ'' और डण्डा लेकर मारने लगा। ''मैं बैलों वाला रामू हूँ।'' बूढ़ा रोया ''अरे मारो मत, और धन ले जा लेकिन मार मत, मेरे तो अगली पिटाई भी दर्द

कर रही है। क्यों पीट रहा है? तेरे आगे हाथ जोड़ता हूँ।'' रामू बोला ''बता धन कहाँ गड़ा है?'' ''मेरे खाट के नीचे है। खोदकर ले जा।'' उसने वैसा ही किया फावड़े से खोदा तो बहुत सारा धन बर्तन में भरा मिला। बाबा को खूब पीटकर अधमरा करके रवाना होने से पहले बोला ''और आऊँगा। तेरे बेटों को बोल देना।'' जब वे चारों ही मेडीकल स्टोर पर मिले। मेडीकल विक्रेता ने कहा ''ऐसी कोई दवाई नहीं है। आपको ठगकर भेजा लगता है।''ठगों ने एक स्वर में कहा-''जल्दी घर चलो।'' वे जीप किराए कर भागे। घर आते ही पिताजी-पिताजी आवाज लगाई। पिताजी बोले ''अरे वह तो बैलों वाला रामू था।'' फिर चारों ठग माथा पकड़ रोने लगे। पूछा-''वह क्या लेकर भागा?''

बूढ़ा बोला ''मेरी खाट के नीचे वाले बर्तन में रखा सारा खज़ाना और वह बोला था कल वापस आऊँगा। ठगों का अन्त करके जाऊँगा।'' ठग-पुत्र बोले ''हम सब अपने घर पर ही रहेंगे। जो भी आएगा वेशभूषा पहनकर उसको मार डालेंगे।'' वह रामू धन का भांडा लेकर घर पहुँचा। अपनी पत्नी के चरणों में रखकर धन्यवाद दिया। तीसरे दिन वह पत्नी से बोला ''आज क्या बनूँ।'' ''आज गाँव के कुंड पर डांगर-पशुओं को पानी पिलाना।'' उसने वैसा ही किया। इतने में एक घोड़े पर सवार आया। ''अरे भैया! घोड़े और मुझे पानी पिलाओ।'' रामू ने पानी पिलाकर परिचय पूछा और एक काम बताया कि-''आगे जो हवेली है। उस हवेली के आगे जाकर कहना कि बैलों वाला रामू हूँ। जो भी करना है, कर लो।'' उसने वैसा ही किया। वे ठग घर के दरवाजे पर खड़े थे। वे घोड़े वाले को पकड़ने के लिए भागे और बोले ''मारो-मारो'' घोड़े वाले ने घोड़ा तेज भगाया और वे पीछे-पीछे भागे। दूरखड़ा वह रामू सारा नाटक देख रहा था। रामू ने ठगों के घर जाकर ''बाबा इलाज करूँ, वैद्य आया हूँ।'' ''अरे तू तो बैलों वाला है। मारना मत, अब मेरे पास कुछ नहीं है। सिर्फ तेरे बैल है; ले जा।'' बाबा को पीटकर बैल को लेकर भाग गया। घोड़े वाले का पीछा करते-करते थक हार कर जब वे चारों देर रात मुँह लटकाए वापस आए तो ''बाबा-बाबा'' पुकारने लगे, देखते है कि बाबा तो मर चुका है, बैल भी नहीं है। वे रोए। ''अरे बैलों वाला पीछे आया था। वह घोड़े वाला नहीं था, दूसरा कोई था। जैसे सीता हरण के समय रावण का मामा सोने का हिरण बनकर आया।'' चारों ने पिताजी का अन्तिम संस्कार किया। फिर गाँव वालों को एकत्र कर कहा कि ''अब हम कभी भी ठगी नहीं करेंगे, प्रेम से सबके साथ रहेंगे।'' गाँव वाले आए और कहा ''ठग का माल महाठग बैलों वाला ले गया।''

शिक्षा:- चोरी का धन कभी स्थायी नहीं होता है।

अध्यापक
मु. पो. रणोदर, तह.-चितलाना
जिला-जालोर-343041, **मो: 9982119028**

गर्मी आई, गर्मी आई

❒ ज्ञान प्रकाश 'पीयूष'

गर्मी आई, गर्मी आई
बच्चों के लिए छुट्टी लाई
स्कूल नहीं अब जाएँगे
पिकनिक रोज मनाएँगे
चिड़िया घर की सैर करेंगे
सबसे मिल बतलाएँगे
ड्राइंग, पेंटिंग सीखेंगे
कौशल-ज्ञान बढ़ाएँगे
होम वर्क है पूरा करना
घर पर सबको खुश भी रखना
ठंडी कुल्फी खाएँगे
गर्मी दूर भगाएँगे

गर्मी आई, गर्मी आई
सेवा का वह अवसर लाई
चिड़िया-चुग्गा डालेंगे
जल-छबील लगाएँगे
पौधों को नित सींचेंगे
चून चींटी के डालेंगे

गर्मी आई, गर्मी आई
साथ में अपने लू भी लाई
लू से हमको बचना है
नीबू पानी भी पीना है
धूप में नहीं निकलना है
ध्यान स्वास्थ्य का रखना है।

गर्मी आई, गर्मी आई
ढेरों खुशियाँ लेकर आई।

पूर्व प्रिंसिपल, 1/258, मस्जिद वाली गली,
तेलियाँवाला मोहल्ला, सिरसा (हरि.) 125055
मो: 09414537902

बुद्धि का पहाड़

❒ विजयगिरि गोस्वामी 'काव्यदीप'

सोनू बोला दादीजी से, देखो दादी ऊपर।
ये पक्षी कैसे उड़ते हैं, हिला हिला अपने पर।।

ऐसा क्या है जादू इनमें, कभी नहीं गिरते हैं।
मन चाहे वहाँ उड़कर जाते, नहीं किसी से डरते हैं।।

सोनू से तब दादी बोली, बेटा बात बता दूँ।
आम बात है पक्षी उड़ना, नहीं है कोई जादू।।

भगवान दुनिया का रखवाला, करता है सबका भला।
जीवन जीने को उन्होंने, सबको दी है एक कला।।

उसी कला से पक्षी उड़ते, भगवान का उन्हें वरदान।
मछली पानी में रहती है, कैसे दौड़ती सीना तान।।

सोनू बोला फिर दादी से, यदि भगवान इतना भला।
बताओ दादी इन्सानों को, उसने दी है क्या कला।।

हँसी रोक नहीं पाई दादी, सोनू को फिर लाड़ किया।
बोली बेटा, भगवान ने हमें, बुद्धि का पहाड़ दिया।।

इस बुद्धि से हम जो चाहें, वो सारा कर सकते हैं।
पक्षियों से भी ऊपर उड़कर, आसमान छू सकते हैं।।

लेकिन बेटा बुद्धि पाने, तुम्हें रोज पढ़ना होगा।
अपनी बुद्धि के बल से ही, तुम्हें आगे बढ़ना होगा।।

समझ गया अब दादीजी मैं, जाऊँगा हर रोज स्कूल।
पढ़ लिखकर काबिल बनूँगा, तनिक न होगी इसमें भूल।।

प्राध्यापक
रा.उ.मा.वि. रैयाना, मु.-बोदिया, पो.-मादलदा,
त.-गढ़ी, जि.-बाँसवाड़ा-327034
मो: 9928699344

मधुवन में खेलकूद

❒ ओम प्रकाश तंवर

मधुवन का राजा शेरसिंह अपनी प्रजा के स्वास्थ्य का बहुत ध्यान रखता था। मधुवन के स्टेडियम में समय-समय पर अनेक प्रकार की खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन करवाकर प्रजा में खेलों के प्रति रुचि जागृत करता रहता था। वह स्वयं प्रातः पाँच बजे उठकर स्टेडियम में उपस्थित हो जाता था। खेल प्रशिक्षक पीले हरिण के निर्देशन में युवा जीव दौड़ लगाते, उछल-कूद करते, फुटबाल, वॉलीबॉल खेलते और कुश्ती लड़ते। योगाचार्य कालू भालू योग की क्लास लगाता। बुजुर्ग जानवर पैदल पथ पर टहलकर सुबह की ताजा हवा का आनंद लेते।

खेलकूद प्रभारी श्वेत बन्दर सभी जानवरों की प्रातः ठीक सवा पाँच बजे उपस्थिति लेता एवं इसकी रिपोर्ट राजा शेरसिंह को साढ़े पाँच बजे तक प्रस्तुत कर देता। राजा शेरसिंह का सख्त आदेश था कि कोई भी स्वस्थ जानवर प्रातः पाँच बजे के बाद बिस्तर पर लेटा नहीं रहेगा। लेट आने वालों को दंड स्वरूप फुटबॉल मैदान के चारों ओर चक्कर लगवाया जाता। अनुपस्थित रहने वालों से अगले दिन आने पर उनसे पूछताछ की जाती तथा उचित कारण नहीं होने पर उन्हें भी दण्डित किया जाता।

स्वास्थ्य निरीक्षक डॉक्टर हाथी बीमार जानवरों के स्वास्थ्य का परीक्षण कर उन्हें उचित दवा देता। यह कार्यक्रम सात बजे तक चलता। कार्यक्रम के समापन पर सभी जीव दो मुट्ठी भीगे हुए चने, गुड़ और नारियल की गिरी लेकर रास्ते में खाते हुए अपने अपने घर लौट जाते।

इक्कीस जून को मधुवन में भी उत्साह के साथ विश्व योग दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पड़ौसी राज्य अमृत वन के राजा बाघसिंह को मुख्य अतिथि के रूप में बुलाया गया। सबसे पहले योगाचार्य कालू भालू ने उपस्थित जानवरों को आधा घंटा तक सूक्ष्म योग करवाया। कोयल, तोता और मैना ने सुमधुर स्वर में स्वागत गीत की प्रस्तुति दी। मृग, मयूर व उनके साथियों द्वारा मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात् मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कार वितरित किए गए। चतुर सियार को खेल रत्न, श्वेत खरगोश को योगश्री तथा फुर्तीली लोमड़ी को सर्वश्रेष्ठ धावक के पुरस्कार से अलंकृत किया गया। उत्कृष्ट सेवाओं के लिए खेल प्रशिक्षक पीत हरिण, योगाचार्य कालू भालू, खेलकूद प्रभारी श्वेत बन्दर और स्वास्थ्य निरीक्षक डॉक्टर हाथी को शॉल, श्री फल एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

मुख्य अतिथि अमृत वन के राजा बाघसिंह ने उपस्थित जीवों को सम्बोधित करते हुए कहा कि सुखी जीवन के लिए जीव के शरीर का स्वस्थ रहना बहुत आवश्यक है और स्वस्थ शरीर के लिए नियमित रूप से खेलना व योगाभ्यास करना बहुत जरूरी है। उन्होंने आगे कहा कि मुझे यह जानकार बहुत प्रसन्नता हुई कि मधुवन के राजा शेरसिंह अपनी प्रजा के स्वास्थ्य का बहुत ध्यान रखते हैं तथा समय-समय पर इस तरह के आयोजन कर प्रजा में 'करो योग, रहो निरोग व स्वास्थ्य ही धन है,' का सुन्दर सन्देश देते हैं। मुख्य अतिथि ने इस भव्य कार्यक्रम में आमंत्रित करने के लिए मधुवन के राजा शेरसिंह का आभार प्रकट करते हुए अपने राज्य में भी इस प्रकार की गतिविधियाँ शीघ्र शुरू करने की मनसा व्यक्त की एवं इसमें योगाचार्य कालू भालू व खेलकूद प्रभारी श्वेत बन्दर के सहयोग की अपेक्षा की। मधुवन के राजा शेरसिंह ने मुख्य अतिथि अमृत वन के राजा बाघसिंह को स्मृति चिह्न के रूप में आकर्षक मुकुट भेंट कर उनका सम्मान किया तथा कार्यक्रम में पधारने के लिए अपनी ओर से आभार प्रकट किया। राजा शेरसिंह ने कार्यक्रम में सहयोग करने के लिए सभी जानवरों को भी धन्यवाद दिया। अंत में जलपान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

प्राध्यापक (से. नि.)
डी-213, अग्रसेन नगर, चूरू (राज.) 331001
मो: 9460565427

बचपन

❒ स्नेहलता चड्डा

जिसकी हँसी से वन उपवन में,
पुष्प सैकड़ों खिल जाते
झर-झर बहते झरने से,
अनुपम संगीत निकल पाते
जिसके हठ के आगे चंदा
नतमस्तक हो जाते,
छोड़ गगन, धरती पर आ
थाली में ही समा जाते।
जिसके रुदन से दिग्गज डोले,
देव स्वयं भी हिल जाते।
रूठ गए तो, सभी मनाने
के उपक्रम भी ढह जाते।
जिसे तनिक भी भान नहीं
कि क्या रिश्ते और क्या नाते,
निश्छल प्रेम-मीठी मुस्कान से
बंधन अटूट है बँध जाते।
जिसके मन में भेदभाव
या पाप-पुण्य न आ पाते,
तुझे नमन शत बार
'ओ! बचपन'
न्यौछावर सब सौगातें

अति. जिशिअ. (मा.शि.) झालावाड़
मो: 9602943772

गज़ल

❒ *सैयद अहमद शाह अली*

हक़ीकत को हँसी समझते हो यारो....
अक्ल बीमार में यही खता है यारो।
खुदा को न पहचानो तो मुझसे दूर रहो,
बस यही तुम्हारी सज़ा है यारो....
किसी को हँसी तो, किसी को मिली खामोशी
सभी को अलग-अलग नसीब मिलता है यारो....
उसने जो दिया है बहुत ही दिया है हमको
बदनसीबी का झूठा है गिला यारो....
खुदा का कोई निशां नहीं, निशां है वो,
तुमने इक बुत को खुदा समझा है यारो
मैं इक खुदा परस्त हूँ, मुझे किसी से क्या लेना
'शाह' ने माँगा है तो उसी से मांगा है यारो....

अध्यापक (से.नि.),
हैदरी मस्जिद के पास,
गोपेश्वर बस्ती गंगाशहर, बीकानेर-334401
मो: 9024931012

(बाल कहानी)

मुसीबत टल गई

❒ डॉ. ऋषि मोहन श्रीवास्तव

राजेन्द्र नगर में विजय और अभिषेक नाम के दो प्यारे बच्चे एक ही कॉलोनी में पास-पास में रहते थे। वे एक ही कक्षा में पढ़ते थे। इसलिए दोनों के परिवारवालों में भी परिचय हो गया था। दोनों परिवार एक-दूसरे के घर आया-जाया करते थे। विजय के पापा सेल्सटैक्स विभाग में क्लर्क थे, वहीं अभिषेक के पापा पुलिस-विभाग में इंस्पेक्टर थे। जब भी विजय और अभिषेक के घर कोई कार्यक्रम या बर्थ-डे आदि होता तो दोनों के परिवार वाले एक दूसरे से जरूर मिलते। दोनों परिवारों मे काफी स्नेह और अपनापन था।

विजय अभिषेक से कहता-''यार भगवान इसी तरह हमारी दोस्ती को हमेशा बनाए रखे। कितना अच्छा लगता है जब हमारे मम्मी-पापा भी आपस में एक दूसरे से मिलते हैं।'' ''हाँ बिल्कुल सही कहते हो'', अभिषेक ने जबाव देने में तनिक देर नहीं की।

पिछली दीपावली पर विजय अपनी छोटी बहन मधु के साथ अभिषेक के घर पटाखे और फुलझड़ी चला रहा था। तभी अचानक से पास में रखा एक पटाखा फूट पड़ा। इस पटाखे में अभिषेक ने माचिस से आग लगाने का प्रयास किया था। पटाखा नहीं चला तो वह उस पटाखे को भूल गया कि उसने उस पटाखे में आग लगाई थी।

पटाखा विजय और उसकी बहन मधु भी नहीं देख सके। वह पटाखा धीमी चिंनगारी के बाद एकदम से फट पड़ा। पास में विजय की बहन मधु खड़ी थी, मधु के कपड़ों में आग लग गई। दूर खड़े अभिषेक के पापा ने यह देख लिया वे तुरन्त दौड़े और उन्होंने अपने हाथों से आग बुझाने का प्रयास किया। बाद में जल्दी से पास में रखी पानी की बाल्टी मधु के ऊपर डाल दी? अपने ऊपर पानी पड़ते ही मधु एकदम से डर गई कि यह क्या हुआ? वह तो पटाखे और फुलझड़ी चला रही थी।

तब अभिषेक के पापा प्रकाश बोले-''बिटिया रानी, आज एक बड़ी दुर्घटना होने से

बच गई। तेरे कपड़ों ने आग पकड़ ली थी। तुझे तो पता ही नहीं चला, वह तो अच्छा हुआ मैं देख रहा था।''

तब तक अभिषेक और उसकी मम्मी विमला भी आ गए थे। विमला अपने पति से पूछने लगी-''अचानक से क्या हुआ? जो आप तेजी से दौड़े?''

तब पूरी बात अभिषेक के पापा ने बतलायी। अभिषेक बोला-''पापा, मुझे माफ कर दो, इधर जो पटाखा अभी फूटा उसमें तो चिंनगारी मैंने लगाई थी जब देर तक पटाखा नहीं फूटा तो मैं यहाँ से हटकर दूसरी जगह चला गया। मुझे अपने दोस्त विजय को बताना चाहिए था या मुझे ही इस पटाखे पर कुछ देर तक नजर रखनी चाहिए थी।'' अभिषेक को समझाते हुए उसके पापा बोले-''बेटे, कभी-कभी कुछ पटाखे आग तो पकड़ लेते हैं। पर सुलगते हुए देर में फटते हैं। हम समझते हैं कि पटाखा क्यों नहीं फट रहा। ज्यादा देर इंतजार भी नहीं करते और उस जगह से हट जाते हैं।''

तभी विजय बोल पड़ा-''हाँ अंकल, आप बिल्कुल सही कहते हैं- एक बार मेरे दोस्त दिलीप के साथ भी ऐसा ही कुछ हुआ था। उसने रॉकेट वाले पटाखें में आग लगाई पर वह रॉकेट नहीं चला। बाद में वह रॉकेट उसके पैर के पास फट पड़ा, दिलीप का पैर काफी जल गया था। वह तो अच्छा हुआ उसके पापा ने जल्दी से अपनी कार निकाली और उसे अस्पताल पहुँचा दिया, जहाँ उसे तुरन्त इलाज मिल गया।'' तब तक विजय के पापा और मम्मी भी अभिषेक के घर पहुँच चुके थे। उन्हें जब अभिषेक के पापा ने पूरी घटना बतलायी तो वे बोले -''शर्मा जी, मैं इसीलिए तो कहता हूँ-बच्चे जब भी दीपावली पर पटाखे चलाएँ तो अपने मम्मी-डैडी के साथ ही पटाखे चलाएँ। बड़ों की देखरेख में ही पटाखे चलाना चाहिए।''

विजय अपने पापा और अभिषेक के पापा की बातें सुन रहा था। वह बोला-''पापा, आप बिल्कुल सही कह रहे हैं, पर हम लोगों में कुछ बच्चे कहने लगते हैं-अब हम छोटे बच्चे नहीं हैं, हम आराम से पटाखे चला सकते हैं, पर पापा कभी-कभी थोड़ी सी लापरवाही मुसीबत बन जाती हैं।''

इधर विजय और अभिषेक के पापा की बातें चल रही थीं, तभी विजय की बहन मधु अपने पापा के पास आकर उनके गले से लिपट गई और भावुक होकर रोने लगी। मधु के पापा ने उसे चुप कराते हुए कहा-''बिटिया, अब क्यों रोती हो, जो कुछ मुसीबत थी वह टल गई। तुम्हारे अंकल जी ने तुरन्त तुम्हें बचा लिया। इसीलिए तो बच्चों हम हमेशा कहते हैं-हमें हर बात में सावधानी रखनी चाहिए। अपने आपको बहुत बड़ा और होशियार नहीं मान लेना चाहिए।'' अभी बातचीत चल ही रही थी तभी अभिषेक की मम्मी वहाँ आईं और बोली -''चलिए आप सब लोग खाना खा लीजिए। सबके लिए खाना डाईनिंग टेबल पर लगा दिया है।''

यह सुनते ही सब लोग खाने की टेबल की ओर चल पड़े। सब लोगों को भूख भी काफी जोरों की लग रही थी।

एस-1, नित्यानंद विलाकमलेश्वर कॉलोनी,
जीवाजीगंज लश्कर, ग्वालियर-474001 (म.प्र.)
मो: 8964963542

बताओ कौन?

❒ मगन लाल दायमा

लाल-लाल है मेरा रंग,
मूली के मैं रहती संग।
सब्जी-सलाद में मुझे ही खाते,
सर्दियों में मेरा हलवा बनाते।।

गाजर

गोल-गोल गोलमटोल,
गर्मी में हम खाते रोज।
ऊपर से हरा अंदर से लाल,
इसको खाकर हम करते धमाल।।

तरबूज

फलों का राजा कहलाता,
सबके मन को खूब है भाता।
गर्मियों में हम नानी के जाते,
वहाँ इसको रोज है खाते।।

आम

इसको काटने पर आँसू आते,
सलाद में इस इसको खाते।
गर्मियों में यह खूब है भाता,
गरीब की सब्जी कहलाता।।

प्याज

हरा हरा है इसका रंग,
पनीर के यह रहता संग।
छोटे-छोटे इसके दाने,
खूब खाओ मन कभी न माने।।

मटर

राजस्थान की शान बताता,
इसको देख मुँह में पानी आता।
तीन चीजों से मिलकर ये बनता,
खूब खाओ मन कभी न भरता।।

दाल-बाटी-चूरमा

सुन्दर-सा है यह पक्षी,
रोज सुबह जगाता है।
कूकड़कू-कूकड़कू करके,
नींद हमारी भगाता है।

मुर्गा

मेहनती है यह पशु
खूब बोझा ढोता है।
मुर्ख इसको कहने पर
ढेंचू-ढेंचू रोता है।।

गधा

घर की रखवाली यह करता
स्वामी भक्त कहलाए।
अजनबी को घर में न आने दे
जानकार को देख दुम हिलाए।।

कुत्ता

मोटा-सा है यह जन्तु,
खूब खाना खाता है।
शहद इसको बहुत पसंद है,
आबू में पाया जाता है।

भालू

करकश इसकी आवाज बहुत है
काला-सा यह दिखता है।
चालाकी इसमें खूब भरी है
चौकन्ना-सा यह रहता है।।

कौआ

मोटी-मोटी आँखे इसकी
बारिश इसको बहुत पसंद है।
पानी में यह टर-टर करता
लम्बी मारे कूद है।।

मेंढक

जोर से यह दहाड़ मारे
बिल्ली इसकी मौसी है।
डरते इससे सारे जानवर
रहता यह मनमौजी है।।

शेर

बारिश में नाच दिखाता
सब के मन बहुत है भाता।
सुन्दर-सा है यह पक्षी
पीहू-पीहू कह जाता है।।

मोर

बड़े-बड़े कान इसके
मटक-मटक कर चलता है।
गन्ना इसको बहुत पसंद है
जंगल का साथी कहलाता है।।

हाथी

लम्बी टाँगें, लम्बी गर्दन इसकी
रेगिस्थानी राह दिखलाता है।

प्लाट नं. 221, रूक्मणी नगर-ए, पुरानी चुंगी, आगरा रोड, जयपुर (राज.), **मो: 9983988650**

शाला का शृंगार

❒ सत्य नारायण नागोरी

खिलते ये कलियाँ, अच्छे बच्चे
प्यारे जग के, अच्छे बच्चे।
रंग-बिरंगी, तितली जैसे
आंगन मोती, अच्छे बच्चे।
कोयल जैसी, प्यारी बोली
सच्चे लगते, अच्छे बच्चे।

बचपन मस्ती, यादें सुहानी
हरपल हँसते, अच्छे बच्चे।
थोड़े में ही, खुश हो जाते
खेले कूदे, अच्छे बच्चे।
कभी न डाँटो, कभी न मारो
शाला का शृंगार, अच्छे बच्चे।

व्याख्याता, राउमावि. केलवाड़ा-313325
जिला-राजसमन्द, **मो: 9610334431**

जय जय राजस्थान

❒ रूपनारायण काबरा

जय जय जय जय राजस्थान
जय जय राजस्थान महान।
वीरों का यह राजस्थान
जय जय राजस्थान महान।।

प्रहरी जिसका अरावली है, चम्बल जिसकी धारा है।
मातृभूमि पर मिटने वाले, वीरों का देश हमारा है।
राणा सूरज बनकर चमके, सांगा वीर महान।
जयमल, फत्ता और हमीरा, सब थे वीर महान।।

जय जय राजस्थान

तीज और गणगौर निराले,ख्वाजा दरगाह पीर निराले।
दुर्ग, किलो की शान लिए हैं,छींट,छाप त्यौंहार निराले
पन्ना का बलिदान यहाँ है, और मीरा का ज्ञान।
नमक सांभरी, संगमरमर का, है यह प्रान्त महान।।

जय जय राजस्थान

धोरे चमका करते रहते, जैसे चांदी चमके
वीर यहाँ के सदा-सर्वदा, टक्कर देते जम के
आजादी प्राणों से प्यारी, यही हमारी शान
पराधीनता नहीं सुहाती, यही हमारी आन।

जय जय राजस्थान

रंग-रंगीले वेश पहनते, मेले खूब मनाते।
मस्ती के आलम में रहते, गीत खुशी के गाते
नृत्य मोर का यहाँ सुहाना, और कोयल का गान
कैर सांगरी, छाछ-राबड़ी, अलगोजा पहिचान।।

जय जय राजस्थान

नमन करें पावन माटी को, यह है अपनी माता,
हम भी इसका मान बढ़ाएँ, तब है सच्चा नाता।
मेहनत करके बहा पसीना, करें नया निर्माण।
सूरज बनकर जग में चमके, प्यारा राजस्थान।

जय जय राजस्थान

शिक्षक (से. नि.) ए-438, किशोर कुटीर, वैशाली नगर, जयपुर-302021(राज.)

पेड़ लगाएँ हरे-भरे

❒ शिवचरण सेन 'शिवा'

लो पेड़ लगाएँ हरे-भरे
हरियाली फैले चहुँओर।
कोयल कुहके डाल-डाल पर,
नाच उठे फिर मन का मोर।।

मन मोहक ये दिखते देखो,
लगे सड़क की दोनों ओर।
धुआँ धमासा सोखें ये तो,
हों जैसे पलकों की कोर।।

करे पत्तियाँ हिल-हिल स्वागत,
जब भी हो नेता का दौर।
पक्षी करे बसेरा इन पर,
जब तक न हो जाए भोर।।

इनके नीचे राही रुकते,
कभी नहीं ये करते शोर।
सबको देते छाँव रुपहली,
चलता नहीं धूप का जोर।।

सुन्दर लगती डाली इनकी,
ज्यों थिरक रही है गणगौर।
फल-फूल नहीं देता दुनिया में,
इनके सिवाय कोई ओर।।

सबको देते उपकारी फल,
होते नहीं कभी ये चोर।
जब भी कटे पतंग किसी की,
इनपे अटके जीवन डोर।।

व्याख्याता
'सौरमघर' 68 तिलक नगर, झालावाड़ (राज.)-326001
मो: 8003134522

बाल-गीत

श्रेष्ठ बनाओ

❒ गणपतसिंह 'मुग्धेश'

बालक तुम माता के प्यारे
कल के भारत, गगन सितारे।
काम करो ऐसे हितकारे
गर्व करे, तुम पर जन सारे।

श्रम से गहरा नाता जोड़ो
हिम्मत को तुम कभी न तोड़ो
चलो निरन्तर आलस त्यागो
बढ़ते जाओ, बाधा लाँघो।

दुनिया में तुम नाम कमाओ
भारत का यश शिखर चढ़ाओ।
त्याग तपस्या को अपनाओ
पीड़ित पिछड़े गले लगाओ।

सपने देखो, कुछ न मिलता
कर्म किए ही सब कुछ फलता।
नेक-कर्म में खुद को ढालो
बदी बुराई को तुम टालो।

महापुरुषों की मति समझलो
महाप्रेरणा भीतर भर लो।
अहम् कभी न आड़े आए
न्याय धर्म पर सिर झुक जाए।

कुछ न कुछ प्रभु सब को देता
लेकिन मानव, नहीं समझता।
मिला उसे ही, श्रेष्ठ बनाओ
नहीं किसी पर दोष लगाओ।

जीवन ज्यादा, कभी न मानो
पल-पल की तुम कीमत जानो।
अद्भुत अच्छा, कर गुज़रो न
भव्य भविष्य, निर्माण करो न।

सेदरिया-ब्यावर,
जिला-अजमेर-305901
मो: 09460708360

हंस वाहिनी शारदे

❒ कैलाश गिरि गोस्वामी

हंस वाहिनी शारदे, कर दो माँ उद्धार।
पाटी पोथी हाथ ले, खड़े आपके द्वार।।

हंस वाहिनी शारदे, माँ हमको तू तार।
शरण खड़े हम आपके, हमें उतारो पार।।

हंस वाहिनी शारदे, दो हमको वरदान।
करें शब्द की साधना, हम तेरी सन्तान।।

हंस वाहिनी शारदे, दे दो हमको ज्ञान।
भले-बुरे का रख सकें, पग-पग पर हम ध्यान।।

हंस वाहिनी शारदे, ले लो माँ तव गोद।
जहाँ हमें नित मिल सके, ज्ञान और अवबोध।।

हंस वाहिनी शारदे, हम बालक नादान।
खड़े आपके द्वार है, दे दो विद्या-दान।।

हंस वाहिनी शारदे, दो माँ हमें विवेक।
चलकर हम सद्मार्ग पर, बनें आदमी नेक।।

हंस वाहिनी शारदे, रख दो हम पर हाथ।
हम बच्चे भटके हुए, हमें दिखाओ पाथ।।

हंस वाहिनी शारदे, तव चरणों में धाम।
हम बालक गिरते हुए, माँ हमको ले थाम।।

प्राध्यापक
रा.आदर्श उ.मा.वि.पनासी छोटी,
मु.बोदिया,पो. मादलदा, त. गढ़ी,
जि.बाँसवाड़ा (राज.)-327034
मो: 9982505957

रोती प्रकृति आँसू भर के...

❒ मनमोहन गुप्ता

माँ प्रकृति को माना जब तक
पाया उसका खूब दुलार,
रखा स्वस्थ था उसने हमको
खूब लुटाया सबको प्यार।
चहुँओर था निर्मल जल ही
और प्रवाहित शुद्ध पवन,
हरियाली पूरित थी वसुधा
खुशहाली थी सभी सदन।
कारखानों का कचरा जल के
साथ रसायन लेकर आया,
नदियाँ दूषित हुई हमारी
कुआँ भी इससे घबराया।
परम्परागत स्रोत सभी जब
भेंट चढ़े प्रदूषण के
महामारी की आशंका से
रोई प्रकृति आँसू भर के।
हम सब मिलकर रखें शुद्ध जल
ऐसा संकल्प निभाएँ,
कचरा और रसायन जल में
कभी नहीं ढुलकाएँ।

'गुप्ता सदन'
एस.बी.के.गर्ल्स हा.सै.स्कूल के पास,
मण्डी अटलबंद, भरतपुर (राज.)-321001
मो: 9983409454

उसे कुछ भी नहीं आता

❒ प्रमोद दीक्षित 'मलय'

शिक्षक, सहपाठी और बच्चे
सब कहते हैं
उसे कुछ भी नहीं आता,
नहीं सीखना है उसे कुछ भी नया
इसीलिए,
उसे मिली है
कक्षा की उदास दीवार की तरफ
मुँह करके खड़े होने की सजा।
सजा पूरी कर
उसके हटने के बाद दीवार पर उभर आए हैं
इन्द्रधनुष के इठलाते रंग,
फूल, तितली, भौंरे, नदी, पहाड़
अधखिला चाँद और तारे।
क्या सच में उसे कुछ भी नहीं आता।

79/18 शास्त्री नगर, अतर्रा-210201
जिला-बांदा, (उ.प्र.)
मो: 9452085234

बचपन तुम मत छीनो

❒ सुश्री अरुण जैन

व्याख्याता
रा.बा.उ.मा.वि. नं. 2, श्रीगंगानगर
मो: 9461470714

इन नन्हे-2 हाथों से किताब-कलम तुम मत छीनो।
इन मासूम चेहरों से इनका बचपन तुम मत छीनो।।

इनकी आँखे ढूँढ़ रही हैं, धरती और आकाश नया।
पंख लगाकर उड़ने दो, इनका गगन तुम मत छीनो।।

असीम उमंगे, अथाह तरंगें हृदय इनका लिए हुए।
अपने स्वार्थ पूर्ति हेतु इनका तन, मन, धन तुम मत छीनो।।

माटी में ये खेल-खेल कर इक नई क्रान्ति लाएँगे।
जिस माटी में पले बढ़े वो माटी कण तुम मत छीनो।।

औजार थामने की उम्र नहीं इन प्यारे-प्यारे बच्चों की।
इन हाथों से खिलौनों के अमूल्य रतन तुम मत छीनो।।

हर बच्चे की ओर से बस, मेरी एक गुजारिश है।
बाल श्रम में लगाकर इनका मासूम बदन तुम मत छीनो।।

शिविरा पत्रिका (मासिक) : सितम्बर, 2018 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादकः डॉ. राजकुमार शर्मा, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

72 वें स्वाधीनता दिवस समारोह के अवसर पर माध्यमिक एवं प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय परिसर में ध्वजारोहण, संबोधन एवं पौधरोपण करते हुए निदेशक माध्यमिक शिक्षा श्री नथमल डिडेल एवं निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा श्री श्याम सिंह राजपुरोहित तथा उपस्थित समस्त शिक्षा अधिकारी-कर्मचारीगण।

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/417/2017-19 शिविरा पत्रिका (मासिक) ● सितम्बर, 2018 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2सितम्बर, 2018 पृष्ठ 132 ● प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

माननीय प्रधानमंत्री श्रीमान नरेन्द्र मोदी और माननीया लोकसभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन के साथ ही.सो. रामपुरिया उ.मा.वि. बीकानेर की छात्राओं का दिल्ली शैक्षणिक भ्रमण के दौरान का समूहचित्र, साथ हैं संस्थाप्रधान और माननीय राज्यमंत्री संसदीयकार्य, जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण मंत्री श्री अर्जुनराम मेघवाल।

राजस्थान डिजिफेस्ट बीकानेर-2018 में माध्यमिक शिक्षा राजस्थान की ओर से 'आदर्श विद्यालय' स्टॉल की झलकियाँ।